RNI-UPBIL/2011/38102 ISSN-2231-5837

Indian Journal of Social Concerns

इण्डियन जर्नल ऑफ सोशल कन्सर्न्स

(मानविकी एवं समाज विज्ञान पर केन्द्रित अर्न्तराष्ट्रीय त्रैमासिक शोध पत्रिका)

Volume -10: Issue - 42 Apr. - Jun. 2021 Gaziabad

A RESEARCH JOURNAL OF HUMANITIES AND SOCIAL SCIENCES
(An International Peer-Reviewed & Refereed Journal)

Journal Impact Factor No. : 5.114

Editor
Dr. RAJ NARAYAN SHUKHLA

Asstt. Editor
MUKTA SONI

Art Editor
Dr. (MS) PANKAJ SHARMA

Legal Advisor
Dr. JASWANT SAINI
SHRI BHAGWAN VERMA

Office Assistant
JITENDER GIRDHAR

Chief Editor
Dr. HARI SHARAN VERMA

Sub Editor
Dr. PUSHPA
Dr. BEENA PANDEY (SHUKLA)

Managing Editor
Dr. SANGEETA VERMA

Joint Editor
Dr. PRIYANKA SINGH

Computer Operator
MS. NEHA VERMA

- The responsibility of the originality of the articles/papers shall be of the author.
- The editor does not owe any kind of responsibility in this regard

Dr. Hari Sharan Verma
Chief Editor

Dr. Raj Narayan Shukhla
Editor

Dr. Sangeeta Verma
Managing Editor

मानविकी शोध पीठ प्रारम्भ सोसायटी, गाज़ियाबाद द्वारा संचालित

प्रकाशक : डॉ० राजनारायण शुक्ला, सम्पादक
SH, A-5, कविनगर, गाजियाबाद (उ० प्र०)
दूरभाष : 9910777969
E-mail : *harisharanverma1@gmail.com*
WWW.IJSCJOURNAL.COM

सहयोग राशि (भारत में)

(व्यक्तिगत) (आजीवन 4100 रुपये)
(संस्थागत) (आजीवन 6100 रुपये)

विदेश में :–

(व्यक्तिगत) 26 यू.एस. डॉलर (आजीवन) (संस्थागत) 32 यू.एस. डॉलर (आजीवन)

कृपया सहयोग राशि बैंक ड्राफ्ट से ही भेजें।

बैंक ड्राफ्ट, संपादक "इण्डियन जर्नल ऑफ सोशन कन्सर्न्स" के पक्ष में देय होगा। आजीवन सदस्यता केवल दस वर्षों के लिए मान्य होगी। यदि किसी कारणवश पत्रिका का प्रकाशन बन्द हो जाता है तो आजीवन सदस्यता स्वतः ही समाप्त हो जायेगी।

संपादकीय कार्यालय :

1. **डॉ० हरिशरण वर्मा, प्रधान सम्पादक**
F-120, सेक्टर–10, DLF, फरीदाबाद (हरियाणा)
harisharanverma1@gmail.com 09355676460
WWW.IJSCJOURNAL.COM

2 **डॉ० राजनारायण शुक्ला, सम्पादक**
SH, A-5, कविनगर, गाजियाबाद (उ०प्र०)

क्षेत्रीय सम्पादक

1. डॉ० वाई.आर. शर्मा, A-24, रेजिडेंसल कैम्पस, न्यू कैम्पस, जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू–180001, फोन : 09419145967
2. डॉ० पी.के. शर्मा, (ई–36 बलवन्त नगर विश्वविद्यालय मार्ग, गवालियर, मध्यप्रदेश फोन : 09039131915
3. डॉ० राजकुमारी सिंह (प्रोफेसर एफ.टी.एम. विश्वविद्यालय लोधीपुर राजपुत मुरादाबाद उत्तर प्रदेश। फोन : 09760187147
4. श्री मोहनलाल, 11 अशोक विहार, संजय नगर, पो. इज्जत नगर बरेली (उ०प्र०) फोन : 09456045552
5. श्री जितेन्द्र गिरधर, कार्यालय सहायक 105/26 जवाहर नगर,कॉपरेटिव बैंक के पीछे, रोहतक 09896126686
6. डॉ0 विमला देवी, सहायक प्रोफेसर (इतिहास)
स्वामी विवेकानन्द राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
लोहाघाट चंपावत (उत्तराखण्ड)–262524 – 9411900411
7. डॉ0 प्रिया कपूर, सहायक प्रोफेसर, डी0 ए0 वी शताब्दी कालेज, फरीदाबाद मौ0 9711196954
8. डॉ0 किरण मिश्रा, सहायक प्रोफेसर, हिन्दी, राम गुलाम राय पी0 जी0 कालेज, देवरिया गोरखपुर–273001 मौ0 :7007018819
9. डॉ0 ऊषा रानी, हिन्दी –विभाग हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला –5
10. डॉ0 रविन्द्र सिंह, सहायक अध्यापक, हिन्दी श्री हरिहर इंटर कांलेज पटवारा टोडी फतेहपुर (झाँसी) उत्तर–प्रदेश

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं मुद्रक डॉ० राजनारायण शुक्ला द्वारा आदर्श प्रिंट हाऊस, बी–३२, महेन्द्रा एन्क्लेव, शास्त्री नगर गाजियाबाद में मुद्रित कराकर, SH, A-5, कविनगर, गाजियाबाद (उ०प्र०) से प्रकाशित।
सम्पादक : डॉ० राजनारायण शुक्ला। **पंजीकरण संख्या** : ISSN-2231 - 5837

संरक्षक मण्डल :

1. **डॉ0 दिनेश मणी त्रिपाठी**, प्रधानाचार्य एन0 पी0 के0 आई कालेज, सरदार नगर बसडीला (गोरखपुर) उ0प्र0
2. **डॉ० राजेन्द्र सिंह,** (पूर्व प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय राहतक
3. **डॉ० एस.पी. वत्स,** (पूर्व कुलसचिव, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक)
4. **डॉ० रमेशचन्द लवानिया,** (पूर्व अध्यक्ष हिन्दी विभाग, शम्भु दयाल स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गाजियाबाद
5. **डॉ० वाई.आर.शर्मा,** (राजनीति शास्त्र विभाग, जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू)
6. **डॉ0 सुधांशु कुमार शुक्ल** चेयर हिन्दी, आई. सी. सी. वार्सा विश्वविद्यालय, वार्सा (पोलैन्ड) मौ0 48579125129

परामर्शदात्री समिति :

1. **डॉ० नरेश मिश्रा** (पूर्व आचार्य, हिन्दी विभाग, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक)
2. **डॉ० सुधेश** (पूर्व आचार्य, हिन्दी विभाग, जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली)
3. **डॉ० गिरिराजशरण अग्रवाल** (पूर्व रीडर एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, वर्धमान कॉलेज, बिजनौर)
4. **डॉ० राजकुमारी सिंह,** प्रोफेसर एफ.टी.एम. विश्वविद्यालय लोधीपुर राजपूत मुरादाबाद, उत्तर प्रदेश 9760187147
5. **डॉ० प्रतिभा त्यागी,** (प्रोफेसर, अंग्रेजी विभाग, चौधरी चरणसिंह विश्वविद्यालय, मेरठ) (प्रोफेसर एवं अध्यक्ष हिन्दी विभाग)
6. **डॉ० जंगबहादुर पाण्डेय,**(पूर्व प्रोफेसर एवं अध्यक्ष हिन्दी विभाग) रांची विश्वविद्यालय, रांची–**834008**
फोन :09431595318
7. **डॉ० माया मलिक,** (प्रोफेसर हिन्दी विभाग, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक
8. **डॉ० ममता सिहल,** (एसोसिएट प्रोफेसर एवं अध्यक्षा अंग्रेजी विभाग) जे०वी० जैन कॉलेज सहारनपुर

संपादकीय विशेषज्ञ समिति :
हिन्दी विभाग:

1. **डॉ० राजेश पाण्डे** (डी.वी. कॉलेज, उरई, जिला जालौन, उ०प्र०)
2. **डॉ० संजीव कुमार,** प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक
3. **डॉ० सुशील कुमार शर्मा** (अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, पूर्वोत्तर पर्वतीय विश्वविद्यालय शिलांग, मेघालय)
4. **डॉ० शशि मंगला,** पूर्व एसोसिएट प्रोफेसर एवं अध्यक्षा, हिन्दी विभाग, गोस्वामी गणेशदत्त सनातन धर्म स्नातकोत्तर महाविद्यालय, पलवल
5. **डॉ० के०डी० शर्मा,** एसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, गोस्वामी गणेशदत्त सनातन धर्म स्नातकोत्तर महाविद्यालय, पलवल
6. **डॉ० उत्तरा गुप्ता** (पूर्व रीडर एवं अध्यक्षा, हिन्दी विभाग, आर. एन. कॉलेज, मेरठ)
7. **मुकेश चन्द्र गुप्ता** (हिन्दी विभाग, एम.एच.पी.जी. कॉलेज, मुरादाबाद)
8. **डॉ० गीता पाण्डेय** (रीडर एवं अध्यक्षा, हिन्दी विभाग, एस.डी.

कॉलेज, गाजियाबाद)

9. **डॉ० प्रवीण कुमार वर्मा** (सह प्रोफेसर) हिन्दी विभाग, गोस्वामी गणेशदत्त सनातन धर्म महाविद्यालय, पलपल
10. **कु० महाविद्या उपाध्याय** (हिन्दी विभाग, राजकीय महाविद्यालय, आरोना (गुना) म०प्र०)
11. **डॉ० रूबी,** (सीनियर सहायक प्रोफेसर हिन्दी विभाग कश्मीर विश्वविद्यालय, श्रीनगर (कश्मीर) 09419058585
12. **डॉ. सुरेश कुमार** (सहायक प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, बी.एल.जे. एस. कॉलेज, तोशाम, भिवानी)
13. **डॉ० उर्मिला अग्रवाल,** पूर्व प्राचार्या, नेशनल इस्माईल महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मेरठ
14. **डॉ० शशिबाला अग्रवाल** (रीडर, हिन्दी विभाग, कनोहर लाल स्नातकोत्तर महिला महाविद्यालय, मेरठ)
15. **डॉ० अनिल कुमार विश्वकर्मा** (जनता महाविद्यालय अजीतमल, औरेया, उ०प्र०)
16. **डॉ० एम. के. कलशेट्टी,** हिन्दी विभाग, श्री माधवराव पाटिल महाविद्यालय, मुरूम तह० अमरगा, जिला उस्मानाबाद (महाराष्ट्र)–413605
17. **डॉ० मनोज पंड्या,** व्याख्याता हिन्दी विभाग, श्री गोविन्द गुरु, राजस्थान महाविद्यालय, बांसवाड़ा–327001, मो० 09414308404
18. **डॉ. कृष्णा जून,** प्रो० हिन्दी विभाग, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक
19. **डॉ. विपिन गुप्ता,** सहायक प्रोफेसर, वैश्य कॉलेज भिवानी
20. **डॉ० सीता लक्ष्मी,** पूर्व प्रो० एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, आन्ध्र विश्वविद्यालय, विशाखापट्टनम, आन्ध्रप्रदेश
21. **डॉ० जाहिदा जबीन,** (वरिष्ठ सहायक प्रो०, हिन्दी विभाग, कश्मीर विश्वविद्यालय, श्रीनगर–६)
22. **डॉ० टी०डी० दिनकर,** (एसो० प्रो० एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, अग्रवाल कॉलेज, बल्लभगढ़)
23. **डॉ० शीला गहलौत,** प्रोफेसर (हिन्दी विभाग) महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक)
24. **डॉ० राजीव मलिक,** (प्रो. एवं अध्यक्षा, हिन्दी–विभाग, भगत फूलसिंह महिला विश्वविद्यालय, खानपुर)
25. **डॉ० सुभाष सैनी,** (सहायक प्रोफेसर हिन्दी विभाग दयालसिंह कॉलेज, करनाल, हरियाणा
26. **डॉ० उर्विजा शर्मा,** (सहायक प्रोफेसर हिन्दी विभाग शम्भु दयाल स्नातकोत्तर, महाविद्यालय, गाजियाबाद
27. **डॉ० कामना कौशिक,** (सहायक प्रोफेसर हिन्दी विभाग एम.के. स्नातकोत्तर, महाविद्यालय, सिरसा 09896796006
28. **डॉ० मधुकान्त,** (वरिष्ठ साहित्यकार) 211- L मॉडल टाऊन, रोहतक
29. **डॉ0 किरण मिश्रा,** सहायक प्रोफेसर, राम गुलाब राय कालेज, गोरखपुर
30. **डॉ0 प्रवेश कुमारी,** सहायक प्रोफेसर बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय,रोहतक
31. **डॉ0 राजपाल,** सहायक प्रोफेसर राजकीय स्नातकोत्रर महाविद्यालय, हिसार

अंग्रेजी विभाग:

1. **डॉ. ममता सिहल, अध्यक्षा,** अंग्रेजी विभाग, जे.वी. जैन कॉलिज, सहारनपुर, उ.प्र
2. **डॉ. रणदीप राणा, प्रोफेसर,** अंग्रेजी विभाग, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक
3. **डॉ. जयवीर सिंह हुड्डा, प्रोफेसर,** अंग्रेजी विभाग, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक
4. **डॉ० रविन्द्र कुमार,** एसोसिएट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष अंग्रेजी विभाग, चौ० चरणसिंह विश्वविद्यालय, मेरठ
5. **डॉ. अनिल वर्मा** (पूर्व रीडर, अंग्रेजी विभाग, जे.वी. जैन स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सहारनपुर)
6. **डॉ. जे.के. शर्मा,** एसो. प्रोफेसर, अंग्रेजी विभाग, एस.जे.के कॉलेज, कलानौर (रोहतक)
7. **डॉ. रेशमा सिंह,** (एसो. प्रोफेसर, अंग्रेजी–विभाग, जे.वी. जैन कॉलेज, सहारनपुर)
8. **डॉ. पी.के. शर्मा,** (प्रो., अंग्रेजी–विभाग, राजकीय के.आर.जी. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, ग्वालियर)
9. **डॉ. गीता रानी शर्मा,** (सहायक प्रोफेसर) गो.ग.दत्त सनातन धर्म कॉलेज, पलवल
10. **डॉ. किरण शर्मा,** (एसोसिएट प्रोफेसर) राजकीय स्नातकोत्तर महिला महाविद्यालय रोहतक

वाणिज्य विभाग:

1. **डॉ० नवीन कुमार गर्ग** (वाणिज्य विभाग, शम्भुदयाल स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गाजियाबाद)
2. **डॉ० ए.के. जैन,** रीडर (वाणिज्य विभाग, जे.वी. जैन कॉलेज, सहारनपुर)
3. **डॉ० दिनेश जून,** एसोसिएट प्रोफेसर, वाणिज्य विभाग, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, फरीदाबाद
4. **डॉ० एम.एल. गुप्ता,** (पूर्व एसोसिएट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, वाणिज्य एवं व्यवसायिक प्रशासन संकाय, एस.एस.वी. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, हापुड़ एवं संयोजक–शोध उपाधि समिति एवं संयोजक बोर्ड ऑफ स्टीडिज चौधरी चरणसिंह विश्वविद्यालय, मेरठ)
5. **डॉ० वजीर सिंह नेहरा,** प्रोफेसर वाणिज्य विभाग, म.द.वि. रोहतक
6. **डॉ० संजीव कुमार,** प्रोफेसर वाणिज्य विभाग, म.द.वि. रोहतक
7. **डॉ. गीता गुप्ता,** (सहायक प्रोफेसर) वाणिज्य विभाग, वैश्य महिला महाविद्यालय, रोहतक)
7. **डॉ. नरेन्द्रपाल सिंह,** (एसोसिएट प्रोफेसर) वाणिज्य विभाग, साहू जैन कॉलेज, नजीबाबाद, उ.प्र.)

राजनीति शास्त्र विभाग:

1. **साकेत सिसोदिया,** (राजनीति शास्त्र विभाग, एस.डी. कॉलेज, गाजियाबाद)
2. **डॉ० रोचना मित्तल** (रीडर एवं अध्यक्षा, राजनीति शास्त्र–विभाग, शम्भु दयाल स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गाजियाबाद)
3. **डॉ० राजेन्द्र शर्मा** (एस.डी. कॉलेज, गाजियाबाद, उ०प्र०)
4. **डॉ० कौशल गुप्ता,** एसोसिएट प्रोफेसर, राजनीति शास्त्र विभाग, देशबन्धु महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली **Mob.: 09810938437**
5. **डॉ०पी.के. वार्ष्णेय,** एसोसिएट प्रोफेसर, राजनीति शास्त्र विभाग, जे.वी.जैन कॉलेज, सहारनपुर
6. **डॉ० सुदीप कुमार,** सहायक प्रोफेसर, राजनीति शास्त्र विभाग, डी.ए.वी. कॉलेज, पेहवा (कुरुक्षेत्र) **Mob.: 9416293686**
7. **डॉ० वाई०आर० शर्मा,** एसो० प्रो०, राजनीति शास्त्र विभाग, जम्मू

विश्वविद्यालय, जम्मू (कश्मीर)

8. **डॉ. रेनू राणा,** (सहायक प्रोफेसर, राजनीति शास्त्र विभाग, पं. नेकीराम शर्मा राजकीय महाविद्यालय रोहतक 124001
9. **डॉ. ममता देवी,** (सहायक प्रोफेसर, राजनीतिक शास्त्र विभाग, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक

इतिहास विभाग:

1. **डॉ० भूकन सिंह** (प्रवक्ता, इतिहास विभाग, शम्भुदयाल स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गाजियाबाद)
2. **डॉ० मनीष सिन्हा,** पी.जी. विभाग, इतिहास, मगध विश्वविद्यालय, बोधगया, बिहार–824231
3. **डॉ० राजीव जून,** सहायक प्रो० इतिहास, सी.आर इन्स्टीट्यूट ऑफ ला, रोहतक
4. **डॉ० मीनाक्षी** (सहायक प्रोफेसर इतिहास विभाग) सी.आर. किसान कॉलेज, जीन्द
5. **डॉ० जगवीर सिंह गुलिया,** (सहायक प्रोफेसर इतिहास विभाग राजकीय महाविद्यालय मकड़ौली कलां रोहतक

भूगोल विभाग:

1. **डॉ० पी.के शर्मा,** पूर्व रीडर एवं अध्यक्ष, भूगोल विभाग, जे.वी. जैन स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सहारनपुर
2. **रश्मि गोयल** (भूगोल विभाग, एस.डी. कॉलेज, गाजियाबाद)
3. **डॉ० भूपेन्द्र सिंह,** एसोसिएट प्रोफेसर, भूगोल विभाग, राजकीय पी.जी. कॉलेज, हिसार
4. **डॉ० विनीत बाला,** सहायक प्रो. भूगोल विभाग, वैश्य पी.जी. कॉलेज, रोहतक
5. डॉ० प्रदीप शर्मा, सहायक प्रोफेसर बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय,रोहतक

शिक्षा विभाग:

1. **डॉ० उमेन्द्र मलिक,** एसिस्टेंट प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, म.द.वि. , रोहतक
2. **डॉ० सरिता दहिया** असिस्टेंट प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, म.द.वि. , रोहतक
3. **डॉ० संदीप कुमार,** सहायक प्रो० शिक्षा विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
4. **डॉ० तपन कुमार बसन्तिया,** एसोसिएट प्रोफेस, सैंटर फॉर एजुकेशन, सैंट्रल यूनिवर्सिटी ऑफ साउथ बिहार, गया कैम्या, विनोभा नगर, वार्ड नं. **29, Behind ANMCH** मगध कालोनी, गया–**823001**बिहार**Mob.: 09435724964**
5. **डॉ० नीलम रानी,** प्राचार्या, गोल्ड फील्ड कॉलेज ऑफ एजुकेशन, बल्लभगढ़ (फरीदाबाद)
6. **डॉ० उमेश चन्द्र कापरी,** सहायक प्राफेसर, शिक्षा विभाग, गोल्ड फील्ड कॉलेज ऑफ एजुकेशन, बल्लभगढ़ (फरीदाबाद) **Mob.: 09711151966, 7428160135**
7. **डॉ० सुनीता बडेला,** एसो० प्रो०, शिक्षा विभाग, हेमवतीनंदन बहुगुणा केन्द्रीय विश्वविद्यालय, श्रीनगर, गढ़वाल–२४६१७४
8. **डॉ० (प्रो०) अनामिका शर्मा,** प्राचार्या, एम.आर. कॉलिज ऑफ एजुकेशन, फरीदाबाद
9. **डॉ० मनोज रानी,** सहायक प्रोफेसर (अंग्रेजी) एम.एल.आर.एस. कॉलिज ऑफ एजुकेशन, चरखी दादरी (भिवानी)
10. **डॉ० अनीता ढाका,** (प्राचार्या, आर.जी.सी.ई. कॉलेज, ग्रेटर, नोएडा।)
11. **डॉ० ममता देवी,** (सहा. प्रो. बी.आई.एम.टी. कॉलेज कमालपुर गढ रोड़, मेरठ)

शारीरिक शिक्षा विभाग:

1. **डॉ० राजेन्द्र प्रसाद गर्ग,** एसोसिएट प्रोफेसर शारीरिक शिक्षा विभाग, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक
2. **डॉ० सरिता चौधरी,** सहायक प्रोफेसर, शारीरिक शिक्षा विभाग, आर्य गर्ल्ज कॉलेज, अम्बाला कैंट, हरियाणा
3. **डॉ० वरुण मलिक,** सहायक प्रोफेसर, म.द.वि., रोहतक
4. **डॉ० सुनील डबास,** (पद्मश्री व द्रोणाचार्य अवार्ड) HOD in physical education"DGC Gurugram
5. **डॉ० हरेन्द्र सांगवान,** सहायक प्रोफेसर, शारीरिक शिक्षा विभाग, गोस्वामी गणेशदत्त सनातन धर्म महाविद्यालय, पलवल

समाज शास्त्र विभाग:

1. **प्रवीण कुमार** (समाजशास्त्र विभाग, शम्भुदयाल स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गाजियाबाद)
2. **डॉ० कमलेश भारद्वाज,** समाज शास्त्र विभाग, एस.डी. कॉलेज, गाजियाबाद

मनोविज्ञान विभाग:

1. **डॉ० चन्द्रशेखर,** सहायक प्रोफेसर साईक्लोजी विभाग, जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू
2. **डॉ. रश्मि रावत,** (मनोविज्ञान विभाग, डी.ए.वी. कॉलेज, देहरादून)
3. **अनिल कुमार लाल** (प्रवक्ता, मनोविज्ञान विभाग, शम्भुदयाल स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गाजियाबाद)

अर्थशास्त्र विभाग:

1. **डॉ० जसवीर सिंह** (पूर्व रीडर अर्थशास्त्र विभाग, किसान स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मवाना)
2. **डॉ० रेणु सिंह राना** (रीडर, अर्थशास्त्र विभाग, गिन्नी देवी मोदी कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मोदीनगर)
3. **डॉ० सुशील कुमार** (एस.डी. कॉलेज, गाजियाबाद, उ०प्र०)
4. **डॉ० अखिलेश मिश्रा** (प्राध्यापक, अर्थशास्त्र–विभाग, एस.डी.पी.जी. कॉलेज, गाजियाबाद)
5. **डॉ० सत्यवीर सिंह सैनी,** एसो०प्रो० (अर्थ०वि०, गो०ग० सनातन धर्म पी०जी० कॉलेज, पलवल)
6. **डॉ० सारिका चौधरी,** अध्यक्ष अर्थशास्त्र विभाग, दयाल सिंह कॉलेज करनाल

विधि विभाग:

1. **डॉ० नरेश कुमार,** (प्रोफेसर, विधि–विभाग महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक
2. **डॉ० विमल जोशी,** (प्रोफेसर, विधि–विभाग भगत फूलसिंह महिला विश्वविद्यालय खानपुर, सोनीपत)

3. **डॉ० जसवन्त सैनी,** (सहायक प्रोफेसर, विधि–विभाग महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक)
4. **डॉ० वेदपाल देशवाल,** (सहायक प्रोफेसर, विधि–विभाग महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक)
5 **डॉ. अशोक कुमार शर्मा,** एसो. प्रोफेसर, विधि विभाग, जे.वी. जैन कॉलेज, सहारनपुर
6 **डॉ. राजेश हुड्डा,** सहायक प्रो०, विधि विभाग, बी.पी.एस. महिला विश्वविद्यालय, खानपुर कलां, सोनीपत
7. **डॉ० सत्यपाल सिंह,** (सहायक प्रोफेसर, विधि–विभाग महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक)
8. **डॉ० सोनू,** (सहायक प्रोफेसर, विधि–विभाग महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक)
9. **डॉ० अर्चना वशिष्ठ,** (सहायक प्रोफेसर, के०आर० मंगलम विश्वविद्यालय, सोहना रोड, गुरुग्राम)
10. **डॉ० आनन्द सिंह देशवाल,** (सहायक प्रोफेसर, सी०आर० कॉलेज ऑफ लॉ रोहतक)
11. **अनसुईया यादव,** (सहायक प्रोफेसर, विधि विभाग, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक, हरियाणा)

गणित विभाग:

1. **डॉ० संजीव कुमार सिंह** (रीडर गणित विभाग, ए.आर.ई.सी. कॉलेज, खुरजा)
2. **डॉ० विनोद कुमार,** रीडर एवं अध्यक्ष गणित विभाग, जे.वी. जैन कॉलेज, सहारनपुर
3. **डॉ० मीनाक्षी गौड,** रीडर एवं अध्यक्षा गणित विभाग, नानकचन्द ऐंग्लो, संस्कृत कॉलेज, मेरठ
4. **डॉ० विरेश शर्मा,** लेक्चरर गणित विभाग, एन.ए.एस. कॉलेज, मेरठ
5. **डॉ0 रश्मि मिश्रा,** सहायक प्रोफेसर, जी0 एल0 बजाज इन्सटियुट ऑफ टैक्नोलजी एण्ड मैनेजमेन्ट नोएडा–201300, मौ0 8287829254

कम्प्यूटर विभाग:

1. **डॉ० रेखा चौधरी,** एसोसिएट प्रोफेसर, कम्प्यूटर विभाग, राजकीय इंजीनियरियंग कॉलेज, भरतपुर, राजस्थान
2. **प्रो० एस.एस. भाटिया** (अध्यक्ष, स्कूल ऑफ मैथमेटिक्स एण्ड कम्प्यूटर एप्लीकेशन, थापर विवि, पटियाला)
3. **सर्वजीत सिंह भाटिया** (प्रवक्ता, कम्प्यूटर साईंस, खालसा कॉलेज, पटियाला)
4. **डॉ० बालकिशन सिंहल,** सहायक प्रोफेसर, कम्पयूटर विभाग, म०द०विश्वविद्यालय, रोहतक

संस्कृत विभाग:

1. **डॉ० रामकरण भारद्वाज** पूर्व रीडर एवं अध्यक्ष, संस्कृत विभाग, लाजपत राय कॉलेज, साहिबाबाद (गाजियाबाद)
2. **डॉ० सुनीता सैनी,** एसो० प्रोफेसर संस्कृत विभाग, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक
3. **डॉ० साधना सहाय** पूर्व प्राचार्या, नेशनल इस्माईल स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मेरठ
4. **डॉ० सुमन,** (सहायक प्रोफेसर, संस्कृत–विभाग, आदर्श महिला महाविद्यालय, भिवानी।)
5. **डॉ0 दिनेश मणि त्रिपाठी {प्रधानाचार्य}** एल ० पी ० के ० इंटर कॉलेज सरदार नगर बसडिला {गोरखपुर}
6. **डॉ0 दानपति तिवारी,** एसो0 प्रोफेसर, एवं अध्यक्ष, साकेत पी0जी0 कालेज, अयोध्या, उत्तर–प्रदेश

रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग:

1. **डॉ० आर०एस० सिवाच,** पूर्व प्रो० एवं अध्यक्ष, रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग, म०द०वि०, रोहतक

दृश्यकला विभाग:

1. **डॉ० सुषमा सिंह,** एसोसिएट प्रोफेसर, दृश्यकला विभाग, म०द० विश्वविद्यालय, रोहतक

पंजाबी विभाग:

1. **डॉ० सिमरजीत कौर,** सहायक प्रो० (पंजाबी), ईश्वरजोत डिग्री कालेज, पेहवा (कुरूक्षेत्र)

संगीत विभाग:

1. **डॉ० संध्या रानी,** अध्यक्षा, संगीत विभाग, यूआरएलए, राजकीय पीजी कॉलेज, बरेली
2. **डॉ० हुकमचन्द,** पूर्व प्रोफेसर एवं अध्यक्ष तथा डीन, संगीत विभाग महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक, हरियाणा
3. **डॉ. अनीता शर्मा,** (संगीत–गायन प्राध्यापिका, जयराम महिला महाविद्यालय लोहारमाजरा (कुरुक्षेत्र)
4. **डॉ. वन्दना जोशी,** (सहायक प्राध्यापक, विभागाध्यक्ष, संगीत विभाग, एस.एस.जे. परिसर, अल्मोड़ा)

पत्रकारिता एवं जन संचार विभाग:

1. **डॉ० सरोजनी नंदल,** प्रोफेसर (पत्रकारिता एवं जन संचार विभाग) महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक

उर्दू विभाग:

1. **डॉ० मो. नूरूल हक,** (एसोसिएट प्रोफेसर, विभागाध्यक्ष, उर्दू, बरेली कॉलेज, बरेली)

An update on UGC - List Journals

The UGC List of Journals is a dynamic list which is revised periodically. Initially the list contained only journals included in Scopus, Web of Science and Indian Citation Index. The list was expanded to include recommendations from the academic community. The UGC portal wasa opended twice in 2017 to universities to upload their recommendations based on filtering criteria available at https://www.ugc.ac.in/journallist/methodology.pdf. The UGC approved list of Journals is considered for recruitment, promotion and career advancement not only in universities and colloges but also other institutions of higher education in India. As such, it is the responsibillity of UGC to curate its list of approved journals and to ensure the it contains only high-quality journals.

To this end, the Standing Committee on Notification on Journals removed many poor quality/ predatory/questionable journals from the list between 25th May 2017 and 19th Septemeber 2017. This is an ongoing process and since then the Committee has screened all the journals recommended by universities and also those listed in the ICI, which were re-evaluated and rescored on filtering criteria defined by the Standing Committee. Based on careful and analysis, 4,305 journals were removed from the current UGC-Approved list of Journals on 2nd May, 2018 because of poor quality/incorrect or insufficient information/ false claims.

The Standing Committee reiterates that removal/non-inciusion of a journal does not necessarily indicate that it is of poor quality, but it may also be due to non-availability of information such as details of editorial board, indexing information, year of its commencement, frequency and regularity of its publication schedule, etc. It may be noted that a dedicated web site for journals is once of the primary criteria for inclusion of journals. The websites should provide full postal addresses, e-mail addresses of chief editor and editors, and at least some of these addresses ought to be verifiable official addresses. Some of the established journals recommended by universities that did not have didicated websites, or websites that have not been updated, might have bee dropped from the approved list as of now. However, they may be considered for re-inclusion once they fulfil these basic criteria and are re-recommended by universities.

The UGC's Standing Committee on Notification on Journals has also decided that the recommendation portal will be opened once every year for universites to recommend journals. However, from this year onwards, every recommendation submitted by the universities will be reviewed under the supervision of Standing Committee on Notification of Journals to ascertain that only good-quality journals, with correct publication details, are included in the UGC approved list.

The UGC would also like to clarity that 4,305 journals which have been removed on 2nd May, 2018 were UGC-approved journals till that date and, as such, articles published/accepted in them prior to 2nd May 2018 by applicants for recruitment/promotion may be considered and given points accordingly by universities.

The academic community will appreciate that in its endeavour to curate its list of approved journals, UGC will enrich it with high-quality, peer-reviewed journals. Such a dynamic list is to the benefit of all.

LIFE MEMBERS OF INDIAN JOURNAL OF SOCIAL CONCERNS

1. **Dr. Praveen Kumar Verma**
   Associate Professor, Hindi Department, GGD Sanatan Dharam Post Graduate College, Palwal.

2. **Smt. Veena Pandey (Shukla)**
   Hindi Teacher, Jawahar Navodya Vidyalya, Dhoom Dadri, Distt. Gautambudhnagar - 203207 (U.P.)

3. **Dr. Kiran Sharma**
   Asso.Professor, English Department, Govt. P.G. College (Women), Rohtak (Haryana)

4. **Dr. Narayan Singh Negi**
   H.No. 15, Umracoat, langasu-246446, Distt. Chamoli, Uttrakhand.

5. **Dr. Sarika Choudhary**
   Head Department of Economics, Dyal Singh College, Karnal (Haryana)

6. **Dr. Suman**
   H.No. 1001, Radha Swami Colony, Rohtak Road, Bhiwani (Haryana)

7. **Dr. Reshma Singh**
   Assistant Professor, English Department, J.V. Jain College, Saharanpur (U.P.)

8. **Dr. Savita Budhwar**
   Assistant Professor, K.V.M. Narsing College, Rohtak.
   H.No. 196/29, Gali No. 9, Ram Gopal Colony, Rohtak.
   Mob. 9996363764

9. **Principal**
   Sat Jinda Kalyana College, Kalanaur (Rohtak, Haryana) 124113

10. **Dr. Renu Rana**
    Assistant Professor Department of (Political Science) Pt. Nekiram Sharma Govt. College Rohtak-124001
    H.No. 1355, Sect-2, Rohtak

11. **Dr. Mamta Devi**
    Assistant Professor Department of Polt. Science Hindu Girls College, Sonepat (Haryana)
    H. No. 2066, Sect. 2 (P), Rohtak 124001

12. **Dr. Subhash Chand Saini** (Hindi Department, Dyal Singh College, Karnal, Haryana

13. **Dr. Sarita Dahiya** (Department of Education, Maharshi Dayanand University, Rohtak 8222811312

14. **Dr. Vimla Devi,** Assistant Professor (History), Swami Vivekanand Govt. (PG) College, Lohaghat, Champawat (Uttrakhand)

15. **Princepal,** Associat Professor (Hindi), Aggarwal College, Ballabhgarh (Haryana)

16. **Dr. Dinesh Mani Tirpathi (Principal)** L-P=-K Inter College sardar Nagar, Basdila Gorkhpur

अनुक्रमणिका

क्र.	विषय	लेखक	पृष्ठ स.
1.	वैशेषिक दर्शन के प्रणेता कणाद	संतोष कुमार साह	9–11
2.	विपदा जीवित है कहानी संग्रह : आप के जीवित होने का दस्तावेज	डॉ0 सुधांशु कुमार शुक्ला	12–16
3.	क्रान्तिकारी और कम्युनिस्ट आंदोलन में महिला भागीदारी भूमिका का एक अध्ययन	डॉ0 नीरज कुमार	17–20
4.	किन्नर : अर्थ एवं परिभाषा	कुलदीप	21–22
5.	ग़ज़ल गायकी का बदलता स्वरूप	डॉ0 हुमा मसूद	23–27
6.	स्त्री–पुरुष लिंगानुपात : पश्चिमी उत्तर प्रदेश	डॉ0 प्रदीप कुमार शर्मा, डॉ0 सारिका त्यागी	28–30
7.	नारी ईश्वर की सर्वोत्तम कृति है	डॉ0 अनिता कुमारी	31–32
8.	हरियाणा प्रदेश की शिक्षण संस्थाओं में वाद्य संगीत की वर्तमान स्थिति का मूल्यांकन	हरमती कौर	33–35
9.	मृदुला गर्ग के उपन्यासों में स्त्री संघर्ष	विजय कुमारी भारद्वाज	36–37
10.	हरियाणा प्रदेश की शिक्षण संस्थाओं में सितार वाद्य को लोकप्रिय बनाने के उपाय	हरमती कौर	38–40
11.	'कफन' कहानी और दलित संवेदना	डॉ0 नियतिकल्प	41–44
12.	वितस्ता की पुत्री लल्लेशवरी,सहजानंद और कबीर दास का काव्यः बहता नीर....	नीलोफर जान	45–46
13.	व्यंग्य के कवि भवानी प्रसाद मिश्र	डॉ0 पुष्पा रानी	47–49
14.	शिमला जनपद की देव परम्परा	सन्तोषकुमार	50–53
15.	भारतीय संस्कृति और नज़ीर अकबर आबादी की शायरी	डॉ0 हुमा मसूद	54–58
16.	महिला सशक्तिकरण में शिक्षा की भूमिका	डॉ0 ललिता कुमारी, रशिम सिंह	59–63
17.	आदिवासी विस्थापन की समस्या	ललिता बाई	64–65
18.	व्यासशिक्षाया रचनाविधा	डॉ0 दानपति तिवारी	66–68
19.	मालती जोशी के कथा साहित्य में नारी संवेदना	सविता	69–72
20.	प्राकृतिक आपदाएं : कितनी प्राकृतिक, कितनी मानवीय	डॉ0 निभारानी	73–75
21.	वैदिक भाषा मे अभिनिधान	डॉ0 दिनेश मणि त्रिपाठी	76–77
22.	झारखंड में लुप्त होती जा रही भाषिक संस्कृति को संजोने में वंदना टेटे का योगदान	जया जेसवाल	78–80
23.	मालती जोशी की कहानियों में बाल मनोविज्ञान	सविता	81–84
24.	राजनीति के गलियारों में महिलाओं के बदले कदम का एक मूलयांकन	डॉ0 नीरज कुमार	85–87
25.	Canterbury Tales – A Mirror Work Of Fourteenth Century By Geoffrey Chaucer	Dr Jayshree Hazarika, Harshit Kumar Arya	88–89
26.	ERP Implementation In Textile Industries	Dr. Santosh Kumar Sharma	90–93
27.	Marketing Communication Tool Selection on Basis of Family Life Cycle Stages In Indian Context	Sakshi Sharma	94–97
28.	Clinical Profile of Children with Intellectual disability	Jai Prakash, Sonalika Suman	98–102
29	Perceptions toward Online Learning during Covid -19 Pandemic	Dr Umender Malik	103–106
30.	Self-confidence, Educational Anxiety & Achievement Motivation of Government And Private Secondary School Students: A Comparitive Study	Pramila Malik, Mohini	107–110
31.	Teachers in Nation Development	Aparna, Poonam Mor	111–112
32.	Developmet In Banking Sector Through Fintech Startups In India	Dr. Sarika Choudhary,	113–116
33.	Cyber Crimes Against Women in India	Pooja Sangwan	117–120

अनुक्रमणिका

1

वैशेषिक दर्शन के प्रणेता कणाद

संतोष कुमार साह

सारांश –

विभिन्न भारतीय दार्शनिक सम्प्रदायों के प्रवर्त्तकों में कणाद एक विशिष्ट स्थान रखते हैं। वैशेषिक दर्शन की रचना का श्रेय कणाद को दिया जाता है। यह दर्शन ''औलुक्य'', 'कणाद' एवं 'पाशुपत' दर्शन के नामों से भी जाना जाता है। माना जाता है कि जिस प्रकार संस्कृत के विद्यार्थी के लिए पाणिनी के व्याकरण का अध्ययन अपरिहार्य है, उसी प्रकार भारतीय दर्शन के अध्येता के लिए वैशेषिक दर्शन महत्वपूर्ण है। इससे षड्दर्शन में वैशेषिक दर्शन का महत्व स्पष्ट हो जाता है।

कणाद के विषय में स्पष्ट तौर पर बहुत कुछ ज्ञात नहीं है। माना जाता है कि उनका काल छठी शताब्दी ई0 पू0 था, किन्तु कुछ लोग उन्हें दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व का मानते हैं। उनके काल की तरह उनके जन्म के सम्बन्ध में भी ऐतिहासिक तौर पर निश्चित तथा निर्विवाद रूप से कुछ कहना कठिन है। कतिपय लोगों का विश्वास है कि वे गुजरात के प्रभास क्षेत्र में (द्वारका के निकट) पैदा हुए थे। पर प्राचीन मिथिला के इतिहास के विशेषज्ञ प्रो0 उपेन्द्र ठाकुर ने अपनी पुस्तक **हिस्ट्री ऑफ मिथिला** में कणाद को मिथिला का बताया है। उनकी इस स्थापना को इस बात से बल मिलता है कि मिथिला की धरती प्राचीन काल से ज्ञान और दर्शन के क्षेत्र में अग्रगण्य रही है। गौतम और कपिल का जन्म तो मिथिला में हुआ ही था, ऐसा लगता है कि कणाद गौतम और कपिल एक ही शृंखला की कड़ियाँ थे। कणाद के लिए अन्य कई नामों का उल्लेख मिलता है, जैसे कणभुक्त, कणकाचार्य कणभक्ष, कणकावतार इत्यादि। किन्तु इन सभी नामों में एक बात समान है– 'कण' से साहचर्य। 'कण' का अर्थ अन्न कणों या भोजन के बिखरे हुए अंश से है। कणाद के विषय में कहा जाता है कि वह अन्न कणों को खेत से चुनकर अपने जीवन का निर्वाह किया करते थे, इसीलिए उनका नाम कणाद पड़ा। अप्रत्यक्ष रूप से कणाद द्वारा प्रवर्तित आणविक सिद्धान्त, जहाँ 'अणु' का अर्थ 'कण' से है, इस नामकरण का कारण हो सकता है। इस मत के समर्थन में एक अन्य विशेषण पैलुक और पैलुकंठ का उल्लेख आता है, जहाँ 'पीलू' का प्रयोग 'अणु' के अर्थ में हुआ है।

श्रीधर की **न्यायकंदली** के अनुसार ऋषि कणाद खेतों और मार्गों में बिखरे हुए लावारिस अन्नकणों को समेट कर अपना गुजारा करते थे। इससे उनकी उच्चतम स्तर की तपश्चर्या का निर्देश मिलता है। एच0 उई ने अपनी पुस्तक **वैशेषिक फिलॉसफी** में चीनी स्रोतों के आधार पर कणाद के तपस्वी जीवन के कुछ विवरण प्रस्तुत किए हैं। उसमें एक कथा यह है कि कणाद अपने भोजन के लिए कणों का संग्रह रात्रि में किया करते थे। रात्रि के समय कणाद का आजीविका प्रबन्ध उल्लू की जीवन पद्धति से मेल खाता था, इस कारण उन्हें ''उलूक'' नाम भी दिया गया। कई पुस्तकों में ''उलूक'' नाम से ही कणाद का उल्लेख मिलता है।

शायद ''उलूक'' कणाद का असली नाम था। महाभारत में जब भीष्म शर शय्या पर पड़े थे तब उनके पास उलूक नाम के ऋषि की उपस्थिति का उल्लेख मिलता है। पुनः गोत्र नाम के अनुसार ऋषि के लिए काश्यप नाम का उल्लेख आता है, अर्थात् वह या तो कश्यप के पुत्र थे अथवा उनके वंशज। विभिन्न ग्रन्थों में वैशिषक दर्शन के प्रणेता के लिए ऋषि, मुनि, महर्षि और देवर्षि इत्यादि विवरण मिलते हैं। किन्तु यह कुतूहल का विषय है कि एक सूत्र में कणाद ऋषि से अपनी भिन्नता बतलाते हैं। कुछ विचारक मानते हैं कि भगवान शंकर ऋषि कणाद के सम्मुख प्रकट हुए और उन्हें वैशेषिक के सिद्धान्तों की शिक्षा दी।

कणाद के भगवान शंकर का शिष्य होने की बात का समर्थन उदयन ने भी किया है। उदयन ने अपने लेख में शंकर की कृपा के फलस्वरूप ऋषि द्वारा रचित शास्त्र का उल्लेख किया है **पदार्थधर्मसंग्रह** के समापन छन्द में वे प्रशस्तपाद, कनकाभुक को श्रद्धांजलि देते हैं, जिसने महान् ईश्वर के अनुग्रह तथा अलौकिक साधना तथा योगाचार से **वैशेषिकशास्त्र** की रचना की। यह योग पशुपत् योगशास्त्र के समरूप है, जिसके साथ कपिल के सम्बन्ध को कई विद्वानों ने स्वीकारा है। **वायुपुराण** इस सम्बन्ध को स्वीकार करता है और कणाद अथवा अक्षपाद, उलूक और वत्स को सोमाश्रमण का पुत्र बतलाता है, जिन्हें प्रभास के सताइसवें परिवर्त्त में महेश्वर का अवतार बतलाया गया है।

उत्तर पद्म पुराण पुनः यह दर्शाता है कि पाशुपत एवं अन्य शैव दर्शन स्वयं ईश्वर की ही कृतियाँ हैं जबकि कणाद, गौतम और कपिल ने उनसे प्रेरणा लेकर क्रमशः वैशेषिक, न्याय तथा सांख्य दर्शन का प्रवर्तन किया। भट्ट वारीन्द्र भगवान शंकर द्वारा रचित प्राचीन **वैशेषिकसूत्र** की चर्चा करते हैं, किन्तु इसका उल्लेख किसी अन्य ग्रन्थ में नहीं मिलता है।

वेदों में देवी–देवताओं के लक्षणों, बलिदान तथा बलिदान में प्रयोग होनेवाली वस्तुओं, आत्मा इत्यादि का विवेचन किया गया है और हम पाते हैं कि कणाद अपनी पूरी पुस्तक में इसी

प्रकार के विवेचन में संलग्न हैं। कुछ विद्वानों ने कणाद द्वारा विवेचित 'धर्म' के प्रत्यय को मीमांसा के 'धर्म' विवेचन से जोड़कर, मीमांसा दर्शन को वैशेषिक दर्शन की उत्पत्ति का स्रोत सिद्ध करने का प्रयास किया है। वैसे यह मत ऋषि द्वारा घोषित उद्देश्य के साथ मेल नहीं खाता है। समाज में सद्धर्म और विधर्म के बीच भेद और तुलना के आधार पर पदार्थ धर्म के लक्षणों को सुनिश्चित करने की प्रथा प्राचीन वैदिक समाज में ही आरंभ हो गई थी, विशेष तौर पर उन बलिदान करनेवालों के बीच जो दोषरहित वस्तुओं जैसे विभिन्न तरह के चढ़ावों, हवन इत्यादि द्वारा ही यज्ञ करने की प्रवृत्ति रखते थे। अब किसी भी धार्मिक अनुष्ठान में वस्तुओं के उचित प्रयोग के लिए वस्तुओं के गुण को जानना आवश्यक था। वैदिक समाज में यज्ञ तथा अन्य धार्मिक अनुष्ठानों के लिए स्थापित नियमादि को ही कणाद ने सुव्यवस्थित करते हुए विस्तृत आधार प्रदान किया। वेद, ब्राह्मण, वैदिक अनुष्ठान तथा परम्परा का बारंबार उल्लेख, कुछ विद्वानों द्वारा उनको वेद–विरोधी सिद्ध करने के प्रयास के निषेध के रूप में भी देखा जा सकता है।

कभी–कभी कणाद को नास्तिक कहा जाता है, किन्तु यह भी सही नहीं है। 'नास्तिक' पद का कोई निश्चित अर्थ नहीं है। सामान्यतया किसी को नास्तिक तब कहा जाता है जब वह (i) पुनर्जन्म, (ii) कर्म के सिद्धान्त, (iii) ब्रह्मांड के रचयिता के रूप में ईश्वर का अस्तित्व अथवा (iv) वेद की सत्ता में विश्वास नहीं करता है। कणाद और उनके अनुयायी, निस्संदेह, पुनर्जन्म और कर्म के सिद्धान्त में विश्वास करते हैं। ऊपर के विवरण में हमने देखा कि वह वेद की सत्ता में भी विश्वास करते हैं। हमने यह भी देखा कि परम्परा उन्हें पाशुपत या माहेश्वर सिद्ध करता है। किन्तु वैशेषिक सूत्र में कहीं भी ईश्वर की चर्चा नहीं मिलती है। इसके सभी भाष्यकार, जिनके बारे में जानकारी उपलब्ध है, ईश्वरवादी थे और उन्होंने कणाद को ईश्वरवादी के रूप में ही चित्रित किया है।

वैशेषिक सार–संग्रह के भी अधिकांश लेखक ईश्वरवादी हैं। कणाद स्वयं पाशुपत थे और पुराण उन्हें गौतम के साथ पाशुपतार्थ कहते हैं। पुनः कणाद को प्रारम्भ से ही आस्तिक माना जाता रहा है तथा उनका दर्शन छः आस्तिक दर्शनों में से एक माना जाता है। फिर भी यदि किसी को कणाद के ईश्वरवादी होने में संदेह है, तब भी उन्हें सांख्य और मीमांसा के समान आस्तिक की श्रेणी में ही रखना होगा। कारण यह है कि ये दोनों दर्शन ईश्वर में विश्वास नहीं रखने के बावजूद नास्तिक नहीं कहे जा सकते। विभिन्न भारतीय दर्शनिक सम्प्रदायों में कणाद की पुस्तक मात्र मीमांसा और सांख्य की चिन्तनधारा को ही पूर्वमान्यता देती है, किन्तु मीमांसा और सांख्य के वर्तमान साहित्य का उसमें कहीं भी उल्लेख नहीं है। लिपिबद्ध होने से पूर्व दोनों दर्शनों का लम्बा इतिहास रहा है। अतः उन दोनों दर्शनों से वैशेषिक दर्शन का कोई सम्बन्ध स्थापित नहीं किया जा सकता। बुद्ध तथा बौद्ध साहित्य की भी कोई चर्चा कणाद की पुस्तक में नहीं मिलती है। दूसरी तरफ, पारम्परिक चीनी ग्रन्थों में कणाद का काल बुद्ध से आठ शताब्दी पूर्व का माना गया हैं कहा गया है कि बुद्ध ने अपनी युवावस्था में वैशेषिक दर्शन का अध्ययन किया था।

आधुनिक विद्वान कणाद को बुद्ध का पूर्ववर्ती मानने पर सहमत नहीं हैं। उनके इस मत का आधार यह है कि कौटिल्य ने जिन शास्त्रों को अन्वीक्षकी के रूप में स्वीकार किया उनमें वैशेषिक दर्शन का उल्लेख नहीं है। कौटिल्य के अर्थशास्त्र में 'योग' का व्यवहार मात्र न्याय के लिए हुआ है, अथवा न्याय और वैशेषिक दोनों के लिए, कहना कठिन है। कणाद की एकमात्र उपलब्ध पुस्तक **वैशेषिकदर्शन** सूत्रबद्ध श्लोक के रूप में है। इसे दस अध्यायों में विभक्त किया गया है, इस कारण इस ग्रन्थ को दसलक्षिणी भी कहा गया है। हर अध्याय को दो अह्निकाओं में विभक्त किया गया है। कुछ भाष्यकार, जिनमें चन्द्रानन्द का नाम प्रमुख है, अंतिम तीन अध्यायों में अह्निका की संख्या एक मानते हैं। **सर्वदर्शन संग्रह** भी इस मत की पुष्टि करता है।

वैशेषिक दर्शन के प्रथम अध्याय में द्रव्य, गुण, सामान्य, क्रिया तथा विशेष आदि पाँच पदार्थों का विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में विभिन्न द्रव्यों का, जिनमें आत्मा तथा मन सम्मिलित नहीं हैं, विवेचन किया गया है। आत्मा और मन, इन्द्रियों के विषयों तथा अनुमान के स्वरूप का विवेचन तृतीय अध्याय में किया गया है। चतुर्थ अध्याय का मुख्य विषय परमाणुओं द्वारा विश्व की रचना है। पंचम अध्याय में क्रिया का स्वरूप और उसके प्रकार बताए गए हैं। नैतिक समस्याओं पर षष्ठ अध्याय में विचार किया गया है। सप्तम् अध्याय में गुण, आत्मा तथा समवाय सम्बन्धी प्रश्नों का विवेचन है। अन्तिम तीन अध्याय मुख्य रूप से तर्क विषयक हैं और इनमें प्रत्यक्षज्ञान, अनुमान तथा कारणभाव के सिद्धान्त का प्रतिपादन किया गया है।

कणाद के सूत्र और वैशेषिक सिद्धान्तों का उपयोग करीब–करीब सभी दार्शनिक सम्प्रदायों ने किया है। सभी दार्शनिक सम्प्रदायों पर किसी एक सम्प्रदाय का इतना प्रभाव अन्यत्र कहीं नहीं दिखता।

बादरायण का **धर्मसूत्र** भी वैशेषिक दर्शन को पहले से मानता है। शंकर, **शारीरकभाष्य** और **उपनिषद्** के भाष्यों में वैशेषिक की विचारधारा का खण्डन करते हैं। यही स्थिति **ब्रह्मसूत्र** के अन्य भाष्यकारों की भी रही है। श्री हर्ष और चित्तसुख ने वैशेषिक विचारधारा का खण्डन करने में काफी परिश्रम किया है। **सांख्यकारिका** पर आधारित **युक्तिदीपिका** महत्वपूर्ण वैशेषिक साहित्य है।

अक्षपाद के दर्शन और वैशेषिक दर्शन में बहुत सी बातें सामान्य हैं। न्याय और वैशेषिक सजातीय दर्शन – सामान्य

तन्त्र माने जाते हैं। दोनों का सम्बन्ध, दोनों के दर्शन जितना ही पुराना है। वात्स्यायन का **न्यायभाष्य** और उद्योतकर की **न्यायवर्त्तिका** वैशेषिक दर्शन के प्रति अपना झुकाव प्रकट करती हैं। कई स्थानों पर वह वैशेषिक सूत्र को उद्धृत कर उसकी व्याख्या भी करते हैं। इस प्रकार दोनों दर्शनों के बीच गहरा सम्बन्ध स्थापित हुआ और अन्ततोगत्वा दोनों का विलय हो गया।

साहित्यिक कृतियों और चिकित्साशास्त्र के ग्रन्थों में वैशेषिक दर्शन का प्रभाव दिखता है। उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि कणाद की विचारधारा ने प्राचीन भारतीय विचारधारा को उर्वर बनाया। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि इस विचारधारा से कोई भी दर्शनिक सम्प्रदाय निरपेक्ष नहीं रह पाया। उन्होंने या तो वैशेषिक विचारधारा को अपनाया, या उसका खण्डन किया।

संदर्भ ग्रन्थों की सूचीः–

1. सुरेन्द्रनाथ दासगुप्ता, **हिस्ट्री ऑफ इंडियन फिलॉसफी,** खण्ड–1, दिल्ली, 1975.
2. एस0 राधाकृष्णन्, **इंडियन फिलॉसफी,** खण्ड–2, बम्बई, 1977.
3. एम0 हिरियाना, **आउटलाईंस ऑफ इंडियन फिलॉसफी**, नई दिल्ली, 1979.
4. एस0 राधाकृष्णन् (सम्पादक), **हिस्ट्री ऑफ फिलॉसफी ईस्टर्न एण्ड वेस्टर्न,** लंदन, 1952.
5. यदुनाथ सिंहा, **ए हिस्ट्री ऑफ इंडियन फिलॉसफी,** कलकत्ता, 1952.

संतोष कुमार साह
शोधार्थी,
प्राचीन भारतीय इतिहास पुरातत्त्व
एवं संस्कृति विभाग
ल० ना० मि० विश्वविद्यालय, दरभंगा।

2

विपदा जीवित है कहानी संग्रह : आप के जीवित होने का दस्तावेज

डॉ0 सुधांशु कुमार शुक्ला

सारांश –

डॉ0 रमेश पोखरियाल निशंक का कहानी संग्रह (शिवपदा जीवित है) पढ़ने के उपरांत गीता के एक अद्भुत भाष्यकार के रूप में मैंने उन्हें जाना। बड़ी ही सहजता, सरलता और सुबोधमयी ढंग से गीता के श्लोक–

सुख दुःखे समे कृत्वा लाभालाभौ जयाजयौ।
ततो युद्धाय युज्यस्व नैवं पापमवाप्स्यसि।।

की व्याख्या इतनी प्रेरक होगी कि जीवन का अर्थ ही बदल जाएगा। युग्म भावों को एक समान जीने वाला व्यक्ति ही युद्ध की तैयारी कर सकता है। यह युद्ध क्षेत्र अर्जुन के सामने था। भगवान श्रीकृष्ण ने यही युद्ध क्षेत्र सामान्य जनों को सामान्य जीवन के रूप में बताया है और केवल कर्म की ओर प्रेरित किया। रमेश जी लिखते हैं– सुख हो या दुख जीवन में इनका आना जाना लगा रहता है। दोनों का मनुष्य जीवन में अपने प्रकार का स्थान है। एक और सुख हमें अलौकिक आनंदानुभूति देता है तो दूसरी ओर दुख हमें आत्मानुभूति करवाता है और दोनों ही जीने के लिए प्रेरणा देते हैं। बार–बार आने वाला संकट विपदा कहलाता है। खुशियों के क्षण बहुत छोटे होते हैं। इसीलिए उनके गुजरने का पता नहीं चलता। विपदा बहुत बड़ी प्रतीत होती है और गुजर जाने के बाद भी स्मृति पटल पर हमेशा जीवित रहती है। इसलिए विपदा के गुजर जाने के बाद जो अनुभूति होती है, उसे व्यक्त नहीं किया जा सकता। (विपदा जीवित है, पेज–4)

यह भाव, यह अनुभूति जो व्यक्ति जीवन में समझने लगता है वह जीवन से जुड़ा व्यक्ति कहलाता है। वह व्यक्ति लाल बहादुर शास्त्री कहलाता है, वह व्यक्ति अटल बिहारी बाजपेई कहलाता है, वह व्यक्ति रमेश पोखरियाल कहलाता है। यही कारण है कि उनके जीवन में विपदा का भाव सदा जीवित है। वह अपने बाल्यकाल के अभावग्रस्त जीवन को सदा याद करके दुखी नहीं होते, अपितु अभावग्रस्तों की चिंता करके चिंतित ही नहीं होते, बल्कि उनके लिए समाधान ढूँढ़ते हैं। वे हमेशा विपदा को अपना हँसमुख मित्र समझकर बात करते हैं। दुख के समय में भी सकारात्मक सोच के कारण मीठी रसधारा बहाने वाले साहित्यकार दुर्लभ होते हैं, वे ही सच्चे साहित्यकार कहे जाते हैं। निशंक जी उनमें से एक हैं।

विपदा जीवित है कहानी संग्रह में मात्र 11 कहानियाँ हैं। यह कहानियाँ उद्देश्यपरक, लक्ष्यपरक होने के कारण पठनीय और संग्रहणीय हैं। इस संग्रह की पहली कहानी का शीर्षक विपदा जीवित है यह केंद्रीय कहानी भी कही जा सकती है। इस संग्रह की सभी कहानियों को जब हम पढ़ते और विचार करते हैं तो हमें अपने आप ही समझ आ जाता है कि कहानी संग्रह का नामकरण कितना सार्थक है। विपदा जीवित है कहानी में पौड़ी गढ़वाल के परिवेश को दिखाया गया है। कहानी में बस में बैठे व्यक्ति का चित्रण इस प्रकार है– खद्दर का मैला–कुचौला सा कुर्ता, उसके ऊपर बास्कट, नीचे काले रंग का पैंट और बाहर से काली त्यूंखी पहने हुए बड़ा मासूम सा चेहरा। उम्र यही कोई 35 वर्ष के लगभग किंतु वेशभूषा वृद्धों जैसी। (पेज–5) यहीं से कहानीकार की बातचीत शुरु होती है। कहाँ उतरना है वकरोड़ा गाँव? वहाँ से चार किलोमीटर पैदल चढ़ाई अर्थात् पहाड़ों पर यातायात के साधन इतने संपन्न नहीं है कि हर जगह तक वाहन जा सकें। रमेश जी की अन्य कहानियों में भी पहाड़ी जनजीवन की इस समस्या को चित्रित करके, उनकी जटिल दैनिक चर्या का वर्णन किया गया है। लेखक उस व्यवसाय की गरिमा, उसकी धार्मिकता को भी लक्षित करके चलता है। हमें अपने काम को निपटाना, काम करना, नौकरी भर करने का भाव वास्तव में होश आने पर व्यथित करता है। यह भाव हमें ही अकर्मण्य नहीं बनाता है, समाज को भी अकर्मण्यता से भर देता है। लेखक एक पत्रकार की भूमिका में दिखाई देता है। सरकार, सरकार द्वारा निर्धारित योजनाओं, उनके कार्यान्वित होने तक उस में आने वाली समस्याओं और समाधानों को सरकार और जन जन तक पहुँचाना ही पत्रकार की भूमिका होती है। मुझे विश्वास तो नहीं हो रहा था किंतु वह सच बोल रहा था। गैरसैंण काफी पिछड़ा क्षेत्र है। अभी तक गाँव में पूरे जीवनोपयोगी साधन नहीं पहुँच पाए हैं। सड़क तो बहुत ही कम हैं। स्वास्थ्य, शिक्षा और पेयजल जैसी मूलभूत सुविधाओं की पहाड़ के हर गाँव को अभी आवश्यकता है।..... पौड़ी से एक अखबार निकालना शुरू किया था मैंने। और उसी के संदर्भ में पहाड़ के लगभग सभी जिलों में मुझे भ्रमण करना था।..... सारे कस्बों और बाजारों में घूम–घूम कर मैंने अखबार भेजने और समाचार संकलन की व्यवस्था कर ली थी। (पेज–6)

लेखक और उस व्यक्ति की बातचीत से पशु ऋण लेने की सरकारी योजनाओं का प्राणलेवा उपक्रम दिखलाई पड़ता है। किसान ऋण लेने के लिए दलालों के मकड़जाल में फँसकर रह जाते हैं, असहनीय वेदना सहते हैं, अंत में उनके हाथ में कुछ भी नहीं लगता या नहीं के बराबर ही कुछ मिलता है। ऐसी हालत में जिंदादिली से जीने वाले ग्रामीण युवक विपदा को हँसते–हँसते जीते हैं। कहानी अगर यही समाप्त होती तो कहानी सामान्य सी बनकर रह जाती। विशिष्ट कहानीकार सामान्य सी घटना को विशिष्ट

बनाकर जन–जन की संवेदना को जगाकर अपना बना लेता है। रमेश जी उस व्यक्ति के बस से उतरने पर उसका नाम पूछते हैं। वह व्यक्ति अपना नाम विपदा जाते–जाते कह जाता है। यह विपदा आज भी लेखक, कहानीकार, पत्रकार के मन को द्रवीभूत करती है। तब से 20 वर्ष गुजर चुके हैं। मैंने रोज अखबार में गरीबों और गाँव की समस्याओं तथा आवश्यकताओं को अपनी पहली खबर बनाया। आज तक लगातार लिख रहा हूँ। विपदा तब से आज तक पुनः मुझे नहीं मिला। वह अब जीवित होगा भी या नहीं मुझे नहीं मालूम। लेकिन मेरे हृदय में आज भी वह जीवित है, जो आज भी मुझे असहाय, बेबस, गरीबी का संत्रास झेल रहे विपदा जैसे हजारों–हजार मानव जाति के लिए कुछ कर गुजरने का संबल प्रदान करते हुए सदा प्रेरित करती रहती हैं। (पेज–10)

कहानीकार का पात्र विपदा त्रासदी भरी जिंदगी में भी सकारात्मक सोच के साथ जीवन व्यतीत करता है। वह यह बात भली–भाँति समझता है कि सरकार द्वारा गाँव के लिए नित्य नई–नई योजनाएँ आ रही हैं। भ्रष्टाचारी बाढ़ रूपी नदी का बहाव ऊपर से नीचे तक गंदगी फैलाए हुए है। जिस दिन यह बहाव रुक जाएगा, गाँव उन्नत समृद्ध हो जाएँगे। गाँव का पलायन रुक जाएगा। यह बात हर पत्रकार, मीडिया द्वारा उठाई और सरकार तक पहुँचाई जानी चाहिए। सरकार के प्रयास विफल ना हो। यह खबर वह लेखक द्वारा छपवाने का आश्वासन लेकर चला जाता है। वास्तव में टी.आर.पी. के चक्कर में दिखाया ही कुछ का कुछ जाता है। खुशहाल बनाने वाले गाँव की ओर से हम विमुख होते जा रहे हैं। जो पत्रकार जन–जन से जुड़ी छोटी से छोटी खबर को भी छापते हैं, उन्हें सादर नमन करने का भाव यह कहानी पैदा करती है।

बाहरें लौट आयेंगी कहानी में किसानों की ज्वलंत समस्या उठाई गई है। लेखक को यात्रा के दौरान एक युवक बस में मिलता है, जो लेखक को देखकर मंद–मंद मुस्कुराता है। कर्णप्रयाग में जब लगभग आधी बस खाली हो गई, तब 25–26 वर्षीय युवक लेखक के पास आकर बैठ जाता है। वह बताता है कि वह पीपल कोटी के पास बणसौं गाँव में रहता है। उसने गोचर मैदान में लेखक का भाषण भी सुना था, उस से प्रभावित होकर उसने 25000 रूपये उद्यान विभाग से ऋण लेकर 20 नाली जमीन पर फलों के पेड़ लगवाए और पेड़ों के नीचे सब्जी के पौधे भी लगवाये। सब्जी उगी, पर बाजार में बिक ना पाने के कारण सारी मेहनत व्यर्थ चली गई। ऋण की किस्त के कारण दिल्ली में 2000 की नौकरी फैक्ट्री में कर रहा हूँ। फलों को लगने में चार–पाँच साल लग जाते हैं, उन्हीं का इंतजार कर रहा हूँ। जब आप अपने भाषण में युवाओं को कृषि से जोड़ने के लिए प्रेरित करते हैं, तो क्या यह भी बताते हैं उनका उत्पाद किस तरह बाजार तक पहुँच पाएगा। (पेज–15)

यात्रा के दौरान एक घटना के माध्यम से आज की ज्वलंत समस्या को उजागर करना बहुत बड़ी बात है। वास्तव में इस कहानी के माध्यम से भारतीय किसानों की सबसे बड़ी समस्या को चित्रित ही नहीं किया गया है, अपितु गाँवों को समृद्ध बनाने के लिए, गाँवों में रोजगार उत्पन्न करने के लिए, गाँवों से पलायन रोकने के लिए, युवाओं को दो–ढाई हजार की नौकरी के लिए शहर में चक्कर काटने से रोकने के लिए, सरकार को ही नहीं, गाँव वालों को भी सचेत होना होगा। इनकी आवाज को सरकार के कानों तक पहुँचना होगा, तभी गाँवों में बहारें लौट आएँगी।

दुविधा कहानी सामाजिक परिवेश को लेकर रची गई है। बहुत ही साधारण कहानी होने पर भी असाधारण भाव को दर्शाया गया है। युवाओं को सीख देती, मनुष्यता की पहचान कराती हुई एक घटना में रची यह कहानी अद्‌भुत है। सुरेश का बाल्यकाल गाँव में बीता। बचपन में ही पिता का देहांत हो गया। घर में नाममात्र की खेती तथा गाय भैंस के अतिरिक्त आजीविका का अन्य कोई साधन नहीं था। माँ ने किसी तरह दूध–घी बेचकर गाँव के निकटवर्ती हाई स्कूल से दसवीं तक की पढ़ाई करवाई। गाँव में हाई स्कूल के आगे की पढ़ाई का कोई साधन ना होने के कारण माँ ने उसे आगे की पढ़ाई के लिए मामा के पास शहर भेज दिया था। मामा ने भी सुरेश की पढ़ाई में अपनी हैसियत के अनुसार कोई कसर बाकी ना रखी थी। (पेज–17)

सुरेश ने शहर में जी तोड़ मेहनत करके अच्छी नौकरी भी पा ली। माँ को गाँव से सुरेश शहर अपने साथ ले आया। दीपा सहकर्मी को माँ से मिलवाता है। दीपा के घर जब सुरेश और उसकी माँ जाते हैं तो दीपा के घर वालों का उसकी माँ के प्रति उचित व्यवहार ना देखकर सुरेश मायूस हो जाता है। इसकी शिकायत वह दीपा से भी करता है। वह अपनी माँ को नहीं छोड़ सकता है। अगले दिन जब सुरेश घर पहुँचता है तो दीपा और उसके माता–पिता पहले से ही बैठे उसका इंतजार कर रहे थे। एक अच्छे युवक की पहचान, उसकी जीवन दृष्टि कितनी उदात्त होती है। यह बात माँ के प्रति सम्मान और माँ के प्रति कर्तव्यबोध से समझाया गया है, जो व्यक्ति अपनी माँ की इज्जत नहीं कर सकता, वह किसी की बेटी का क्या मान–सम्मान करेगा। एक बेटी के पिता को अवश्य अपनी बेटी के लिए ऐसा ही युवक चुनना चाहिए।

यहाँ से वहाँ तक कहानी में आज डोनेशन देकर मैनेजमेंट कोटे से सीट लेकर प्रौद्योगिकी संस्थान, मेडिकल संस्थानों और अन्य इसी प्रकार के संस्थानों में धन वालों के बिगड़े बच्चों द्वारा शैक्षणिक जगत में आई गिरावट को दर्शाया गया है। कहानीकार का ध्यान हर बार समाज में हो रही ऐसी गतिविधियों पर जाता है, जो इनके रचना साहित्य को विशिष्ट बनाता है। कुकुरमुत्ते की तरह बढ़ते संस्थान सरकार की गिरफ्त से दूर प्रबंधन की उन्मादी नीति से गरीब, मेहनतकश, युवाओं का पिसना सोचनीय है। इस कहानी का शीर्षक ही शिक्षा जगत को सिनेमा की तरह हर समस्या को उजागर कर देता है। इंजीनियर बनने का सपना लेकर स्वप्निल पॉलिटेक्निक में सिविल इंजीनियरिंग पढ़ रहा था। वहाँ के संस्थान के बिगड़ैल छात्रों के द्वारा आए दिन छेड़छाड़ के कारण आसपास के लोग भी

परेशान थे। संस्थान भी उनके प्रति कठोर कदम नहीं उठा पा रहा था। कर्नल रावत की पत्नी और बेटी को कर्नल के सामने ही छेड़ने पर कर्नल ने जवानों को संस्थान में घुसाकर छात्रों को पिटवाया। इस दुर्घटना में बेकसूर स्वप्निल भी बुरी तरह मारा पीटा गया। स्वप्निल की माँ कर्नल की बेटी और पत्नी से अपनी दशा और बेटे के निर्दोष होने की बात बताती है। सारी स्थिति समझकर कर्नल की पत्नी और उसकी बेटी स्वप्निल को अस्पताल से घर लाते हैं और आर्मी की परीक्षा दिलाकर अपना दामाद बनाते हैं। घटना सामान्य है, लेकिन ऐसी घटनाओं से लोगों की जिंदगी बर्बाद हो जाती हैं। कहानीकार का उद्देश्य शिक्षा जगत के कटु सत्य को उजागर करना था। वह उसमें सफल भी हुआ है। लघु कहानी में संवेदना का भाव छिपा है, यह सकारात्मक सोच को भी दर्शाती है।

पछतावा कहानी आज के सबसे ज्वलंत विमर्श की ओर ध्यान केंद्रित करती है। हम विमर्श पर खूब चर्चा करते हैं। अधिकारों को लेकर, अस्तित्व को लेकर, अपना परचम लहराना चाहते हैं। प्रवासी साहित्यकार नरेश भारतीय के उपन्यास दिशाएँ बदल गई में इस विमर्श की ओर ध्यान केंद्रित किया गया है। तलाकशुदा माता–पिता के दर्द को ही नहीं, उनके बच्चों के अस्तित्व की तलाश को भी दर्शाता है। मन्नू भंडारी का उपन्यास आपका बंटी भी हम पढ़ चुके हैं। निशंक जी की यह कहानी अपने अहम्, अस्तित्व, चाहत, धनोपार्जन की ललक को धारण करने वाले अभिभावकों को सचेत करती है। अपने अस्तित्व, अहम् के लिए अलगाव की स्थिति में बच्चों की ओर न देखना एक विकराल समस्या है। ऐसे बच्चों की संख्या विदेशों में तेजी से बढ़ रही है तो अब भारत में भी इस समस्या ने अपनी जगह बना ली है या कहें कि जड़ पकड़ ली है। अंबर और वसुधा के अलगाव में, लड़ाई–झगड़े में, अपनी चाहतों की ललक में, नीलू बच्चे को हॉस्टल भेज दिया गया। हॉस्टल भेजना समस्या का समाधान नहीं है। उम्र पाँच साल का बच्चा अपनी माँ के बारे में पूछता तो पापा टाल जाते। पापा समझाते रहते बेटे मम्मी हमसे नाराज हैं, इसलिए नहीं आती और अधिक जिद करने पर नीलू को पीट भी देते। (पेज–31)

क्या ऐसा बच्चा हॉस्टल में जाकर खुश रहकर पढ़ सकता है? कहानीकार ने वार्षिकोत्सव में नीलू को अपने माता–पिता को खोजते–ढूँढ़ते दिखाया और अपनी माँ को द्वार पर खड़े देखकर नीलू भागकर अपनी माँ के पास पहुँचना चाहता है। इसी बीच दुर्घटना में उसे अधिक चोट लग जाती है। आँखें खुलने पर हॉस्पिटल में मम्मी–पापा को साथ देख कर, यह कहकर सदा के लिए सो जाता है– मम्मी! मम्मी आप अब भी पापा से नाराज हैं? बोलो मम्मी! बोलो न? वरना मैं आपसे रूठ जाऊँगा। पापा! पापा मम्मी को माफ कर दो ना। मम्मी आप से नाराज नहीं होंगी। (पेज–33)

अंबर और वसुधा नीलू नीलू कहकर पछताते रह जाते हैं। कहानीकार ने नीलू की मृत्यु को दिखाकर त्रासदी भरे जीवन में उन लोगों को सोचने–समझने को मजबूर किया है, जिनकी संताने मर–मर कर जीवन काटती हैं। यह कहानी बाल मनोविज्ञान से भरी होकर अभिभावकों को संदेश देती है।

संघर्ष चरम तक यह कहानी रेणु जैसी असंख्य लड़कियों की कहानी है, जो समाज के दरिंदों का शिकार हो जाती हैं। उन दरिंदों द्वारा तार–तार लुटने के बाद स्वयं की नजरों में गिरना। मीडिया और समाज के लोगों द्वारा उन्हें फिर लुटने, बेइज्जत होने की पीड़ा को सहना पड़ता है। ऐसे में लड़कियों का क्या दोष होता है? वह फूल सी कोमल, जूही की तरह होती हैं। बल के आधार पर, मजबूरी, अव्यवस्था का शिकार हुई लड़कियाँ गंगा की तरह पावन होती हैं। समाज को उनका साथ देना चाहिए। यह कहानी एक संदेशपरक कहानी है और हर पुरूष गंदा नहीं होता, यह भी संकेत करती है। रेणु पिता को बताती भी है कि पहाड़ी रास्ते से आते हुए कुछ असामाजिक तत्वों से उसे डर लगता है। पिता की जरा सी लापरवाही, ध्यान न देने के कारण रेणु उन दरिंदों का शिकार हो जाती है। कहानी में समाज के लोगों के अनुचित प्रश्नों पर प्रश्न भी लगाए गए हैं, जो सच भी हैं। पुरुषों से नफरत करने वाली रेणु नारी निकेतन संस्था में नौकरी के लिए जाती है, जहाँ उसके साथ पढ़ने वाला, उससे प्रेम करने वाला, अरूण बोर्ड में मिलता है। वह वहाँ नौकरी करती है और अरूण उससे स्वयं विवाह करने की बात कहता है। ऐसी लड़कियों को आगे बढ़कर युवकों को अपनाना चाहिए, वह हमारी अपनी हैं। यह कहानी नारी जीवन की असहनीय पीड़ा को दर्शाती है और युवकों को आगे बढ़कर ऐसी नारियों को अपनाने के लिए प्रेरित करती है।

तृप्ति के आँसू कहानी विश्वंभर नाथ शर्मा कौशिक की ताई कहानी की याद दिलाती है। नारी अंततः नारी है। तृप्ति को सौतेली माँ की डाँट–फटकार, उपेक्षा, प्रताड़ना सहनी पड़ती थी। छोटे भाई रोहित को हर समय गोद में न खिलाने के कारण तृप्ति टूटती सी नजर आती है। रमेश जी नारी मन के हर कोने को भली–भाँति ही नहीं समझते हैं, वह पुरुषों की स्थिति को भी भली–भाँति समझते हैं। पुरुष दूसरा विवाह कर अपने आनंद को खोजता, उसमें डूबता नजर आता है। अपनी ही संतान को अनदेखा उपेक्षित सा कर देता है। कहानी यहीं तक रहती तो कहानी सामान्य बन जाती। कहानीकार ने रोहित के बीमार होने की घटना को दिखाया। रोहित बेसुध पड़ा बुदबुदा रहा था– दीदी! मेरी दीदी कहाँ है। मेरी अच्छी दीदी। कलेजा फट आया था तृप्ति का, दौड़कर वह अपने कमरे में आ गई और भागकर भगवान की तस्वीर के सामने सुबकने लगी– हे भगवान! मेरे भाई को ठीक कर दो, मेरे रोहित के सामने मेरी साँसे ले लो, मेरे खून का एक एक कतरा ले लो। लेकिन मेरे रोहित को बचा दो। (पेज–45) यह देख कर और रोहित को आँखें खोलते देखकर, सौतेली माँ का यह कहना बेटी मुझे माफ कर दो। मैं तुझे ना जाने क्या समझती रही, किंतु आज मेरी आँखें खुल गई हैं३. नहीं माँ देवी तो आप हैं, जिन्होंने मुझे पाल पोसकर बड़ा किया है। आप मेरी प्यारी

माँ हैं। (पेज–46) यह कहानी पठनीय ही नहीं संग्रहणीय भी है। विद्यालयों में पढ़ाई जाने वाली कहानी है। यही इस कहानी की सार्थकता भी है।

हीरा एक ऐसे व्यक्ति की कहानी है जो अनपढ़ है। पढ़े लिखों को भी सोचने समझने पर मजबूर करता है। वचन सिंह का नाम उसके स्वाभिमान और बिना मजदूरी, मेहनत के कहीं भी कुछ भी नहीं खाऊँगा के कारण हीरा पड़ गया। इस कहानी का शीर्षक हीरा व्यक्ति के नाम पर ना पढ़कर उसके कर्मयोगी स्वभाव के कारण पड़ा है। लेखक के पिता से हीरा की बातचीत से ही उसके स्वभाव की विशेषता और आत्मीयता का भाव प्रकट हो जाता है। जब तक काम नहीं करेगा, किसी का टुकड़ा नहीं खाएगा। जैसे कि वह स्वतः ही बोल रहा हो कि मैं आपका ऋणी नहीं होना चाहता, तुम मुझे जितना दोगे मैं तुम्हें उतना देना चाहता हूँ। बल्कि उससे भी आगे कि पहले मैं तुम्हें दूँगा फिर तुम मुझे देना । मैं तुम्हारा तब तक नहीं ले सकता, जब तक मैं तुम्हें उसके बदले कुछ दे ना दूँ। (पेज–48)

यह भाव हीरा को लेखक की फैक्ट्री में काम करने का अवसर देता है। काम देखकर, काम करके वेतन पाना चाहता है। कहानी यहीं तक रहती तो शायद यह कहानी सामान्य होती। कहानीकार ने इस कहानी के माध्यम से एक नए विमर्श को उजागर किया है, उसका नाम है मुफ्तखोरी विमर्श। देश के विभिन्न संस्थानों में इस मुफ्तखोरी ने संस्थानों को अकर्मण्य जीर्ण–शीर्ण बना दिया है। शिक्षा जगत की संस्थानों को भी चौपट कर दिया है। पढ़े–लिखे लोगों द्वारा अनौपचारिक शिक्षा, प्रौढ़ शिक्षा पर मिल बाँटकर खाने की प्रवृत्ति ने सब चौपट कर दिया है। लेखक के मित्र दीपक द्वारा ऐसी समस्याओं को चित्रित किया गया है। अरे भाई साहब जो ऊपर का अधिकारी है न, उसके पास तो बीस विद्यालय हैं, यदि हर विद्यालय से पचास–पचास रूपये भी खाता तो चलता, पचास रूपये देने में हमें दिक्कत भी नहीं थी। पर उसने तो आधा–आधा हिस्सा किया है। हमारे हिस्से में तो डेढ़ सौ रुपया आया और उसके हिस्से में तो तीन हजार चला गया। (पेज–51)

ऐसे शिक्षकों से हम केवल लीपापोती का काम करवा सकते हैं। जो इतने वर्षों से चल भी रहा है। कहानीकार इन योजनाओं को सुचारू रूप से क्रियान्वित करने का भाव लिए हुए हैं। यही कारण है कि यह कहानी हमें हमारा आईन दिखाती है। कुछ पाने की लालसा में हम कितना अहित करते चले जा रहे हैं। दूसरे के हिस्से को मारने की भूख, लालच की भूख, जिसने देश को दीमक की तरह से खोखला कर दिया है। क्या अजीब बात है कि पढ़े लिखे होते हुए भी कुछ लोग बिना कर्म किए पैसे के लिए झगड़ रहे हैं। जबकि एक व्यक्ति बिल्कुल अनपढ़ है, जो कहता है भूखा रह सकता हूँ, किंतु बिना कर्म किए एक पैसा भी नहीं लूँगा। जब तक काम न करूँगा मुझे लेने का अधिकार नहीं है और दूसरी ओर वह व्यक्ति हैं, जिसने समाज की जागृति के लिए अपनी जीविका तक छोड़ दी। (पेज–51) इस कहानी को पढ़ते–पढ़ते हमें कोटर और कुटीर नाम की कहानी याद आ जाती है, जिसमें संस्कार और जीवन मूल्यों की बात दिखाई देती है।

समाज में जागृति लाने हेतु, भ्रष्टाचार के खिलाफ आवाज उठाने हेतु, कोई व्यक्ति बाहर से नहीं आएगा। समाज में हममें से किसी को पहल करनी पड़ेगी। इसी सीख को दर्शाती नई दिशा कहानी भी समाज का आईना प्रस्तुत करती है। लेखक को बचपन के मित्र कांत का कई वर्षों बाद पत्र मिला। पत्र मिलते ही पूर्व दीप्ति के माध्यम से बचपन की गाँव की स्मृतियों का पिटारा खुल जाता है। कांत एक संपन्न परिवार का मेधावी छात्र था, जिसकी नजर में सब एक समान है। कांत के पिता लेखक अर्थात् राजीव को गरीबी के कारण, अपने पुत्र के साथ मित्र के रुप में देखना नहीं चाहते। वह दोस्ती और संबंधों को गरीबी और अमीरी के तराजू में तोलते हैं। (पेज–53) कांत के द्वारा राजीव को एक पैंट–कमीज दिए जाने पर कांत के परिवार वालों ने उसे गाँव के सामने चोर तक ठहराया। गाँव में यह सब होता भी रहा है, पर लेखक की दोस्ती दोनों को आगे बढ़ने के अवसर देती है। इंटर के बाद दोनों गाँव से दूर शहर जयहरीखाल महाविद्यालय में प्रवेश लेते हैं। छात्र संघ का स्वरूप गुटबाजी के चलते, मारपीट के कारण लेखक तो महाविद्यालय छोड़कर ऋषिकेश में नौकरी कर लेता है। आज प्राप्त पत्र के माध्यम से लेखक के विचारों को आगे बढ़ता देखकर उसे प्रसन्नता होती है। रमेश जी की यह कहानी छात्र संघ के कारनामों को ही नहीं दर्शाती है, अपितु महाविद्यालय में चल रहे व्यापक स्तर के घोटालों को भी दर्शाती है। किस प्रकार भवन निर्माण, प्रयोगशालाओं, पुस्तकों और अध्यापकों की नियुक्तियों तक अँधेर मचा हुआ है। छात्र संघ केवल राजनीति के अड्डे बन कर रह गए हैं। यदि छात्र संघ अपने महाविद्यालय के लिए सकारात्मक सोच के साथ काम करें तो निश्चित रूप से पढ़ाई का माहौल बन सकता है। एक नई दिशा नजर आएगी। कांत छात्र संघ का अध्यक्ष बनकर लेखक के इन अरमानों को पूरा करने का प्रण लेता है। यह सोच लेखक को ही नहीं पाठकों को भी गुदगुदाती हुई नई दिशा दिखाती है। छात्र संघ मात्र प्रदर्शन, अपनी बातें मनवाने, राजनीति करने का स्थल नहीं है। यह कहानी युवाओं, प्राध्यापकों, कर्मचारियों सभी को लुभाने में समर्थ है। इसका विषय ज्वलंत और समसामयिक है। यह कहानी विश्वविद्यालयों की परत खोलती नजर आती है।

कर्तव्य कहानी देखने और पढ़ने में अत्यंत सामान्य सी लगती है। यह कहानी समाज में घटित घटनाओं पर आधारित है। बड़े होने का अभाव कर्तव्य परायणता है। यह कर्तव्य परायणता गीतिका के व्यवहार में है। पिता के ना रहने पर घर का सारा खर्च, ट्यूशन पढ़ाकर बीमार माँ, छोटी बहन गुंजन और छोटे भाई गौरव का भार उठाती है। स्वयं कर्तव्य का पाठ पढ़कर छोटे भाई को डॉक्टरी की पढ़ाई कराती है और दिशाहीन छोटी बहन गुंजन को सही रास्ते पर लाने के लिए, उसका घर बसाने के लिए, अपने प्रेमी मुकुल से उसका विवाह तक करवा देती है। कर्तव्य की खातिर प्यार

का बलिदान जो दे गई थी वह। (पेज–61) इस कहानी में घर के लिए, इज्जत के लिए, अपनों के लिए, कर्तव्य निभाना, धोखा नहीं एक पुण्य कर्म है। आज भी हम ऐसे परिवार देखते हैं, जहाँ बड़ा भाई या बड़ी बहन अपने परिवार के लिए स्वयं की कुर्बानी दे देते हैं। कहा भी गया है– घर के लिए एक का, समाज के एक परिवार का और राष्ट्र के लिए समाज का बलिदान श्रेयकर माना जाता है। रमेश जी की यह कहानी कर्तव्य की परिभाषा देते हुए उसकी व्याख्या करती नजर आती है। हमारे शास्त्रों में भी कर्तव्य और वचनबद्धता देखने को मिलती है। ऐसे उदाहरण हमारे शास्त्रों और दर्शन ग्रंथों में मिल जाते हैं।

स्वाभिमानी औरत का प्रतिनिधित्व मासूम कहानी की कामिनी करती है। दहेज लोभियों को नसीहत कामिनी देती है। कामिनी इतिहास की प्रवक्ता है, जो अपनी दो वर्ष की बच्ची को अपने साथ महाविद्यालय ले जाती है। वहाँ आया उसकी बच्ची की देखभाल करती है। मासूम गुड़िया झील पर कामिनी के साथ घूमने जाती है। बच्चों द्वारा अपने–अपने पापा के बारे में बातें सुनकर, अपने पापा के बारे में अपनी माँ कामिनी से पूछती है। छोटी सी इस घटना में कामिनी अपने सास–ससुर और पति कमल के लालच को झेलती है। पुत्र की कामना रखने वाले पुत्र–पुत्री में भेद करने वाले सास–ससुर और पति के षड़यंत्र से भाग निकली है कमीनी। तेल, पेट्रोल द्वारा जलाकर ना जाने कितनी ही औरतें मारी जाती रही हैं। यह कहानी अबोध लड़की की मासूमियत को दर्शाती है, जिसे पापा शब्द सुनकर अपने पापा की याद आती है। उसे क्या पता कि उसके पापा ने उसकी मम्मी की मासूमियत को भी छीनकर उसे भी मारना चाहते थे। कामिनी अपनी गुड़िया के साथ जीवन बितायेगी व गुड़िया को सुसंस्कारित कर इस लायक बनाने की कोशिश करेगी कि मानव जाति पर कलंक उसके ससुराल पक्ष जैसे दहेज के भूखे भेड़ियों से लड़ने व उन्हें सबक सिखाने का गुड़िया में बचपन से ही हौसला आ जाए। (पेज–65) यह कहानी नसीहत देती है कि लोभी भेड़ियों के साथ रहने से अच्छा है कि स्वाभिमान के साथ अलग रहो। लालची लोग कभी भी षड्यंत्र बनाकर जीवन नष्ट कर सकते हैं। ऐसे लोगों से बचने के लिए अपनी बेटियों को पढ़ा लिखा कर कामिनी की तरह योग्य बनाओ। यह लघु कथा मार्मिक हृदय स्पर्शी है। वाह जिंदगी कहानी संग्रह में भाग्यचक्र कहानी भी इसी समस्या पर आधारित है। इस संग्रह में अधिकांश कहानियाँ लघु हैं। यह कहानियाँ गागर में सागर भरने का काम करती नजर आती हैं। कहानी संग्रह की हर एक कहानी की व्याख्या विस्तृत है। कहानियों में शब्द संरचना एकदम सटीक और गंभीर भाव से भरी हुई है, पाठक को सजग संदेश देने वाली संरचना है। छोटे–छोटे संवाद मन को झकझोर कर रख देते हैं, पाठक को स्मृतियों में ले जाने का काम भी करते हैं। कई बार तो ऐसा लगता है कि यह सब पात्र हमारे आसपास ही घूम रहे हैं। वास्तव में कहानी के मूल में संस्मरण ही होता है। रमेश जी ने सीधी सपाट भाषा में बड़ी ही सहजता से अपनी बात पाठक के सामने रखी है। इनकी कहानियाँ ना ही शब्दों का जाल बुनती है, ना ही घटनाओं की भूल–भुलैया में भटकती हैं और ना ही पात्रों की अधिकता में पात्रों का चरित्र बौना बना देती हैं, बल्कि जो भी पात्र हैं वे पाठक पर सीधा प्रभाव छोड़ते हैं। कहानियों का परिवेश पौड़ी गढ़वाल का है, लेकिन उसकी सामाजिक स्थिति और संवेदना विश्वव्यापक है। रचनाकार को देशकाल और किसी एक स्थिति में बाँधकर नहीं पढ़ा जा सकता है। उसका मनोविज्ञान और लेखनी राष्ट्र तथा विश्व के धरातल पर काम करती है। रमेश जी की सभी कहानियाँ उद्देश्यपरक ही न रहकर पाठक को सोचने समझने को मजबूर करती हैं। इंसानियत का पाठ पढ़ाती–सिखाती विपदा जीवित है कहानी है। बाहरें लौट आयेंगी जीवन में आशावादी दृष्टिकोण अपनाने का संदेश देती है। भ्रष्टाचार, शिक्षा जगत की कमियाँ, दहेज आदि समसामयिक विषयों पर आधारित अन्य कहानियाँ हैं। ये कहानियाँ तभी सार्थक होंगी जब पाठक या छात्र इन्हें पढ़ें, सीखें और समाज में नए दृष्टिकोण से उस पर काम भी करें। जन–जन तक इन कहानियों को पहुँचना हमारा भी कर्तव्य बनता है।

निष्कर्ष

कहानी संग्रह के भाषाई पक्ष पर बात करें तो कहानीकार ने देशज शब्दों का भी बड़ी ही सुंदरता से प्रयोग किया है, जो इस प्रकार हैं– मण्डुआ, झंगोरा, गौचर आदि। इसी प्रकार अंग्रेजी शब्दों का भी प्रयोग हुआ है, जैसे– सूटकेस, सीट, बैंक, इंजीनियर, ऑफिसर, पॉलीटेक्नीक, कंपनी, नंबर आदि। कहानी में मुहावरों का अपना अलग ही स्थान होता है और मुहावरें लेखक के भाषाई पक्ष में चार चाँद लगा देते हैं। कहानी संग्रह में मुहावरों का भी प्रयोग है, जो इस प्रकार हैं– आँखें तरेरना, सपने साकार करना, कंधे से कंधा मिलाकर चलना, कनखियों से देखना, त्राहि त्राहि होना, कोप भोजन का शिकार, नींव हिलाना, कलेजा बाहर आना आदि। यह कहानी संग्रह पाठक को जिज्ञासा से पढ़ने के मजबूर करता है। यह कहानी संग्रह हर दृष्टिकोण से पूर्ण नजर आता है। कथानक, देशकाल, चरित्र–चित्रण, संवाद योजना, भाषाई तत्व और उद्देश्य को तो पूरा कर ही रहा है, यह कहानी संग्रह। इसमें जन के मन की सीधी बात है, बिना किसी लाग लपेट के।

डॉ0 सुधांशु कुमार शुक्ला
चेयर हिंदी,
आई.सी.सी.आर.
वार्सा यूनिवर्सिटी,
वार्सा पोलैंड
.48579125129

3

क्रान्तिकारी और कम्युनिस्ट आंदोलन में महिला भागीदारी भूमिका का एक अध्ययन

डॉ0 नीरज कुमार

सारांश –

12 वी सदी का उत्तरार्द्ध वह समय था, जब समाज के सभी वर्गों व समूहो ने अपने आप को एक भारतीय राष्ट्र का हिस्सा मानकर, शिवराज प्राप्ति के लिए संघर्ष किया। हालांकि उससे पहले भी ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध काफी विद्रोह सामने आये थे, परंतु 1885 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना एक ऐसा मील का पत्थर साबित हुई, जिसने भारतीय राष्ट्रवाद को मजबूत मंच प्रदान किया। गांधी जैसे नेता की अगुवाई ने स्वतंत्रता संघर्ष को सभी वर्गों व जातियों के लिए एक सर्वजनिक कृत्य बना दिया। आजादी की लड़ाई के विभिन्न चरणों जैसे स्वदेशी आंदोलन, असहयोग आंदोलन, सविनय अवज्ञ आंदोलन और भारत छोड़ो आंदोलन में महिलाओं की भी महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

जहाँ एक ओर महिलाएं सविनय अवज्ञा और असहयोग आनदोल में भाग ले रही थी, वही काफी संख्या में महिलाएं क्रांतिकारी आंदोलनों से भी जुड़ी रही थी। आंदोलन की शुरुआत में उनका काम थोड़ा सीमित था। जैसे– क्रांतिकारियों को घर में पनाह देना, प्रचार करना, पैसा इकट्ठा करना, हत्यारों को छिपाकर रखना और जगह से दूसरी जगह ले जाना तथा विस्फोटक बम बनाना। धीरे–धीरे वे प्रत्यक्ष गतिविधियों में भी शामिल की गई और ग्रुप का हिस्सा बनी महिलाएं भी इन सभी गतिविधियों में न केवल शामिल थी बल्कि कई जगह नेतृत्व भी शामिल रही थी प्रवासी भारतीयों में बीकाजी काम का माने क्रांति का शंख फूंकने में अग्रणी भूमिका निभाई प्रति लता ने एक्शन ग्रुप का नेतृत्व कर आगे बढ़ कर सहादत को गले लगाया जिला मजिस्ट्रेट एडवांस के बंगले में घुस कर दो छोटी स्कूल लड़कियों शांति घोंसले सुनीति चौधरी ने मजिस्ट्रेट स्टेज पर गोली चला कर सारे देश में तहलका मचा दिया।

स्वतंत्रता आंदोलन में महिलाओं की भागीदारी गांधीजी के असहयोग आंदोलन में प्रभावशाली ढंग से दिखाई पड़ती है यह वह समय था जब संपूर्ण देश में स्वतंत्रता की लहर गली कोचों से निकलकर सड़कों पर प्रदर्शन कर रही थी महिलाएं भी इस आंदोलन में पीछे नहीं रहे उन्होंने विदेशी कपड़ों को अग्नि के हवाले किया और स्वदेशी भावना के प्रचार हेतु खादी को माध्यम बनाया शराब की दुकानों के विरुद्ध उन्होंने धरना दिया महिलाओं को संगठित करने के लिए महिला संगठनों की स्थापना होने लगी इस तरह हम यह कह सकते हैं कि ऐसा योग आंदोलन ने भारतीय नारी में स्वतंत्रता की चेतना को जागृत किया इसके फलस्वरूप महिलाएं गांधीजी की विभिन्न राजनीतिक गतिविधियों में सक्रिय रूप से जुड़ गई इसी तरह सविनय अवज्ञा आंदोलन में महिलाएं हिस्सा लेना चाहती थी पर गांधी जी ने उन्हें इसका भागीदारी नहीं बनाया यह आंदोलन वास्तव में अंग्रेजी शासकों के नमक कानून तोड़ने और उनके नमक बनाने के एक अधिकार को चुनौती देने हेतु चलाया गया था इस आंदोलन के पश्चात महिलाओं को आंदोलन में शामिल कर लिया गया महिला आंदोलनों की विशेषता थी कि इसमें निर्धन धनी शिक्षित अशिक्षित श्रमिक महिलाएं और सेवंथ परिवार की महिलाएं गांधी जी के साथ जुड़ गई एक बड़ी महिला शक्ति आंदोलन के लिए बनकर खड़ी हो गई।

1980 के मध्य से आर्य समाज महिला शिक्षा आंदोलन में उल्लेखनीय रूप से सक्रिय हुआ 1890 में जालंधर के आर्य समाज ने एक कन्या पाठशाला खोली तथा 1 वर्ष के भीतर ही समाज के पाठशाला में अविवाहित लड़कियों की ही भांति विधवाओं को भी प्रवेश देने का निर्णय ले लिया इतना ही नहीं जालंधर समाज ने इसके 1 वर्ष बाद उच्च शिक्षा के लिए कन्या महाविद्यालय खोलने की भी घोषणा की महिला शिक्षा का समर्थन करने वाले अनेक लोगों ने दयानंद सरस्वती के विचार से स्वयं को यह कहते हुए अलग कर लिया कि लड़कियों की शिक्षा का चरित्र लड़कों की शिक्षा से अलग होना चाहिए किंतु लड़की को हिंदू लड़कों से भिन्न कार्य करने हेतु अतः मैं उस व्यवस्था को प्रोत्साहित नहीं करूंगा जो उन्हें उनके राष्ट्रीय चरित्रिक गुणों से वंचित कर दें हम अपनी लड़कियों को ऐसी शिक्षा नहीं देंगे जो उनकी सोच को बदल दे।

पर्यावरण के साथ–साथ समकालीन अंतरराष्ट्रीय संबंधों में नारीवाद भी एक महत्वपूर्ण आयाम के रूप में उभर रहा है अंतरराष्ट्रीय संबंधों का नारीवादी दृष्टिकोण नारीवाद के विभिन्न चरणों के संदर्भ में समझा जा सकता है नारीवाद के पहले चरण में अंतरराष्ट्रीय संबंधों में नदियों को राज्य के उप स्तरों से साथ जोड़ने का प्रयास किया गया इस आशा से कि इससे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर स्त्रियों को सम्मिलित होने का अवसर मिलेगा दूसरे चरण में उग्रवादी नारीवादी लेखकों ने नारीवाद नारी विशिष्ट विभिन्न ताऊ पर बल दिया और यह तर्क दिया कि स्त्री की सभी स्तरों स्थानीय राष्ट्रीय अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अभी स्थिति का मूल कारण पितृसत्ता है। तीसरे चरण के समकालीन नारीवाद लेखक पुरुष तथा स्त्री की परिभाषा ओं का विनिर्माण करके लिंग तथा लैंगिकता से संबंधित मुद्दों का विश्लेषण करने का प्रयास कर रहे हैं।

रमाबाई भारतीय महिला के उत्थान की प्रबल समर्थक होने के साथ–साथ एक कवि और अध्ययन थी उनके संस्कृत के ज्ञान को देखते हुए उन्हें पंडिता की उपाधि दी गई उन्होंने महिलाओं के उत्थान के लिए न सिर्फ संपूर्ण भारत वरन इंग्लैंड की भी यात्रा की। 1881 मैं उन्होंने आर्य महिला सभा की स्थापना की रमाबाई ने भारत में महिलाओं की स्थिति को बेहतर करने के प्रयास में उनके जैसे जीवन बिताने का संकल्प लिया उन्होंने भारतीय महिलाओं विशेष रूप से हिंदू परंपराओं पर अध्ययन व चर्चा की एक बाल विवाह प्रथा और बाल विधवाओं के जीवन की बांधों के खिलाफ बात की थी उन्होंने पथभ्रष्ट महिलाओं के लिए कृपा सदन नामक एक उदार ग्रह शुरू किया यह करीब 22 एकड़ जमीन में खोला गया कृपया सदन की शुरुआत 6 लड़कियों से हुई और 3 साल के भीतर उनकी संख्या 300 हो गई कृपा गिरा के बगल में एक माहे ग्रह भी बनाया गया मुक्ति पर बैल पत्रिका का नियमित प्रकाशन शुरू करके उन्होंने ईसाई धर्म के गढ़ सिद्धांतों पर वैचारिक बहस छेड़ने की कोशिश की इसमें मुक्ति मिशन के कार्य के बारे में जानकारी दी जाती थी अपने देश की महिलाओं को पद दलित अवस्था से ऊपर लाने का प्रयास करते हुए 5 अप्रैल 1922 को 64 वर्ष की आयु में रमाबाई की मृत्यु हो गई समाज सुधार के लिए उनके द्वारा किए गए कार्यों से खुश होकर इंग्लैंड के सम्राट ने 1919 में उन्हें कैसर ए हिंद की उपाधि से सम्मानित किया जोकि उपनिवेश शासन में भारतीयों को दी जाने वाली सर्वोच्च उपाधि थी इस प्रकार भारत में महिला विकास आंदोलन की राष्ट्रीय प्रतिमा के तौर पर पंडित रमाबाई को जाना गया।

एक साधारण महिला पुत्री पत्नी बहू मां बावर्ची घरेलू कार्यों की करता हो सकती है प्रत्येक परिस्थिति के साथ उसकी भूमिका बदलती रहती है यदि वह एक प्रशासनिक अधिकारी शिक्षक डॉ राजनीतिज्ञ इत्यादि भी है तो उसके कार्यस्थल पर तनाव सामने आते हैं और ऐसी स्थिति में वह उन परिस्थितियों का कैसे सामना करेगी। की भूमिका में वृद्धि हो सकती है और और वह परिस्थिति में भूमिका के संघर्ष में फंस जाती है ऐसे में उसके सामने बहुत सारे व्यवसायिक विकल्प नहीं बसते हैं आंदोलन के माध्यम से यह दावा किया गया है कि महिलाओं नारी को मनुष्य की तरह प्राकृतिक कानून कारण व नैतिकता का अधिकार मिल सके समाज एक परिवर्तन की आवश्यकता है जहां कानून और संस्कृति में परिवर्तन लाना होगा जिससे महिलाओं को समानता का दर्जा मिल सके इस सोच का प्रतिशोध पुरुषों द्वारा होता है क्योंकि सरकार पुरुष प्रधान है जो प्राकृतिक नियमों का हनन करता है पितृसत्तात्मक समाज होने के कारण वह अपने हक की बात करता है वह लिंग संबंधी भेद को बल देता है।

उसी तरह 23 वर्ष की पैरामेडिकल इंटर छात्रा के साथ सामूहिक बलात्कार जिसकी 13 दिन बाद सिंगापुर के अस्पताल में मौत हो गई जो कि 6 लोगों के द्वारा राजधानी दिल्ली में 16 दिसंबर 2012 की रात को चलती बस में किया गया से युवाओं व महिलाओं में काफी भीषण आक्रोश उपजा इस घटना के पश्चात देश के विभिन्न स्थानों तथा मुख्य रूप से दिल्ली में हुए भारी प्रदर्शनों में युवाओं व महिलाओं ने भाग लिया पुलिस द्वारा युवाओं को रोकने के लिए किए गए प्रयास भी उनकी उस पीड़िता युवती को न्याय दिलाने की भावना को डगमगा नहीं पाए दिल्ली में ही यह प्रदर्शन मुख्य रूप से इंडिया गेट पर हुआ जहां हजारों युवा प्रदर्शनकारियों पर लाठीचार्ज व पानी की बौछार व आंसू गैस के गोले छोड़े गए और गिरफ्तारियां भी हुई इसी तरह देश के अन्य भागों में भी आंदोलन हुए उनमें युवाओं ने भाग लिया इस मुद्दे पर प्रिंट व सोशल मीडिया ने संवेदनशील तरीके से अपनी बात कही लाखों युवाओं व महिलाओं ने इस घटना की ऑनलाइन ही याचिका पर हस्ताक्षर किए इन भाभी प्रदर्शनों के देशव्यापी होने के कारण केंद्र व राज्य सरकारों ने महिलाओं की सुरक्षा के लिए कई कदमों की घोषणा की इस इन दोनों आंदोलनों में एक मुख्य बाद देखने को मिली कि दोनों आंदोलनों की प्राकृति अहिंसक थी।

स्वतंत्रता पूर्व भारत में सुधार आंदोलन ने महिलाओं की स्थिति सुधारने के लिए प्रयास किए

जैसे ब्रह्मसमाज 1828 में राजा राममोहन राय ने ब्रह्म समाज की स्थापना करके।

1875 आर्य समाज की महर्षि दयानंद जी ने आर्य समाज की स्थापना करके।

1856 हिंदू विधवा पुनर्विवाह अधिनियम पास हो गया ईश्वर चंद्र विद्यासागर जी के प्रयासों के द्वारा सफल रहा।

1917 महिलाओं की भारतीय समिति चेन्नई की स्थापना की गई जिसमें श्रीमती एनी बेसेंट को अध्यक्ष चुना गया इसके अतिरिक्त कुछ अन्य महिला संगठन जैसे भारतीय स्त्री मंडल पूना सेवा सदन सरोजनी दत्त महिला समाज आदि का विकास हुआ इन सभी सांसदों ने 1929 में एक साथ मिलकर कार्य करने के लिए अखिल भारतीय महिला सम्मेलन संगठन बनाया अखिल भारतीय स्तर पर कार्यरत अन्य महिला संगठनों में महिलाओं की राष्ट्रीय समिति विश्वविद्यालय महिला संघ कस्तूरबा गांधी राष्ट्रीय स्मारक समिति ईसाई नवयुग थी समिति प्रमुख है यह संगठन शहरों के साथ–साथ ग्रामीण क्षेत्रों में भी शिक्षित स्वास्थ्य और कल्याण के कार्य करते हैं महिलाओं में शिक्षा का प्रयास और अपने अधिकारों और कर्तव्यों के प्रति जागरूकता इन्हीं सुधार आंदोलनों के परिमाण हैं।

मुक्ति आंदोलन से समाजशास्त्र में एक अलग सांप स्त्रियों के समाजशास्त्र का उदय हुआ है समाजशास्त्र की जय शाखा मुख्यत दो प्रकारों प्रकरणों से संबंधित है।

1 स्त्रियों का मूल्यांकन जोकि उतना ही महत्वपूर्ण है जितना कि उस पुरुषों का।

2 सामाजिक समस्या के रूप में स्त्रियों की समाज में अधिक स्थिति।

स्त्री व पुरुष दोनों की समाज शास्त्रियों ने जो स्त्रियों की आदर्श के लिए प्रतिबद्ध है भारत में स्त्रियों के अध्ययन की और अध्ययन आकर्षित किया है उनमें से कुछ ने महत्वपूर्ण प्रस्ताव रखे हैं जैसे स्त्रियों को परंपरागत मूल्यों को त्यागने और आधुनिक मूल्यों को विकसित करने की आवश्यकता अपने ऐसा यह होने के दृष्टिकोण को छोड़ने अपने कैरियर के लिए श्रमिक की भूमिका को उतना ही गंभीरता से धारण करना जितना कि ग्रहणी की भूमिका को तथा विभिन्न मूल्यों को वरीयता देना आदि जब तक स्त्री अपने श्रमिक भूमिका को श्रम बाजार में उतना ही महत्वपूर्ण नहीं देती जितना की अभिव्यक्ति पूर्ण नारी भूमिका को तब तक स्त्रियों के प्रति भेदभाव का अंत नहीं होगा।

महिलाओं को परंपरागत रूप से पुरुषों द्वारा प्रताड़ित पाकर गांधी बहुत दुखी होते थे गांधी ने पाया कि पुरुषों ने जब भी उसे मौका मिला स्त्री को क्रोध दुख में वासना का शिकार बनाया पुरुषों के महिलाओं के प्रति दुर्व्यवहार के कारण ही कन्या के जन्म को परमात्मा का प्रकोप माना जाता था और जीवन प्रियतम उसे सताया वह प्रताड़ित किया जाता था यही कारण था कि उसे घर में पर्दे से ढककर पंछी की तरह पिंजरे में रखा जाता था उसे ने शिक्षा दी गई ने आजीविका कमाने का अवसर मिला पुरुषों के बराबर क्षमता का अवसर भी उसे प्राप्त नहीं था गांधी महिलाओं को इस पुरुष प्रधान समाज में राज्य की दुर्गति से बचाना चाहते थे गांधी की मान्यता थी कि पुरुष के समान महिलाएं भी मानव के रूप में ईश्वर की तरह अद्‌भुत देन है ईश्वर ने पुरुष की भांति उसे भी नैतिकता विवेका शीलता वह सामाजिकता की क्षमता प्रदान की है और ऐसा करके उसे पुरुष की से धार्मिक बनाया है परमात्मा ने केवल उन सब गुणों का समावेश किया जो उसने पुरुषों को दिए हैं जिनके संदर्भ में महिलाएं पुरुषों के समक्ष ही नहीं उसे श्रेष्ठ भी हैं इसलिए पुरुषों को चाहिए कि वे महिलाओं को अपने से निष्कर्ष मानकर उन्हें ने सताया और नहीं प्रताड़ित करें।

स्वतंत्रता वादी आंदोलन के विकास के साथ ही उनमें सामाजिक राजनीतिक व आर्थिक चेतना बढ़ी है और महिला विमुक्त आंदोलन के समर्थकों ने महिलाओं पर होने वाले अत्याचारों का विरोध करना प्रारंभ कर दिया है क्रिया के स्तर पर इस आंदोलन पर व्यापक सफलता मिली यह अभिविन्यास मात्र सैद्धांतिक विश्लेषण को महत्वपूर्ण नहीं देता अभी तो करिया के स्तर पर नारी की परिस्थिति को बदलने में विश्वास करता है जानवर प्रक्रिया के समन्वय के माध्यम से ही परिवर्तन की व्यवस्था आत्मक प्रक्रिया प्रारंभ है ज्ञान व उससे निर्मित सिद्धांत किया को दिसावर सोच प्रदान करता है।

कारण नारी आंदोलन ने राजस्थान में अनेक मुद्दों को सिद्धांत के आधार पर प्रस्तुत किया है और उससे क्रिया से जोड़ा भी हैं देवराला के सती प्रकरण में ज्ञान की मीमांसा समाज के नए आयाम व पक्ष प्रस्तुत किए भंवरी प्रकरण ने नारी के प्रति हिंसा व उससे जुड़े शांति दे जातिगत पर्सन प्रस्तुत किए।

निष्कर्ष

आधुनिक विश्व में नारीवाद आंदोलन एक ऐसी घटना है जिसके द्वारा शताब्दियों पुरानी सामाजिक संरचना तथा एक वर्ग के रूप में महिलाओं की परिस्थिति में व्यापक बदलाव लाने के लिए प्रदान किए गए विश्व के प्राय सभी समाजों में पुरुष प्रधान सामाजिक व्यवस्था होने के कारण समय–समय पर ऐसी आवाज उठती रही है और जिनमें महिलाओं के विरुद्ध होने वाले शोषण उत्पीड़न और अत्याचारों का विरोध किया गया स्वयं महिलाओं द्वारा भी पुरुषों के समान अधिकार प्राप्त करने आर्थिक स्वतंत्रता धार्मिक अधिकारों मत अधिकारों शिक्षा की सुविधाओं व्यक्ति स्वतंत्रता तथा वैवाहिक जीवन में संबंधित अधिकारों आदि की मांगों को लेकर अनेक आंदोलन किए गए बीसवीं सदी में विमेन के आंदोलन ने एक विश्व प्रसिद्ध नारीवाद आंदोलन का रूप ले लिया था उनके दूसरे आंदोलन से विभिन्न नारीवादी आंदोलन की मुख्य विशेषता यह है कि पश्चिमी देशों में सामान भारत में नारियों के अधिकार से संबंधित अधिकांश आंदोलनों का नेतृत्व पुरुषों द्वारा किया गया पुरुषों ने नेतृत्व में अनेक ऐसे संगठनों की स्थापना हुई जिन्होंने समय–समय पर महिलाओं को पुरुषों के समान अधिकार देने की मांग उठाई पश्चिमी देशों में विभिन्न महिला आंदोलनों का संबंध पुनर्जागरण से रहा है यह सच है कि अमेरिका फ्रांस इटली इंग्लैंड तथा यूरोप के अनेक देशों में महिला आंदोलनों का स्वरूप परिस्थितियों के अनुसार बदलता रहता है इन देशों में महिला आंदोलन का कारण महिलाओं के मताधिकार प्राप्त से जुड़ा हुआ जिसने धीरे–धीरे सामाजिक व आर्थिक समानता की मांग का रूप लेकर नारी मुक्ति का रूप ले लेना आरंभ कर दिया इन देशों में महिलाओं के विरुद्ध होने वाले यूनिक अपराधों तथा सामाजिक विकृतियों से भी महिलाओं आंदोलनों को प्रोत्साहन मिला वही मुक्ति आंदोलन को प्रेरणा देने में श्रीमान दायर की बहुचर्चित पुस्तक द सेकेंड सेक्स ने एक प्रभावी भूमिका निभाई इसी के प्रभाव से बहुत से विचार को ने नारी मुक्ति के विषय में चिंतन करना शुरू किया।

संदर्भ सूची

1 अभय प्रसाद सिंह भारत में राष्ट्रवाद 2019 ओरिएंटल ब्लैकस्वान हैदराबाद 500029 भारत प्रश्न संख्या 123 132।

2 वी एन सिंह व जनमेजय 2018, रावत पब्लिकेशन जवाहर नगर जयपुर 302004 भारत पृष्ठ संख्या 298।

3 भारत में उपनिवेशवाद 2014 ओरियंट ब्लैकस्वान प्राइवेट

लिमिटेड हैदराबाद टूरिस्ट संख्या 125 126 ।
4 आरसी वर्मा नी समकालीन अंतरराष्ट्रीय संबंध 2008 2009 गीतांजलि पब्लिक सिंह हाउस नई दिल्ली वेस्ट संख्या 284 ।
5 विजय कुमार वर्मा वह अखिलेश पाल आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिंतन 2019 ओरिएंट ब्लैकस्वान हैदराबाद बेस्ट संख्या 36 ,39
6 राम गणेश यादव भारत के सामाजिक परिवर्तन विकास 2014 ओरियंट ब्लैकस्वान हैदराबाद 500029 तेलंगाना भारत पृष्ठ संख्या 134 135
7 आहूजा सामाजिक समस्याएं 2020 रावत पब्लिकेशन जवाहर नगर जयपुर 302004 भारत पृष्ठ संख्या 184 ।
8 डॉ एस सी सिंगल भारतीय 2018 लक्ष्मी नारायण अग्रवाल आगरा यूपी पृष्ठ संख्या फोटो 420,421 ।
9 राम अहूजा भारतीय समाज 2020 रावत पब्लिकेशन जवाहर नगर जयपुर 302004 भारत–वेस्ट संख्या 129 130 ।
10 रामरतन व रुचि त्यागी भारतीय राजनीतिक चिंतन 2006 में जो पेपर वेल्स नोएडा 201301 यूपी संख्या 302 ।
11 श्रीवास्तव आधुनिक समाजशास्त्रीय सिद्धांत प्रथम संस्करण 2011 रजत प्रकाशन दरियागंज नई दिल्ली 110002 भारत पृष्ठ संख्या 61
12 डॉ0 अमिता सिंह लिंग व समाज प्रथम संस्करण 2015 विवेक प्रकाशन जवाहर नगर दिल्ली 7 पृष्ठ संख्या 64 65 ।

Dr. Neeraj Kumar
Village Post- Partapur,
District Bulandshahr
(U.P) pin code 203411
Mobile number- 9761824286,
neeraj.kumar4286@gmail.com

4

किन्नर : अर्थ एवं परिभाषा

कुलदीप

सारांश –

किन्नर शब्द का प्रयोग किन्नर/किन्नौरा जनजाति की अस्मिता का संकट है। किसी प्राचीन धार्मिक ग्रंथ वेद–पुराण, उपनिषद, शब्द–कोश, साहित्य कृतियों में 'किन्नर' शब्द थर्ड जेंडर के लिए इस्तेमाल नहीं हुआ है। लोग इस शब्द को इस विपरीत अर्थ में प्रयोग कर रहे हैं, किन्नर देशियों को आजकल किन्नौर में किन्नौरा कहते हैं।

1. संस्कृत साहित्य में जहाँ तीन लिंग स्वीकार किए गए हैं :– पुल्लिंग, स्त्रीलिंग और नपुंसकलिंग। वही हिंदी में केवल दो लिंग पुल्लिंग और स्त्रीलिंग माने गए हैं–''विष्णु तथा वायु पुराण की मान्यता के अनुसार सुनक्षत्र के पुत्र का नाम किन्नर था। 'किन्नर' एक अश्वमुखी देवता को भी कहा जाता है। किन्नर संगीत के देवता माने गए हैं। इनका निवास स्थान कैलाश पर्वत पर कुबेरपुरी है। ऐसी प्रसिद्धि है कि किन्नरों की उत्पत्ति ब्रह्मा के अंगूठे से हुई और ये पुलस्त्य के वंशज और कश्यप के पुत्र हैं।''[1]
2. चतुर्वेदी द्वारका प्रसाद शर्मा द्वारा संपादित शब्दकोश में किन्नर का अर्थ दिया गया है :– ''देवताओं का गवैया, जिसका मुख घोड़े जैसा और शरीर मनुष्य जैसा होता है।''[2]
3. नागेंद्र बसु के शब्दकोश के अनुसार 'किन्नर' का एक अर्थ है :– ''वाद–विवाद और झगड़े के अर्थ में है तो दूसरा 'किं कुत्सितो नरः'के अर्थ में है। इस शब्द के संस्कृत पर्याय के अर्थ में किं पुरुष, तुरङ्गवदन, मयू, अश्वमुख, गीतमोदी और हरिणनर्तक है। किसी बौद्ध उपासक के लिए और देवयोनि विशेष के अर्थ में भी ध्वनित होता है।''[3]
4. डॉ० राम शंकर शुक्ला 'रसाल' के शब्दकोश के अनुसार किन्नर का अर्थ है :– ''घोड़े के मुख वाले एक प्रकार के देवता अथवा गाने बजाने के पेशे वाले।''[4]
5. डॉ० हरदेव बाहरी के शब्दकोश में 'किन्नर' का अर्थ दिया गया है :– ''हिजड़ा अथवा गाने बजाने का पेशा करने वाली एक जाति है।''[5]
6. राम प्रकाश सक्सेना द्वारा संपादित कोश में 'किन्नर' शब्द के दो अर्थ दिए गए हैं :–

(1) ''(पुराण) देवलोक का एक उपदेवता जो एक प्रकार का गायक था और उसका मुँह घोड़े के समान होता है।''

(2) वर्तमान समय में हिजड़ा के लिए शिश्टोक्ति शब्द प्रयोग होता है।''[6]

7. नागरी प्रचारिणी सभा काशी द्वारा प्रकाशित 'संक्षिप्त हिंदी शब्द सागर' में 'किन्नर' शब्द का अर्थ दिया गया है :–

(1) ''एक प्रकार के देवयोनि में माने जाने वाले प्राणी जिनका मुख्य घोड़े के समान होता है।

(2) गाने बजाने का पेशा करने वाली एक जाति।''[7]

8. बृजेंद्र चतुर्वेदी के 'वृहित हिंदी कोश' के अनुसार किन्नर क ा अर्थ है :– ''किन्नर गाने बजाने का पेशा करने वाले घोड़े के मुख के समान देवता को कहा गया है। जबकि हिजड़ा से अभिप्राय नपुंसक, खोजा से लिया गया है।''[8]
9. मुरारी बापू द्वारा रचित 'मानस किन्नर' पुस्तक में किन्नर का अर्थ दिया गया है :– ''किन्नर यानी ईश्वर, ब्रह्म और ब्रह्म को उपनिषद में ... वह न स्त्रीलिंग है न पुल्लिंग है। ब्रह्म बीच वाला – नान्यतर है। बीच की वस्तु है। उसको ब्रह्म कहते हैं। न स्त्रीलिंग न पुल्लिंग। किन्नर का एक अर्थ है –ईश्वर।''[9]
10. वामन शिवराम आप्टे एवं ए० के० चतुर्वेदी के शब्दकोश के अनुसार 'किन्नर' का अर्थ है :– ''कथाओं में प्रसिद्ध मनुष्य मुख, अश्व अंग, देव जाति, कुबेर दूत।''[10]
11. कालिका प्रसाद द्वारा संपादित शब्दकोश में 'किन्नर' का अर्थ इस तरह से दिया गया है :–''देवताओं की एक योनि जिनका मुँह घोड़े के जैसा होना माना जाता है, किं पुरुष, गाने बजाने वाली एक जाति।''[11]

परिभाषा :

किन्नर की परिभाषाएं विभिन्न विद्वानों, साहित्यकारों एवं पुराणकारों और ज्योतिषियों ने अपने–अपने अनुसार दी है जो निम्नलिखित हैः–

1. **ज्योतिष विज्ञान के अनुसार** :–

''वीर्य बढ़ने से पुरुष (पुत्र) उत्पन्न होते हैं और खून बढ़ने से स्त्री (कन्या) पैदा होती है लेकिन जब वीर्य और खून समान मात्रा में हो तो किन्नर पैदा होता है।''[12]

2. **नृष विज्ञान (इथनोग्राफी)** :–

नंदा अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'नाइदर मैन नॉर वूमेन'(1960) में किन्नर को परिभाषित करते हुए लिखते हैं :– ''स्वयं किन्नर अपने आप को न तो आदमी और ना ही औरत के रूप में स्वीकारते हैं बल्कि उनका मानना है कि महिला–पुरुष द्विआधारी के बीच में कहीं ना कहीं एक जीवन ईश्वर ने बनाया है, जहाँ स्त्रीत्व और पुरुषत्व की गहरी जड़े शरीर रूप से नर होते हैं या अंतः लिंगी (Inter Sex) किंतु कुछ मादा (स्त्री) होते

हैं।''[13]

3. पुनीत बिसारिया के अनुसार :–

''किन्नर या हिजड़ों से अभिप्राय उन लोगों से है, जिनके जननांग पूरी तरह से विकसित ना हो पाए हो अथवा पुरुष होकर भी स्त्रैण स्वभाव के लोग, जिन्हें पुरुषों की जगह स्त्रियों के बीच रहने में सहजता महसूस होती है।''[14]

4. उर्मिला पोडवाल के विचारानुसार :–

''ऐसे मानव किन्नर कहलाते हैं, जो लैंगिक रूप से न नर होते हैं न मादा। आम तौर पर न तो पुरूष न ही महिला। ये तीसरे लिंग के रूप में पहचाने जाते हैं।''[15]

5. डॉ० एम० फिरोज खान के अनुसार :–

''प्रकृति के अनुसार मानव तीन प्रकार के होते हैं –स्त्री, पुरुष और किन्नर। पुरुष के शरीर में स्त्री के मन को लेकर और स्त्री के शरीर में पुरुष के मन को लेकर जीने वालों को किन्नर कहते हैं।''[16]

6. पुराणों की मान्यतानुसार :–

''कुंडली में बुध, शनि, शुक्र एवं केतु के अशुभ संभोग से व्यक्ति किन्नर या नपुंसक पैदा होते हैं।''[17]

7. चौथी शताब्दी में महर्षि वात्सायन द्वारा लिखी गई पुस्तक 'कामशास्त्र' में इस वर्ग के बारे में विस्तृत उल्लेख मिलता है। लेखक ने किन्नर शब्द को बड़े व्यापक रूप से परिभाषित किया है :–''किं अंह नरः इति किन्नर, ऐसा पुरुष जिसको अपने पुरुष होने में संदेह उत्पन्न होता है।''[18]

8. डॉ० नीरजा माधव के विचारानुसार :–

''सांख्य दर्शन के अनुसार सृष्टि के लिए प्रकृति और पुरुष काद्वैत कारक है। भौतिक जगत में भी स्त्री–पुरुष एक–दूसरे के अभाव में अपूर्ण रहने का प्रत्यय भारतीय धर्म और इस संस्कृति का प्राण है। यही द्वैत उदात्त मानवीय मूल्यों एवं संवेदनशील संबंधों की स्थापना का आधार बनता है और सृष्टि चक्र का कारण भी। जहाँ से स्त्री–पुरुष का द्वैत समाप्त होता है, वहीं से शुरू होता है तृतीय प्रकृति का समुदाय।''[19]

उपर्युक्त परिभाषाओं का गहन मूल्यांकन एवं विवेचन–विश्लेषण करने के बाद निष्कर्ष स्वरूप कह सकते हैं कि 'किन्नर' उसे कहा जाता है जो व्यक्ति प्राकृत रूप से प्रकृति प्रदत्त जो न ही पुरुष के रूप में और न ही स्त्री के रूप में पैदा हुआ हो, जिसमें पुरुष एवं स्त्री दोनों के गुण विद्यमान हो और यह संतान उत्पत्ति करने में भी अपने आपको असक्षम मानता हो। उसे हम किन्नर कहते हैं।

संदर्भ

1. डॉ० धीरेंद्र वर्मा, हिंदी साहित्य कोश भाग 2, ज्ञानमंडल लिमिटेड, वाराणसी, पृष्ठ 90
2. संपा० चतुर्वेदी द्वारका प्रसाद शर्मा, चतुर्वेदी संस्कृत हिंदी कोश, पृष्ठ–125
3. नगेंद्र बसु, हिंदी साहित्य कोश, भाग–4, पृष्ठ–34
4. राम शंकर शुक्ल,'रसाल', शब्दकोश, पृष्ठ–385
5. डॉ० हरदेव बाहरी, राजपाल हिंदी शब्दकोश, राजपाल एंड सन्ज, दिल्ली, संस्करण : 2018, पृष्ठ–106
6. संपा० राम प्रकाश सक्सेना, वर्धा हिंदी शब्दकोश, पृष्ठ–269
7. नीरजा माधव, किन्नर नहीं हिजड़ा समुदाय, ए०बी०एस० पब्लिकेशन, वाराणसी, प्रथम संस्करण : 2019, पृष्ठ–10
8. बृजेंद्र चतुर्वेदी, वृहित हिंदी कोश, पृष्ठ–320
9. मुरारी बापू, मानस किन्नर, संत कृपा सनातन संस्थान, मिराज केंपस, नाथद्वारा (राजस्थान), संस्करण : अक्टूबर 2017, पृष्ठ–54
10. वामन शिवराम आप्टे, ए०के० चतुर्वेदी, संस्कृत हिंदी अंग्रेजी शब्दकोश, अमित पब्लिशर्स, नई दिल्ली, पृष्ठ–243
11. संपा० कालिका प्रसाद, राजरवल्लभ सहाय, मुकुंदी लाल श्रीवास्तव, वृहत् हिंदी कोश, ज्ञानमंडल लिमिटेड, वाराणसी, द्वितीय संस्करण : 2013, पृष्ठ–247
12. संपा० देवयानी महिड़ा, किन्नर साहित्य व्यथा, यातना और संघर्ष,रोशनी पब्लिकेशन, कानपुर, प्रथम संस्करण : 2019,पृष्ठ–14
13. सुरेनानंदा, नाइदर मैन नॉर वूमेन, पृष्ठ–9
14. संपा० अरविंद कुमार,निरूप्रह त्रैमासिक पत्रिका, दिसंबर–फरवरी 2016, पृष्ठ–13
15. पार्वती कुमारी, किन्नर समाज तीसरी ताली, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण : 2019, पृष्ठ–35
16. संपा० एम० फिरोज खान, थर्ड जेंडर कथा आलोचना, अनुसंधान पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, कानपुर, प्रथम संस्करण : 2017, पृष्ठ–117
17. संपा० देवयानी महिड़ा, किन्नर साहित्य व्यथा, यातना और संघर्ष, रोशनी पब्लिकेशंस, कानपुर, प्रथम संस्करण : 2019, पृष्ठ–14
18. रवीना बरिहा और विद्या राजपूत, तृतीय प्रकृति, आशीष ग्राफिक्स, रायपुर, प्रथम संस्करण : 2019, पृष्ठ–9
19. संपा० विजेंद्र प्रताप सिंह, रवि कुमार गोंड, भारतीय साहित्य एवं समाज में तृतीय लिंगी विमर्श, अमन प्रकाशन, कानपुर, प्रथम संस्करण : 2015, पृष्ठ–25

कुलदीप

पीएच०डी० शोधार्थी, हिंदी विभाग

महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय

रोहतक (हरियाणा)

kuldeepsingh210290@gmail.com

8930138078

5

ग़ज़ल गायकी का बदलता स्वरूप

डॉ0 हुमा मसूद

सारांश –

हर कला का हमारे जीवन और समाज से गहरा संबंध रहा है जैसा समाज होगा वैसी ही कला होगी। ये और बात है कि ग़ज़ल गायकी और संगीत दोनों एक साथ एक कला में उभरते हैं तो उतनी ही तेज़ी के साथ बदलाव आते हैं।

डॉ0 उमा गर्ग के अनुसार–

''आज का हमारा समाज कुछ ऐसी स्थिति में पहुँच गया है कि कोई भी कला इस समाज में पनपने की बजाय विनाश की ओर जा रही है। किसी भी कला या साहित्य के विकास या पतन का ज़िम्मेदार केवल कलाकार या साहित्यकार ही नहीं होता समाज भी होता है। परिस्थिति को बदलने के लिए समाज में एक क्रांति लाने के लिए वैज्ञानिक समझ की ज़रूरत है। क्रांति सोचने भर से या कुछ देने भर से नहीं आ जाती यह एक प्रोसेस है। धीरे–धीरे इस क्षेत्र में प्रयास करते करते यह बदलाव आता है।''[1]

ग़ज़ल गायकी और संगीत के इस बदलते स्वरूप को इस प्रकार हमारे समाज की बदलती स्थितियों के संदर्भ में समझा जा सकता है। ग़ज़ल गायकी एक ऐसी कला है जिसकी महत्वता से इंकार नहीं किया जा सकता। ग़ज़ल कहना एक कला है, उसी तरह ग़ज़ल गाना भी एक कला है। ग़ज़ल विभिन्न विचारों का एक गुलदस्ता है। फनकार को विभिन्न रागों, विभिन्न सुरों में उसे बांधना होता है ताकि हर फूल का सौन्दर्य बना रहे। हर पत्ती का रंग प्रदर्शित हो सके। इसी तरह फनकार के लिये शायरी और संगीत के बीच तालमेल बनाये रखना ज़रूरी है। वह ग़ज़ल के हर शेर की खुशबु को ना सिर्फ़ महसूस करता है बल्कि संगीत के दायरे में रहकर राग के सुरों में भी पिरोता है।

ग़ज़ल गायकी सिर्फ़ सुनने और आनन्द प्राप्त करने की वस्तु नहीं। आज के बदलते वातावरण में ग़ज़ल गायकी ठंडी हवा के एक ख़ुशगवार झौकें की तरह है जो अंदर और बाहर दोनों के मौसमों की घुटन को कम करती है। इसी प्रकार कल्पना की एक अलग प्रकिया है जो चुपचाप धीरे–धीरे संगीत और ग़ज़ल गायक के अंदर जारी रहती है शब्द, अर्थ व लय एक दूसरे से जुड़कर भावपूर्ण ढंग से एक गहरा प्रभाव डालते हैं।

ग़ज़ल और संगीत दोनों का एक ऐसा अटूट रिश्ता है जिसका रंग हर दौर में बदलता तो रहा मगर कभी ख़त्म नहीं हुआ। कभी कभी कोई मिसरा या गीत, ग़ज़ल का कोई मुखड़ा या कोई राग ज़हन के दरीचों में उभरता है और पूरे व्यक्तित्व को अपनी लपेट में ले लेता है। लेकिन जिस वक्त ग़ज़ल गायक और श्रोता आमने सामने होते हैं तो दोनों के मध्य एक ऐसा अजीब रिश्ता बंध जाता है जो बहुत नाज़ुक, बहुत क़ीमती होता है। ग़ज़ल गायक अपनी आवाज़ के उतार चढ़ाव के साथ ग़ज़ल में पूरी तरह डूब कर सुरों के द्वारा पलों को क़ैद करता है। जब साज़ सच्चे सुरों के साथ समय को अपना पाबन्द बनाकर समा बांधता है तो ये वो अनमोल पल होते हैं जिससे सच्चे सुरों की कोपलें फूटती हैं, कला की परख होती है। साज़ और आवाज़ ख़ुद–ब–ख़ुद जीवन की घुटन को बिना कोशिश किये बाहर निकाल फ़ेकते हैं और इसी तरह एक अच्छी ग़ज़ल आत्मा की ताज़गी का सबब बन जाती है। कला व काव्य को अलौकिक सत्ता से जोड़ने की भी कोशिश की गयी। डा0 राधा कृश्णन के नज़दीक

''.....कविता स्वर्ग में गिरती हुई सुधा धारा नंदन के कुसुमों से टपकी मकरंद की बूंद और अंनत के दिव्य संगीत की स्वर लहरी बन गई। कवि इस लोक का प्राणी नहीं रह गया। वह पार्थिक जीवन से परे पैग़मबर, औलिया रहस्य दर्शी बन गया।''[2]

हमारा माहौल, हमारा समाज, हमारा मिज़ाज, हमारी पसन्द और नापसन्द समय के साथ–साथ बदलती रहती है। इसी तरह कला का स्वरूप भी बदलता रहता है। एक महदूद ज़िन्दगी अपने अंदर इल्म और कला के लामहदूद तजुर्बे रखती है। ये तजुर्बे ग़ज़ल के रूप में ढ़लकर सुरों और रागों से सजकर एक नया जादू जगाते हैं और इस तरह शायरी और संगीत एक दूसरे के लिये ज़रूरी हो जाते हैं। शेर के लिये वज़्न और क़ाफिया का होना ज़रूरी है। बिल्कुल इसी तरह बोल के लिये राग ज़रूरी है। अरस्तु ने शायर को ''सनअतगर'' और वज़्न को शेर की कसौटी माना है।

ग़ज़ल का हर शेर एक इकाई होता है। ग़ज़ल में कम से कम 5 और 11 से अधिक शेर नहीं होने चाहिए। ग़जल का अपना एक ढंग है, शेर के दो सम चरण 'मिसरा' कहलाते हैं। शेर में

''रदीफ'' और ''क़ाफिया'' की पाबन्दी जरूरी है। शेर में दोनों मिसरों का रदीफ और काफिया समान हो उसे मतला कहते हैं और जिसमें शायर अपना तख़ल्लुस इस्तेमाल करे, मक़ता कहते हैं। ग़ज़ल का शाब्दिक अर्थ मोहब्बत के जज़्बात व्यक्त करना है।

डा0 शरच्चन्द्र श्रीधर परांजपे ग़ज़ल की लोकप्रियता से प्रभावित होकर लिखते हैं–

''ग़ज़ल की प्रभावात्मकता उसके भाव और भाव–प्रदर्शन की शैली में है। अनुकूल कंठ तथा गान–शैली ग़ज़ल की सरसता को बढ़ाती है। अर्थ की रंगीनी ग़ज़ल की मुख्य विशेशता है''।[3]

अपने लेख ''भारतीय साहित्य तथा संगीत में ग़ज़ल'' में भारतीय संगीत में ग़ज़ल का प्रवेश किन हालात में हुआ उस पर भी रोशनी डाली है–

ग़ज़ल के हक़ीकी रंग जब भाव की अभिव्यक्ति का साधन बनते हैं तो शब्द और स्वर एक दूसरे के पूरक बन जाते हैं। जहां लफ़्ज़ों की ताक़त ख़त्म होती है वहां स्वर ग़ज़ल के गेसु सवांरते दिखाई देते हैं।

ग़ज़ल अपनी खुबियों, दिल फ़रेबियों अपने अंदाज़ और अपने रंग–रूप की वजह से दिलों पर हुकूमत करती है। उर्दू ज़ुबान की उम्र बहुत बड़ी नहीं मगर जिस तरह उसने तरक़्क़ी की मंज़िलें तय कीं, उर्दू साहित्य को और ख़ासतौर पर ग़ज़ल को जिन ऊँचाईयों पर पहुँचाया उसे एक पहचान, एक लहजा दिया वो किसी तौर पर नज़र अंदाज़ नहीं किया जा सकता। ग़ज़ल जैसी गहराईयां कहीं और नहीं मिलतीं। बदलते हुये हालात का असर साहित्य की दूसरी क़िस्मों पर लगातार पड़ता रहा। मगर ग़ज़ल ग़ज़ल ही रही। इसका दायरा बढ़ता रहा। वो सिर्फ़ इश्क और मोहब्बत के ज़िक्र तक महदूद नहीं रही बल्कि समाजी, सियासी मसलों और इंसानी ज़िन्दगी के विभिन्न पहलुओं की तरजुमानी भी करती रही।

उत्तरी भारत में जिस वक़्त खड़ी बोली निखर रही थी इसका वास्ता फ़ारसी जैसी ज़ुबान से पड़ा। फिरदौसी, अत्तार, रोमी, सादी और हाफ़िज़ जैसे शायर ऐशिया और यूरोप तक के शायरों को नई राह दिखा रहे थे। इसी के साथ साथ हिन्दुस्तानी सभ्यता हिन्दुस्तानी जीवन, मौसम, तीज त्यौहार आदि के अनगिनत रंग शायरी में महफूज़ हो गये हैं। ग़ज़ल का पहला रूप अमीर ख़ुसरो की शायरी में दिखाई देता है। अमीर खुसरो से लेकर दूसरे सूफ़ी बुर्जुगों के यहाँ ग़ज़ल और क़व्वाली का सूफ़ियाना लब और लहजा और चलन मिलता है। यह रिवायत बहुत पुरानी है।

ग़ज़ल और कव्वाली का आदर्श रूप अपने लौकिक प्रेम और ईश्वरीय भक्ति के कारण सूफियों और ग़ज़ल गायकों में सदा सम्मानित रहा है। आचार्य बृहस्पति के अनुसार

''ग़ज़लो और क़व्वालियों का प्रभाव उन उन स्थानों पर अधिक रहा जिन जिन स्थानों पर चिश्ती परम्परा के सूफ़ी संतों का प्रभाव था। बहमनी सुलतानों और उनके उत्तराधिकारियों की सभाएँ ग़ज़ल गायकों के स्वरों से गूंजती रहीं।''[4]

हालांकि वक़्त के साथ–साथ ग़ज़ल और संगीत का रूप बदलता रहा। अमीर खुसरो ने बहुत से आलाते मौसिक़ी सितार, तबला और ढोलक ईजाद किये। नये नये राग और उनके मेल बनाये। उन रागनियों के लिए बोल लिखे। वह ईरानी और हिन्दुस्तानी संगीत से वाक़िफ़ ही नहीं थे बल्कि दोनों तरह के संगीत के रागों को मिलाकर नये राग भी ईजाद कर लिया करते थे। सूफ़ी साहित्य ने संगीत के प्रचार में परम्पराओं को बढ़ावा देने में बड़ा महत्वूपर्ण योगदान दिया।

मुग़ल साम्राज्य में बाबर के ज़माने से गज़ल का दौर शुरू हुआ। हुमायूँ, बैजू की गाई हुई ग़ज़ल से प्रभावित हुए। औरंगज़ेब के दौरे हुकुमत से पहले उर्दू ग़ज़ल दक्षिण में सूफ़ी शायरों, बादशाहों के यहाँ निखरने और संवरने लगी। कुतुबशाह, वजही, ग़वासी, नुसरती आदि ने आने वाले शायरों के लिये राहें खोली और ग़ज़ल को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। वली दकनी की उर्दू ग़ज़ल ने शुमाली हिन्दुस्तान के शायरों को नई ज़ुबान की तरफ मायल किया। जब उर्दू ग़ज़ल को सवाँरने और सही रूप देने के लिये वली ने नया लब और लहजा अपनाया तो उस वक़्त मुग़लिया सल्तनत की कमज़ोरी का असर पूरे मुल्क पर पड़ रहा था। विशेशकर सौदा, मीर और दर्द जैसे शायरों ने इसी दौर में अपनी शायरी की शुरूआत की बल्कि ग़ज़ल को नया रंग और आहंग दिया। हालात मीर, दर्द, इन्शा, मस्हफ़ी और जुरअत को उजड़े दयार से लखनऊ पहुँचा देते हैं। मीर ने उर्दू ग़ज़ल में दिली वारदात और एहसासात दाख़िल करके उसे आफाक़ी बना दिया। ग़ालिब ने ग़ज़ल को नया रंग और आंहग दिया। मोमिन, सौदा, दर्द, क़ायम, मीर सोज़ ने अपनी ग़ज़लों का जादू जगाया। आतिश, नासिख़, मसहफी, जुर्रत, इंशा आदि ने अपने फ़िक्र और फन से ग़ज़ल के खज़ाने में इज़ाफा किया। 1857 के हंगामें और नासाज़गार माहौल में भी ग़ज़ल का चिराग रौशन रहा। नसीर देहलवी, आजुर्दा, शेफ़्ता ने ग़ज़ल को सादगी के साथ एक नया अंदाज़ बख़्शा। बहादुर शाह ज़फ़र ने दिल्ली की तमाम बदहाली अपनी आंखों से देखी। मुख़ालिफ फ़ज़ाओं के बावजूद ग़ज़ल ने ज़माने के तक़ाज़े के मुताबिक़ ख़ुद को ढ़ाल लिया। उनकी महफिलें

उर्दू शायरों से सजीआज की ग़ज़ल गायकी की तरह उन दिनों शेर कहने और सुनने पर बहुत ज़ोर था। डा0 उमा गर्ग के अनुसार–

''स्वरों का उतार चढ़ाव, ग़ज़ल के मूड के हिसाब से तो था ही वह दौर ऐसा था कि जब हर किस्म की कलाओं का विकास हुआ। एक तरफ जहां महान संगीतज्ञों शायरों का उदय हुआ दूसरी तरफ हिन्दी के कवियों का कबीर, सूर, तुलसी, मीरा, जायसी का भी आगमन हुआ। जब रागदारी संगीत का विकास हुआ 'ध्रुपद' गायन से 'ख़्याल' ठुमरी शैली का प्रयोग होने लगा। उर्दू जुबान में निखार आया। गायकों में फ़ारसी ग़ज़ल गाने का रिवाज कम होकर उर्दू ग़ज़ल का ज़ोर बढ़ने लगा। सही मायने में ग़ज़ल और गायकी का मेल यहीं से शुरू हुआ।''[5]

1857 के बाद अमीर मीनायी, दाग़, जलाल, तस्लीम, फिर हाली, आज़ाद, इस्माईल मेरठी और अकबर इलाहाबादी सामने आते हैं लेकिन ये दौर ग़ज़ल से ज्यादा नज़्म का दौर था। दाग़ ने देहली में और अमीर मीनायी ने लखनऊ में ग़ज़ल की शमा रौशन रखी। शाद, जलील, रियाज़, बेखुद साइल, हसरत, यगाना, फ़ानी, सफ़ी, असग़र, जिगर, साक़िब, आरज़ू जैसे शायर जिन्होंने ग़ज़ल को हुस्न और इश्क के महदूद दायरे से निकालकर ज़िन्दगी की हक़ीक़तों से आंखें मिलाना सिखाया। चकबस्त, जोश और इक़बाल ने रिवायत के बंधनों से ग़ज़ल को आज़ाद कराया। उनकी इंक़लाबी और फ़लसफ़याना शायरी ने लोगों को अपनी तरफ खींचा। फ़ानी ने दुखद ग़ज़ल की अति उत्कृश्ट मिसालें पेश कीं–

एक मोअम्मा है समझने का ना समझाने का
ज़िन्दगी काहे को है ख़्वाब है दिवाने का

इन शायरों के ज़रिये ग़ज़ल रिवायत से बाहर आकर अपने अहद के उभरते तक़ाज़ों की तरजुमान बनी। जहां तक हसरत की शायरी का ताल्लुक़ है मौलाना जमीलुददीन लिखते हैं–

''हथकड़ियों और बेड़ियों की झनकार ने मोजिज़ निगार हसरत को नग़मासरा कर दिया। क़ैद ए तन्हाई की मुसीबत और चक्की की मशक़्क़त ने तबीयत मे सोज़ो गुदाज़ बढ़ाया। ग़ज़ल गोई के जौहर खुले और सैय्यद फ़ज़लुलहसन की बहारे फिक्र ने रियाज़े ग़ज़ल उर्दू के मुरझाये हुये फूलों को फिर से शगुफ़्ता कर दिया।''[6]

1936 में ग़ज़ल तरक़्क़ी पसन्द तहरीक के प्रभाव से ग़ज़ल एक नये मोड़ पर पहुंची और शायरी में हक़ीक़त पसंदी पर ज़ोर दिया गया। फिराक़ गौरखपुरी ने ज़िन्दगी के अनुभवों को ग़ज़ल में ढ़ाला। फैज़ नें तरक़्क़ी पसन्द शायरों में अपनी जगह बनायी। फैज़ की ग़ज़लों में वो कैफ़ियत है कि जिसे संगीत में आसानी से ढाला जा सकता है।

कहीं तो कारवानें दर्द की मंजिल ठहर जाये,
किनारे आ लगे उम्रे रवां या दिल ठहर जाये।

फैज़ की ग़ज़लों में ये ख़ूबियां है जिनकी वजह से हिन्द व पाक के मशहूर गुलुकारों ने फैज़ की ग़ज़ले बड़े शौक़ से गाई। जिसमें बेगम अख़्तर, बरकत अली ख़ान, फरीदा ख़ानम, मेहदी हसन और नूरजहाँ ख़ासतौर से शामिल हैं जिससे फैज़ की अवामी मक़बूलियत में बहुत इज़ाफा हुआ।

प्रोफे0 क़मर रईस के अनुसार–

''वो अपनी ग़ज़ल में ऐसी मोहिनी फिज़ा तख़्लीक़ करने पर क़ादिर हो जाते हैं जो क़ारी या सामय के बेशतर हवास को फौरन अपनी गिरफत में ले लेती है।''[7]

मजरूह, मजाज़, साहिर, कैफ़ी आज़मी, सरदार जाफ़री, मख़दमू, जान निसार अख़्तर आदि ने ग़ज़ल को नयी बुलंदियों से हमकिनार किया। 1950 के आस–पास ग़मे दौरां ग़मे जानां के साथ–साथ ग़मे ज़ात जैसे विशय अपनाकर ग़ज़ल नई मंज़िलों की तरफ बढ़ी। आज भी उर्दू ग़ज़ल ज़माने की तेज़ रफ़तारी का बराबर साथ दे रही है। बशीर बद्र, ज़फ़र इक़बाल, अहमद फ़राज़, निदा फाज़ली, नासिर काज़मी, ख़लीलुररहमान आज़मी, मुनीर नियाज़ी, शहरयार, मख़मूर सईदी, वज़ीर आग़ा ग़ज़ल को एक नया रूप रंग अता कर रहे हैं। उर्दू ग़ज़ल हर दौर में अपनी अलग पहचान बनाने की कोशिश करती रही है बल्कि हिन्दुतानी सभ्यता, हिन्दुस्तानी ज़बानों से भी अपना रिश्ता जोड़े हुए है।

ग़ज़ल का लहजा अपने अंदर एक ख़ास मौसीक़ियत लिये हुए होता है जब साज़ और आवाज़ भी एक लै मे बंध जाते हैं, तब ख़्याल और सुर न सिर्फ मुकम्मल होते हैं बल्कि एक इकाई बन जाते हैं। सुनने वाले ग़ज़ल की तरफ न सिर्फ ध्यान देते हैं बल्कि हर कोई उसमें अपना अपना अक्स देखने लगता है। सीमाब अकबर आबादी के शब्दों में–

कहानी मेरी रूदादे जहाँ मालूम होती है
जो सुनता है उसी की दास्तां मालूम होती है।

ग़ज़ल गायकी कलासिकी संगीत का एक हिस्सा है जिसकी गूंज हमें ख़ानक़ाहों से लेकर मुग़ल दरबारों तक सुनाई देती है। मुस्लमानों में महफिले समां हुई तो दूसरी तरफ हिन्दु धर्म में संगीत इबादत का हिस्सा बना। मध्यम लै की गायकी का रिवाज हुआ। कोमल और शुद्ध सुरों से काम न चल पाया तो ''अति तेवर'' और ''अति कोमल'' काम में लाए गए। बसन्त या केसरी, जय जय

वनती, रामकली, तोड़ी सारंग आदि रागों में ग़ज़ल की बन्दिश की गई। महफिले समां में पहले साज़ नहीं होता था, पहले पहल ताली फिर ढ़ोलक पर क़व्वाली गाने का रिवाज हुआ। अमीर खुसरों का नाम इसी वजह से अहम है। उन पर डा0 उमा गर्ग ने इन शब्दों में प्रकाश डाला है। वह कहती हैं–

> ''वे महान कवि शायर लेखक और संगीत शास्त्री के रूप में संगीत जगत में आज भी विख्यात हैं। संगीत में जब रस की बात की जाती है तो रसों की संख्या कम हो जाती है। तेरहवीं शताब्दी के इस महान संगीतज्ञ ने फ़ारसी के साथ–साथ हिन्दी में भी शायरी की। भारतीय रागों और तालों का इस्तेमाल किया। क़व्वाली शैली की गायकी की बुनियाद भी यहीं से पड़ी।''[8]

ग़ज़ल गायकी और संगीत कला एक ऐसे बंधन में बंधे है जो ज़रा सी भी कमज़ोरी से टूट सकते हैं। गायकी के शेर के शब्दों का उच्चारण सही हो, सुर शेर पर हावी न होने पाये तभी ग़ज़ल गायकी में लुत्फ़ आता है। मतीन उर रहमान के अनुसार–

> ''कलासिकी मौसिक़ी में कला (फन) अहम है और ग़ज़ल गायकी में गला (अदायगी और आवाज)''[9]

आज ग़ज़ल गायकी से राग की शुद्धता, लय, ताल और सुर सभी की जानकारी हो जाती है।

ख़ानक़ाहों और दरबारों से होती हुई गायकी कोठों और गाने वालियों तक पहुँचते–पहुँचते अपनी महत्वता खो बैठी। 1938 के आस पास उस्ताद बरकत अली ख़ान बड़े गुलाम अली ख़ान के भाई ने ठुमरी और ग़ज़ल को नये रंग दिये। कुंदन लाल सहगल ने इसे ड्राईंगरूम तक पहुँचाया।

हम अपने गम का फ़साना उन्हें सुना ना सके
जब उनको सामने पाया तो खुद का पा ना सके।

बेगम अख़्तर द्वारा ग़ज़ल गायकी दिलों को छूती हुई फिल्मी और ग़ैर फिल्मी लोगों के दरमियान गूंजने लगी।

दुनिया में हूँ दुनिया का तलबगार नहीं हूँ
बाज़ार से गुज़रा हूँ ख़रीदार नही हूँ

तलत महमूद की ग़ज़ले रेडियों, ग्रामोंफोन द्वारा दिलों को लुभाने लगीं।

पाकिस्तान में मेंहदी हसन, गुलाम अली, फरिदा ख़ानम, बेगम अख़्तर, मलिका पुखराज ने अपने दिलकश अंदाज से ग़ज़ल गायकी में एक नया मोड़ लिया, उसे जनसाधारण तक पहुँचा दिया। जगजीत सिंह द्वारा ग़ज़ल गायकी आलमी सतह तक पहुँची। जगजीत सिंह और उनकी पत्नी चित्रा की जुगल बंदी ने विश्व में एक अनोखा रंग पैदा कर दिया। मेंहदी हसन ने अपना एक अलग अंदाज निकाला। इनके बाद राजेन्द्र मेहता और नीना मेहता की जोड़ी ने ग़ज़ल गायकी में गीतों की मिठास शामिल की। सुधा मलहोत्रा, जगजीत कौर, युनुस मलिक, फ़य्याज शौकत, मुरली मनोहर स्वरूप आदि ने अपनी दिलकश तरज़ों से ग़ज़ल गायकी को चार चाँद लगाये। तलत अज़ीज़ ने गायकी के शौक़ को पेशा बनाकर शोहरत हासिल की। फिल्मी दुनिया से जुड़े मौहम्मद रफ़ी, लता मंगेश्कर, महेन्द्र कपूर, सुमन कल्यान पुर, मुबारक बेगम आदि ने प्राईवेट तौर पर भी रेडियों द्वारा ग़ज़ल गायकी को नये आयाम दिये। मलिका पुखराज ने अपनी पाटदार आवाज के साथ ''अभी तो मैं जवान हूं'' ''तेरे इश्क की इन्तेहा चाहता हूँ'' आदि ग़ज़ले गाकर लोगों के दिलों में जगह बनाई। नूरजहां ''दमा दम मस्त क़लन्दर'' मुजददिद नियाजी की ''न किसी की आंख का नूर हूँ'', हबीब वली मौहम्मद की ''लगता नहीं है दिल मेरा उजड़े दयार में'' उनके नामों को आज भी ज़िंदा रखे हुए हैं।

मेंहदी हसन विश्व प्रसिद्ध कलाकार हैं। ख़्याल के रंग में ग़ज़ल गाने का आरम्भ आप ने ही किया। डा0 उमा गर्ग उनकी तारीफ इन शब्दों में करती हैं–

> ''कोई भी ईमानदार ग़ज़ल गायक इस बात से इंकार नहीं कर सकता कि ग़ज़ल गायकी को एक बार फिर से प्रतिश्ठित किया मेंहदी हसन ने। उच्चारण की शुद्धता, गायकी में स्वरों की सच्चाई, लफ़्ज़ों को उनके भावों को इस तरह से कहना कि दिल को वो सुकून मिलता है, जो ग़ज़ल गायकी में होना चाहिए।''[10]

आप की ग़ज़ल गायकी में कला, संगीत भी है और नये दौर का अंदाज़ भी आप की बहुत सी ग़ज़ल बहुत मशहूर हुई। ''रंजिश ही सही दिल ही दुखाने के लिये आ'' ''बात करनी मुझे मुश्किल कभी ऐसी तो न थी'' ''रौशन जमाले यार से है अंजुमन तमाम'' आदि।

तलत महमूद ने ग़ज़ल गायकी के अपने अंदाज़ से श्रोता को प्रभावित किया। उस वक्त टी0वी0, टेप रिकार्डर, स्टेज प्रोग्रामों का चलन नही था। रेडियो ग्रामफोन आम थे। ग़ज़ल गायकी

ड्राइंगरूम तक पहुँच गई थी। कुंदन लाल सहगल, बेगम अख़्तर और तलत महमूद अपनी अपनी आवाज़ों का जादू जगा रहे थे। गुलाम अली ने स्टेज और टी0वी0 तक उसे पहुँचाया। दिल को छू लेने वाली ग़ज़ल गायकी और बेहतरीन अंदाज ने उन्हें लोकप्रिय बनाया।

हंगामा है क्यों बरपा थोड़ी सी जो पी ली है
डाका तो नहीं डाला चोरी तो नहीं की है
चुपके–चुपके रात दिन आँसू बहाना याद है
हमको अब तक आशिकी का वो ज़माना याद है

इनके अलावा फ़रीदा खानम, राजेन्द्र मेहता, नीना मेहता, तलत अज़ीज, भुपेन्द्र सिंह, पंकज उधास, मौहम्मद हसन, पिनाज़ मसानी आदि ने मीर, ग़ालिब, दाग़, इक़बाल, फैज़, हसरत, नासिर काज़मी, बशीर बद्र, निदा फ़ाज़ली आदि शायरों की ग़ज़लों को गाकर ग़ज़ल गायकी को एक सफल व्यवसाय का रूप देने में अहम भूमिका निभाई।

हिंदुस्तान में हज़ारों फ़नकार हैं जो अपनी विशेश पहचान बना गये। ज़माना जिस तेज़ी से बदल रहा है उसका प्रभाव ग़ज़ल गायकी पर हम को नजर आता है। संगीत केवल आमदनी का ज़रिया बनता जा रहा है। अब वह अवसर कहां जिन में अपनापन था। कुछ आवाज़े वक़्त के साथ गुम हो गयीं तो कुछ की गूंज अभी बाक़ी हैं। विठल राव, मोईनउददीन, मौ0 याकूब, राहत अली, उशा टंडन, उस्ताद रईस खां, अनुप जलोठा, नीलम साहनी आदि ग़ज़ल गायकी में अपनी पहचान बना रहे हैं।

निष्कर्ष

रेडियो, टी0वी0, बड़े–बड़े कन्सर्ट आदि ने नये फनकारों को उभरने का मौक़ा दिया। नवाबी दौर ख़त्म हुआ। महफ़िलें वीरान हुयीं। फ़िल्मी अंदाज़ की आसान धुन वाली ग़ज़ल गायकी आम हुई जिससे उसका स्तर घटा, परिवर्तन भी आये मगर वह सिर्फ फ़ैशन बन कर रह गई। व्यवसाय का ज़रिया बनी तो आवाज के उतार चढ़ाव, शब्दों के उच्चारण, शेर के अर्थ से ध्यान हट गया। ग़ज़ल गायकी ने जिन ऊँचाईयों को छुआ था वह स्तर धीरे–धीरे गिरने लगा। कला में जब गिरावट आने लगती है तो बाज़ारीपन ख़ुद ब ख़ुद आ जाता है। आज पाप का ज़माना है। ग़ज़ल गायकी के प्रति जागरूकता लानी आवश्यक है। समाज और ग़ज़ल गायकी के बदलते स्वरूप को समझना आवश्यक है। ग़ज़ल गायकी में आज भी वह ताक़त है जो दिलों को अपनी तरफ़ खींचती है।

संदर्भ ग्रंथ

1. संगीत का सौन्दर्य बोध, डॉ0 उमा गर्ग पृ0 सं0 36, प्रथम संस्करण 2000, रीप्रिंट 2004, ISBN: 81-7453-030-4, मुद्रक रोशक आफॅसैट प्रिंटर्स, दिल्ली।
2. संगीत का सौन्दर्य बोध, डा0 उमा गर्ग पृ0 सं0 78, प्रथम संस्करण 2000, रीप्रिंट 2004, ISBN: 81-7453-030-4, मुद्रक रोशक आफॅसैट प्रिंटर्स, दिल्ली।
3. संगीत मुस्लमान और भारतीय संगीत अंक जनवरी 2013, प्रकाशक संगीत कार्यालय हाथरस 204101, उ0 प्र0, पृ0 सं0 63।
4. संगीत मुस्लमान और भारतीय संगीत अंक जनवरी 2013, प्रकाशक संगीत कार्यालय हाथरस 204101, उ0 प्र0, पृ0 सं0 93।
5. राग विश्लेषण संयुक्त भाग 1–2, लेखिका डा0 उमा गर्ग, पृ0 सं0 212, प्रथम संस्करण 2010, संजय प्रकाशन, नई दिल्ली। ISBN: 81-7453-136-X
6. कुल्लियाते हसरत, हसरत मोहानी, पृ0 सं0 7, 2003 नाशिर किताबी दुनिया, देहली–6।
7. उर्दू ग़ज़ल डा0 कामिल कुरेशी, पृ0 सं0 271, उर्दू एकादमी, देहली 2010
8. राग विश्लेशण संयुक्त भाग 1–2, लेखिका डा0 उमा गर्ग, पृ0 सं0 210, प्रथम संस्करण 2010, संजय प्रकाशन, नई दिल्ली। ISBN: 81-7453-136-X
9. ग़ज़ल गायकी के बदलते रंग, मतीनउर रहमान, पृ0 सं0 61, जनवरी 1982, मालवा पब्लिशिंग हाऊस, भोपाल।
10. राग विश्लेषण संयुक्त भाग 1–2, लेखिका डा0 उमा गर्ग, पृ0 सं0 214, प्रथम संस्करण 2010, संजय प्रकाशन, नई दिल्ली। ISBN: 81-7453-136-X

डॉ0 हुमा मसूद
उर्दू विभागाध्यक्षा एवं एसो0 प्रोफे0
इस्माईल नेशनल महिला
पी0जी0 कालिज,
मेरठ

6

स्त्री–पुरुष लिंगानुपात : पश्चिमी उत्तर प्रदेश

डॉ0 प्रदीप कुमार शर्मा, डॉ0 सारिका त्यागी

सारांश –

किसी भी देश की जनसंख्या के विश्लेषण में स्त्री–पुरूष अनुपात अत्यधिक महत्वपूर्ण है, जो जन्म दर व मृत्यु दर को प्रभावित करता है। स्त्री–पुरुष अनुपात से तात्पर्य प्रति 1000 पुरूषों पर स्त्रियों की संख्या से है, जो हमारे देश में निरन्तर कम होता जा रहा है। भारत में वर्ष 1901 में यह अनुपात 1000 पुरूषों पर 972 महिलाओं का था, जो धीरे–धीरे कम होते हुए वर्श 2011 में 943 पर पहुँच गया। पश्चिमी उत्तर–प्रदेश राज्य का एक विकसित भाग समझा जाता है, किन्तु वहाँ स्त्री–पुरुश अनुपात संतोशजनक नहीं है। शिक्षा का ऊँचा स्तर एवं ऊँचा जीवन स्तर, आय का अधिक स्तर एवं सरकारी प्रयास इस क्षेत्र में स्त्री–पुरूषों अनुपात को सामान्य नहीं कर पाया। इसका तात्पर्य यह है कि जनता की मानसिकता एवं स्त्रियों पर होने वाले अत्याचार ही स्त्री–पुरूषों अनुपात कम होने के प्रमुख कारण हैं। इस समस्या के निदान हेतु पर्याप्त जनाधार की आवश्यकता है जिसके लिए अनेक गांधी जैसे नेताओं की आवश्यकता है। साथ ही नई योजनाओं के सही ढंग से क्रियान्वन की आवश्यकता है ताकि यह अनुपात प्राकृतिक स्तर 1000 : 943 तक पहुँच जाए।

जनसंख्या की दृष्टि से भारत का विश्व में दूसरा स्थान है। इससे पहले स्थान पर चीन है। भारत की जनसंख्या की संरचना को देखें तो ज्ञात होता है कि यहाँ जनसंख्या तो तेजी से बढ़ रही है, किन्तु साथ ही स्त्री–पुरुष लिंगानुपात में अन्तर बढता जा रहा है। भारत में केवल एक ही राज्य (केरल) ऐसा है, जहाँ स्त्रियों की संख्या पुरुषों से अधिक है। अन्यथा सभी राज्यों में स्त्रियों की संख्या पुरुषों से कम देखी जाती है। इसके कारण समाज में वेश्यावृत्ति, बलात्कार व समलैंगिकता आदि सामाजिक बुराईयों को बढावा मिलता है। इससे मनुश्य का नैतिक पतन हो रहा है व बाल विवाह प्रथा को प्रोत्साहन मिल रहा है।

लिंगानुपात का अर्थ लिंगानुपात किसी विशिष्ट समय पर किसी देश, स्थान या जाति विशेश के स्त्री तथा पुरूषों की संख्या के बीच अनुपात को प्रदर्शित करता है। अर्थात् प्रति 1000 पुरूषों की तुलना में स्त्रियों की संख्या को लिंगानुपात के रूप में व्यक्त किया जाता है। भारत में वर्ष 1901 में यह अनुपात 1000 पुरूषों पर 972 महिलाओं का था जो धीरे–धीरे कम होता हुआ वर्ष 2011 में 943 पर पहुँच गया।

तालिका–1 : भारत में लिंगानुपात (स्त्रियां प्रति हजार पुरुष)

वर्ष	स्त्री–पुरूष अनुपात
1901	972
1911	964
1951	946
1961	941
1971	930
1981	934
1991	927
2001	933
2011	943

भारत में लिंगानुपात (स्त्रियां प्रति हजार पुरुष)

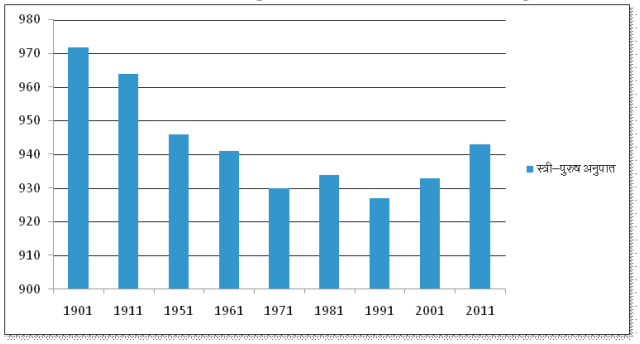

स्रोत – सांख्यिकी पुस्तक

भारत में लिंगानुपात की विषमता को एक गम्भीर जनांकिकीय घटना बताते हुए यह कहा जा सकता है कि अब तक इस समस्या के प्रति समाजशास्त्री, अनुवंशिक विशेषज्ञ और जनसंख्या शास्त्री भी अंधेरे में हैं। जनगणना रिपोर्ट में भी लिंगानुपात का जो विवरण दिया जाता है उसे पूरी गम्भीरता और सरगर्मिता से प्रस्तुत नहीं किया जाता। नगरीय क्षेत्रों में यह लैंगिक विषमता और भी प्रकट हो उठती है तथा अनेक सामाजिक तनावों को उत्पन्न करती है।

शोध प्रारूपः प्रस्तुत शोध–पत्र पश्चिमी उत्तर–प्रदेश के स्त्री–पुरूष लिंगानुपात से सम्बन्धित है, जिसमें लिंगानुपात कम होने के कारणों को जानने का प्रयास किया गया है। विश्वसनीय तथ्य, सूचनाऐं व आंकड़ें आदि एकत्रित करने के लिए अनुसूची, साक्षात्कार तथा निरीक्षण विधियों का प्रयोग किया जाता है। साथ ही द्वितीयक समंकों का भी प्रयोग किया गया है। किसी भी देश की जनसंख्या के विश्लेषण में स्त्री–पुरूष अनुपात अत्यधिक महत्वपूर्ण होता है, जो जन्म एवं मृत्यु दर दोनों को प्रभावित करता है। यदि हम विश्व के संदर्भ में यह अनुपात देखें तो यह 986 है, जबकि भारत का 943 है।

भारत में केरल और पुडुचेरी को छोड़कर सभी प्रदेशों और केन्द्रशासित प्रदेशों का लिंगानुपात प्रतिकूल है। पिछले वर्षों में सरकार का ध्यान इस ओर गया और इसे बढाने के प्रयास किए, जिस कारण 933 : 1000 (2001) से बढ़कर 943 : 1000 (2011) हो गया। किए गए सरकारी प्रयासों एवंज न जागरुकता के कारण अध्ययन क्षेत्र उत्तर–प्रदेश के मेरठ मण्डल के विभिन्न जिलों के लिंगानुपात में भी वृद्धि हुई है, जिसे तालिका संख्या 2 के द्वारा दिखाया जा सकता है–

तालिका–2 : पश्चिमी उत्तर–प्रदेश के विभिन्न जिलों के लिंगानुपात

तालिका–2 पश्चिमी उत्तर–प्रदेश के विभिन्न जिलों के लिंगानुपात

क्रम सं०	जनपद का नाम	जनसंख्या			लिंगानुपात	
		पुरुष	महिलाएँ	योग	2001	2011
1	सहारनपुर	1835740	1628488	3464228	825	881
2	मुजफ्फरनगर	2194540	1944065	4138605	871	886
3	बिजनौर	1925787	1758109	3683896	896	913
4	मुरादाबाद	2508299	2264839	4773138	875	903
5	रामपुर	1226175	1109223	2336398	879	905
6	ज्योतिबाफूले नगर	964319	874452	1838771	885	907
7	मेरठ	1829192	1618213	3447405	872	885
8	बागपत	700724	601432	1302156	847	858
9	गाजियाबाद	2181803	2179649	4661452	860	878
10	गौतमबुद्धनगर	904505	770209	1674714	841	852
11	बुलन्दशहर	1848643	1649864	3498507	870	892

स्रोत : सांख्यिकी पुस्तक

पश्चिमी उत्तर–प्रदेश के जिलों में स्त्री–पुरुष जनसंख्या

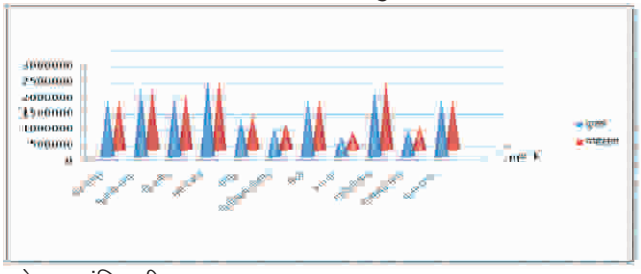

स्रोत : सांख्यिकी पुस्तक

पश्चिमी उत्तर–प्रदेश के जिलों में 2001 तथा 2011 के अनुसार लिंगानुपात

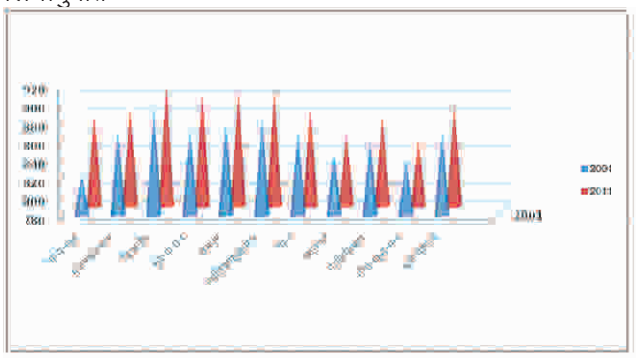

स्रोत – सांख्यिकी पुस्तक

तालिका संख्या 1 से स्पष्ट हे कि पश्चिमी उत्तर–प्रदेश के जिला सहारनपुर में सन् 2001 में स्त्री–पुरुष अनुपात 825 था जो 2011 में बढ़कर 881 हो गया। मुजफ्फरनगर में सन् 2001 में 1000 पुरुषों पर 871 स्त्रियां थीं, जो सन् 2011 में बढ़कर 886 हो गई। बिजनौर में 2001 में यह अनुपात 896:1000 था जो 2011 में 913:1000 हो गया। मुरादाबाद में सन् 2001 प्रति हजार पुरुष पर 875 स्त्रियां थीं, जिनकी संख्या 2011 में बढ़कर 903 हो गई। जिला रामपुर में सन् 2001 में 879 स्त्रियां प्रति हजार पुरुष पर थी, जो कि 2011 में बढकर 905 हो गईं। जिला मेरठ बागपत और गाजियाबाद में यह अनुपात काफी कम पाया गया 2001 में प्रति हजार पुरुषों पर इन जिलों में क्रमशः 872, 847 व 860 स्त्रियां थीं जो 2011 में बढकर क्रमशः 885, 858 व 878 हो गई। गौतमबुद्ध नगर में यह अनुपात 2001 में 840 था जो 2011 में बढ़कर 852 हो गया। इस प्रकार गौतमबुद्ध नगर में यह अनुपात सबसे कम पाया गया और बिजनौर में सबसे अधिक।

उपरोक्त जनपदों में प्रतिकूल लिंगानुपात जो कारण प्रतीत होते हैं, वे इस प्रकार हैं–

1. पुरूष शिशुओं का अधिक जन्म।
2. कन्या भ्रूण हत्या।
3. बाल्यावस्था में लड़कियों की उचित देखभाल न होने के कारण उनकी मृत्यु।
4. प्रसव काल में मृत्यु।
5. लड़कियों के विवाह में दहेज की मांग के कारण लड़कियों को न चाहा जाना।
6. लोगों की मानसिकता।
7. शिक्षा का निम्न स्तर।
8. लड़की के पिता की सामाजिक स्थिति का निम्न होना।
9. परिवार नियोजन को अपनाया जाना।
10. लड़की की कार्य क्षमता को कम समझा जाना।

यद्यपि यह समस्या सामाजिक अधिक है तथापि अवलोकन द्वारा यह निष्कर्ष निकलता है कि उपरोक्त सभी जनपद पश्चिमी उत्तर–प्रदेश से संबंधित है जहां पर प्रति व्यक्ति आय का स्तर, शिक्षा का स्तर, जीवन स्तर, पूर्वी उत्तर–प्रदेश की तुलना में अधिक है में भी स्त्री–पुरुष अनुपात काफी कम है। अतः यह कहा जा सकता है कि लोगों को साक्षर करके इनकी मानसिकता को नहीं बदला जा सकता। प्रति व्यक्ति आय की अधिकता भी स्त्री–पुरुश अनुपात में वृद्धि नहीं कर पा रही अर्थात् सम्पन्नता और कन्या इच्छा के बीच सीधा संबंध नहीं है। यदि पुत्री को क और पुत्र कोै के द्वारा इंगित करें, और लागत और लाभ को बतायें, तो यह कहा जा सकता है कि कन्या फलन है लागत है लागत का और पुत्र फलन है लाभ का। गणितीय रूप में इसे इस प्रकार व्यक्त कर सकते हैंः

कन्याओं की मात्रा समाज में बढानी है तो लागत अर्थात् दहेज को कम करना होगा। दहेज प्रथा को रोकने के लिए कानून बनाया गया है, महिलाओं पर घरेलू हिंसा को रोकने के लिए भी कानून बनाया गया है लेकिन ये पूरी तरह से कारगर नहीं हुआ। महिला सशक्तिकरण की बातें सरकार बहुत करती है किन्तु आज तक महिलाओं को उनकी सामाजिक प्रतिष्ठा नहीं मिल पाई है। पिता, पति, बेटा उसे पैर की जूती समझता है इसलिए महिलाऐं अक्सर ऐसा कहती हुई सुनी जा सकती हैं :

''अगले जन्म मोहे बिटिया न कीजियो''

सन्दर्भ सूची

1. चान्दना, आर०सी०, जनसंख्या भूगोल, कल्याणी पब्लिशर्स, नई दिल्ली, 2008
2. सिन्हा, बी०सी० एवं सिन्हा पुष्पा, जनांकिकी के सिद्धान्त, मयूर पेपर फैक्स, नोएडा 2010
3. मित्रा जे०पी०, जनांकिकी संस्करण 2011
4. एच०ची० गर्ग, जनांकिकी भूगोल 2019

डॉ0 प्रदीप कुमार शर्मा
सहायक प्रोफेसर
भूगोल विभाग
बाबा मस्तनाथ विष्वविद्यालय
अस्थल बोहर, रोहतक

डॉ0 सारिका त्यागी
प्राचार्या
विद्या देवी कन्या कॉलिज
जन्धेडा श्मसपुर, सहारनपुर

7

नारी ईश्वर की सर्वोत्तम कृति है

डॉ0 अनिता कुमारी

सारांश –

भारतीय सभ्यता – संस्कृति में नारी सदैव पूज्या रही है। वेदों में भी नारी की महत्ता को स्वीकारा गया है–'यत्र पूज्यते नारी रमन्ते तत्र देवता।' सृष्टिकर्ता, सृजनहार और संहारकर्ता शिव भी शक्ति से संयुक्त होकर अर्धनारीश्वर कहलाते हैं । बगैर शक्ति के शिव भी शव के समान हैं। ब्रह्माण्ड के समस्त देवताओं ने भी शक्ति की अराधना में स्तुतिगान किया है। नारी शक्ति की मूर्ति तथा उल्लास और आनन्द का केन्द्र – बिन्दु है।

मुख्य बात– इतिहास के पन्नों पर भारत की नारी का जो रूप अंकित है, वह कई फलकों वाला है। युद्ध क्षेत्र में वीरांगना के अवतार में शत्रुओं से लोहा लेती नारी, आँसुओं की गंगा में डूबी हुई नारी, पुरूष के हाथ की कठपुतली नारी, गृह स्वामिनी नारी, श्वसुर–सास के पुर की साम्राज्ञी नारी..... ये उसके विविध रूप है। उसका दर्जा ऊँचा है, नीचा है । उसका रास्ता समतल है, उबड़– खाबड़ है। सीधा है, टेढा – मेढ़ा है। जहाँ उसकी पूजा होती है, देवता निवास करते हैं। नारी चिरन्तन जीवन की ज्योति– प्रेरणा है। श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने कहा है कि 'जब विधाता पुरूष का निर्माण कर रहा था तब वह स्कूल मास्टर था और उसके हाथ में छड़ी तथा बस्ते में उपदेश और सिद्धान्त भरे थे किन्तु नारी निर्माण में वह अकस्मात् एक कलाकार हो गया और उसके हाथों में केवल रंग और तूलिका थी।

साहित्य में मानव–जगत की सम्वेदनाएँ जीवित रहती हैं फलती–फूलती हैं और अपने नये अस्तित्व की तलाश करती है। प्रायः सभी प्रदेशों के सहित्य की काव्य–चेतना के विकास में नारी का प्रमुख योगदान रहा है। वैदिकयुगीन नारी सदैव सर्वोच्च आसन पर प्रतिष्ठित रही, किन्तु विरक्ति और धर्म के विकसित होने पर वह नरक का द्वार घोषित की गई। वह भोग–विलास का उपकरण मात्र बनकर रह गई । आदिकाल के कवियों ने उसे एक ओर तो प्रेरकशक्ति माना और दूसरी ओर यौवनोन्माद में उलझानेवाली माना । भक्तिकाल के कवि शिरोमणि तुलसीदास नारी के प्रति पूर्वाग्रह से ग्रसित दिखाई देते हैं, उनकी रचनाओं में उनका यह पूर्वाग्रह स्पश्ट रूप से दृष्टिगोचर होता है। वे कहते हैं :–

'जिमि स्वतंत्र होई बिगरहिं नारी।'

x x x

'विधिहु न नारी हृदय गति जानी
स्कल कपट अध अवगुन खानी।'

x x x

' नारी सुभाव सत्य कवि कहहिं
अवगुन अठ सदा उर रहहि'

x x x

'ढोल गँवार शूद्र पशुनारी
सकल ताड़ना के अधिकारी।'

कबीर ने भी माया (नारी) को महाठगिनी आदि नामों से अभिहीत किया है। तुलसीदास के समकालीन अथवा उससे पूर्व के साहित्यकार भी नारी के प्रति कोई उदार दृष्टि नहीं रखते थे। सुप्रसिद्ध ग्रंथ 'बाइबल' का कहना है कि' मूल पापण की जड़ नारी है।' होमर ने अपनी पुस्तक 'इलियट' में यह प्रतिपादित किया है कि 'नारी विनाश का कारण है।' प्रसिद्ध नाटककार और कवि शेक्सपियर ने नारी को छलना कहा है–'' "Frailty thy name is woman" (हेमलेट)

भक्तिकालीन कवियों की नारी विशयक उदासीनता का प्रभाव परवर्ती रचनाकारों पर भी पड़ा और रीतिकाल आते–आते स्त्री मात्र भोग्या बनकर रह गयी । उसके अन्य रूपों की अपेक्षा उसे मात्र विलास का उपकरण समझा गया। हिन्दी साहित्य मं द्विवेदीयुग से नारी चित्रण मं उदार दृष्टिकोण का परिचय मिलता है।छायवादी कवियों ने नारी के व्यक्तित्व की विराटता का अनुभव किया तथा उसे स्पष्ट रूप में स्वीकार किया है। छायावादी हस्ताक्षर जयशंकर प्रसाद कहते हैं–

''नारी तुम केवल श्रद्धा हो
विश्वास रजत नग–पग –तल में
पीयूश–स्त्रोत–सी बहा करो
जीवन के सुन्दर समतल में''

द्विवेदीयुगीन कवियों ने उसे

सामाजिक मर्यादा से गौरवान्वित कर लोक– कल्याण से परिपूर्ण माना । हरिऔध और मैथिलीशरण गुप्त की नारी युग– युग से अभिशप्त अपनी वेदना एवं व्यथा के बोझ से दबी मुखर और सार्थक अभिव्यक्ति पा सकी है। 'यशोधरा' के सुस्पष्ट एवं गंभीर रूप से किए गए चरित्रांकन के माध्यम से गुप्तजी ने नारी समस्या पर अनेक संकेत देने एवं बाते कहने का समय निकाल लिया है। यशोधरा का व्यक्तित्व इतना विराट है कि उसके ससुर – 'गोपा बिना गौतम भी ग्राह्य नहीं मुझको कहकर अपनी पुत्रवधु के प्रति किसी प्रकार का पक्षपात नहीं करते।

नर और नारी एक–दूसरे के बिना अपूर्ण है और दोनों का कार्य बिना एक – दूसरे के सहयोग के पूरा नहीं हो सकता नारी कर्तव्यमार्ग में बाधक नहीं अपितु सहायिका है । पुरूषों की कीर्ति के पीछे स्त्रियों का बलिदान ही काम करता है। यदि वे परिस्थिति के अनुकूल अपना कर्तव्य निर्धारित न कर ले तो फिर उनके पति लक्ष्य सिद्धि में शायद ही सफल हो सके । आधुनिक युग में नारी, पुरूष की अनुगामिनी न रहकर सहगामिनी है। वही पुरूषों के कंधे से से कंधा मिलाकर प्रत्येक क्षेत्र में अपनी बुद्धिमत्ता और योग्यता का प्रदर्शन कर रही है। नारी की पहचान अब मात्र यह नहीं रह गयी–

'' अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी
आँचल में है दूध और आँखों में पानी।

जन्म के पश्चात् पिता, शादी के बाद पति तथा पति के उपरान्त पुत्र पर आश्रित रहने वाली नारी की दशा में बदलाव आया है। वह बहुत कुछ आत्मनिर्भरता और आधुनिकता की ओर अग्रसर है। आधुनिकता की अंधी दौड़ शामिल होने के कारण नारियाँ अपनी महिमा को कम करती जा रही है ।नारी आज बाजारबाद, उपभोक्तावाद और बिकाऊ तन्त्र का सशक्त माध्यम है । सबकुछ जानबूझ कर भी वह बाजार के निशाने पर है। बाजार उसके माध्यम से क्रय–विक्रय कर रहा है ।यह स्थिति बड़ी ही भयावह है।

आधुनिक माहौल मे नारी से तात्पर्य सम्पूर्ण नारी है । वह आधुनिक नारी है। आधुनिकता एक वैचारिक भाव है, जो व्यक्तित्व के स्तर पर ग्राह्य होना चाहिए। आधुनिकता का प्रभाव मानसिक और आंतरिक स्तर पर होना चाहिए केवल बाह्य स्तर पर दिखावे मात्र के लिए नहीं। आधुनिक और परिवर्तनशील होना उचित है, किन्तु बदलाव के चक्र में मूल्य भष्ट और अनैतिक होना भी सही हो यह आवश्यक नहीं है।

नारी प्रत्येक देश, काल में श्रेश्ठ रही है। वह अनेक रूप में अपनी सार्थकता सिद्ध करती है । उसका श्रेष्ठतम रूप है माँ का रूप एक नारी तभी सम्पूर्ण बनती है जब वह माँ कहलाती है । नारी अपने अनेक (माँ, बहन, बेटी, पत्नी, प्रेयसी) रूपों में मनुष्य का संबल बनती है। नारी परिवार का आधार होती है, रीढ़ होती है। वह रहस्यमय है प्रकृति की तरह वह सृष्टि करती है।

निष्कर्ष– आधुनिक समाज यह समझ चुका है कि जब तक स्त्री समाज सर्वस्व रूप से विश्व के लिए अपना योगदान नहीं देगा तब तक विश्व में शांति , सद्भाव तथा विश्व का कल्याण संभव नहीं है। परिवार, समाज, देश, या विश्व के विकास का स्वप्न तब तक साकार नहीं किया जा सकता जब तक स्त्री–समाज का सहयोग नहीं होगा। जीवन के किसी भी क्षेत्र में नारी की उपयोगिता/उपादेयता को नकारा नहीं जा सकता क्योंकि वास्तव में नारी का सृजन ही ईश्वर की सर्वोत्तम कृति है।

सन्दर्भ सूची :–

1. रामचरित मानस – तुलसीदास
2. इलियट – होमर
3. कामायनी – जयशंकर प्रसाद
4. यशोधरा – मैथिलीशरण गुप्त
5. हेमलेट – शेक्सपियर

डॉ0 अनिता कुमारी
श्री राम कृष्ण शाही
मोहल्ला–खबड़ा डीह,
ग्राम+पो0– खबड़ा,
थाना–सदर
जिला–मुजफ्फरपुर, बिहार
पिन– 843146

8

हरियाणा प्रदेश की शिक्षण संस्थाओं में वाद्य संगीत की वर्तमान स्थिति का मूल्यांकन

हरमती कौर

सारांश –

गीत, वाद्य और नृत्य के द्वारा सामाजिकों को आनंद प्रदान करने की परम्परा आदिकाल से रही है। संगीत कला के अर्न्तगत इन तीनों विद्याओं का अलग–अलग महत्व एवं प्रयोजन रहा है। मन की अवस्थाओं का सूक्ष्म–से–सूक्ष्म चित्रण, गीत, वाद्य, नृत्य अर्थात् संगीत द्वारा आसानी से किया जा सकता है। वर्तमान में संगीत की स्थिति कुछ डगमगा सी गई है। फिल्मी जगत में तो आज भी संगीत कायम है। परन्तु शिक्षण संस्थाओं में संगीत विशय का रूझान कम होता जा रहा है।

हरियाणा प्रदेश की शिक्षण संस्थाओं में केवल तीन ही वाद्यों की शिक्षा दी जाती है – तबला, हारमोनियम व सितार। केवल इन तीन वाद्यों में ही विशय पढ़ाया जाता है और डीग्रियाँ दी जाती हैं। जब कोई अविश्कारक या खोजकर्ता किसी वस्तु या विशय की खोज करता है यही सोच कर करता है कि उसके आने वाली पीढ़ियाँ उस वस्तु या विशय को सम्भाल कर रखें और उसके द्वारा मिलने वाला लाभ प्राप्त करें। परन्तु हमारे लिए यह बहुत दुखद बात है कि हम अपने पूर्वजों की उन वस्तुओं और विषयों का सम्मान नहीं करते। इसी प्रकार संगीत विषय में भी महान कलाकार हुए हैं, जिन्होंने अपनी अथा लगन और मेहनत से योगदान दिया और भारतीय संगीत को विश्वभर में सम्मान दिलवाया।

ईश्वर की ओर से मानव को मिलने वाला सर्वश्रेष्ठ उपहार है – संगीत! यह कला उतनी ही प्राचीन है जितनी मानव जाति। संगीत के अन्तर्गत आने वाली चाहे कोई भी विद्या क्यों न हो उनकी एक अलग पहचान व आनंद है। संगीत जगत में वाद्य का भी विशेष महत्व रहा है। गीतानुजन के लिए वाद्य–वादन की परम्परा करने के लिए वाद्यों का प्रयोग किया जाता था। प्राचीन भारत में बहुत से तन्त्री वाद्य प्रचलित थे। लेकिन आज उनमें से अनेक वाद्य–यंत्र लुप्त हो चुके हैं, केवल सितार, वायलिन, सरोद, सारंगी आदि तन्त्री वाद्य प्रचार में रह गए हैं। फिल्मी जगत में तो आज भी अनेक नए वाद्यों का प्रयोग हो रहा है परन्तु शिक्षण संस्थाओं में संगीत वाद्यों का विशय समाप्त होता जा रहा है। खासतौर पर सितार वाद्य का।

हरियाणा प्रदेश अपनी लोक संस्कृति और लोक संगीत के लिए विख्यात है। किंतु समय के साथ–साथ अब हरियाणा प्रदेश में शास्त्रीय संगीत और सुगत संगीत का भी प्रचार बढ़ता जा रहा है। हरियाणा में अनेक ऐसे शहर जैसे – रोहतक, अम्बाला, करनाल, फरीदाबाद, चण्डीगढ़, गुरूग्राम जिसमें संगीत के कार्यक्रमों का नियमित रूप से आयोजन होता रहता है। हरियाणा की शिक्षण संस्थाओं में संगीत विशय को प्राथमिकता दी जाती है। हरियाणा की शिक्षण संस्थाओं में विद्यालयों से लेकर महाविद्यालयों–विश्वविद्यालयों में संगीत विषय पढ़ाया और सिखाया जाता है। इन शिक्षण संस्थाओं में संगीत के शिक्षकों की नियुक्तियाँ की गई हैं, किन्तु अगर इसका ध्यानपूर्वक मूल्यांकन करते हैं या सर्वेक्षण करके देखते हैं तो यह बात स्पष्ट होती है कि इतनी सुविधाएँ होने के बावजूद भी विद्यार्थी संगीत विषय को इतना नहीं अपनाते जितना की अन्य विषयों को। शायद विद्यार्थियों को या उनके अभिभावकों को संगीत विषय में कोई विशेष स्कोप/संभावनाऐं नजर नहीं आती। शिक्षण संस्थाओं में गायन विषय की बात करें तो फिर भी विद्यार्थी विषय को अपना रहे हैं, किन्तु बड़े खेद की बात है कि सितार विषय के प्रति विद्यार्थियों का रूझान दिन–ब–दिन कम होता जा रहा है।

महाविद्यालयों में जो विद्यार्थी संगीत विषय में दाखिला लेते हैं वो भी या तो अंक प्राप्त करने या डिग्री प्राप्त करने के लिए लेते हैं। विश्वविद्यालय स्तर की अगर बात करें तो वहाँ की स्थिति ओर भी अधिक निराशाजनक है। हरियाणा के विश्वविद्यालयों की बात करें तो सितार के विद्यार्थी जो एम.ए. करने वालों की संख्या बहुत कम होती है। ऐसे में सितार विषय को चलाना अति कठिन हो रहा है। पिछले कुछ वर्षों में कई महाविद्यालयों में सितार विषय को बंद भी कर दिया गया है। इससे ज्ञात होता है कि सितार विषय की स्थिति बहुत ही नाजुक और दयनीय है।

सितार एक ऐसा वाद्य रहा है जिसे राजा–महाराजाओं के महलों में भी सम्मान की दृष्टि से देखा जाता था। उस समय में राजा–महाराजा राजकार्यों के तनाव से मुक्त होने के लिए तथा अपने मन बहलाने के लिए सितार सुना करते थे। लेकिन जिस वाद्य का इतना बड़ा स्थान रहा हो आज शिक्षण संस्थाओं में उसकी इतनी

दुर्दशा किस कारण से हुई है यह एक विचारणीय विषय है।

कला में विशेष उत्कर्श अथवा निपुणता विद्यार्थी के ज्ञान, प्रतिभा और अनुकूल वातावरण के परिणामस्वरूप होती है। संगीत के प्रति आस्था और आकर्शण के काल में प्रायः विद्यार्थी के सामने यह समस्या आ खड़ी होती है कि उसे कौन–सा वाद्य सीखना चाहिए, किससे सीखना चाहिए और उसमें निपुणता प्राप्त करने के लिए कितनी अवधि तक अपने श्रम की आहुति देनी चाहिए ? इस स्थिति में अभिभावक एवं गुरूजनों का कर्त्तव्य है कि वे विद्यार्थी के लिए उचित मार्गदर्शन प्रदान करें। अन्यथा परिणाम यही होता है कि विद्यार्थी कभी सितार सीखने लगता है और कभी सरोद। लक्ष्य परिवर्तन से उसकी आयु का वह महत्वपूर्ण भाग अर्थात् समय नष्ट हो जाता है, जो संगीत में पारंगत होने के लिए सर्वश्रेश्ठ काल कहा जाता है। संगीत का सामान्य अध्ययन और व्यावसायिक अध्ययन दोनों अलग–अलग है। अतः वाद्य–यंत्र सीखते समय उपयुक्त आचार्य का चुनाव करना ही हितकर सिद्ध होता है।

सितार के कम होते रूझान में वाद्यों की कमी भी एक विशेष कारण है। गायन संगीत की अपेक्षा वादन संगीत में अधिक वाद्यों की आवश्यकता पड़ती है। गायन संगीत में एक कक्षा में चाहे कितने विद्यार्थी हों उन्हें एक हारमोनियम के माध्यम से गायकी की शिक्षा दी जा सकती है। किंतु सितार वादन की शिक्षा के लिए प्रत्येक विद्यार्थी को पृथक सितार की आवश्यकता पड़ती है। एक समय में जब कुछ विद्यार्थी अभ्यास करते हैं तो दूसरे विद्यार्थियों को सितार के लिए प्रतिक्षा करनी पड़ती है। जिस कारण विद्यार्थियों की रूचि कम होने लगती है। यही कारण है कि वाद्यों की कमी के कारण सितार वादन का रूझान कम होता जा रहा है।

हरियाणा की शिक्षण प्रणाली में अनेक विषयों को जारी किया गया। गायन संगीत एवं अन्य विषयों को विद्यालय से ही शुरू किया गया। लेकिन सितार वादन विषय को महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालयों से ही जारी किया गया। इसके साथ–साथ सरकार द्वारा अन्य विषयों के रिक्त स्थानों को समय–समय पर भरा जाता है, लेकिन सितार वादन विषय के रिक्त स्थानों पर खास ध्यान नहीं दिया गया। जिसके कारण सितार वादन विषय के शिक्षकों की कमी होने लगी और शिक्षकों के अभाव के कारण भी विद्यार्थियों की रूचि सितार विषय के प्रति कम होने लगी। क्योंकि संगीत विषय एक प्रेक्टीकल विषय है, जो शिक्षक के बिना नहीं पढ़ाया जा सकता। यही कारण है कि शिक्षकों की कमी भी सितार वादन विषय के कम होते रूझान का कारण बनी।

जिस प्रकार पहले बताया जा चुका है कि सितार वादन विषय विद्यालयों से आरम्भ न करा कर महाविद्यालयों से आरम्भ किया गया। यह कारण भी सितार वादन विषय के कम होते रूझान में विशेष कारण रहा है। क्योंकि अन्य विषय जैसे – हिन्दी, अंग्रेजी, गणित, राजनीतिक, विज्ञान, भौगोलिक विज्ञान, इतिहास, गायन आदि विषयों को विद्यालयों से ही प्रारम्भ किया जाता है। जिसके कारण अन्य विषयों का ज्ञान विद्यार्थियों को प्रारम्भ से होने लगता है। विद्यार्थी आगे चल कर बी.ए. की कक्षा में भी इन विषयों के साथ जुड़ा रहना चाहता है। लेकिन सितार वादन विषय की जानकारी न होने के कारण विद्यार्थी सितार वादन विषय में रूचि नहीं लेते।

अन्य विषयों में संगीत विषय की अपेक्षा अधिक विद्यार्थी होते हैं और इसी कारण सरकार अन्य विषयों में स्थाई नौकरी के पद समय–समय पर नियुक्त करती रहती है, लेकिन संगीत विषय में स्थाई नौकरी के पदों का ध्यान नहीं दिया जाता और विद्यार्थियों के लिए कुछ वेतन पर अस्थाई शिक्षकों को रख लिया जाता है। अस्थाई शिक्षकों की शिक्षा में कोई कमी नहीं होती परन्तु अस्थाई शिक्षक अपने कैरियर को लेकर चिंतित रहते हैं। स्थाई शिक्षक न होने के कारण भी सितार वादन संगीत का रूझान कम होता जा रहा है।

तबला वादकों की कमी से भी संगीत विषय लुप्त होता जा रहा है। संगीत का लयबद्ध होना अति आवश्यक है। क्योंकि स्वर, लय व ताल से बद्ध रचना ही संगीत कहलाता है। गायन व वादन के साथ तबले की संगत विशेश मानी जाती है। यही कारण है कि विद्यालय व महाविद्यालयों में तबले के पद रिक्त होने के कारण भी विद्यार्थियों का संगीत के प्रति रूझान कम होता जा रहा है।

संगीत का कोई सुर गाएं और वाद्य यंत्र का स्वर नहीं आए तो संगीत का पूरा आनन्द नहीं आता। इसमें परम्परागत वाद्य यंत्रों के स्वर का तो कहना ही क्या। लेकिन वर्तमान में आधुनिक वाद्य यंत्रों की चकाचौंध में परम्परागत वाद्य यंत्र अपना अस्तित्व खोते जा रहे हैं। छोटे–मोटे किसी कार्यक्रम में परम्परागत की बजाए आधुनिक वाद्य यंत्रों को ही पसंद किया जाने लगा है। बड़े–बड़े ऑर्केस्ट्रा समूहों की जगह किसी कम्प्यूटर, की–बोर्ड जैसी मशीनों ने ले ली हैं। एक ही मशीन से सितार, संतूर, तबला और हजारों अन्य वाद्य यंत्रों की धुन निकल सकती है और ऐसे में परम्परागत वाद्य यंत्रों की माँग और उपलब्धता काफी कम हुई है। वाद्य का क्षेत्र अत्यंत व्यापक है। संगीत में वाद्यों का प्रयोग किसी अन्य वाद्य यंत्र की संगति के लिए या स्वतंत्र रूप से भी किया जाता है। अन्य कलाएं, गायन, वादन, नृत्य, नाटक, धार्मिक कार्यों इन सभी में वाद्य का महत्वपूर्ण

स्थान है। संगीत में जितना महत्व वाद्य संगीत का होता है उतना किसी अन्य कला में नहीं होता। वाद्य एक स्मृद्ध सांस्कृतिक विरासत का प्रतिबिम्ब भी है। इस धरोहर को संभालना हमारा दायित्व भी है और धर्म भी। इन वाद्यों की परम्परा को संजोये रखने में ही हमारा अस्तित्व निहित है।

संन्दर्भ :–

1. 'संगीत वाद्य वादन' पृष्ठ संख्या 4, 5 – प्रभुदयाल गर्ग
2. इंडियन जर्नल ऑफ सोशल कन्सर्न्स
3. www.patrika.com conventional instrumental lost

हरमती कौर

पीएच.डी. शोधार्थी

महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक

रजि0 नं0 : 98–GN–838

पता :–

हरमती कौर पत्नी श्री गुरमीत सिंह

मौहल्ला गुरूनानकपुरा, नारनौल,

जिला महेन्द्रगढ़

9

मृदुला गर्ग के उपन्यासों में स्त्री संघर्ष

विजय कुमारी भारद्वाज

सारांश –

मानव सभ्यता की विकास यात्रा के समान ही स्त्री का संघर्ष भी अपनी निरंतरता में आरंभ से ही समाज में विद्यमान रहा है। देशकाल के साथ इस संघर्ष का सिर्फ स्वरूप बदलता रहा है। हमारे समाज में स्त्री को कभी रीति–रिवाज के नाम पर तो कभी पुरुष की अहम भावना के कारण तो कभी शिक्षित होने एवं आत्मनिर्भर होने के कारण सदैव कदम–कदम पर शोषण का शिकार होना पड़ा है। इस शोषण और उसके विरुद्ध स्त्री के नितांत निजी संघर्षों की लंबी एवं करुण कहानी है। उसे ना केवल बाहरी समाज बल्कि स्वयं अपने परिवार से और यहाँ तक खुद से भी लगातार संघर्ष करना पड़ा है। इसी संघर्ष को 'सीमोन द बउआर' ने अपनी पुस्तक 'द सेकेंड सेक्स' में बताया था कि स्त्री पैदा नहीं होती उसे बना दिया जाता है। यह कथन देश–विदेश की सभी स्त्रियों के संघर्ष को पूरी तरह बयां करता है। हमारी भारतीय समाज में तो स्त्री को हमेशा से एक वस्तु के रूप में देखा जाता रहा है।

कहते हैं कि साहित्य, रचनाकार के जीवन–जगत की अनुभूतियों और कल्पना के सहज–समन्वय का रूपाकार है। लेखक को समाज की सभी परिस्थितियां प्रभावित करती है, ठीक वैसे ही जैसे एक कारीगर को कच्चा माल प्रभावित करता है। परिवेश से ली गई अनुभूतियां ही रचनाकार की संवेदनाएं बनाती हैं। साहित्य में जीवन के साथ–साथ मानव मन की तथा चरित्र की व्यापक गहराई दिखाई पड़ती है।

समकालीन साहित्य की प्रत्येक विधा स्त्री जीवन के सभी संघर्षों को स्वर प्रदान करती है। नारी का संघर्ष पुरुषों से बराबरी करने या उनसे आगे निकल जाने का नहीं बल्कि उसका संघर्ष समाज में, परिवार में, स्वयं को स्थापित करने तथा अपनी अस्मिता की तलाश के लिए है।

कृष्णा सोबती, मंजुल भगत, उषा प्रियंवदा, ममता कालिया आदि लेखिकाओं ने समाज में व्याप्त विभिन्न विद्रूपताओं, राजनैतिक, आर्थिक मुद्दों तथा स्त्री अस्मिता, पारिवारिक विघटन आदि को अपने कथा साहित्य में प्रमुख विषय बनाया। इन्होंने साहित्य में स्त्री मुक्ति का प्रश्न ही केंद्र में रखा। मृदुला गर्ग भी उन महिला रचनाकारों में से एक है जिन्होंने अपने साहित्य में स्त्री मुक्ति के प्रश्न को साहस के साथ उजागर किया। मृदुला जी नारीवाद की परिभाषा देते हुए कहती हैं कि–''नारीवाद की परिभाषा बस इतनी है कि नारी को अधिकार है यह तय करने का कि वह क्या करना चाहती है ?क्या नहीं ?कोई मुखौटा नहीं कि स्त्री पर चस्पा दिया जाए।'' नर–नारी संबंध मृदुला गर्ग के संपूर्ण साहित्य के केंद्रीय सूत्र रहे हैं। वे नारी को परंपरागत सोच से मुक्ति दिला कर उसे आत्मनिर्भर बनाना चाहती है। इनका सबसे पसंदीदा विषय प्रेम है, परंतु उन्होंने विवाह पूर्व प्रेम की अपेक्षा विवाहेत्तर प्रेम का चित्रण अपने उपन्यासों में कहीं अधिक किया है। यह वह प्रेम है जिसे समाज ने हमेशा नकारा है और शायद यही कारण रहा है कि उनके 'चित्तकोबरा' उपन्यास को भी विवादों के कटघरे में खड़ा होना पड़ा। हालांकि यह उपन्यास मनुष्य जीवन में प्रेम की सार्थकता सिद्ध करने में तथा उसके विविध वर्णी स्वरूप निर्धारण इस उपन्यास में मनु, रिचर्ड और महेश तीन पात्र हैं। मनु का विवाह महेश से हो चुका होता है, रिचर्ड मनु के जीवन में बाद में आता है। महेश और मनु ऐसे पति–पत्नी है जो एक–दूसरे से असंतुष्ट हैं। महेश मनु की सभी जरूरतें पूरी करता है। मनु भी अपना पति ने धर्म निभाती है। इस उपन्यास में मृदुला जी प्रेम को स्त्री–पुरुष संबंधों के धरातल से ऊपर उठाकर आध्यात्मिक अनुभूति की ओर ले जाती है। वह कहती हैं कि –''एक से निस्वार्थ प्रेम करने पर अहम का धीरे–धीरे विभाजन होता है और व्यक्ति उस बिंदु पर पहुँच जाता है जहाँ मानव मात्र से प्रेम के आदर्श तक पहुँचना सरल और संभव होता है, यही भाव भूमि 'चित्तकोबरा' उपन्यास की ताकत भी है तथा उसकी प्रेरणा भी।''

उनके एक अन्य उपन्यास 'मैं और मैं' में भी औरत के शोषण की कहानी दिखाई गई है। किस प्रकार अपने अहम की पुष्टि करने वाली एक लेखिका आर्थिक और नैतिक शोषण का शिकार होती है। इसकी मार्मिक चित्रण इस उपन्यास में किया गया है।

यह उपन्यास एक उच्च वर्गीय लेखिका के अपराधबोध की टकराहट की कहानी भी कहता है। इस उपन्यास में माधवी, संजय, कौशल तीन पात्र हैं। माधवी लेखिका है और कौशल भी। वैचारिक धरातल पर दोनों रचनाकारों के अहम की टकराहट को दिखाया गया है साथ ही कौशल द्वारा माधवी के रूप में ब्लैकमेल की गई एक लेखिका का सूक्ष्म विश्लेषण भी किया गया है। यह उपन्यास पाठक को भावनात्मक और वैचारिक दोनों धरातल पर चिंतन हेतु बाध्य करता है। उपन्यास में एक स्त्री को अबला और भोली समझ उसे ठगने वाले धूर्त पुरुष की कहानी है। यहाँ एक सामान्य स्त्री के दुख–दर्द की परिपाटी से हटकर एक लेखिका के जीवन संघर्ष की कथा को कथ्य का विषय बनाया गया है जो अपेक्षाकृत चिंतनशील भी है और सजग भी। उपन्यास में एक जगह लेखिका कहती है

कितना आसान है एक के बाद एक झूठ बोलते चले जाना और कितनी खूबसूरत, पारदर्शी और रंग–बिरंगी है झूठ की दुनिया। दरअसल यह उपन्यास पूंजीवादी व्यवस्था का आईना है। जिसमें मानवीय रिश्तो का बिम्ब और भी कुरूप और विभत्स दिखाई देता है।

लेखिका का 'कठ गुलाब' उपन्यास भी इसी तरह की स्त्री संघर्षों को दर्शाने वाला एक बहुचर्चित उपन्यास है। मृदुला जी का यह उपन्यास नारी दमन और शोषण को दिखाते हुए नारी के संघर्ष की गाथा कहता है।इसमें नारी को प्रताड़ित करती आ रही आत्मघाती सामाजिक व्यवस्था से परिचित कराना लेखिका का प्रयोजन है। इस उपन्यास में नारी पर पुरुष द्वारा होने वाले आर्थिक, शारीरिक और बौद्धिक शोषण की प्रक्रिया स्वरूप आत्मनिर्भरता तथा पुरुष सत्ता के समानांतर स्वयं को सिद्ध करने के लिए की गई नारी की जद्दोजहद की कथा है। बस की भीड़–भाड़ में धँसी लड़की हो या सुनसान इलाके में पैदल चलती लड़की, पुरुष की लार टपकती नजरों से उसका बच पाना असंभव है। स्त्री पर हो रहे शोषण को दर्शाते हुए उपन्यास में लेखिका एक जगह पर नायिका नमिता द्वारा कहलवाती है कि–''कैसी अभागिने हैं हम दोनों, मेरी जिंदगी मां ने चौपट की, तेरी पिता ने।'' इस उपन्यास में लेखिका ने स्त्री अस्मिता के सवाल को आया है। लेखिका इस उपन्यास में स्त्री को स्त्री रूप में स्थापित किया है। जिस तरह कठ गुलाब के बीज को पानी न दें तो वह सूख जाता है उसकी कलियाँ नहीं खिलती। ठीक उसी प्रकार जब तक स्त्री को अपने पद और सम्मान रूपी भाव जल से धोया ना जाए तब तक वह भी कठ गुलाब के समान कठोर बनी रहती है।

अपने अन्य समकालीनों की तरह मृदुला जी केवल स्त्री की आर्थिक, शारीरिक स्वतंत्रता और अधिकारों की बात ही नहीं करती अपितु स्त्री के राजनीतिक, संवैधानिक अधिकारों के लिए भी आवाज उठाती है। अपने वंशज उपन्यास उन्होंने स्त्री को उसके प्रदत संवैधानिक अधिकारों से भी वंचित कर दिए जाने के प्रशन को बड़ी मजबूती से उठाया है।

मृदुला गर्ग का उपन्यास 'मिलजुल मन' उनके अब तक के सभी उपन्यासों से अलग ही तरह का उपन्यास है। यह एक आत्मकथात्मक उपन्यास है, यानी यह एक ऐसी आत्मकथा है जिसे उपन्यास का रूप दे दिया गया है। ऐसा संभवत इसलिए किया गया है क्योंकि एक आत्मकथा लेखक से जिस ईमानदारी से साफगोई और विश्वसनीयता की मांग करती है। यह उपन्यास दो बहनों गुलमोहर और मोगरा की कहानी के रूप में रचित है, जो दरअसल प्रकारांतर से मंजुल भगत और मृदुला गर्ग की कहानी ही बयां करती है। यहाँ मोगरा स्वंयमृदुला गर्ग है और गुलमोहर उसकी बड़ी बहन मंजुला भगत। जिसमें गुल की कहानी मोगरा कहती चलती है और कभी–कभी बीच–बीच में खुद गुल भी सूत्र थाम लेती है। इसलिए इसका शीर्षक 'मिलजुल' मन रखा गया है। वैसे इस उपन्यास के शीर्षक की प्रतीकात्मकता को समझाते हुए मृदुला जी एक साक्षात्कार में कहती है कि – ''मन का अर्थ अत्यंत बहुआयामी है वह दिल भी है, मस्तिष्क भी, चेतना भी और कल्पना भी, अस्तित्व भी वही है। मन के साथ मिलकर जो काम कर सके या जो अपने मन को पहचान ले वही सही मायने में अपने अस्तित्व को पहचान सकता है। इस उपन्यास में मृदुला जी ने आत्मनिर्भरता के महत्व को बखूबी रेखांकित किया है।

निष्कर्ष :

रूप में हम कह सकते हैं कि मृदुला जी अपने उपन्यासों में समस्याओं को सिर्फ चित्रित ही नहीं करती वरन उसका निदान भी बताती है। वे अपने पात्रों को स्थितियों से संघर्ष करते हुए भौतिकता के धरातल से उठाकर तार्किक दृष्टि के साथ अपनी इच्छाओं के लिए निर्णय लेते हुए दिखाती है। उनकी सभी स्त्री पात्र अपने जीवन का निर्णय स्वयं लेती हैं। वह किसी और के सहारे के लिए प्रतीक्षारत नहीं रहती। मृदुला जी अपने उपन्यासों के माध्यम से समाज के प्रत्येक वर्ग की स्त्री के संघर्षों का चित्रण कर उसकी दशा और दिशा से पाठक वर्ग को अवगत कराया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. प्रभा खेतान, स्त्री उपेक्षिता,1992
2. मृणाल पांडे, स्त्री देह की राजनीति से देश की राजनीति, पृष्ठ14
3. मृदुला गर्ग, उसके हिस्से की धूप, 2000, पृष्ठ 44
4. योगेश गुप्त, नारी का रचना संसार
5. राम विनोद सिंह, पृष्ठ82
6. मृदुला गर्ग, अनित्य, पृष्ठ 141
7. मृदुला गर्ग, वंशज, पृष्ठ19
8. मृदुला गर्ग,मैं और मैं, पृष्ठ 164
9. कठ गुलाब, मृदुला गर्ग, पृष्ठ 70 वही, पृष्ठ 177

विजय कुमारी भारद्वाज पत्नी रामबीर भारद्वाज

वी०पी०ओ० कुंगड,

जिला भिवानी

वाया मुंढाल (बढ़ा पाना,

नजदीक शिव मंदिर)

पिनः 127041

मोबाइल नंबर : 8295991700, 8295991600

10

हरियाणा प्रदेश की शिक्षण संस्थाओं में सितार वाद्य को लोकप्रिय बनाने के उपाय

हरमती कौर

सारांश –

शिक्षण एवं प्रशिक्षण कार्यक्रमों में संगीत का महत्व निर्विवाद स्वीकार्य है। यह देखने में आया है कि विद्यालयों का गम्भीर और अरूचिकर वातावरण बच्चों को न केवल शिथिल एवं थका देता है बल्कि उन्हें निस्तेज भी करता है। प्रातः विद्यालय में प्रवेश करते हुए उत्साह–उल्लास से भरे, हँसते–खिलखिलाते फूल से सुकोमल चेहरे घर जाते समय मुरझाये और निर्जीव से दिखाई पड़ते हैं। परिणामस्वरूप बच्चे निष्क्रय रहते हैं और उनका सीखना बाधित होता है। कुशल शिक्षक कक्षा शिक्षण के दौरान माहौल को रूचिपूर्ण एवं आनन्दमयी बनाने के लिए बीच–बीच में प्रेरक, चेतना गीतों का प्रयोग करके न केवल बच्चों का मन जीत लेते हैं बल्कि प्रस्तुत विशय–वस्तु को उनके लिए सहज ग्राह्य बना देते हैं। खेलकूद, गीत, कहानी और बाल आधारित शैक्षिक गतिविधियों, क्रियाकलापों के प्रयोग से विशय–वस्तु की प्रस्तुति सरल हो जाती है। जिसको बच्चे अर्थ समझते हुए ग्रहण करते हैं एवं अनुशासन के लिए प्रेरित होते हैं तथा कक्षा भी सक्रिय रहती है। बच्चों में आत्मविश्वास, मौलिक चिन्तन एवं कल्पना शक्ति का विकास होता है। बच्चों के पढ़ना–लिखना सीख सकने में संगीत की भी महत्वपूर्ण भूमिका है।

हरियाणा में शास्त्रीय संगीत की स्थिति पर दृष्टिपात किया जाए तो वह स्थिति बहुत अधिक संतोषजनक नहीं रही है। हरियाणा भू–भाग का अस्तित्व प्राचीन काल से ही रहा है। हरियाणा की धरती देवी–देवताओं की धरा मानी गई है। अनेक शताब्दियों के पश्चात हर्शवर्धन के साम्राज्य के उपरान्त अनेक राजाओं और बादशाहों के अधिपत्य में यह भू–भाग रहा, लेकिन फिर भी इस भू–भाग पर किसी प्रमुख राजा का राजसिंहासन स्थित न होने के कारण यहाँ कलाओं को परिष्कृत होने का अवसर नहीं मिला। इसलिए यह एक दीर्धकाल तक पिछड़ा हुआ ग्रामीण क्षेत्र ही रहा, जहाँ लोक–संस्कृति का प्रभाव अधिक रहा। लेकिन फिर भी यह नहीं कहा जा सकता कि यह प्रदेश शास्त्रीय संगीत के अस्तित्व से सर्वधा अछूता था। कुछ शिलालेख अथवा प्राचीन चिन्ह् इस बात के साक्षी हैं कि शास्त्रीय संगीत का प्रभाव इस भू–भाग में भी था।

हरियाणा के कुछ ग्रामों के नाम राग–रागनियों के आधार पर रखे गए हैं – सारंगपुर, वृदावनी, बिलावल, मालकोश, टोड़ी, जयजयवन्ती, गौरीपुर, माधवी तथा मालती आदि। भारत के अन्य किसी प्रदेश में ऐसा देखने को नहीं मिलता। हरियाणा के संगीत क्षेत्र में गायन संगीत का काफी प्रचार हुआ है। शास्त्रीय संगीत वाद्यों के अन्तर्गत सारंगी, तानपुरा, तबला, सितार, पखावज, हारमोनियम आदि वाद्यों को महत्व मिला है जो यहाँ की संगीतज्ञों द्वारा अपनाये गये हैं। संगीत शिक्षण की दृष्टि से यहाँ सितार और तबला वाद्य प्रधान है।

1986 में हरियाणा का पहला विश्वविद्यालय कुरूक्षेत्र में खुला और उसके कुछ ही वर्शों बाद युनिवर्सिटी कॉलेज में शास्त्रीय संगीत की शिक्षा आरम्भ की गई। साथ ही साथ विद्यालयों में भी संगीत की शिक्षा दी जाने लगी।

संगीत में गायन के साथ–साथ वादन का भी अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। प्रत्येक वाद्य यंत्र की अपनी खासियत है – गिटार, ड्रम, हारमोनियम, वीणा, बांसुरी और न जाने कितने ही वाद्य यंत्रों के बारे में हम जानते हैं लेकिन सितार वाद्य भारत के सबसे लोकप्रिय वाद्य यंत्रों में से एक है, जिसका प्रयोग शास्त्रीय संगीत से लेकर हर तरह के संगीत में किया जाता है। हम कह सकते हैं कि सितार भारतीय तंत्री वाद्यों का सर्वाधिक विकसित रूप है। सितार पारम्परिक वाद्य होने के साथ ही एक ऐसा वाद्य यंत्र है जिसने सम्पूर्ण विश्व में भारत और भारतीय संगीत को लोकप्रिय बनाया। भारत के राश्ट्रीय वाद्य यंत्र होने का गौरव प्राप्त सितार बहुआयायी साज होने के साथ ही एक ऐसा वाद्य है, जिसके माध्यम से भावनाओं को प्रकट किया जा सकता है।

सितार के जन्म और इतिहास के विषय में विद्वानों के अनेक मत हैं। भारतीय संगीत शास्त्रकार एवं प्रसिद्ध विचित्र वीणा वादक डॉ0 लालमणि मिश्र ने अपनी पुस्तक ''भारतीय वाद्य संगीत'' में सितार को प्राचीन त्रितंत्री वीणा का विकसित रूप सिद्ध किया है। डॉ0 लालमणि मिश्रजी के मतानुसार सितार एक पूर्ण रूप से भारतीय वाद्य है, क्योंकि इसमें भारतीय वाद्यों की तीनों विशेषताएँ समाहित हैं। सितार वादन के क्षेत्र में मसीतखाँ, रहीमसेन और अमृतसेन को त्रिमूर्ति माना जाता है। 18वीं और 19वीं शताब्दी में सितार वाद्य अधिक विकसित हुआ।

आधुनिक समय में सितार गायकी की लोकप्रियता का क्षेय पंडित रविशंकर जी को दिया जाना चाहिए। इन्होंने सितार वाद्य को एक बड़े मुकाम तक पहुँचाया। इसी कारण रविशंकर जी को सितार

के जादूगर के नाम से भी जाना जाता है। जो शास्त्रीय एवं शालीन शैली के महान संगीतकार हुए।

हरियाणा प्रदेश में सितार वाद्य का प्रचलन बढ़ाने के लिए अनेक उपाय एवं प्रयास किए गए। हरियाणा प्रदेश में सितार वाद्य को एक विषय के रूप में अपनाया गया। परन्तु सभी महाविद्यालयों व विश्वविद्यालयों में न अपनाकर कुछ ही में अपनाया गया। पिछले कुछ वर्षों से शिक्षण संस्थाओं में सितार विषय की स्थिति कुछ डगमगा सी गई है अर्थात् सितार वाद्य का रूझान कम हो गया है। सितार वादन विषय के कम होते रूझान के पीछे अनेक कारण हैं। जिसके कारण अनके महाविद्यालयों में सितार विषय बंद कर दिया गया है।

सितार वाद्य एक लोकप्रिय एवं भावनाओं को प्रकट करने वाला वाद्य है। यदि सितार वादन विषय की स्थिति इसी प्रकार डगमगाती रही तो वो दिन दूर न होगा जिस दिन सितार वादन विषय हरियाणा प्रदेश से बिल्कुल लुप्त हो जायेगा। हरियाणा प्रदेश की शिक्षण संस्थाओं में सितार वादन विषय को लोकप्रिय व सुधारने के लिए प्रयास किये जाने की आवश्यकता है। इस विषय को गंभीरता से लेना चाहिए कि किस तरह सितार वादन विषय को लोकप्रिय व सुधार लाया जाए।

1. सर्वप्रथम सितार विषय को विद्यालयों में खुलवाना चाहिए ताकि विद्यार्थियों को सितार की प्रारम्भिक शिक्षा विद्यालयों से ही प्राप्त हो सके। गायन संगीत विषय विद्यालयों में होने के कारण विद्यार्थियों को प्रारम्भ से गायन संगीत विषय के बारे में जानकारी होती है और विद्यार्थी महाविद्यालय में पहुँच कर गायन संगीत विषय को निसंकोच अपनाते हैं परन्तु सितार वादन विषय विद्यालयों में न होने के कारण विद्यार्थियों को पता तक नहीं चलता कि वादन विषय भी होता है।
2. किसी भी विषय को चलाने में शिक्षण संस्था की अहम भूमिका होती है। सितार यंत्र एक महंगा यंत्र है, जिसे प्रत्येक विद्यार्थी नहीं खरीद सकता। इसलिए संस्था को विद्यार्थियों के लिए सितार की व्यवस्था करनी चाहिए और समय–समय पर उनकी मरम्मत करवानी चाहिए।
3. सितार वादन विषय में सहायक शिक्षक होने चाहिए ताकि विद्यार्थियों की शिक्षा नियमित रूप से चल सके। समय–समय पर शिक्षकों की नियुक्ति न होने के कारण शिक्षण संस्थाओं में पार्टटाईम शिक्षक रख लिए जाते हैं और पार्टटाइम शिक्षक अपने भविष्य को लेकर चिंतित रहते हैं जिसका प्रभाव संगीत विद्यार्थियों पर पड़ता है। इसलिए समय–समय पर सहायक शिक्षकों की नियुक्ति होनी चाहिए।
4. विद्यार्थियों से पहले उनके अभिभावकों को संगीत विषय को समझना चाहिए। आज के दौर में लोग सुगम संगीत को अधिक पसन्द कर रहे हैं। फिल्मी जगत, टी.वी. प्रोग्राम, जागरण, शादी–विवाह आदि प्रत्येक क्षेत्र में सुगम संगीत को पसंद किया जाता है। इसलिए अभिभावक अपने बच्चों को टी.वी. स्टार बनने, संगीत प्रतियोगिताओं में भाग लेने की अनुमति तो दे देते हैं, परन्तु जब विषय चुनने की बात आती है तो वे अन्य विषयों को चुनते हैं और जिन बच्चों की रूचि संगीत विशय में होती है वे चुनते हैं और जिन बच्चों की रूचि संगीत विषय में होती है वे इस विषय को अपने अभिभावकों की वजह से नहीं अपना पाते।
5. जनसमूह द्वारा सुगम संगीत को पसंद करने में मीडिया एवं सोशल मीडिया की अहम भूमिका है जिस प्रकार Google, T.V., Youtube के माध्यम से सुगम संगीत का प्रचार–प्रसार बढ़ रहा है। उसी प्रकार प्रकार मीडिया एवं सोशल मीडिया द्वारा शास्त्रीय संगीत के प्रचार–प्रसार को बढ़ाना चाहिए ताकि संगीत विषय को लेकर लोगों की धारणा को बदला जा सके।
6. सामाजिक तौर पर भी सितार वाद्य को बढ़ावा देना चाहिए। अधिकतर देखा जाता है कि गुरूद्वारों, मंदिरों, जागरण में अन्य वाद्य जैसे – ढोलक, तबला, हारमोनियम, खंजरी, चिमटा आदि वाद्य यंत्रों का प्रयोग किया जाता है। सितार वाद्य भारी होने के कारण एक स्थान से दूसरे स्थान तक उठाकर ले जाना मुश्किल समझा जाता है। इसके लिए भी कोई ऐसा उपाय करना चाहिए। जिससे सितार वाद्य को सामाजिक तौर पर भी अपनाया जा सके।
7. संगीत वादन विषय के पाठ्यक्रम में भी बदलाव करना चाहिए और उसे आधुनिक परिस्थितियों के अनुरूप ढालना चाहिए। सिलेबस को रोचक और मनोरंजक बनाना चाहिए ताकि नए विद्यार्थी संगीत वादन विषय से जुड सके। इस विषय में गत बजाई जाती है। जिसे समझने में जन सामान्य को मुश्किल होती है। शास्त्रीय संगीत के साथ सुगम संगीत अर्थात् फिल्मी धुनें, भजन, गीत, लोक संगीत आदि भी पाठ्यक्रम में होने चाहिए।
8. युवा महोत्सव (Youth Festival) में सितार की प्रतियोगिता तो होती है, परन्तु सभी महाविद्यालयों में सितार वादन विषय न होने के कारण यह प्रतियोगिता एकतरफा रह जाती है। जिससे विद्यार्थी अपनी कमियों को पूरा करने में असमर्थ रह जाते हैं। इसलिए सभी महाविद्यालयों में संगीत वादन विषय को लागू करना चाहिए। ताकि विद्यार्थी इस

प्रतियोगिता में परिश्रम करके सफलता प्राप्त कर सकें।

9. सांस्कृतिक प्रोग्रामों का भी प्रभाव सितार वादन विषय पर पड़ता है। महाविद्यालय में सांस्कृतिक प्रोग्रामों में अन्य प्रस्तुतियों जैसे – सरस्वती वन्दना, समूह गान, नृत्य आदि पर विशेष ध्यान दिया जाता है। वहाँ भी सितार वादन की छवि उभर कर सामने नहीं आ पाती। सितार वादन एक विषय के रूप में कार्यशाला तक ही सीमित रह जाता है। इसलिए सितार वादन को सांस्कृतिक प्रोग्रामों में भी आवश्यक रूप से सम्मिलीत किया जाना चाहिए। सितार वाद्य को अन्य विद्यार्थियों के समक्ष सुनवाया जाना चाहिए। ताकि सितार वाद्य के प्रति विद्यार्थियों का रूझान बढ़ाया जा सके।

10. सितार वादन विशय को व्यवसाय से जोड़ना चाहिए। विद्यार्थी उन्हीं विषयों के प्रति आकर्शित होते हैं जिमनें रोजगार दिलाने की क्षमता हो। गायन संगीत की अपेक्षा वादन संगीत में रोजगार सीमित है। इस कारण भी लोग संगीत वादन विशय से उदासीन होते जा रहे हैं। कई प्रकार के वादन ऐसे हैं जिनमें रोजगार दिखाई पड़ते हैं जैसे – तबला, गिटार, वायलिन, हारमोनियम। परन्तु सितार वादन में भी रोजगार की अधिक सम्भावनाएँ प्रस्तुत कर दी जाएं तो विद्यार्थियों में सितार वादन विषय के प्रति फिर से रूझान देखने को मिलेगा। सितार वादन को यदि बॉलीवुड से जोड़ दिया जाए तो इसमें रोजगार की अद्भुत संभावनाएँ प्रकट होने लगेंगी। इसलिए यह सोचना चाहिए कि किस प्रकार सितार वादन को रोजगार बना सकते हैं

निष्कर्ष :–

हम कह सकते हैं कि व्यक्ति का पूर्ण विकास अथवा अर्न्तनिहित क्षमताओं का पूर्ण प्रकाशन शिक्षा का एक मात्र उद्देश्य है। व्यक्ति को एक ओर अपनी क्षमताओं एवं सीमाओं का तथा दूसरी और प्राकृतिक एवं सामाजिक पर्यावरणीय दशाओं का सम्यक ज्ञान आवश्यक होता है। जिससे वह अपने आपको समाज में समायोजित कर सके। इसी दृष्टिकोण से शिक्षा भले ही व्यवसायिक दृष्टि से परिपूर्ण हो या मनोरंजन व कलात्मक दृष्टि से।

संगीत शिक्षण प्रणाली अन्य विषयों की अपेक्षा आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक के साथ–साथ मानसिक रूप से भी संबंधित है। शिक्षा मानव के सम्यक विकास का आधार है। जहाँ शिक्षा अपने अन्दर अनेक विशेशताओं को समेटे हुए है। वहीं इसकी पद्धति में किन्हीं कारणों से अनेक समस्याएँ तथा कमजोरियाँ भी दिखाई देती हैं। जो इसके वास्तविक स्वरूप को धूमिल बना देती है। यह समस्या अनुमानतः विविधता वाले भारत के सभी राज्यों में दृष्टिगत होती है। फिर भले ही वह संख्या में कम हो या अधिक। हरियाणा प्रदेश की संगीत–शिक्षण प्रणाली भी इन समस्याओं से अछूती नहीं रह सकी। गायन संगीत तो फिर भी अपनी छवि बनाए हुए है। परन्तु वादन संगीत की स्थिति हमेशा से कमजोर रही है। यदि इसी तरह वादन विशय के प्रति विद्यार्थियों का रूझान कम होता रहा तो वह दिन दूर न होगा कि वादन संगीत का केवल नाम ही सुनने को रह जाएगा। इसी कारण से हरियाणा प्रदेश की शिक्षण संस्थाओं में सितार वादन विषय की स्थिति का अवलोकन करने, उसके विकास एवं इसकी समस्याओं को वास्तविकताओं को प्रदर्शित करने तथा उनका निदान किस प्रकार सम्भव है। यदि थोड़ा प्रयास किया जाए तो सितार वादन विषय का भविष्य बहुत सुंदर हो सकता है।

संदर्भ :–

1. भारतीय वाद्य संगीत – डॉ0 लालमणि मिश्र
2. आधुनिक काल में शास्त्रीय संगीत – डॉ0 हुम चन्द
3. हरियाणा (इतिहास एवं संस्कृति) भाग–1 डॉ0 के0सी0 यादव
4. हरियाणा कला एवं संस्कृति – गोपाल भार्गव
5. www.divyahimachal.com
6. shikshalok12@gmail.com

हरमती कौर

पीएच.डी. शोधार्थी

महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक

रजि0 नं0 : 98–GN–838

पता :–

हरमती कौर पत्नी श्री गुरमीत सिंह

मौहल्ला गुरूनानकपुरा, नारनौल,

जिला महेन्द्रगढ़

11

'कफन' कहानी और दलित संवेदना

डॉ0 नियतिकल्प

सारांश –

कथा कार प्रेमचंद की लेखनी की सबसे बड़ी खूबसूरती यह है कि उनके ग्राम्य जीवन के अभावों, पीड़ाओं और दीन–हीनों की संवेदनात्मक स्थितियों के अभिचित्रण मे ंकमाल की सिद्धहस्तता अर्जित की है । गाँव–देहात की कोई एक ऐसी समस्या नहीं है जिस पर प्रेमचंद की दृष्टि नही ंगयी हो और उन्हों ने उसे समग्रता और सम्पूर्णता के साथ प्रभाव पूर्ण ढंग से अभिव्यंजित नहीं किया हो । इस प्रकार का सटीक और सार्थक अभिव्यंजन प्रेमचंद जैसे कलाकार से ही संभवथा। गाँव–देहात के पढ़– अपढ़ लोगों के बीच में मुख्यत: दो ही रचनाकारों की बेहतरीन पहुँच है। एक हैं–तुलसीदास और दूसरे प्रेमचंद । इस संदर्भ में प्रेमचंद–पुत्र अमृतराय का यह कथन अत्यधिक सार्थक और महत्वपूर्ण है-"तुलसीदास के बाद वह पहला रचनाकार है जो बगैर धार्मिक आसंग के जनता के निकट पहुंचपाने में समर्थ हो सका है।"[1] तुलसीदास के साहित्य में अगर धार्मिकता का रंग गहरा है तो प्रेमचंद के साहित्य मे ंसामाजिकता का । दोनों रचनाकार अपनी–अपनी रचनाओं की लो करंजक और नैतिक उत्थान से युक्त अभिव्यक्ति से जन–मानस को आज भी उसी भावधारा के साथ संतृप्त कर रहे हैं । प्रेमचंद ने अपने लेखन में निर्धन, दीन–हीन, असहाय, निरूपाय मजदूरों और किसानों को स्थान दिया है । जमींदारों और सामंतों की उपस्थिति शोषकवर्ग के रूप में हुई है ।

कथा साहित्य के इस सम्राट को भारतीय जीवन की विविध समस्याओं विशेषत: ग्राम्य जीवन की विविध बाधाओं, विपदाओं और अन्तर्वेदनाओं के अभिचित्रण में अतिशय सफलता प्राप्त हुई है। इसका कारण यह है कि उन्होंने गॉवों के जीवन की बहुविध समस्याओं और पीड़ाओं को अधिक निकटता से देखा ही नहीं था, बल्कि निर्धनता और गरीबी तथा अभावग्रस्त जीवन की असह्य पीड़ा को भोगा भीथा। कहने की जरूरत नहीं कि भोगे हुए यथार्थ और दर्द की अभिव्यक्ति साहित्य में अधिक जीवंतता के साथ होती है ।

समाज में विभिन्न वर्णों और वर्गों की अवस्थिति स्पष्ट तौर पर देखी जा सकती है। स्मरण रहे कि प्रेमचंद का लेखन आजादी के पूर्व का लेखन है और उन दिनों समाज में वर्ग–भेद पूरी कट्टरता के साथ विद्यमान था। समाज का निर्धन और दीन–हीन तब का यह मानने के लिए सहर्ष तैयार था कि ईश्वर ने उसे इन बड़ों की सेवा के निमित्त छोटा बनाकर संसार में भेजा है। उसकी स्पष्ट मान्यता थी कि बडे–छोटे भगवान के यहाँ से बनकर आते हैं । फलत: बड़े लोगों की सेवा करना ही उसका परम धर्म है । अपने इस कर्तव्य–पथ से विमुख रहने वाला व्यक्ति पाप का भागी बनता है । इस नियतिवादी धारणा से तब का यह समाज पूरी तरह से आक्रां तथा ।

निःसंदेह, प्रेमचंद की करूणा और सहानुभूति निम्नवर्ग के प्रति सर्वाधिक है, क्योंकि यही वर्ग उच्च वर्ग और मध्य वर्ग के द्वारा शोषित–पीड़ित किया जाता है। निम्नवर्ग का संपूर्ण जीवन जमींदारों और पूंजीपतियों के हाथों में गिरवी है। बाप का कर्ज चुकाने के लिए बेटा अपनी सारी उम्र जमींदारों के यहाँ बंधक रख देताहै और यह सिलसिला पीढ़ी–दर–पीढ़ी चलता रहता है। प्रेमचंद ने इन दबे–कुचले और समाज से बिलकुल उपेक्षित पात्रों की मनः स्थितियों और हताशा से आहत उनके करूणा जन्य जीवन को अपने कथा साहित्य के माध्यम से पाठकों के समक्ष उपस्थित किया है।

प्रेमचंद ने लगभग तीन सौ कहानियों का लेखन कियाहै। किसानों के जीवन का मार्मिक स्वर 'गोदान' नामक उपन्यास में मुखरित है तो मजदूरों के जीवन की संघर्ष–गाथा और उनकी दैन्य परिस्थितियों को "कफन" नामक कहानी में प्रदर्शित किया गया है। उक्त कहानी उनकी संपूर्ण कहानियों में से कदाचित सबसे अधिक चर्चित और लोकप्रिय है, जोसन् 1936 ई. में पहली बार उर्दू मे ंलिखी गयी और उसके बाद हिन्दी में । प्रेमचंद की रचनाशीलता का यह परिपक्व दौर है, जब अनुभव, विचार और संवेदना के हर धरातल पर प्रेमचंद संपूर्ण रूप से मंज चुके हैं।उनकी इस दौर की अधिकांश रचना शीलता पाठकों को भीतर तक झकझोर ने और उद्वेलित करने में समर्थ है । किसी भी रचनाकर की सबसे बड़ी सफलता यही है ।

"कफन"कहानी ऐसेदलित शोषित पिता–पुत्र की कहानी है, जो अपनी मृत पड़ी बहू और पत्नी के दाह–संस्कार के लिए चंदा से इकट्ठा किये गये पैसे से शराब पीते हैं। पुड़ी, जलेबी, मछली और कलेजी का भरपूर रसा स्वादन करते हैं और इतने मदमस्त हो जाते हैं कि भट्ठी के सामने ही नाचते–गाते भूलुंठित हो जाते हैं।प्रेमचंद की कहानियों के बाह्य रूप को देखकर उनके असलीमर्म का अंदाजा नहीं लगाया जा सकता है। आलोचकों के एक वर्ग के अनुसार इस कहानी में दलितों के साथ ना इंसाफी की गई है और उन्हें अमानवीय घोषित किया गया है।[2] पाठक का एक वर्ग इस पर अविश्वसनीयता का ठप्पा भी लगाता है । विचार का पहला बिन्दु यह है कि कोई भी व्यक्ति इतना निर्दयी, क्रूर और लापरवाह नहीं हो सकता कि उसे प्रसव–वेदना से छटपटाती बुधिया की असह्य पीड़ा के समक्ष अलाव

में पक रहे आलू की अधिक चिंता हो । दूसरा यह किकफन के उगाहे गये पैसे का सदुपयोग वह दाह–संस्कार में न कर शराब और पुड़ी–कलेजी में करे । यह मानवता की गिरावट का आखिरी बिन्दु है । अकल्पनीय स्थिति है कि कोई भी व्यक्ति इस हद तक अपने आपको आखिर गिरा कैसे सकता है । इस अविश्वसनीयता का समाधान लोगों ने क्षुधा की प्रबल आग में यह कह कर ढूंढना चाहा है कि क्षुधा की आरत आग व्यक्ति से कुछ भी कुकर्म करवा सकती है । कहावत है- ' आरत काह न करैकुकरम' । प्रेमचंद शायद इसी क्षुधासमन्वित लक्ष्य से परिचालित हैं ।

'दलित' शब्द का अर्थ है-मर्दित, रौंदा हुआ, कुचला हुआ, खंडित, मसला हुआ, टुकड़े–टुकड़े, विनष्ट, दबाया हुआ । इस अर्थ में "दलित" वे सभी व्यक्ति हैं जो समाज में दबाये गये है और जिन कामान–मर्दन हुआहै, जिन्हें कुचला गया है । पुरातन काल से ही समाज की यह रीति–नीति रही है कि अधिकार सम्पन्न लोग छोटो को अपने पैरों तले दबाते–कुचलते रहे हैं । लंबे समय से विचार–विमर्श के बाद भी दलित–साहित्य विवादास्पद है । इसका मुख्य प्रश्न यह है कि रचना किस जाति के लेखक की है-सवर्ण या गैरसवर्ण? आलोच कभी दो खेमों में बँट चुके हैं–पहले खेमे का मानना है किस वर्ण लेखक द्वारा दलित जाति से संबंधित लिखी गयी रचना भी दलित–साहित्य है । लेकिन दूसरा पक्ष बुलंदी से इसका प्रतिरोध करता है कि दलितों द्वारा लिखा गया साहित्य ही दलित–साहित्य है । दलित ही एक दूसरे दलित की पीड़ा–वेदना को अच्छी तरह समझ सकता है । कोई दूसरा नहीं।लेकिन रचनाकार का कर्म सृजन करना है । उसका उद्देश्य अपनी रचना के माध्यम से पाठकों मेंनवीन चेतना का संचरण करनाहै । दलितों के बारे में सिर्फ दलित ही लिखें, यह बात युक्ति संगत प्रतीत नहीं होती । साहित्य के नाम परसाहित्य में एक अलग खेमा तैयार करना ही अ संगत है । गैरदलित लेखकों की दलित संबंधी रचना ओंकोदलित साहित्य के अंतर्गत सम्मिलित करने के संदर्भ में दलित लेखक जिस तरह उन्हें न कारते हैं, यह उनकी संकीर्ण मानसिकता को दर्शाता है । दलितों द्वारा दलितो पर लिखने से ही दलित–साहित्य का सृजन नहीं हो जाता । इस गहरे विवाद के मध्य मुख्यत:दो शब्दों की प्रधान तालक्षित होती है । एक है–सहानुभूति और दूसरा स्वानुभूति । सहानुभूति के सहारेलिखा गया साहित्य पीड़ित के दर्द के अभिव्यंजन में समर्थ इसलिए नहीं हो सकता, क्योंकि लेखक ने स्वयं उस दर्द को भोगा नहीं है । दर्द को भोगने वाला लेखक ही स्वानुभूति के धरातल पर ही उस दर्द की सटीक अभिव्यक्ति करने में समर्थ हो सकता है । इस आधार पर दलित लेखक ही दलित–दंश और पीड़ा को समझने में सक्षम है । 'जाके पाँव न फटे बिवाई, सोक्या जाने पीर पराई' वाली कहावत के साथ यह संवेदना सम्पृक्त है ।

दलित–साहित्य औरदलित लेखक के विवादों से दूर रखते हुए प्रेमचंद जैसे कथाकारों को उनके पात्रों के माध्यम से उस समस्या की ओर दृष्टिपात करना चाहिए जो प्रेमचंद का मूल ध्येय था । प्रेमचंद का एकमात्र लक्ष्य निम्नवर्ग, पिछड़ों, वंचितों और दलितों के माध्यम से समाज का पुनर्निर्माण कर उनकी सहभागिता का प्रदर्शन करना था । उनकी दृष्टि में समाज का कोई वर्ग न छोटा हैऔर न बड़ा और दोनों के सम्मिलन और सामंजस्य से ही समाज का निर्माण हो सकता है । उन्हों ने जिस सहानु भूतिशीलता और मानवीय संवेदना के साथ किसानों और मजदूरों को अपनी रचनाओ में स्थान दिया, वैसी ही पक्षधरता और सहानुभूति शीलता दलितों के प्रतिभी दिखाई देती है । दलित जीवन की यातना–व्यथा के चित्रण के सिलसिले में उन पर ब्राह्मण विद्वेषी होने तथा घृणा का प्रचारक होने के आरोप भी लगे, परंतु इन सारे आरोपों से अप्रभावित प्रेमचंद अपनी रचनाओं के माध्यम से उनकीजीवनगत यातनाओं और संवेदनाओं को निरंतर अभिव्यक्ति देते रहे । ठाकुर का कुआँ, दूध का दाम, सद्गति, मंत्र, कफन जैसी कहानियाँ इस संदर्भ में विशेष रूप से उल्लेख्य हैं, जिनमें दलितों की अंतर्वेदना का मार्मिक प्रकाशन हुआ है ।

"कफन" हमारे मन के भीतर हलचल पैदा करने वाली, सभ्य समाज पर व्यंग्य करने वाली, अद्वितीय और एक मार्मिक कहानी है। किसी भी कहानी का आरंभ इतना मार्मिक और करुणा पूर्ण नहीं हो सकता है। प्रसव–वेदना से तडपती और जूझती एक औरत और उसकी संभावित मृत्यु की प्रतीक्षा कर रहे दो कामचोर और बेईमान पुरुषों के मानसिक और मनोवैज्ञानिक अंकन से कहानी प्रारंभ होती है। घीसू और माधव पिता–पुत्र हैं। माधव की पत्नी बुधिया "प्रसव वेदना से पछाड" खा रही थी और ये दोनों इस इंतजार में थे कि मर जाय तो आराम से शयन करें। बुधिया का पतिमाधव उसे तड़पती हुई दशा में निहारने तक नहीं जाता, इस लोभ से कि कहीं "घीसू पके हुए आलुओं का बडा भाग साफन हीं कर दे" । 3 आलू खाने के लिए बाप–बेटे मे पैंतरे बाजी चल रही है और वह भी तब जब उनकी बहू और पत्नी अंतिम सांसें गिनती हुई छटपटार ही है। प्रेमचंद ने घीसू और माधव की पाशविकता और अमानुषिकता का दिल दहला देने वाला चित्रण किया है। दोनों बाप–बेटे इंसानियत कोगर्म आलू की तरहलील रहे हैं। इन पात्रों को प्रेमचंद अजगर तक कह डालते हैं। अजगर अपने शिकार को शिकंजे में जकड़ कर पहले उसके प्राण निकालता है और फिर धीरे–धीरे उसे निगल जाता है। घीसू और माधव इस स्त्री के बल और कमाई पर खूबमजे उड़ाते हैं। जब से माधव और बुधिया का ब्याह हुआ, ये दोनों और भी आरा मतलब हो गये हैं। इनके सद्गुणों का बखान करते हुए प्रेमचंद कहते हैं-"घीसू एक दिन काम करता तो तीन दिन आराम करता। माधव इतना काम चोर था कि आधा घंटे काम करता तो घंटे भर चिलम पीता।"4

घीसू पर ले दर्जे का झूठा, काईयाँ और डींग बाज है।साठ साल तक गरीबी की आग में जलने के बाद किसी से सच्चा, ईमानदार और कर्त्तव्य निष्ठ बने रहने की आसल गाना व्यर्थ ही नहीं, अनुचित भी है। घीसू समाज की नस–नस पहचानता है।वह जानता है कि यह समाज गरीबों को दोदाना अनाज नहीं दे सकता पर मर्यादा की लाज रखने के लिए, बड़े से बड़ादान दे सकता है। इसलिए वह भी मर्यादा के नाम पर, धर्म के नाम पर, अपनी है सियत के अनुसार समाज को लूटता है। वह देखता है कि मेहनत कश किसानों की स्थिति भी उससे अच्छी नहीं है तो फिर वह क्यों जान देकर कामकरे।साथ ही वह यह भी देखता है कि सफेद पोशवर्ग भी तो काम नहीं करता।वह भी तो किसानों की मेहनत पर जीता है। यहीमनोवृत्ति, यही सोच उसमें पर जीविता को जन्म देती है। प्रेमचंद यहाँ पूरी व्यवस्था पर कटाक्ष करते हैं, जिसमें श्रम करने वाले भूखे मरते हैं और उनके श्रम से लाभ वे उठाते हैं, जिनके पैरों तले इनकी गरदनें दबी हुई हैं।5

बुधिया की मृत्यु के पश्चात् जरूरत कफन की हैऔर उनके पासमिट्टी के दो–चार बर्त्तनों के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं है। वे उस की लाश के लिए कफनजुगाड़ कर सकेंगे, इसका कोई सवाल ही नहीं है। घीसू–माधव परजीवी जरूर हैं, पर उनके पास व्यावहारिक बुद्धि की कमी नही है। वेछाती पीट–पीटकर जोर–जोर से रोते चिल्लाते हैं। पास–पड़ोस के लोग इकट्ठा होते हैं, उनकी करूणा और सहानुभूति भी उन्हें मिलती है। समस्या कफन की थी। पर जीवी व्यक्ति या तो चोरी करे या भीख माँगे। चोरी का सवाल नहीं था–भीख उनके लिए आयेदिन की बात थी। छाती पीटते हुए वेजमीं दार के पास पहुँचते हैं जो दोनों की काम चोरी और उनके पिछले इतिहास से भली–भाँति परिचित होते हुए भी स्थिति को पर खकर दो रुपये हिकारत से उनकी तरफ फेंक देता है। जब जमींदार ने दो रुपये दे दिये तो औरों से कुछ बटोर लेना उनके लिए बडी बात नहीं थी और इस प्रकार इधर–उधर से दोनों के पास पाँच रुपए इकट्ठा हो जाते हैं।

समस्या का निदान हो चुका था। अब दोनों निश्चिंत थे।वे दार्शनिक और विश्लेषक बनते हैं कि इतनी 'मेहनत' से अर्जित लक्ष्मी को अकारथ क्यों किया जाय ?सच पूछा जाय तो जरुरत मामूली कफन की भी नहीं है। आखिर लाश के साथ जल ही तो जाता है ? बड़ी सार्थक टिप्पणी है उनकी-"कैसा बुरा रिवाज है? जिसे जीते–जीतन ढँकने को चीथड़ा भी न मिले, मरने पर नया कफन चाहिए ।"6 कहानी का यह विचार–बिंदु समाज की गहरीविडंबना से परिचालित है और यहाँ स्थिति पर बहुत बड़ा व्यंग्य लेखक का है। 'गोदान' उपन्या समेंव्यथा–भार से आक्रांत होरी जीते–जी अपने घर के सामने गाय नहीं बांध सका, और उसके जीवन के अंतिम क्षणों में पंड़ित दाता दीन उसकी पत्नी से गोदान करने को कहते हैं। यह हमारे समाज और जीवन का सबसे बड़ा व्यंग्य है। मृत्यु–पश्चात् श्राद्ध–आयोजन–क्रम में पुड़ी–कचौड़ी और पंचरंगी मिष्ठान्न की तैयारी और उस के भोग को इसी संदर्भ में देखा जा सकता है । जीते–जी संतान माता–पिता के खान–पान और फटे–पुराने वस्त्रों की परवाह नहीं करता और मृत्यु–पश्चात् भोज के आयोजन में उदारता पूर्वक सुस्वादु भोजन के साथ–साथ वस्त्र और पैसे लुटाताहै । समाज की यही रीति–नीति है। हमारा समाज दिखावे को अधिक प्रश्रय देता है । क्योंकि इसी दिखावे के साथ उसकी सामाजिक प्रतिष्ठा लिपटी हुई है ।

अब शुरू होताहै घीसू और माधव का जश्न। बुधिया की गंधा रही लाश से बेफ्रिक होकर मनाया गया उत्सव: एक अजीबसा त्योहार। बुधिया के अंतिम संस्कार और खासतौर पर कफन के लिये भीख माँग कर इकट्ठा किये गये पैसे से मनाया गया यह जश्न समाज के ताने–बाने को चिथड़े–चिथड़े कर देता है।सारी मर्यादाएँ औरनैतिकता की जंजीरें तड़तड़ा कर टूट जाती हैं।इनका नशे में मस्त होकर"ठगिनी क्यों नैना झमकावे" (मायातो बड़ी ठगिनी है, आसानी से किसी को नहीं छोड़ती) गाना, नाचना, उछलना, कूदना, मटकना और गिरपड़ना- ये सभी क्रियाएँ सामंती समाज के बनाए कायदे–कानून को अंगूठा दिखाती और चुनौती देती प्रतीत होती है।7 उल्लेख्य है कि शराब व्यक्ति को सम्पूर्णत: विवेकहीन और संज्ञा शून्य बना देती है । फलत: वह अपने कर्तव्या कर्तव्य से पूरी तरहच्युत हो जाता है । गाँधीवादी विचारधारा से प्रभावित प्रेमचंद के जेहनमें शायद शराब–सेवन के कुफल को बतलाना भी रहा हो । इसीलिए नशा–निषेध के जागरण से प्रेमचंद यहाँ प्रभावितदीख पड़ते हैं । उल्लेख्य है गाँधी विचारधारा के अन्तर्गतमद्य–निषेध एक पवित्र भावधारा है ।

यहाँ यह स्पष्ट हो जाना चाहिए कि घीसू और माधव का अमानवीकरण इस कहानी का मूलकथ्य और संदेश नहीं है।इसका मकसद उस शोषण पर आधारित व्यवस्था को बेनकाब करना है, जिन्होंने घीसू और माधव की यह हालत बना दी है कि उनकी बहू, पत्नी अंदर प्रसव पीड़ा से छटपटा रही है और वे अपनी क्षुधा तृप्ति के लिए मजे से मुँह जलाकर आँख में आँसू बहा–बहाकर गर्म–गर्म आलू गट के जा रहे हैं।मालूम होना चाहिए कि वेदो दिन से भूखे हैं। भूख आदमी को पिशा चबना देती है।कहा गया है– 'बुभुक्षितंकिंम् न करोतिपापम।' वह मनुष्य की आत्मा को लील जातीहै। भूख की कोख से ही अपराध, बेहयाई और अमानवीयता का जन्म होताहै।भूख की पराकाष्ठा आदमी को संवेदन–शून्य बना देतीहै। प्रेमचंद भूखे घीसू और माधव के व्याज से उस सामाजिक व्यवस्था पर प्रहार करते हैं जिसने घीसू और माधव जैसे कोढ़ियों और नालाय कों को पैदा किया है। उनके माध्यम से उन्होंने उस व्यवस्था की आलोचना की है जहाँ कफन की तो गारंटी है पर रोटी की नहीं।8 "कफन" कहानी इसी सामाजिक व्यवस्था पर करारा प्रहार करती है। प्रेमचंद इन दलितों और शोषित पात्रों के प्रति अत्यधिक संवेदनशील और

सहानुभूतिशील हैं। वे कहना चाहते है किस माज की समुन्नति उनके विकास और उत्थान के साथ सम्पृक्त है।केवल एक विशेष वर्ग के विकास से समाज विकसित नहीं हो सकता। प्रेमचंद समाजवादी विचारधारा के प्रबल पोषक और समर्थ कर रहे हैं । फलत: वे समाज के प्रत्येक वर्ग को समान रूप में विकसित होते हुए देखना अधिक पसंद करतेहैं ।

प्रेमचंद साहित्य को दलित–साहित्य के अंतर्गत स्वीकार नहीं करना औचित्यपूर्ण प्रतीत नहीं होता । 'ईदगाह' जैसी कहानी वही लेख कलिख सकता है जो वर्ग, वर्ण, धर्म, जाति, संप्रदाय की भेदभावपूर्ण मानसिकता से हटकर इंसान को इंसान के रूप में देखे और प्रेमचंद की मानसिकता भी यही थी । उन्होंने बिना किसी आग्रह या पूर्वाग्रह के समस्त भारतीय सामजिक जीवन को अपनी दृष्टि की परिधि मेंसमेटने की कोशिश की है । आदमी के चरित्र को उस की अंतर्बाह्य विशेषताओं और कमजोरियों के परिप्रेक्ष्य में देखने और उजागर करने के कारण ही वेजन–जन में लोकप्रिय बने । उन्होंने सदैव मनुष्यता और मानवीयता को ध्यान में रखा । इसी विशेष अंत र्दृष्टि के कारण ही प्रेमचंद सबके लिए आज भीवंदनीय और अभिप्रेरक हैं । इसी संदर्भ में इस तथ्य का उल्लेख आवश्यक है कि साहित्य अपनी सम्पूर्णता में साहित्य ही है । इसे दलित साहित्य और अन्य प्रकार के साहित्य में विभाजित करके देखना किसी भी प्रकार से संगत प्रतीत नहीं होता । साहित्य वही श्रेष्ठ और वंदनीय है जो हमारी अन्तर्वृत्तियों को परिस्कृत–परिमार्जित कर देने में समर्थ हो सके । प्रेमचंद ने दलित साहित्य को ध्यान में रखकर साहित्य की रचना नहीं की थी , उन्होंन मनुष्य को ध्यान में रखकर लेखन किया था । प्रेमचंद की दृष्टि में सबसे बड़ा मनुष्य है और वह मनुष्य बड़े–छोटे किसी के भीतर भी हो सकता है । इस धरती पर मनुष्य से बड़ा और श्रेष्ठ कोई नहीं है । प्रेमचंद को मनुष्य की श्रेष्ठता पर अमित विश्वास है । वह उसके पूज कहैं । फलत: मानवीय संवेदना के प्रबल हिमायती और पोषक प्रेमचंद जैसे महान साहित्यकार को दलित–अदलित साहित्य के खेमे में घसीटना किसी भी दृष्टि से साहित्य की उत्तमता के लिए उचित नहीं है ।

संदर्भ संकेत

(1) कलम का सिपाही, अमृतराय, सरस्वती प्रेस, इलाहाबाद, 1972, पृ - 55.

(2) कहानीकार प्रेमचंद, शिव कुमार मिश्र,, लोक भारती प्रकाशन, 2006 पृ- 100.

(3) कफन, प्रेमचंद, भरतीय ग्रंथनिकेतन, 1991 ई. ,पृ- 26.

(4) उपरिवत, पृ- 7.

(5) हिन्दी साहित्य का इतिहास, डॉ0 नगेंद्र, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नयी दिल्ली, 1980 ई. ,पृ- 205.

(6) कफन, प्रेमचंद, भरतीय ग्रंथ निकेतन, 1991 ई. ,पृ- 7.

(7) उपरिवत, पृ- 8.

(8) कहानी कार प्रेमचंद, शिव कुमार मिश्र,, लोक भारती प्रकाशन, 2006 पृ- 102.

डॉ0 नियतिकल्प
सहायक प्रोफेसर,
हिन्दी विभाग
स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग
राँची विश्वविद्यालय,
राँची।
मोबाइलः 9430346083

12

वितस्ता की पुत्री लल्लेशवरी,सहजानंद और कबीरदास का काव्यः बहता नीर....

नीलोफर जान

सारांश –

कश्मीर ने महान विभूतियों की तारक मंडिली की रचना की है लेकिन विरल ही कोई महानुभाव लल्लेशवरी के सम्मान प्रसिद्ध तथा बहुआयामी हैं। वितस्ता की महान पुत्री लल्लेशवरी का जन्म सन 1320-1392 में कश्मीर के पदमानपोरा गावं पांदरेठन में हुआ लल्लेशवरी मुस्लमानों के लिए लल आरिफा और हिन्दुओं के लिए लल्लेशवरी तथा सभी लोगों में वह प्यार से "ललद्यद"ललमाँ अर्थात वात्सल्य रस से परिपूर्ण सम्पूर्ण मानव जाति की प्यारी माँ के नाम से प्रसिद्व है। कश्मीर के सुप्रसिद्व ऋषि "नुंदऋषि" अथवा "सहजानन्द" और लल्लेशवरी दोंनों कश्मीर के महिमापण्डित व्यक्ति है। कबीर पंद्रहवी शताब्दी के भारतीय संत परमपरा के प्रर्वतक के रूप मे प्रसिद्ध है, कबीर हिंदी साहित्य के महिमा मण्डित व्यक्तित्व है।तीनों ने अपने भक्त,कवि और समाज सुधारक रूप से मध्ययुग को तो प्रभावित किया ही था पर वह आज भी उतने ही प्रभावी और प्रासांगिक है। उन्होंने कवि के रूप में जो पद रचे आज भी पाठकों को रसाप्लावित करते रहते है। ऋषियों साधु, संतों की वाणी विशेष रूप से मानवता की शिक्षा का प्रचार ही करती और इसी प्रकार लल्लेशवरी,नुंदऋषि और कबीर का काव्य भी आज की पथ भ्रष्ट युवा पीडी के लिए सही मार्ग दर्शन करने में सहायक है। उन्होंने स्वंय ग्रंथ नहीं लिखे केवल अपने उपदेशों को वाणी दी और उनके शिष्यों ने उनकी वाणी को लेखनीय बद्व किया।उनके समय में ही उनकी महानता को व्यापक स्तर पर मान्यता प्राप्त हुई हैं। उन्होंने कश्मीर के सुप्रसिद्व ऋषि एवं सूफी "नुंद ऋषि" अथवा "सहजानन्द " को अपना आध्यात्मिक उतराधिकारी घोषित किया हैं।

कश्मीर के ध्वज वाहक शेख-उल-आलम जो नुंदऋषि, नूरूद्दीन के नाम से भी प्रसिद्व है कश्मीर के तेजस्वी प्रतीक और जन साधारन के लिए प्रकाश-स्तंभ माने जाते है। चौदवी शताब्दी के इस महान सूफी संत कवि का जन्म ज़िला कुलगाम के गांव क्यमूह में सन् 1377 में हुआ और 1428 में इनका देहावसान ज़िला च्रारिशरीफ के एक गाव रोपवन में हुआ। उनके पिता का नाम सलार संज तथा माता का सदुरा था । लल्लेशवरी कश्मीर की सुप्रसिद्व एवं आदि कवित्रीय है। उन्हें अपने जीवन में तथा उसके पश्चात आज भी बहुत लोकप्रियता प्राप्त हुई है। वह मध्यकाल की विशम व अंधकारमय समय में अपने ज्ञान का आलोक लेकर आई थीं। उनका मन एक मात्र तत्व निरंजन में रमा हुवा था अपने अनुभवों के फलस्वरूप जो कुछ भी उन्होंने कहा वह कश्मीरी साहित्य की अमूल्य निधि बन गई । आध्यात्मिकता से ओतप्रोत उनका काव्य वॉख शैली में उपलब्ध है जो कश्मीर की प्राचीनतम काव्य शैली है। सहजानन्द के संदर्भ में ऐसी मान्यता है कि उन्होंने अपने जीवन का अधिकतर समय नितान्त रहकर गुफाओं में ध्यान लगाने में व्यतीत किया है अथार्त वह सांसारिक सुख सुविधाओं तथा अपने परिवार को त्याग कर केवल ईश्वर की भक्ति में लीन होकर गुफाओं में रहे हैं। उनका स्वभाव बाल्यकाल से ही साधुओं का साधा हुआ, उन्होंने संसार के प्रति निवृत्ति पाने के लिए ही गुफा में रहने का विचार किया और 12वर्श तक गुफाओं में कठिन तपस्या की और अपने आध्यात्मिक अनुभवों से लोगों का ज्ञानाक्ति किया। तीनों ने अपने उपदेश काव्य रचना एवं प्रसिद्वि प्राप्ति के लिए नहीं दिए अपितु समाज के हित के लिए उन्होंने जो कहा वही आगे चलकर आज के युग में काव्य के रूप में हमारे सामने उपस्थित है। दुर्भाग्यवश उनका काव्य उनके समय में ही लेखनीयबद्व नहीं हुआ अपितु दीरध काल तक वह मौखिक रूप में ही सुरक्षित रहा है यही कारण है कि उनका सम्पूर्ण काव्य किसी क्रमबद्व रूप में हमारे सामने उपस्थित नही है। भाव की गहराई तक पहुचकर लल्लेशवरी ने विश्रंखलित रूप में जीवन और जगत के तथ्य के बीच के संग्रह में छुपे हुए उसके तथ्यों पर विचार अभिव्यक्त किए है। वह एक भ्रमणशील योगिणीय तथा ज्ञान की अट्टालिका पर पहुची हुई साधिका थी। हिंदु धर्म के शैव र्दशन को कश्मीरी देश भाषा द्वारा सामान्य जन तक पहुचाने का प्राथमिक श्रेय उन्ही को हैं । शैव धर्म संबंधी योग के विविध विधानों तथा उसके द्वारा ब्रह्मोपलब्धि का जो महान रहस्य है उस पर भी उन्होने प्रकाश डाला है उनकी वाणी बहते नीर और अमर अलोक की तरह आधुनिक युग की युवा पीडी का सही मार्गदर्शन करने में भी सहायक सिद्व हो रही है। उन्होने समाज में व्याप्त विभिन्न कुरीतियों आडम्बरों जैसे जाति-पाति के नाम पर होने वाले भेद भाव ऊंच-नीच, नारी शोषण अंधविशवास आदि का विरोध कर समाज को जागरुक किया उन्हें अपने अधिकारों के प्रति सचेत कराया उनके उपदेश न केवल उस समय के लोगों के लिए लाभदायक थे। अपितु आज के समाज में व्याप्त भुराइयों तथा कुप्रथाओं पर अंकुश लगाने में और उन पर करारे प्रहार करके लोगो का मार्गदर्शन करने में सहायक सिद्व हो रहे है। इनका काव्य शान्ति अहिंसा और भाईचारा लाने में सहायक सिद्वहुए। उन्होंने अपने उपदेश काव्य रचना एवं प्रसिद्वि प्राप्ति के लिए नहीं दिए अपितु समाज के हित के लिए उन्होंने जो कहा वही आगे चलकर आज के युग में काव्य के रूप में हमारे सामने उपस्थित

है। उन्हें अपने जीवन में तथा उसके पश्चात आज भी जो लोकप्रियता प्राप्त हुई वह लोकनायक या समाज सुधारक का ही कार्य है। लल्लेशवरी के काव्य में जीवन की मार्मिक अनुभूतियों के साथ-साथ उद्वैतवाद की विचारधारा संतों की प्रेम पद्वति, शैवों की यौग पद्वति तथा ब्राह्मणों के आधारभूत तथ्यों का सच्चा स्वरूप मिलता है वह वास्तव में एक विचारक साधिका थी संत थी क्योंकि उनकी वाणी में ही उनका साधक रूप सर्वत्र दृष्टिगत होता है अतः एक योगिन साधिका तथा शैव दर्शन की अनुगामिनी के सुन्दर्तम भाव प्रसफूटन में शास्त्रीय काव्य तत्व ढूंढना उनके साथ कठोरता का व्यवहार करना हैं। काव्यशास्त्र का वास्तिविक ज्ञान न होते हुए भी एक सामान्य साधिका की वाणी में विश्य की सहज उदाम्ता तथा काव्य सौन्दर्य की मार्मिकता कूट कूट कर भरी हुई है।उनकी विचारधारा के अनुसार परमशिव में ही जड जगत तथा चेतन जगत का आविभाव और तिरोभाव होता है उनके काव्य में आलौकिक आध्यात्मिक आनन्द मिलता है उनका काव्य शिव रस से सरोबोर है उन्होंने लौकिक जीवन अभिव्यंजना कुण्ठाओं,पारिवारिक जीवन की यातनाओं तथा आध्यात्मिक प्रवृतियों के सम्मिलन से अपनी भावनाओं को शिव शब्द के उच्चारण द्वारा व्यक्त करने के लिए ही सख्य के साख्य, वात्सल्य के उल्लास तथा दाम्पत्य भाव के मधुर रूप आदि में से किसी एक को प्रधानता न देकर शुद्वराग के सहज भाव को व्यक्त किया है । उनके काव्य की आत्मा शुद्ध मानसिक प्रेम है। वह उसी प्रेमानुभूति में जल कर और घुलकर शिवतव्व की प्राप्ति का संदेश देती है । उनकी काव्य साधना का प्रमुख आधार तथा प्राण धर्म है और उनकी सहजानुभूति तथा भावों की गरीमा के कारण लल्लेशवरी की भावना काव्य के रूप में प्रस्फूटित हुई है।लल्लेशवरी,नुंदऋषि और कबीरइनके विचार मानव मात्र के हित की बातों से भरे थे, किन्तु उस समय में ऐसा कुछ नहीं था जिसकी उन्होंने कल्पना की थी।इसी कारण उनकी आलोचना में आक्रोश का स्वर सुनाई देता है।उनकी कडवाहट किसी प्रकार की उपजन न थी बल्कि वातावरण और परिस्थितियों की असंगति की देन थी जिसके कारण उन्हें मर्मान्तक पीड़ा होती थी और आन्तरिक क्षोभ के कारण कटूतियाँ तक कहनी पड़ जाती थी। किसी की उचित बात को बिना किसी लाग–लोट के यह परवाह किये बिना कि अम्मुख व्यक्ति पर उसकी क्या प्रतिक्रिया होगी कह देना उनका स्वभाव था।कबीर के काव्य सौन्दर्य की परख के लिए उनके छंद विधान तथा उनके द्वारा प्रयुक्त काव्य रूपों का अध्ययन अप्रेक्षित है कबीर ने अधिक्तर सघुक्कड़ी छंदों का प्रयोग किया है इन में सब से प्रमुख साखी, सबद और रमैनी है, वे मानव जीवन के टूट रहे बिखर रहे मूल्यें, जीवन के सूत्रों आदर्शों को संजोए रखना चाहते थे इसीलिए सदैव ऐसी सत्य और तर्क की कसौटी पर खरी बात कहते थे जिस पर सब विश्वास कर सके उनके अनुसार व्यक्ति यदि दूसरों को सुधारने के बजाय केवल स्वयं को सुधार ले तो पूरे समाज में सकारात्मक बदलाव आ सकता हैं।सहजानंद से पूर्व कश्मीर की प्रथम कवियत्री तथा रूमानी व्यक्तित्व रखने वाली प्रथम महिला ललऐश्वरी ने इस संदर्भ में अपना प्रयास किया परन्तु वह अपने आध्यात्मिक विचारों की अभिव्यक्ति में ही लीन रही। उन्की भाषा संस्कृत निष्ठ कश्मीरी ही रही है यही तीनों की सोच और उनके काव्य का सार है।

सहायक ग्रंथ सूची

1 कश्मीरी साहित्य का इतिहास डॉ.शशिशेखर तोशखानी जे.एण्ड.के कल्चरल अकादमी जम्मू।
2 कश्मीरी निगुर्णसंत काव्य दर्शन और भक्ति डॉ. कृष्ण रैणा, शारदा प्रकाशन, महरौली नई दिल्ली।
3 कश्मीर का लोक साहित्य मोहन कृष्ण दर, आत्मा राम एंण्ड संस, कश्मीरी गेट नई दिल्ली।
4 कश्मीरी भाषा और साहित्य डॉ0 शिबन कृष्ण रैणा,संमार्ग प्रकाशन नई दिल्ली।
5 तेलिमाति शेख उल आलम, असदुल्लाह आफ़ाकीं पृष्ठ 56।
6 कबीर, हज़ारी प्रसाद द्ववेदी पृष्ठ 56।
7 गुप्त, बाल मुकुंद. कबीर जीवन और दर्शनएनारायन प्रकाशन,पृष्ठ12।
8 ललद्यदएजियालाल कौलएजे.एण्ड.के कल्चरल अकादमी जम्मू।

सम्पर्क सूत्र.....
नीलोफर जान
पी.एच.डी.शोधार्थी
कश्मीर विश्वविद्यालय
हजरतबल,श्रीनगर06
ई मेल...jnelofar97@gmail.com
मो.न.7006369849

13

व्यंग्य के कवि भवानी प्रसाद मिश्र

डॉ0 पुष्पा रानी

सारांश –

वर्ग संघर्ष के आधुनिक युग में कविता की सार्थकता हथियार बनने में और हथियार की प्रतिष्ठा असंगति अन्याय के मूलोच्छेद करने में है। व्यंग्य और आक्रोश आज के लेखन का मूल घटक और सुनिश्चित दिशा है, इसलिए लेनिन ने ''रचना कारों से लू–सुन लू की शैली को अपनाने की सलाह दी, जिसका मूलाधार व्यंग्य है।[1] व्यंग्य अपने में कोई स्थूल तत्त्व नहीं जिसका प्रयोग असंगतियों पर प्रहार करने में होता है। व्यंग्य का पहला रूप चित्र को तथा दूसरा रूप काव्य के कथ्य को पैना बनाकर उसे अस्त्र का रूप देता है। व्यंग्य के तीन बिन्दु होते हैं– कवि के आक्रोश को प्रकट करता है, कथ्य को पैना बनाता है और असंगति पर प्रहार करता है। अतीत की विसंगतियाँ भी व्यंग्य का आधार बनती हैं, किन्तु वर्तमान ही उपयुक्त होता है।

व्यंग्य के उत्स में मनोवैज्ञानिक तथ्य की क्रियाशीलता को नकारा नहीं जा सकता। चार्ल्स डार्विन ने जैविक अनुसंधान के आधार पर स्थापित किया है– ''आक्रोश एक स्वस्थ मस्तिष्क का अन्याय के प्रति प्रतिरोधात्मक भाव है। इस संवेग के अभाव में यह कल्पना भी असम्भव है कि प्राकृतिक एवं नैतिक मूल्य स्वतः क्रियाशील रह सकते हैं।[2] डार्विन का सूत्र इस बात का प्रतीक है कि आक्रोश मानव के सांस्कृतिक और नैतिक मूल्यों का सजग प्रहरी है, अन्याय को उपशमित और उसका विरोध करने की प्रबल युक्ति है। व्यंग्य और आक्रोश बहुत कुछ समानधर्म होते हुए भी अभिन्न नहीं है। ''आक्रोश, जहाँ तक एक तात्कालिक और संवेगात्मक भावदशा है।''[3] व्यंग्य आक्रोश का परिष्कृत एवं संशोधित रूप है। आक्रोश में असंगति पर एक्शन होता है। व्यंग्य में अन्योक्ति पर।

हिन्दी साहित्य में व्यंग्य की एक उथल–पुथल परम्परा मिलती है। स्वतन्त्रयोत्तर में हिन्दी कविता को व्यंग्य और विद्रोह की वाणी से गढ़ा गया है। व्यंग्य एक मनोवैज्ञानिक विश्लेषण की माँग करता है कि किन कारणों से कथित काल में व्यंग्य गहन होता चला गया। हिन्दी कविता को उसके पैनेपन के कारण चरम पर पहुँचा दिया। इसके मूल में सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक असंगतियाँ क्रियाशील रहीं। आठवें दशक के मध्य में भारत के प्रजातन्त्र का नकाब उतारकर अधिनायक तन्त्र का ताज पहन लिया जिसे हम आपातकाल में देखते हैं। इस काल ने कितने ही हिन्दी कवियों को व्यंग्यकार और विद्रोही बनाया।

भवानी प्रसाद मिश्र ने 'गीत फरोश' कविता में व्यंग्य के बीज अंकुरित होते हैं। लेनिन का अनुभव था कि निजी सम्पत्ति पर आधारित समाज में कलाकार बाज़ार के लिए पैदा करता है, उसे ग्राहकों की जरूरत होती है।[4] यहाँ उक्ति कहीं न कहीं पूँजीवादी समाज में कलाकार की विवशता को प्रकट करती है। कलाकार समाज में सम्मान चाहता है, उसके अभाव में टूटकर कला का व्यवसाय करता है, जहाँ कला की नैसार्गिकता समाप्त हो जाती है। कलाकार की इस विवशता के लिए पूँजीवादी समाज जिम्मेदार है। कलाकार की वेदना फूट पड़ती है–

''कुछ गीत लिखे हैं मस्ती में मैंने
कुछ गीत लिखे हैं पस्ती में मैंने।''[5]

प्रस्तुत पंक्तियों में विज्ञापन शैली में व्यंग्य की शिष्टता और गहनता छिपी हुई है। इसमें दहकता के साथ करुणा का समन्वय है, दूसरी ओर समाज की कला–विमुखता और पतनशीलता की मानसिकता पर व्यंग्य किया है।

स्वतन्त्रता से पूर्व हमारे समाज ने जो स्वप्न देखे थे, वे सत्ता परिवर्तन से पूरे नहीं हुए। मोहभंग की स्थिति में से गुजरता कवि अब मंत्रियों के स्वागत के गीत गाने की मनःस्थिति में नहीं रह पाता। कवि ने स्वयं को पागल कहकर व्यंग्य किया है कि समाज कवि की सूक्ष्म दृष्टि को समझ नहीं पाता है। स्वातन्त्रयोत्तर भारत में जहाँ राजनीतिक गिरावट आयी है, वहाँ सामाजिक एवं व्यक्तिगत स्तर पर भी आदर्शों का अवमूल्यन हुआ है। कवि इन परिस्थितियों का मूक दर्शक भर नहीं है। वह तो अपने गीतों के माध्यम से नवीन निर्माण की दिशाएँ प्रकाशित कर सके। कवि मिश्र ने सामाजिक असम्पृक्ति का आरोप लगाने वाले प्रतिबद्ध समीक्षकों का ध्यान आकर्षित किया है–

''दर्शक भर बन जाऊँ।
तो क्यों नाचूँ क्यों गाऊँ।''[6]

राजनीतिक परिवर्तन तो रक्तपात करते हैं जबकि कवि की लेखनी जगत् की धारा को बदलने की क्षमता रखती है। देश की दुरावस्था को दृष्टि में रखकर कवि राजनीति के खिलाड़ियों पर व्यंग्य करता है–

''मैं उतर लूँ कलम से मसि बिन्दु,
तू बहा असि से रक्त के सिंधु
मैं जगत बदलूँ कि तू बदले जगत।।''[7]

यह गाँधी के देश की विडम्बना है कि अहिंसा का मार्ग अपनाने वाले देश में हिंसा ने जबर्दस्त घेरा डाल रखा है। फिर भी

हमारे नेता मजे में हैं। अपने राष्ट्र की भाषा का स्वप्न देखने वाले बापू की समाधि पर प्रतिवर्ष श्रद्धा सुमन चढ़ाने की औपचारिकता निभाने में सतर्क नेताओं के असली रूप का पर्दाफाश करते हुए कहते हैं–

''बैठकर खादी की गादी पर ढलती है प्यालियाँ
और जब चढ़ जाता है नशा
भाषण होते हैं अंग्रेजी में गाँधी पर
जोर–जोर से बजती है तालियाँ।''[8]

गाँधी के सिद्धांतों का इससे अधिक उपहास क्या होगा?अपने काव्य संग्रह 'बुनी हुई रस्सी' में मिश्र जी ने कहा– ''बोलचाल हिन्दी की मेरी ताकत है। मगर लोग उसे भूल गए हैं और वह पहचानी न जाय तो चकित होने की बात मैं न मानूँगा।''[9]

''चार कौए उर्फ चार हौए'' कवि ने राजनीतिक व्यंग्य की चरम उपलब्धि और व्यंग्य की कीर्तिलता का प्रमुख आधार है। आपातकाल में संवैधानिक नियमों का उल्लंघन और कानून का जितना दुरुपयोग हुआ, वह विश्व–इतिहास में दर्ज है। ये चार कौए सत्ता के चार महाप्रभुओं के प्रतीक हैं, जिन्हें एक साथ व्यंग्य का लक्ष्य बनाया है–

''बहुत नहीं थे सिर्फ चार कौए थे काले।
उन्होंने यह तय किया किस सारे उड़ने वाले
उनके ढंग से उड़े, रूकें, खायें और गायें
ये जिसको त्योहार कहें, सब उसे मनावें।''[10]

ये चार कौए भारत के समस्त राजनीतिक आकाश पर अपना कब्जा किए हुए थे। अन्य कौओं के पंखों पर अनुशासन का भारी पत्थर बाँधकर उनकी मुक्त उड़ान को बाधित किए हुए थे। कविता अन्योक्ति और प्रतीकात्मकता से जुड़ी हुई है। ''साज और आवाज' व्यंग्य कविता है। आपातकाल में पुलिस के एक हाथ में बन्दूक और दूसरे हाथ में जंजीर अवश्य रहती थी। जनता की चीख जंजीरों की झनझनाहट और पुलिस की बूट की टाप की आवाज में खो गयी। यह प्रवृत्ति गहराती गई–

''नहीं ये जंजीरें नहीं और न वे गोलियाँ हैं
जिनकी तुमने अभी झनकार सुनी या सुनी तुमने
जिनकी अभी आवाज साज समझो इन्हें
उस सार्वभौम वाद्यवृन्द के जो क्या जानें
किसने कब से शुरू कर रखा है किसी में आकर
उसने अट्टहास से लेकर हृदय के धड़कन तक को
इसमें भर रखा है।''[11]

यद्यपि साज़ और आवाज मनोरंजन और सांस्कृतिक साधन हैं तथापि कवि ने व्यंग्यमूलक रूप में चरितार्थ किया है। कलाकार मनोरंजन के लिए साज़ उठाता है, वैसे ही आपातकाल में बन्दूक और जंजीर पुलिस के मनोरंजन के साधन हैं। 'तुम भीतर बन्द हो और हम बाहर' में व्यंग्य का उदाहरण है। आपातकाल एक तरह से आधुनिक युग का महाभारत ही था। महाभारत के प्रमुख निर्णायक पांडव जिनके प्रयासों से महाभारत में निर्णयाक मोड़ आ सकता था लेकिन भीष्म, द्रोण, कृपाचार्य को छल लिया गया, युद्ध टल नहीं सका। कुछ प्रमुख कांग्रेसी और प्रतिपक्ष के नेताओं के प्रयास से आपातकाल हटाया जा सकता था, लेकिन पद की सुरक्षा के लिए सभी ने चुप्पी साध ली–

''भीष्म ने चुप्पी साध ली है, द्रोणों ने सिर झुका लिया है
कुपाचार्य बीमार है और भी दो चार हैं
जिन्होंने कुछ कोशिश की थी कहने की
मगर.....छिन्न जायेगी सच कहने से वह गद्धी''[12]

प्रस्तुत पंक्तियाँ ऐतिहासिक और आधुनिक पृष्ठभूमि को प्रकट करता है। रामायण से महाभारत तक समस्त ज्ञान–विज्ञान और समाज के सूत्रधार राजा और सामन्त थें। आधुनिक युग में सामन्त का स्थान राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री ने छीन लिया। आज मन्दिर मस्जिद की ओट में कितने अपराध किये–कराये जाते हैं। धर्म का मायावी मुहावरा गढ़कर राजनीतिक अर्थ निकाले जाते हैं। धर्म विषयक सिद्धांत धार्मिक कट्टरता में जकड़े गए हैं। अधिक से अधिक हत्या करने वाले और अधिक संरक्षण पाते हैं। धर्म और नीति के मूल द्रव रिसकर राजनीतिक तट से बाहर हो गए हैं। कवि ने स्वतन्त्र भारत की राजनीतिक और धर्म से गठबन्धन तथा हिंसक चरित्र को प्रतिबिम्बित किया है।[13]

व्यंग्य के व्यक्ति 'परिवर्तन जिए' कविता में वे व्यक्ति बने हैं, जो अपने को प्रजातंत्रवादी और गाँधीवादी कहते हैं। गाँधीवादी विचारों की वर्तमान करुण स्थिति को दिखाया गया है, वहीं उसकी दुर्दशा के लिए जिम्मेदार को सच्चे प्रजातन्त्रवादी कहकर उसकी भर्त्सना की गई है। 'कुछ लोग' शीर्षक कविता में भी आपातकालीन भारतीय प्रजातन्त्र की खबर ली गयी है। आपातकाल में प्रजातंत्र के लिए सभी के भिन्न–भिन्न मत थे। कुछेक ने अधिकार छीन जाने की बात कही, कुछेक ने अधिनायक तंत्र आने और प्रजातन्त्र के मर जाने की बात दुहराई। भवानी प्रसाद मिश्र उनकी बोलती बन्द करते हैं कि भारत में प्रजातन्त्र जीवित भी कब था, उसके मर जाने का सवाल ही कहाँ है? स्वतन्त्र भारत की सभी स्थितियाँ और प्रजातन्त्र की मूल चेतना के ध्वंस का सारा वातावरण मूर्त्त हो उठता है–

''कुछ लोग प्रजातन्त्र मर गया कहकर
उदास है जैसे जिन्दा था कभी
वह बेचारा।''[14]

निष्कर्ष:

इस प्रकार भवानी प्रसाद मिश्र का काव्य युग चेतना का संवाहक है। समय के साथ–साथ कविता भी अपना रूप बदलती है। मिश्र जी की कविताएँ कहीं गाँधी की अहिंसा और प्रेमदर्शन से टकराती हैं, तो कहीं प्रगतिवाद के शंखनाद को आत्मसात करती हैं और राजनीतिक रंग में रंगकर व्यंग्य और विद्रोह के साथ लड़ती हैं। मिश्र जी ने व्यंग्य रचना में महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक भूमिका निभायी है। नागार्जुन के

काव्य में व्यापकता के साथ–साथ गहनता भी है। भवानी प्रसाद मिश्र के व्यंग्य में व्यापकता का अभाव है। इनके व्यंग्य शिष्टता का अतिक्रमण नहीं करते। हरिशंकर परसाई के शब्दों में– ''व्यंग्य जीवन की विसंगति, अनुशासनहीनता, असामंजस्य, पाखण्ड, छद्म, अन्याय आदि का अन्वेषण करता है और इस अन्वेषण के लिए उसे गहरे जाना पड़ता है।[15] इस दृष्टि से मिश्र जी के व्यंग्य राजनीतिक, अनुपातहीनता, पाखण्ड और छद्म को ढूँढ़ने में कितने सफल हुए हैं, इसका फैसला इतिहास करेगा।

संदर्भ सूचीः–

1. शिव कुमार मिश्र : मार्क्सवाद साहित्य चिन्तन–इतिहास तथा सिद्धांत, पृ. 210
2. पुष्पा भार्गव : नई कविता में आक्रोश, पृ. 21
3. विजय कुमारः साठोतरी हिन्दी कविता–परिवर्तित दिशाएँ, पृ. 83–84
4. डॉ. शिवकुमार मिश्र : मार्क्सवादी साहित्य चिन्तन–इतिहास तथा सिद्धांत, पृ. 235
5. गीतफरोश, पृ. 166
6. गाँधी पंचशती, पृ. 113
7. गीतफरोश, पृ. 33
8. गाँधी पंचशती, पृ. 337
9. बुनी हुई रस्सी, भूमिका, पृ. 12
10. त्रिकाल संध्या, पृ. 9–10
11. त्रिकाल संध्या, पृ. 20
12. त्रिकाल संध्या, पृ. 130
13. त्रिकाल संध्या, पृ. 177
14. परिवर्तन, जिए, पृ. 69
15. डॉ. अजय तिवारी : प्रगतिशील कविता के सौंदर्य, मूल्य, पृ. 229

डॉ0 पुष्पा रानी (डी.लिट.)
प्रोफेसर,
हिन्दी विभाग,
कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय,
कुरुक्षेत्र
मो. 9896206889,
E-mail-pushparani2636@gmail.com

14

शिमला जनपद की देव परम्परा

सन्तोषकुमार

सारांश –

हिमाचल प्रदेश देव भूमि के नाम से विश्व प्रसिद्ध है। हिमाचल प्रदेश के 12 ज़िलों में से एक ज़िला शिमला है। शिमला ज़िला की 80 प्रतिशत जनता ग्रामीण परिवेश में रहती है। गांव के लोग देवी–देवता के प्रति अटूट श्रद्धा और आस्था रखते हैं। शिमला जनपद के हर घर, हरकुलत था गांव में किसी न किसी देवता की अराधना होती है। गावं के आराध्य देवी–देवता लोगों के जीवन की धूरी होते हैं। उनका देवी–देवताओं के प्रति इतना विश्वास होता है कि हर ग्रामवासी अपने किसी भी नए काम की शुरूआत देवता की अनुमति तथा आज्ञा को सर्वोपरिमान कर करते है। यहां तक की खेत खलियानों में नए काम का शुभारम्भ, नए घर का निर्माण, शादी–विवाह जैसे पवित्र बन्धन, कोई भी पारिवारिक उत्सव, इत्यादि देवता की आज्ञा तथा इच्छा से पूर्ण होते हैं। गांव के देवी–देवता एक–दूसरे के प्रतिभाई चारे की भावना रखते हैं। एक देवता दूसरे देवता से मिलने आता है तथा एक दूसरे के उत्सव में आमन्त्रण पाने पर भाग लेते है। सभी ग्रामवासी देवता की प्रजा है, देवता ही राजा है, स्वामी है, देवता ही पालक है, संहार कहै, वही न्याय देताहै वही दण्ड देता है, देवता ही अपनी प्रजा को भावी विपत्तियों से आगाह करता है सुखमय जीवन की ओर जाने की राह बताता है अपितु देवता द्वारा दिया गया आदेश ग्रामीण लोगों के लिए पत्थर की लकीर मानी जाती है। शिमला जनपद की संस्कृति का आईना यदि देव संस्कृति को कहा जाए तो अतिश्योक्ति नहीं होगी।ग्रामीण लोग अपने ईष्ट देवता में इतनी आस्था रखत`है कि अपना हरसुख–दुख साझा करते है और देवता को अपनी हर परिस्थिति का भागी दार मानते हैं, यहां तक की देवता से तू–तड़ाक से बात करते हैं।मेलों एवं त्यौहारों को पूर्ण रूप से देवी–देताओं से ही जोड़ा जाता है। यदि इन से देवी–देवताओं की भूमिका को हटा दिया जाए तो अधिंकाश मेले एवं त्यौहार समाप्त हो जाएगें। यहां इन देवताओं की विभिन्न परम्पराओ`को मान्यतानूसार परिपूर्ण किया जाता है।

शिमला जनपद के ऊपरी क्षेत्रों में देवता का स्थान हर घरमें सब से ऊपर की मंजिल में होता है। यह घर का मन्दिर होता है जिसमें सुबह शाम पूजा–पाठ किया जाता है। प्रातः काल में पूरे विधिवत तरीके से पूजा की जाती है जिस में आरती, शंख ध्वनि, मंत्रोचारण इत्यादि परम्परा एं पूरे विधि विधान से निभाई जाती है। इसके अतिरिक्त घर में ईष्टदेव के अलावा कुलदेवी या 'कुलजा' की स्थापना भी होती है विवाह आदि शुभ कार्यों में 'कुलजा' की पूजा करने की परम्परा है। प्रत्येक गांव मे देवता का 'थान' जोगणी या फुंगणी के स्थान, जख या यज्ञ का स्थान होते हैं। देवता के थान के लिए केवल एक प्राकृतिक पत्थर होता है। कई स्थानों पर अनेक रहस्यमयी गुफांए, पहाड़, ढंकार, बड़े पत्थर, पेड़, जल स्त्रोत व सरोवर है जिनका अपना धार्मिक महत्व है। जिनमें देवी–देवताओं तथा भूत प्रेतों का वास माना जाता है और उनकी परम्परागत ढंग से पूजा–अर्चना की जाती हैं।

परम्परा का शाब्दिक अर्थ है बिना किसी व्यवधान अथवा रोक–टोक से निरन्तर श्रृंख्ला रूप में बने रहना या प्रचलित रहना। परम्परा प्रणाली में किसी विषय या उपविषय का ज्ञान बिना किसी परिर्वतन के एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ीयों में संचारित होता रहता है। परम्परा एवं साहित्य का खज़ाना बहुत बड़ा है। देवीदेवताओं से प्राचीन समय से जुड़े रीति–रिवाज़ एवं आस्था पूर्ण तथ्य वर्तमान का रूप धारण कर चुके हैं। शिमला जनपद के भिन्न–भिन्न गांवो में अलग–अलग रूप में देवी देवता विद्यमान है तथा प्रत्येक देवी–देवता के साथ विभिन्न प्रकार की परम्परांए प्रचलित है ये परम्परांए लोगों के लिए आवश्यक एवं अनिवार्य रूप से माननी पड़ती है जिसका कारण जनमानस द्वारा देवी–देवताओं के प्रति अटूट श्रद्धा एवं आस्था है।

ग्रामीण देवताओं की पूजा पद्धति उच्चवर्गीय परम्परा निष्ट पूजा पद्धति से भिन्न मानी जाती हैं। अधिकतर देवी–देवता पोष–माघ के महीने में पूजे नहीं जाते है लोक विश्वासानुसार पोष–माघ के समय में देवता स्वर्ग के देव सम्मेलन मे भाग लेने जाते हैं। शिमला ज़िले में सेंकड़ो देवी–देवताओं का वास है जिनमें कालीयां (काली माता) प्रमुख है तथा लोगो का विश्वास एवं आस्था इन पर भरपूर है। यहां के समाज में देवतन्त्र का विशेष महत्व है। यह ज़िला देव धरती होने के साथ–साथ असुरी शक्तियों से भी अछूता नहीं रहा है असुरी शक्तियां आदिकाल से ही लोगो को भयभीत करती रही है जिनसे मुक्ति देवताओं द्वारा ही दिलाई जाती रही है। पहाड़ी आंचल के लोग भूत प्रेतोडांकिनी–शांकिनियो में बड़ा विश्वास रखते है बहुत से व्यक्तियों द्वारा भूतों के साथ मल्ल युद्ध एवं द्वंद युद्ध

की घटनाएं हुई है। यहां पर भूत–प्रेतों को भगाने या इनसे मुक्ति दिलाने के लिए कई प्रकार के अनुष्ठान किए जातेहैं।देवता उन्हें कभी समझा बुझा के तथा कभी डरा धमका के बाहर भेज देते है कई बार देवता भूत को भगाने के लिए कई मील दूर तक जाता है।कहीं–कहीं भूतों को मन्दिरों मे कैद भी किया जाता है। कई बार देवताओं को भी भूत लग जाता है अर्थात् देवता की शक्तियां क्षीण हो जाती है ऐसे अवसर पर दूसरे देवता की सहायता ली जाती है।दूसरे देवता का माली 'भेखल' की कांटेदार झाड़ियों से झाड़कर देवरथ की जटाओं से भूत को बाहर निकालता है तथा दूर भगाता है। इसके अतिरिक्त दुष्ट आत्माओं से पीछा छुड़वाने के लिए अनुष्ठान करवाने की प्रक्रिया है जिसे 'छाड़'कहा जाता है प्रेत आत्मा को ज़मीन पर की लगाड़ कर मारने की परम्परा है। पूजते वक्त बकरा चढ़ाया जाताहै। यदि बकरे की व्यवस्था न होतो ऐसी स्थिति में गेहूं के आटे का बकरा बनाकर काटा जाता है या नारियल चढ़ाया जाता है। लोगों के घरेलु झगड़ो से लेकर ज़मीन, जायदाद सहित अन्य मामलों में कोई व्यक्ति या समाज देवता के मन्दिर मे जाकर किसी के विरूद्ध फरियाद करता है तो दूसरे पक्ष के व्यक्ति को देव दोष लगता है।देव दोष से छुटकारा पाने के लिए दोनों पक्षों में समझौता होना अति आवश्यक होता है।देवता द्वारा दोषी व्यक्ति के बारे में जानकारी प्राप्त की जाती है। दूसरे पक्ष द्वारा देव दोष से मुक्ति पाने एवं समझौता करने की इच्छा स्वरूप खाडू–बकरे का प्रबन्ध करना होता है।दोषी व्यक्ति द्वारा 'बाहरिंगा' अर्थात खाडू या बकरे के ऊपर से बाजु घुमाकर उस पर पानी छिड़क कर देव दोष से मुक्त किए जाने का संकेत दिया जाता है तत् पश्चात बकरा जिसे 'रीट' भी कहा जाता है देवता को समर्पित किया जाता है।

शिमला ज़िले में 'काली पूजन' अधिक महत्व पूर्ण माना जाता है। ज़िला में प्राकृतिक आपदाओं सूखा, अधिक वर्षा, ओला वृष्टि से लोगों की रक्षा के लिए काली पूजन किया जाता है।भविष्य में घटित होने वाली घटनाओं के बारे में यहां के स्थानीय देवी–देवता भविष्य वाणी करते है उसे स्थानीय भाषा में 'बखाण' कहा जाता है। शिमला जनपद के विभिन्न क्षेत्रों में देवी–देवताओं से सम्बन्धित परम्पराओं को लोग अटूट श्रद्धा और आस्था से निभाते हैं इन परम्पराओं का वर्णन निम्नलिखित है:

शिमला जनपद में देवी–देवता की पूजा सम्बन्धि परम्परा

देवी देवताओं की पूजा की विधि शिमला जनपद में एक ही जैसी होती है इसमें नाम मात्र का परिर्वतन हो सकता है। पूजा करने के लिए पुजारी नियुक्त किया गया होता है। प्रातः पूजा में सर्वप्रथम पुजारी स्नान करता है। स्नान करके पुजारी जी धोती धारण करते है क्योंकि धोती वस्त्र भारतीय संस्कृति के अनुसार पवित्र वस्त्र माना जाता है जिससे स्थानीय भाषा में 'पौड्तण' कहा जाता है।इसके बाद पुजारी जी मंदिर में देवता के सभी मुहरों का स्नान करवाते है तथा चंदन व अक्षत को घिस कर तिलक तैयार करते हैं।देवता का स्नान अथवा मुख धोना की क्रिया के पश्चात मुहरों एवं छत्रों को अक्षत तिलक लगाए जातेहैं। तत्पश्चात फूलों क्षरारथों का शृंगार किया जाता है तब तक बाजा बजाने वाले जिन्हें 'बजन्तरी' की संज्ञा दी जाती है अपनी उपस्थिति दर्ज करवा देते है।समस्त तैयारी के पश्चात पूजारी जी धूड्च में धूप जलाकर उसे दाएं तथा घंटी को बांए हाथ से पकड़ते हैं तथा पूजा के बोल का उच्चारण करते हुए दोनों हाथों को देवता के सामने हिलाया जाता है। इसी बीच कोई व्यक्ति शंख नाद करता है तथा बजन्तरी बाजाब जाते हैं। घण्टी–धूड्चको बंद करके पूजारी जी स्वयं शंख बजाकर पूजा समाप्त करते है।नाग देवताओं को पूरे ऊपरी क्षेत्र में देवत्व प्राप्त है। नागलीला से सम्बन्धित बोल इनकी पूजा में बोले जाते हैं।कभी–कभीनागों की पूजा के लिए बकरे के मेमने, वृक्ष का प्रथमफल, छोटी–छोटी रोटीयां आदि चढ़ाई जाती हैं। 'पूजा से स्थानीय जड़ी–बूटियां जैसे जट्टा मांसी, भूतकेशी, लक्ष्मणा, नैरे धूप, गुग्गल धूप को इक्कठे मिलाकर जलाया जाता है।''

''जल देवता की पूजा पद्धति में 'शुचिता' अर्थात शुद्धता का विशेष ध्यान रखा जाताहै। देवता हर वर्ष दो पुजारियों का चयन करता है ये अलग–अलग खानदान से सम्बन्धित होते हैं ताकि किसी एक पूजारी के घर सूतक–पातक होने पर दूसरी खानादान का पुजारी पूजा कर सके। जल देवता की पूजा निरन्तर और नित्य होती है। इसलिए अलग–अलग कुल के पुजारी चुने जाते हैं।ताकि पुजा में कोई व्यवधान न पड़े।पूजारी प्रातः 10 बजे से पहले देवता की पूजा करने भूखे पेट मंदिर जाता है।मंदिर से बर्तन लेकर पानी के स्त्रोत की ओर चल पड़ता है और स्नान करके बर्तन में पानी भरकर नंगे पांव मंदिर आता है। मार्ग में किसी से बात नहीं करता है।अन्य व्यक्ति की छाया से बचता हुआ मार्ग में थोड़ा–थोड़ जल का छिड़काव करता जाता है। पूजा के आरम्भ में जल के छीटे रथ में लगे मोहरों में छिड़ककर लाल रंग के तौलिया नुमा वस्त्र से साफ करता है फिरजड़–गूगल धूप को 'धूड्च' में जलाता है। ''मोहरों मेंटी का लगाने के बाद देवरथ में एक विशेष पौधा 'कुबश' लगाया जाता है। तत्पश्चात पूजा की जाती है।'' इस समय मंदिर के बाहर साजवाद पूजा की धुनब जाते है। जल देवता के पुजारी को घर में

अपने लिए भेजन भी स्वयं तैयार करना पड़ता है।बहुत से देवी–देवताओं के मंदिर में सांय पूजा नहीं की जाती केवल घी का दीया जलाया जाता है जिसे 'दीउण'जलाना कहा जाता है।''

मंदिर निर्माण सम्बन्धि परमपरा

''किसी भी गांव में मंदिर निर्माण किया जाता है तो उसका स्थान देवता द्वारा ही चयनित किया जाता है। कभी–कभी देवी–देवताओं के द्वारा ही लोगों को मंदिर बनाने के लिए प्रेरित किया जाता है। जगह का चयन होने के पश्चात देवता ही दिन और समय निर्धारित करता है।देव मन्दिरों का निर्माण प्रायः 'उतरायण' में किया जाता है। ''माघ से आषाढ़ में सूर्य का दक्षिण से उतर की ओर आना उतरायण तथा श्रावण से पोषतक सूर्य का उतर से दक्षिण की ओरजाना 'दक्षिणायन' कहलाता है।''निर्धारित दिन देवरथ चयनित स्थान पर जाता है।उसका गूर खेलता है तथा गूर ही तीन पांच या सात पत्थरों का चयन करता है।देवता का पुरोहित वेद मंत्रों के उच्चारण के साथ उन पत्थरों की गूर द्वारा पूजा करवाता है।पूजा में सुपारी, फूल, चावल, धूप, देसी घी का हलवा तथा चिलडू का प्रयोग किया जाता है। पूजा करने के पश्चात हलवा तथा चिलडू के कुछ टुकड़े पत्थरों पर रखे जाते है और बाकी चारों दिशाओं में फैंके जाते हैं। इस क्रिया को 'पात्थरू लाणा' कहते है। उस समय एक बकरे का मेमना भी काटा जाता है।उसका खून चारों दिशाओं में फैंका जाता है। मिस्त्री के माथे पर तिलक लगाया जाता है। उसके हाथों तथा औजारों में भी टीका लगाकर लाल डोरी बांधी जाती है। गूरजो देवता का प्रतिनिधि होता है उसके हाथ में भी डोरी बांधी जाती है।लोगों में देवता के दुप्पटे (मौसरू) की छोटी–2 लीरें (डोरियां) बांधी जाती है।जिसे वे अपनी टोपी में लगाते हैं।मंदिर निर्माण का काम आरम्भ होने पर लगातार काम करना पड़ता है। इस समय मिस्त्री एवं अन्य कारीगर रोज सुबह स्नान करते हैं और दिन में केवल एक बार भोजन करते हैं। इस दौरान वो घर नहीं जा सकते, उन्हें मंदिर में ही सोना पड़ता है।इन दिनों रोज सुबह शाम बजन्तरी अथवा बाजगी वाद्ययंत्रों से बेड़ व आरती की धुनेंब जाते हैं।इन दिनों पूरो इलाके में कोई भी शुभकार्य, विवाह, मुंडन आदि संस्कार नहीं मनाए जाते हैं।कहीं–कहीं तो खेतों में हल चलाने पर भी मना ही होती है। पूरे गांव में साफ–सफाई एवं शुद्धता का पूरा ख्याल रखा जाताहै।मंदिर निर्माण के लिए देवदार का पेड़ काटते समय भी एक 'भेडू' काटा जाताहै।जब मंदिर की प्रथम मंजिल तैयार होती है तो 'छेलू' काटा जाता है। छत लगाते समय भी एक भेडू काटा जाता है। छत लगाने के बाद व दरवाजा ढकने के बाद देवता रथ सजाया जाता है। देवता को पवित्र स्नान करवाने तीर्थ स्थान पर ले जाया जाता है। वहां उसके घण्टी–धूड़च व अन्य निशान (अस्त्र–शस्त्र) धोए जाते हैं। मोहारों को भी जल से धोया जाता है। इस समय भी बकरा काटा जाता है। तीर्थ स्नान करने के पश्चात देवता अपने गांव आता है वहां पर हवन यज्ञ करके उसकी प्रतिष्ठा की जातीहै। भण्डारा किया जाता है तथा देवता के रहने का स्थान निश्चित किया जाता है। कई मंदिरों में प्रतिष्ठा वाले दिन मंदिर की छत पर कलश या छत्र लगाया जाता है। इस समय छत परही बकरा काटा जाता है और इसका खूनचारों दिशाओं फैंका जाता है।मंदिरों की बनावट के सन्दर्भ में जब कारीगर को कुछ समझ में नहीं आता तो देवता स्वयं कड़ी के जाले से मंदिर की आकृति बनाकर कारीगर को दिशा निर्देश देता है।''

देवता न्यायधीश के रूप में

ग्रामीण परिवेश में अधिकतर देवता ही न्यायधीश के रूप में कार्य करता है। लोग अपने झगड़ों को निपटाने के लिए अदालत या कचहरी भी नहीं जाते हैं न ही गांव के लोगों के वश में बार–बार अदालत के चक्कर काटना होता है। आज के आधुनिक समय में भी देवता द्वारा सुनाया गया निर्णय अन्तिम व सर्वमान्य माना जाता है।निर्णायक के रूप में यह परम्परा प्रचलित है कि देवता द्वारा सुनाया गया फैसला दोनों पक्षों को बिना किसी विवाद के स्वीकार करना पड़ता है।

बीमारी का उपचार

बीमारी जब डाक्टर के वश से बाहर हो जाती है। डाक्टर मरीज़ को कुछ समय का मेहमान घोषित कर देते है तो ऐसे मरीज़ का देवता द्वारा सफल इलाज़ किया जाता है। क्योंकि लोगों द्वारा स्वयं यह अनुभव किया जाता है कि जो लोगों का देवी–देवताओं के प्रति अटूट विश्वास का प्रमुख कारण है, आज के समय में यह धारणा भी परम्परा का रूपले चुकी है। अधिकतर लोग अस्पताल ना जाकर देवी–देवताओं की शरण में बड़ी से बड़ी बीमारी का इलाज़ करवाने पहुंच जाते है और देवता के द्वारा बताए गए उपाय के कारण लोगों को छुटकारा भी मिल जाता है।

जब भूत–प्रेत किसी मनुष्य को लग जाते हैं तो विभिन्न प्रकार की बीमारियां घर कर जातीहै। जैसे पागल पन का दौरा पड़ना, रोते रहना, रात को दबाव पड़ना, हाथ–पांव की जकड़न, शरीर का कांपना इत्यादि।डाक्टर के पास जाकर ऐसे मरीज़ का उपचार नहीं हो पाता है। यहां तक की बड़े–बड़े डाक्टर उस बीमारी का इलाज़ तो दूर की बात बीमारी का पता लगाने में ही असमर्थ होते

हैं। ऐसी अवस्था में लोग निराश होकर देवता की शरण मे जाते है तो देवता उन्हें ठीक कर देते हैं। ऐसे कारणों से पीड़ित व्यक्ति व्यक्ति के उपाचर के लिए पशुबलि के अतिरिक्त मिर्चों की धूनि, चिलडू तथा रोट आदि चढ़ाने की परम्परा है।इसके अलावा विभूति लगाकर भी मरीज़ की बीमारी ठीक की जाती है।

संस्कारों से सम्बन्धित देव परम्परा

शिमला जनपद में संस्कारों को अत्यधिक महत्त्वता दी जाती है।देवी–देवताओं के प्रति अतुलनीय श्रद्धा एवं विश्वास के कारण हर संस्कार को देवी–देवता से सम्बन्धित माना जाता है।देवी–देवता जन्म से लेकर मृत्यु तक लोगो के अंग संग रहते है हर अवसर पर इनकी भागेदारी सुनिश्चित समझी जाती है तथा विभिन्न संस्कारो में इनकी भूमिका महत्वपूर्ण रहती है सन्तान जन्म को देवता का आशिर्वाद माना जाता है।ऊपरी क्षेत्रो में गर्भवती चार मास बाद देवता को 'भार' अर्थात भेंट देती है।जिसने देवता से पुत्र रत्न की मन्नत मांगी हो वह 15 दिन बाद देवता को भेंट अर्पित करता है।बच्चे के जन्म के 11वें या 13वें दिन पुरोहित का बुलाकर सर्वप्रथम कुल देवता की प्रतिष्ठापना की जाती हैं। तत्पश्चात मंत्रोचारण के साथ जच्चा बच्चा दोनों से कुलदेवता की पूजा करवाई जाती है। ''शिमला के जुब्बल क्षेत्र के देवता 'क्याल' को 'पूत' देने वाला देवता माना जाता है।जिनके सन्तान नहीं हो तीवे इस देवता से मानता करते है। कई भावुक लोग कांटो की सेज बिछाकर उस पर भूखे प्यासे सो जाते है।उनकी पीड़ा को समझते हुए देवता माली में प्रकट होकर उन्हें पुत्र प्राप्ति का वर देता है।''

''पुत्र प्राप्ति के तीसरे या पांचवे साल तक पुत्र या पुत्री के बाल नहीं काटे जाते जहां से संतान प्राप्ति का वर मांगा गया हो उसी मंदिर के प्रांगण में चूडा करण अथवा मूंडन संस्कार किया जाता है।देवता द्वारा दिन निश्चित किया जाता है निश्चित दिन मे देवता के सामने बकरा काट कर मामा द्वारा यह पम्परा निभाई जाती है।विवाह के मोके पर देवी–देवताओं की महत्वपूर्ण भूमिका रहती है। लड़के–लड़की के सम्बन्ध बनाने से लेकर विवाह की तिथि निर्धारित करने तक देवी–देवताओं को पूछना अनिवार्य माना जाता है। विवाह की परम्परा कुल देवता के सम्मुख ही सम्पूर्ण होती है।महासु क्षेत्र में लड़के–लड़की के मां–बाप रिश्ते की बात चलाने से पहले कुल देवता का आदेश लेते है यदि कुल देवता मना करता है तो रिश्ते की बात आगे नहीं बढ़ाई जाती।''

इस शोध पत्र को पूर्ण करने के लिए विभिन्न पुस्तकालयों से अध्ययन सामग्री एकत्र कर इसे पूरा किया गया साथ ही विभिन्न क्षेत्रों में जाकर वहां के जानकार लोगों से साक्षात्कार द्वारा जानकरी प्राप्त कर इस शोध पत्र को पूर्ण किया गया।जिसके लिए विभिन्न प्रकार के उपकरणों का प्रयोग भी किया गया।

अंत में हम यह कह सकते हैं कि ज़िला शिमला दैविक आस्थाओं से परिपूर्ण है और यहां की जनता देवी–देवताओं को सर्वो परिमान कर उनसे सम्बन्धित सभी परम्पराओं का बिना किसी हिचकिचाहट से पालन करते हैं तथा देवी–देवताओं को ही सर्वोच्च मानते हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- बलोखरा जगमोहन, अलौकिक हिमाचल प्रदेश, 2015, च0 जी0 पब्लिकेशन दिल्ली–110062।
- शर्मा दीपक, निरमण्ड–इतिहास, लोक संस्कृति और देव परम्परा, प्रथम 2014, हिमाचल प्रदेश कला संस्कृति भाषा अकादमी शिमला–171001।
- ठाकुर डॉ0 सूरत, हिमाचल की देव संस्कृति–मेले एवं त्यौहार, 2004, एच0 जी0 पब्लिकेशन, नई दिल्ली–110062।

साक्षात्कार सूची

श्री उदय प्रकाश भारद्वाज
पुजारी डंसा मंदिर,
गांव व डाकघर
डंसातहसील रामपुर ज़िला
शिमला हि0 प्र0,
दिनाकः 20.04.2019

मजटाचिराग ज्योति
लोक गाय के
हिमाचल प्रदेश, गांव व
डाकघर करा सात हसी लरोहडू
ज़िला शिमला हि0 प्र0,
दिनाकः 18.08.2019

राम श्री धीरू
गांव गसोह
डाकघर झाकड़ी
तहसील रामपुर
बुशहर ज़िला
शिमला हि0 प्र0,
दिनांकः 26.06.2019

सन्तोष कुमार
विद्या वाचस्पति शोधार्थी संगीत विभाग
हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय समरहिल, शिमला–5
ईमेलः–santosh10231988@gmail.com
मो0–98166–01603

15

भारतीय संस्कृति और नज़ीर अकबर आबादी की शायरी

डॉ0 हुमा मसूद

सारांश –

नज़ीर अकबर आबादी की शायरी एक समन्दर है, जिसकी तह में हर प्रकार के मोती बिखरे हुए हैं। उनकी शख़्सियत और उनकी शायरी में कुछ ऐसी खूबियां हैं जो अदब को एक नई सिम्त का पता देती हैं और एक नया रास्ता दिखाने के लिए काफी है। एक ख़ूबी जिसने शायरी में नुमाया रोल अदा किया वो हिन्दुस्तान की गंगा–जमनी तहज़ीब, यहाँ की मिली जुली ज़बान और उससे ज्यादा उनका हिन्दुस्तानी लब–व–लहजा। अदब का कोई पारखी जो उनकी शायरी को देखना चाहता है उनकी इस ख़ूबी की तरफ से आंखे बन्द नहीं कर सकता। इनकी शायरी की फिज़ा हिन्दुस्तानी है, बोलचाल की ज़बान हिन्दुस्तानी है, यहाँ की तहज़ीब में जिस तरह का हुस्न पाया जाता है उसी तरह अन्दाज़ से भी हिन्दुस्तानी नज़ाकत ज़ाहिर होती है।

अल्फाज़ का इस्तेमाल हो या तलफ्फुज़, मुहावरों का इस्तेमाल हो या बयान करने का तरीका, हिन्दुस्तानी रंग अपनी ख़ूबी के साथ हर जगह साफ तौर पर हमारे सामने आता है। इनका जन्म तो दिल्ली में हुआ मगर उन्होंने अपनी पूरी ज़िन्दगी आगरा में गुज़ारी।

नज़ीर अकबर आबादी खुद कहते हैं–

आशिक कहो, असीर कहो, आगरे का है
मुल्ला कहो, दबीर कहो, आगरे का है
मुफलिस कहो, फकीर कहो, आगरे का है
शायर कहो, नज़ीर कहो, आगरे का है।

यह वो आगरा था जिसके बारे में एहतेशाम हुसैन कहते हैं–

''वही आगरा जो मुग़ल शहंशाह अकबर की राजधानी रह चुका था और जिसके चारों तरफ कृष्ण भक्ती की वो विष्णु तहरीक फैली हुई थी जिसने सूरदास और मीराबाई के गीतों और भजनों को जन्म दिया था, जहाँ अज़ीम क़िला और ताजमहल खड़े किये गये थे, यहाँ की हवा में राधा और कृष्ण की मुहब्बत और भक्ति के गीत गूँज रहे थे। जहाँ से करीब मथुरा और वृन्दावन के मेलों और त्यौहारों में शरीक होकर अवाम के दिल की धड़कन तेज़ हो जाती थी।''[1]

नज़ीर की शायरी में यह सभी रंग बिखरे हुए हैं। शायरी ज़िन्दगी का अक्स होती है इसलिए ज़िन्दगी की असल बुनियाद यानी आगरा से अलग हटकर नज़ीर अकबर आबादी को समझना नामुमकिन है। डा0 अली अहमद फात्मी ने कहा है–

''जो बातें कहीं वो सिर्फ आगरे के लोगों के लिए न थीं, बल्कि इसमें पूरा हिन्दुस्तान धड़कता नज़र आता है।''2

नज़ीर अकबर आबादी ने जिस वक़्त लिखना शुरू किया तब मीर, गालिब, सौदा, मीर हसन आदि के असरात शायरी में नुमायां थे। ऐसा नहीं था कि नज़ीर उर्दू शायरी पर पड़ने वाले ईरानी ख़्यालात और फारसी ज़बान के असरात के साथ–साथ मुक़ामी रंग से पूरी तरह वाक़िफ न थे। मगर फिर भी उन्हेंने अपना अलग रंग और अलग लहजा अपनाया। उर्दू में एक नई राह निकाली जिसने नज़ीर को समझने के लिये दरवाज़े खोल दिये। उनकी शायरी में सच्चाई, वतन परस्ती, इन्सानी प्रेम और हमदर्दी, आम ज़िन्दगी से जो वाक़िफ़ियत और सादगी मिलती है वो उससे पहले किसी दूसरे शायर के यहाँ नज़र नहीं आती।

अवाम के मसाइल हों या मौसम का मिज़ाज, तीज त्यौहार या मेला–ठेला, हर रंग अपनी

हिन्दुस्तानी रूह क साथ पूरे तौर पर नज़र आता है।

सैय्यद आल–ए–ज़फर लिखते हैं–

''नज़ीर उर्दू के पहले शायर हैं जिनकी शायरी हिन्दुस्तानी फिज़ा में सांस लेती है।''[3]

कृष्ण जी का जन्म है, जन्माष्टमी पूरे ब्रज में धूम–धाम से मनाई जा रही है, बच्चे के जन्म से माता पिता के घर में उजाला हो जाता है। इस रोशनी में उनकी नज़्म 'कन्हैया जी' का ये बन्द देखिये–

''है रीत जन्म की यूं होती जिस घर में बाला होता है

उस मण्डल में मन भीतर सुख चैन दोबाला होता है।
सब बात बैथा की भूले है जब भोला–भाला होता है
आनन्द मुन्ढीले बाजत है नित भवन उजाला होता है।
यूं नेक नक्षत्र लेते हैं इस दुनिया में संसार जन्म
पर उनके और ही लच्छन हैं जब लेते है अवतार
जन्म।
शुभ साअत से यूं दुनिया में अवतार गर्भ में आते हैं
जो नार व मुनि है ध्यान भली सब उनका भेद बताते
हैं।
वे नेक महूरत से जिस दम उस सृष्ट में जन्में जाते हैं
जो लीला रचनी होती है वो रूप ये जा दिखलाते हैं।
यूं देखने में और कहने में वो रूप तो बाले होते हैं
पर बाले ही पन में उनके उपकार निराले होते हैं।''[4]

जन्माष्टमी की आधी रात के समय कृष्ण जी का जन्म बेड़ियों का टूटना, यशोदा के पास पहुंचना, गाना बजाना, रीत–रिवाज सब इस प्रकार से प्रस्तुत किये हैं कि हर एक तस्वीर नज़रों के सामने घूम जाती है। यह वो मिली–जुली संस्कृति है जिसमें हिन्दु और मुस्लमान बराबर शरीक रहे। वहीं हिन्दी और उर्दू अदब की तारीख खड़ी बोली से जुड़ी नज़र आती है। नज़ीर अकबर आबादी ने उर्दू और हिन्दी भाषा के शब्दों को प्रयोग करके साबित कर दिखाया कि ये रिश्ता अटूट है।

इस तरह पार्वती की शादी का बयान, शादी की तैयारियां, रस्में, लिबास, बाराती और शिव शंकर का दूल्हा बनना सब कुछ नज़्म में इस तरह समाया कि वो सिर्फ नज़ीर का ही काम हो सकता है। हिन्दुस्तान की हर क़ौम हर तबक़े की हालत, रस्म–रिवाज का उन्हें पूरा ज्ञान था। शिव शंकर दूल्हा बने हैं उनकी सज–धज देखिये–

''उस वक़्त खुशी के मसनद पर शिव बैठे बनकर यूं
दूल्हा
मुख पान की लाली, कर मेहन्दी और बीच लगाकर
कजरा,
हर तार चमकता चीरे का और तार सुनहरी का बागा
उस तार ज़री के चीरे पर ज्यों मेहर चमकता मुकुट
धरा
हर तार भुरस्सा कुन्दन थे और मुख पर सोने का
सहरा
वो सेहरा मुख पर यूं चमके जूं सूरज होवे किरन भरा
वो मोती माल गले झलकें और उनमें लालों की माला
वो बांक जड़ाऊ आजू–पर और कंगना पोहंचे चमक
रहा
जब बैठे शिव यू दूल्हा बन सब परियों का वां नाच
हुआ
ये ठाठ बना कर दिखलाया जब शिव ने माया अपनी
का''5

उनकी शायरी में ख़ालिस हिन्दुस्तानी समाज का ज़िक्र है, वो सिर्फ मुसलमानों के ही नहीं बल्कि हिन्दु समाज से न सिर्फ परिचित थे हर तबके की हालत का उन्हें सही अन्दाज़ा था। यहाँ के शब्बेरात, ईद, होली–दिवाली, मेले–ठेले हों या हिन्दु–मुस्लिम तीज–त्यौहार अमीरों के ठाठ–बाठ हों या ग़रीबों की मजबूरियाँ, रंग रलियां हो या पेशावरों के मसाइल–यानि समाज के जितने तबक़े हैं सबका कुछ न कुछ ज़िक्र उनकी नज़्मों में है। सैय्यद आल–ए–ज़फर के अनुसार–

''जिसे देखकर आम क़ारी को ये
गुमान होता है जैसे किसी बहुत बड़े
धर्मात्मा के क़लब की धड़कन और
रूह की पुकार अल्फाज़ के क़ालिब में
ढल गई हो।''[6]

नज़ीर की नज़्म 'बलदेव जी का मेला' की चहल पहल का यह मन्जर देखिये–

''इतने लोगों के ठठ लगे हैं आ–जो कि तिल धरने की नहीं है
जा
लेके मन्दिर से दो–दो कोस लगा–बाग़ बन फिर रहे
है सब हर जा हैं
हज़ारों बिसाती और सौदा–लाखों बिकते हैं गहने और
माला
भीड़ अम्बोह और धर्म धक्का–जिस तरफ देखिये आ
हा हा हा
रंग है रूप है झमेला है–ज़ोर बल्देवजी का मेला है।[7]

पूरी नज़्म हिन्दुस्तानी मज़हबी मेले को अपने पूरे रंग व ढंग के साथ पेश करती है। मेले में हर तरह की दुकानें हैं, ताजिर, कुम्हार, सुनार भी हैं तो चोर उच्क्के और माल को उड़ाकर भीड़ में खो जाने वाले लोग भी हैं। खरीदारी भी हो रही है और लोग लुट भी रहे हैं। श्रद्धालु बलदेवजी के दर्शन भी कर रहे हैं। कोई दण्डवतें कर रहा है। कोई माला जप रहा है, कोई जय–जयकार कर रहा है। झाँझ, मिरदंग दफ भी बज रहे हैं और रास मण्डल भजन भी सुना रहे है। नक़ले, क़िस्से, कहानियां, खण्ड, दोहे, कबत, कथा, नाच रंग घुंघरू सुर ताल गोया–''सौ मज़े सौ तमाशे होते हैं''[8]

हिन्दुस्तानी ज़िन्दगी उनकी नज़्मों के द्वारा जी उठी है।

इसी तरह नज़ीर ने होली, दिवाली, राखी, दशहरा पर भी नज़्में लिखी। होली की तस्वीर देखिये–

''हर आन खुशी से आपस में सब हंस–हंस रंग छिड़कते हैं
रूख़सार गुलालों से गुलगूं कपड़ों से रंग टपकते हैं।
कुछ आग और रंग झमकते हैं कुछ मय के जाम छलकते हैं
कुछ कूदें हैं कुछ उछले हैं–कुछ हंसते हैं कुछ बकते हैं।
ये तौर ये नक़्शा इशरत का हर आन बनाया होली ने''9

या 'होली की बहार' में ब्रज की होली की रंग रलियां देखिये–

''जब फागुन रंग झमकते हो तब देख बहारें होली की
और दफ के शोर खड़कते हों तब देख बहारें होली की
परियों के रंग दहकते हों तब देख बहारें होली की
खुम शीशे जाम छलकते हों तब देख बहारें होली की
महबूब नशे में चहकते हों तब देख बहारें होली की''10

उर्दू शायरी के पूरे सरमाये में जन्म से लेकर मौत तक का बयान जिस तरह नज़ीर ने भरपूर अन्दाज़ में किया कहीं और नहीं मिलता। सब कुछ अपना–अपना सा लगने लगता है। उनकी नज़्में देखकर हैरत होती है कि हिन्दुस्तानी ज़िन्दगी–यहां के मौसम, यहां के त्यौहार, हिन्दुस्तानी लोग, उनकी समस्यायें यानी हर चीज हिन्दुस्तानी की ज़बान में ढ़ल कर उनके मुख से निकल रही है। वो सब कुछ जानते हैं। इसके हर पहलू से वाक़िफ हैं। उनकी शायरी में जो सच्चाई और सादगी है वो उनसे पहले कम ही शायरों के यहां देखने को मिलती है। एक सच्चा इन्सानी दोस्त होने के नाते वो उसके दुख–सुख का न सिर्फ अन्दाज़ा लगा लेते हैं बल्कि उन्हीं की ज़बान में बयान भी कर देते हैं। एहतेशाम हुसैन के अनुसार–

''ऐसा मालूम होता है कि हम क़दम
जमाऐं ज़मीन पर खड़े हैं, हमारे चारों
तरफ इन्सान बे खटके चल–फिर रहे
हैं अपने देश के जाड़े, गर्मी, बरसात
आते है और हम इन जाने– बूझे
मौसमों का लुत्फ उठाने लगते हैं,
अलग–अलग गिरोहों और ज़ातो के
लोग विभिन्न मज़हबों और तबक़ो से
ताअल्लुक़ रखने वाले, जानवर
चिड़ियां सब मौजूद हैं और सारी
फिज़ा वो है जिसमें हम रहते हैं।''[11]

बरसात के मौसम का मन्ज़र देखिये–

''कोई पुकारता है लो ये मकान टपका
गिरती है छत की मिटटी और सायबान टपका
छलनी हुई अटारी कोठा निदान टपका
बाक़ी था एक उसारा सो वो भी आन टपका
क्या–क्या मची हैं यारों बरसात की बहारें
छत गिरने का किसी जा गुल शोर हो रहा है
दीवार का भी धड़का कुछ होश खो रहा है
डर डर हवेली वाला हर आन रो रहा है
मुफलिस सो झोपड़े में दिलशाद हो रहा है
क्या–क्या मची हैं यारों बरसात की बहारें।

नज़ीर की नज़्मों को जब हम पढ़ते हैं तो उनकी ज़बान पर आगरे की बोलचाल का असर साफ नज़र आता है। इसी के साथ खड़ी हो या ब्रज, अवधी हो या पंजाबी, अरबी हो या फारसी एक ऐसे मिले जुले रूप में न सिर्फ़ क़ुबूल किया बल्कि जिस तबक़े से उन्हें प्रेम था, जिस समाज में वो रहते थे, उन्हीं के से अन्दाज़ में उन्हीं की ज़बान की तह में डूब कर जब लिखा जो 'भारतीय साहित्य' की मिसाल क़ायम कर दी।

नज़ीर की नज़्में–कूड़ी नामा, रोटी नामा, आदमी नामा, बंजारा नामा, फना नामा, जोगी नामा, फक़ीरों की सदा, कलजुग, मुफलिसी आदि ऐसी नज़्में हैं जब हम उन को पढ़ते हैं तो उनकी ज़बान पर ख़ास तौर से हमारा ध्यान चला जाता है और ऐसा लगता है कि हर नज़्म और उसमें प्रयोग होने वाली ज़बान न सिर्फ नज़ीर की शख़्सियत से पर्दा उठा रही है बल्कि हिन्दुस्तानी अवाम, उनकी समस्याओं को उन्हीं की ज़बान से कहलवा रही है। हैरत होती है कि सीधी–साधी नज़्मों में 'भारतीय सभ्यता' कैसे समा गई। उन्होंने जितनी भी नज़्में लिखी हैं इसलिए लिखी हैं ताकि इंसानी ज़िन्दगी की सारी चहल–पहल महसूस की जा सके। डॉ0 सैय्यद तिलअत हुसैन रिज़वी के अनुसार–

''वो फितरत निगारी करते वक़्त,
मुसव्वरी करते वक़्त, तंज़ करते वक़्त,
ग़म और खुशी के वक़्त अपने सामने
ज़िन्दगी का एक आदर्श रखते हैं और
ये है हिन्दुस्तानी अवाम की सारी की
सारी ज़िन्दगी।'' [13]

''बंजारा नामा'' के ये बन्द देखिये–

''ये धूम धड़क्का साथ लिए क्यों फिरता है जंगल–जंगल
एक तिनका साथ न जावेगा मौकूफ हुआ जब अन और जल
घर बार अटारी चौपारी क्या खासा जन सुख और मलमल
क्या चिलमन पर्दे, फर्श नये क्या लाल पलंग और रंगमहल
सब ठाठ पड़ा रह जावेगा जब लाद चलेगा बंजारा।''[14]

इसी तरह ''कलजुग'' का यह बंद भी साफ ज़ाहिर कर रहा है कि उन्हें आम इन्सानी ज़िन्दगी का कितना तजुरबा था और

इसी से संबंधित शब्दों का बे पनाह ख़जाना वो रखते थे–

''जो चाहे ले चल इस घड़ी सब जिन्स याँ तैय्यार है
आराम में आराम है, आज़ार में आज़ार है।
दुनिया न जाने इसको मियां दरिया कि ये मंजधार है
औरों का बेड़ा पार कर तेरा भी बेड़ा पार है
कलजुग नही करजुग है ये यां दिन को दे और रात ले
क्या ख़ूब सौदा नक़द है इस हाथ दे उस हाथ ले।[15]

''आदमी नामा''–

''दुनिया में बादशाह है सो है वो भी आदमी
और मुफलिस और गदा है सो है वो भी आदमी
ज़रदार बेनवा है सो है वो भी आदमी
नेमत जो खा रहा है सो है वो भी आदमी
टुकड़े जो मांगता है सो है वो भी आदमी
या आदमी पे जान को वारे है आदमी
और आदमी पे तेग़ को मारे है आदमी
पगड़ी भी आदमी की उतारे है आदमी
चिल्ला के आदमी को पुकारे है आदमी
और सुन कर दौड़ता है सौ है वो भी आदमी।''[16]

''शहरे आशोब''–

''बेरोजगारी ने ये दिखाई है मुफलिसी
कोठे की छत नहीं है, ये छाई है मुफलिसी
दीवार–दर के बीच समाई है मुफलिसी
हर घर में इस तरह से फिर आई है मुफलिसी
पानी का टूट जावे है जो एक बार बन्द''
''सराफ़, बनिये, जोहरी और सेठ साहूकार
देते थे सब को नक़द सो खाते हैं अब उधार
बाज़ार में उड़े है पड़ी ख़ाक बे शुमार
बैठे हैं यू दुकानों पर अपनी दुकानदार
जैसे कि चोर बैठे हो क़ैदी क़तार बन्द''[17]

''मुफलिसी''–

''जब आदमी के हाल पे आती है मुफलिसी
किस–किस तरह से उसको सताती है मुफलिसी
प्यासा तमाम रोज़ बिठाती है मुफलिसी
भूका तमाम रात सुलाती है मुफलिसी
ये दुख वो जाने जिस पे कि आती है मुफलिसी''18

नज़ीर ने जिस तरह हिन्दुस्तान की सर ज़मीन उसकी तहज़ीब और हिन्दुस्तानी अदब की सैर कराई उन्हें शायरी के सांचे में ढाला उसे नज़र अंदाज नहीं किया जा सकता। एक हिन्दी लेखक के अनुसार–

''इस ख़ुश्क और उजाड़ संगम पर आकर नज़ीर ने अज़ान दी और शंख भी फूंका, तस्बीह भी ली और जनेऊ भी पहना, माहर्रम में रोये तो होली में भांड भी बने, रमज़ान में रोज़े रखे तो सलोनो पर राखी बांधने को मचल पड़े श्बेबरात पर महताबियां छोड़ीं तो दीवाली पर दीप सजाए, नबी, रसूल, वली, पीर, पैग़म्बर के लिए जी भर के लिखा, तो कृश्ण, महादेव, नरसी, भयरों और नानक को भी ख़िराजे–अक़ीदत पेश किया, गुल–बुलबुल पर कहा तो आम और कोयल को पहले याद रखा, परदे के साथ बसन्ती साड़ी भी याद रही और तो और गर्मी, बरसात और सर्दी पर भी लिखा, बच्चों के लिए रीछ का बच्चा, कव्वा और हिरन, गिलहेरी का बच्चा, तरबूज, कनकव्वे बाज़ी, बुलबुलों की लड़ाई, ककड़ी, तैराकी तिल के लड्डू पर लिखने बैठे तो बच्चा बन गये, हर एक बच्चा गली–कूचे में गाता फिर रहा है, जवानों और बूढ़ों को पन्द देने बैठे तो लोग वजद में आ गये, जैसे–कुरान, हदीस हो या गीता उपनिशद, पुराण सब घोल कर पी जाने वाला कोई पंहुचा हुआ बुज़ुर्ग बोल रहा हों'' [19]

निष्कर्ष

इसमें शक नहीं कि उर्दू में हिन्दुस्तानी तहज़ीब, हिन्दुस्तानी अदब और हिन्दुस्तानी ज़बानो के मेल का प्रतीक नज़ीर जैसा शायर कोई और नज़र नहीं आता। वो ज़िन्दगी में कुछ इस तरह डूब कर उभरा कि कोई दूसरा उनकी जगह न ले सका, वो भारतीय साहित्य और भारतीय सभ्यता को जानने के नये नये दरवाज़े हमारे लिये खोल गया।

सन्दर्भ

1. उर्दू अदब की तनक़ीदी तारीख– लेखक सैय्यद एहतशाम हुसैन–1983 क़ौमी कोन्सिल बराय फरोग़ उर्दू जबान–नई दिल्ली–पृ0 115

2. उर्दू में लोक अदब–प्रो0 क़मर रईस–2003 किताब दुनिया
2. उर्दू में लोक अदब–प्रो0 क़मर रईस–2003 किताब दुनिया दिल्ली पृ0 229
3. नज़ीर की शायरी में क़ौमी यकजहती के अनासिर–लेखक डॉ0 सैय्यद आले ज़फर 2008 पटौदी हाउस दरिया गंज नई दिल्ली–पृ0 138
4. रूहे नज़ीर–लेखक सैय्यद मोहम्मद रिज़वी मख़मूर अकबर आबादी 2003 दूसरा एडिशन – उत्तर प्रदेश उर्दू एकेडमी, पृ0 283
5. उर्दू में लोक अदब– पृ0 233
6. नज़ीर की शायरी में क़ौमी यकजहती के अनासिर– पृ0 141
7. रूहे नज़ीर– पृ0 367
8. रूहे नज़ीर– पृ0 370
9. रूहे नज़ीर– पृ0 316
10. रूहे नज़ीर– पृ0 280
11. उर्दू अदब की तनक़ीदी तारीख़ पृ0 118
12. रूहे नज़ीर– पृ0 211
13. नज़ीर अकबर आबादी की नज़्म निगारी–लेखक डॉ0 सैय्यद तिलअत हुसैन नक़वी–1991 एजुकेशनल पब्लिशिंग हउस दिल्ली, पृ0 112
14. रूहे नज़ीर– पृ0 219
15. रूहे नज़ीर– पृ0 264
16. रूहे नज़ीर– पृ0 223–224
17. रूहे नज़ीर– पृ0 216
18. रूहे नज़ीर– पृ0 266
19. उर्दू अदब की तनक़ीदी तारीख़ पृ0 117–118

डॉ0 हुमा मसूद
एसोसिएट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्षा,
उर्दू विभाग
इस्माईल नेशनल महिला पीजी कालिज,
मेरठ

16

महिला सशक्तिकरण में शिक्षा की भूमिका

डॉ0 ललिता कुमारी, रश्मि सिंह

सारांश –

जार्ज हरबर्ट का कथन है – ''एक अच्छी माता सौ शिक्षकों के बराबर है।''[1] वास्तव में शिक्षा का ध्येय चरित्र–निर्माण है इसलिए शिक्षितत महिलाएँ माँ के रूप में सहज ही अच्छे संस्कार बच्चों को विरासत के रूप में देती है। प्रसिद्ध साहित्कार आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी का कथन है–''जो यह कहते है कि पुराने जमाने में स्त्रियाँ नहीं पढ़ती थी या उन्हें पढ़ने की मनाही थी वे या तो इतिहास से अनभिज्ञता रखते है या जान–बूझकर धोखा देते है ।''[2] इतिहास के परिप्रेक्ष्य से यह विदित होता है कि वैदिक काल में बालिकाओं को बालको के समान शिक्षा दी जाती थी। उन्हें धर्म, साहित्य के साथ–साथ नृत्य, संगीत, गायन एवं काव्य रचना आदि की शिक्षा दी जाती थी। उपनिशद् में गार्गी द्वारा ऋषि याज्ञवल्कय को शास्त्रार्थ की चुनौती दी गई थी। इस काल में स्त्री शिक्षा उत्कर्श पर थी। बौद्ध काल में स्त्री शिक्षिकाएँ थी जो उपाध्याया कहलाती थी।

वर्तमान समय में हमारे देश में साक्षरता दर 74.04 प्रतिशत है जिसमें पुरूषों का साक्षरता दर 82.14 प्रतिशत है परन्तु दुःखद स्थिति यह है कि महिलाओं में यह दर 65.46 प्रतिशत ही है। साक्षरता दर को बढ़ाने के लिए विभिन्न प्रयास किये गये जैसे कि प्रौढ़ शिक्षा, अनौपचारिक शिक्षा, दूरस्थ शिक्षा, सर्वशिक्षा अभियान, ऑनलाइन शिक्षा तथा बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ आदि, लेकिन वस्तु स्थिति यह है कि अब भी चुनौतियों कम नही हुई है। हमारे देश में लड़कों और लड़कियों को शिक्षित करने में भेदभाव किया जाता है लड़कियों को बचपन से शिक्षित करना एक बुरा निवेश माना जाता है, क्योंकि एक दिन शादी होगी उसे पिता के घर को छोड़कर दूसरे घर चले जाना है इसलिए अभिभावकों को अपनी बेटियों की शिक्षा से ज्यादा उसकी शादियों में होनेवाले खर्च की चिंता होती है। बेटियों के मुकाबले बेटों की पढ़ाई पर ज्यादा ध्यान दिया जाता है, बेटियों की बजाय बेटों से धन उपार्जन की अपेक्षा होती है तथा कुछ अन्य कारणों से भी महिलाएँ घर से दूर जाकर शिक्षा प्राप्त नहीं कर पाती है।

प्रस्तावनाः–

''यत्र नार्यस्तु पुज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सवस्तित्र–अफलाः क्रिया।।

जिस घर या समाज में नारी को पूजा जाता है, यानी उसका सम्मान किया जाता है, वहाँ देवता निवास करते है, अर्थात् वहाँ सुख शाँति, आनंद, वैभव एवं ऐश्वर्य का वातावरण रहता है। जहाँ नारियों का सम्मान नहीं होता, वहाँ कोई धर्म–क्रिया फलित नहीं होती है, जिसका तात्पर्य है कि वहाँ हवन, यज्ञ आदि के बावजूद घर में दुःख तथा अशांति का वातावरण बना रहता है।''[3] मनु स्मृति में कन्या को गुरू के यहाँ शिक्षा ग्रहण करने का वर्णन भी मिलता है।

''वैवाहिकों विधिः स्त्रीणां संस्कारों वैदिकः स्मृतः।
पतिसेवा गुरौवासो गृहार्थोऽग्नि परिक्रिया।।''

वेदों में बताए गए विवाह संस्कारों के पूर्व स्त्रियों को गुरू के यहाँ अध्ययन व प्रातः – सायं होम करने का प्रावधान है। विवाह के बाद उसे पति–सेवा एवं गृहस्थी के प्रबंध के कर्तव्य का पालन करना चाहिए।''[4] मनु ने शिक्षा को सबसे महत्वपूर्ण माना है–''मनु ने मान्यता की दृष्टि से शिक्षा को सर्वोच्च स्थान दिया है। आदर और मान्यता के क्रम में मनु ने धन, सम्बन्धी, आयु, कर्म और विद्या इन पाँच को मान्यता दी है। इनमें भी उत्तरोत्तर अधिक मान्य है। धन, सम्बन्धी, आयु और कर्म इन सबसे ऊँचा स्थान विद्या का है। मनु ने मानव–जीवन में विद्या और तप को मोक्ष प्राप्ति का उत्तम साधन माना है। उनका कथन है कि मनुष्य तपस्या से पापों को नष्ट करता है और विद्या से मोक्ष प्राप्त करता है।''[5] इसी प्रकार मुनि वशिष्ठ ने भी विद्या को श्रष्ठ बताते है–''वशिष्ठ ने विद्या के आधार पर ही राजा और विद्वान् स्नातक की तुलना में विद्वान् स्नातक को अधिक श्रेष्ठ माना है। अतएव एक मार्ग में दोनों के मिलने पर राजा विद्वान् के लिए मार्ग छोड़ दे। वशिष्ठ ने भी धन, आयु, सम्बन्ध और कर्म की अपेक्षा विद्या को सर्वश्रेष्ठ माना है।''[6] इस वैदिक साहित्य के अध्ययन से ज्ञात होता है कि प्राचीन समय में स्त्रियों की शिक्षा संबंधी व्यवस्था उन्नत थी। बहुत सी विदुशी स्त्रियों ने वैदिक ऋचाएँ तक रची है जिसमें विश्वरा, अपाला तथा घोषाकाक्षीवती ने ऋग्वेद के सूक्तों की रचनाएँ की। इसी प्रकार से उपनिषदों में भी विदुषी स्त्रियों का उल्लेख मिलता जैसे की गार्गी, मैत्रेयी तथा लोपामुद्रा आदि का नाम प्रमुखता से लिया जाता है। इस प्रकार वैदिक काल में महिलाओं को पुरूषों के समान शिक्षा–दीक्षा का अधिकार प्राप्त था, किन्तु उत्तर वैदिक काल से महिलाओं की स्थिति में गिरावट देखने को मिलती है जो बौद्ध काल और जैन काल में और अधिक दैनिय हो जाती है। मध्यकाल में भारतीय महिलाओं की स्थिति में और अधिक गिरावट आई इस काल में पर्दाप्रथा, सती प्रथा, बाल विवाह तथ विधवा पुनर्विवाह पर रोक अपने चरमोत्कर्श पर थी जिससे महिला शिक्षा को अधिक प्रोत्साहन नहीं मिला तथा महिला शिक्षा कुछ विशेश प्रगतिशील परिवारों तक ही सीमित थी। बालिकाएँ मकतबों में शिक्षा

प्राप्त करती थी या घर पर ही उन्हे धर्मशास्त्र, गृहशास्त्र एवं विभिन्न कलाओं की शिक्षा दी जाती थी। कुछ शहजादियाँ साहित्य और संगीत में प्रवीण होने के साथ ही साथ राजनीति में भी निपुण थी। रजिया एक विदुशी और सम्मानित स्त्री थी वह युद्ध कला, राजनीति और प्रशासन में निपुण थी। सम्राट बाबर की पुत्री गुलबदन बेगम ने ''हुमायूंनामा'' की रचना की थी। सुल्तना सलीमा, नूरजहाँ, मूमताज महल और जहाँ आरा बेगम ने साहित्य और कला की पूर्ण शिक्षा ली थी तथा औरंगजेब की पुत्री जेबुन्निसा अरबी तथा फारसी भाशाओं की कवयित्री थी। 'दीवान–ई–मखाफी' उसकी अमर काव्य रचना है। इसी काल में गोंड की महारानी दुर्गावती, अहमदनगर की चांद बीबी ने मुगलों के विरूद्ध युद्ध किया। इसके साथ ही मीराबाई का नाम मध्यकाल की शिक्षित स्त्रियों में बड़े ही आदर के साथ लिया जाता है। औपनिवेशिक काल में पाश्चात्य सांस्कृति एवं सभ्यता के प्रसार से भारतीयों में महिलाओं की शिक्षा के प्रति उदार दृष्टिकोण आया। इस कार्य में समाज सुधारकों ने अग्रीणी भूमिका निभाई जिसमें राजाराम मोहन राय का नाम बड़े ही आदर से लिया जाता है। सर्वप्रथम राजा राममोहन राय ने सती प्रथा जैसी कुरीति का विरोध किया तथा अंग्रेजों का ध्यान इस ओर आकर्षित किया। उनके प्रयासों से लार्ड विलियम बैंटिक ने सती प्रथा निषेध कानून बनाकर लागू किया। इन कुप्रथा के विरूद्ध बना कानून महिलाओं की स्थिति को सुधारने का प्रथम संवैधानिक उपाय था। राजाराम मोहनराय ने महिला शिक्षा का समर्थन किया उन्होंने नारी को पुरूष के समान अधिकार की बात कहीं थी। इसी प्रकार आर्य समाज के संस्थापक दयानन्द सरस्वती ने धार्मिक अंधविश्वासों एवं सामाजिक कुरीतियों का खण्डन किया तथा महिलाओं की स्थिति को सुधारने के लिए उन्होने बाल विवाह, बालिका वध, पर्दाप्रथा का विरोध किया तथा विधवा विवाह का समर्थन किया तथा आर्य समाज ने सर्वाधिक जोर नारी शिक्षा के विस्तार पर दिया। इसी तरह स्वामी विवेकानन्द स्त्रियों को सशक्त करने के लिए शिक्षा को महत्वपूर्ण मानते थे विवेकानन्द ने कहा था–''हम चाहते है कि भारत की स्त्रियों को ऐसी शिक्षा दी जाए, जिससे वे निर्भय होकर भारत के प्रति अपने कर्तव्य को भली–भाँति निभा सकें और संघमित्रा, अहिल्याबाई और मीराबाई आदि भारत की महान देवियों द्वारा चलाई गई परम्परा को आगे बढ़ा सके एवं वीर पुत्री, वीर माता बन सकें। भारत की स्त्रियाँ पवित्रता व त्याग की मूर्ति है, क्योंकि उनके पास वह बल और शक्ति है जो सर्वशक्तिमान परमात्मा के चरणों में संपूर्ण आत्म समर्पण से प्राप्त होती है।''[7] आगे स्वामी विवेकानन्द स्त्रियों के लिए एक समान शिक्षा की बात कहते है–''केवल पूजा–पद्धति सिखाने से काम नहीं बनेगा। स्त्रियों की सभी विशयों में आँखें खोल देना उचित है।''[8] महात्मा गाँधी ने हमेशा महिलाओं की शिक्षा का समर्थन किया। इसी प्रकार से ''डॉ० भीम राव अम्बेडकर केवल दलित समाज के ही हितचिन्तक नहीं थे। उन्होंने नारी शिक्षा के प्रचार एवं प्रसार तथा महिलाओं के उत्थान के लिए महत्वपूर्ण कार्य किए जिसके कारण भारतीय संविधान निर्माण के दौरान उन्होंने महिलाओं को समानता का दर्जा दिये जाने की बात को सदैव प्राथमिकता पर रखा और महिलाओं के हितों की रक्षा के लिए अनेक कानून पारित कराये।''[9] इसके परिणाम स्वरूप स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारतीय समाज के दृश्टिकोण में महिलाओं के प्रति कुछ परिवर्तन आया तथा महिलाओं को सशक्त करने पर बल दिया गया। महिलाओं की शिक्षा व विकास के लिए कई योजनाएँ व कानून बनाए गए परन्तु प्रयाप्त सफलता नहीं मिली।

''राधाकृष्णन विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग और मुदालियर माध्यमिक शिक्षा आयोग ने अपने–अपने बहुमूल्य सुझाव उपस्थित किये। 'श्रीमती दुर्गाबाई देशमुख' की अध्यक्षता में नेशनल कमेटी ऑन दी एजुकेशन ऑफ विमेन संगठित हुई। श्रीमती हंसा मेहता के अधीन बालक तथा बालिकाओं के शिक्षाक्रमों में विभेदीकरण से संबंधित कमेटी तथा सी०एम० भक्तवत्सलन के अधीन पिछड़े प्रदेशों की स्त्री–शिक्षा की जाँच–सम्बन्धी कमेटी नियुक्त हुई। कोठोरी शिक्षा आयोग ने भी बालिका–शिक्षा की समस्याओं का अध्ययन किया और महत्वपूर्ण सुझाव दिये।''[10] इन सब प्रयासों से ही आज की महिलाएँ न केवल पुरूषों के साथ कदम से कदम मिलाकर चल रही है बल्कि कुछ क्षेत्रों में तो उनसे आगे भी निकल चुकी है तथा शीर्ष पदों पर आसीन है वर्तमान समय में चंद्रिमा शाह भारतीय राश्ट्रीय विज्ञान अकादमी (आई एन एस ए) की पहली महिला अध्यक्ष है। आज की शिक्षित नारी समय और शिक्षा दोनों के महत्व को जानती है आज प्रत्येक क्षेत्र में नारी सक्रिय भूमिक राष्ट्र के निर्माण में दे रही है। शिक्षा, चिकित्सा, तकनीकी, वैज्ञानिक कला, साहित्य सृजन सभी क्षेत्रों में स्त्री शक्ति विद्यमान है। राजनीति जैसे पुरूष प्रधान क्षेत्र में भी वे अपनी सशक्तता दर्ज करा रही है। अनेक महिलाएँ आज सांसद तथा विधान सभाओं की सदस्य है यहाँ तक की पंचायत स्तर पर महिला सरपंच के रूप में कार्य कर रही है।

भारत के सफल नेतृत्वकर्ताओं में श्रीमती इंदिरा गाँधी का नाम आदर से लिया जाता है। प्रतिभा देवी सिंह पाटिल देश के सर्वोच्च पद पर आसीन रही। वर्तमान में वित्तमंत्री निर्मला सीतारमन्, कैबिनेट मंत्री स्मृति जुबिन ईरानी, सोनिया गाँधी, बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी, आनंदी बेन पटेल, वसुंधरा राजे, बहन मायावती ने यह सिद्ध किया है कि महिलाओं की प्रशासनिक क्षमता भी राष्ट्र निर्माण में सहायक होती है। खेल के क्षेत्र में मिताली राज, पीबी सिंधु, सानिया मिर्जा, साइना नेहवाल, दीपाकर्माकर, बबिता फोगाट, हिमादास का नाम प्रमुखता से लिया जाता है। इसी प्रकार से इलेक्ट्रॉनिक मिडिया के क्षेत्र में चित्रात्रिपाठी, अंजना ओम कश्यप, श्वेता सिंह, रूबिका लियाकत, रोमाना इसर खान, निधि कुलपति, बरखादत्त आदि महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। यहाँ तक की

कॉर्पोरेट जगत में नीता अम्बानी, अरूंधति भट्टाचार्य, चंदा कोचर, इंदिरा नूई का नाम प्रसिद्ध है। कुछ समय पहले तक विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी को पूरूषों का विशय समझा जाता था किन्तु आज अपनी मेहनत एवं लगन से महिलाएँ अंतरिक्ष तक पहुंच गई है टेसी थॉमस जिन्हें 'मिसाइल वुमन' का खिताब मिल चुका है। रितुकारिधल 'रॉकेट वूमन ऑफ इंडिया' के नाम प्रसिद्ध है जिन्होंने भारत की सबसे महत्वकांक्षी चन्द्र परियोजना चंद्रयान–2 में मिशन निदेशक के रूप में कार्य किया।

मुथैया वनिता भी चंद्रयान–2 की परियोजना निदेशक है। गगनदीप कांग वायरोलॉजिस्ट और वैज्ञानिक है। भारत में रोटावायरस महामारी पर शोध और उसके लिए बनायी गयी वैक्सीन में उनका सराहनीय योगदान हैं। इसरो की 'पोलर वुमन' नाम से प्रसिद्ध मंगला मणि अंटार्कटिका में एक वर्ष से अधिक समय बिताने वाली पहली महिला वैज्ञानिक हैं। इस प्रकार हम देखते हैं कि ऐतिहासिक रूप से पिछड़ेपन से उबरकर भारत की महिलाओं ने सभी क्षेत्रों में कीर्तिमान स्थापित कर राजनीति से लेकर खेल, अभिनय, कला पत्रकारिता, इलेक्ट्रॉनिक मिडिया, प्रशासान में अपना लोहा भी मनवाया हैं तथा राश्ट्र के निर्माण में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रही हैं।

महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए केन्द्र सरकार तथा विभिन्न राज्यों के सरकारों ने भी विशेष योजनाएँ चला रही हैं उनके स्वास्थ्य एवं पोषण के साथ–साथ उन्हें आर्थिक रूप से सशक्त करने पर जोर दिया जा रहा हैं– जननी सुरक्षा योजना, मातृत्व अवकाश प्रोत्साहन योजना, सुकन्या समृद्धि योजना, बेटी बचाओं बेटी पढ़ाओं, वन स्टॉप सेंटर–सखी, पैनिक बटन, महिला शक्ति केन्द्र, राष्ट्रीय कोष, पोषण अभियान : राष्ट्रीय पोषण मिशन महिलाओं के विकास के लिए बनी हैं।

''शिक्षा आयोग ने भी इस बात पर विशेष बल दिया हैं कि महिलाओं को शिक्षित किये बिना उन्हें विकास की मुख्य धारा से जोड़ना सम्भव नहीं महिला शिक्षा की वकालत करते हुए स्वतंत्र भारत के प्रथम उपराष्ट्रपति, महान चिंतक, शिक्षा शास्त्री तथा दार्शनिक डॉ० सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने कहा था कि शिक्षित महिला के बिना शिक्षित पुरूष हो नही सकता 'साक्षरता के लक्ष्य को हासिल करने के लिए यह अत्यन्त आवश्यक हैं कि महिलाओं को साक्षार किया जाए, उन्हें शिक्षा से जोड़ा जाए। भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पं० जवाहरलाल नेहरू ने भी इसी तथ्य का समर्थन करते हुए कहा था कि 'एक लड़के की शिक्षा एक व्यक्ति की शिक्षा हैं, परन्तु एक लड़की की शिक्षा संपूर्ण परिवार की शिक्षा हैं।''[11]

साक्षरता दर (प्रतिशत में)

वर्ष	कुल	पुरुष	स्त्री
1951	18.33	2716	8.86
1961	28.30	40.40	13.35
1971	34.45	45.16	21.17
1981	43.57	56.38	29.76
1991	52.21	64.13	39.29
2001	65.38	75.85	54.16
2011	74.07	82.14	65.46

वर्श 1986 की राश्ट्रीय शिक्षा नीति में भी महिलाओं के विकास के लिए स्त्री अध्ययन तथा तकनीकी शिक्षा में उनकी भागीदारी बढ़ाने पर जोर दिया गया। ''लड़कियों के लिए अनौपचारिक शिक्षा केन्द्र संचालित हुए इस योजना से ड्राप आउट और पन्द्रह वर्श या उससे अधिक आयुवाली महिलाओं के लिए हुनर के प्रशिक्षण की व्यवस्था की गई। जिससे वे आत्मनिर्भरता की ओर उन्मूख हो सके। नवोदय विद्यालयों में 33 प्रतिशत स्थान बालिकाओं के लिए रखे गयें हैं। स्त्री शिक्षा के विकास हेतु विवाह अधिनियम में कन्याओं के विवाह की न्यूनतम आयु अठारह वर्ष निर्धारित की गयी तथा अन्तर्जातीय विवाह को वैध माना गया है।[12]

अत्यन्त सरल शब्दों में महिला सशक्तिकरण का अर्थ हैं– महिलाओं को शक्तिशाली बनाना। अर्थात समाजिक, राजनैतिक आर्थिक, धार्मिक, शारीरिक एवं मानसिक रूप से महिलाओं को पुरूषों के समान्तर लाना। भारत की आधी आबादी की प्रतिनिधित्व करने वाली महिलाओं को हमेशा पूजनीय माना जाता हैं परन्तु वर्त्तमान समय में यह स्थिति एकदम विपरति दिखाई पड़ती हैं सम्यता और सांस्कृति के विकास जितनी तेजी से हो रही हैं वर्त्तमान समय में महिलाओं की स्थिति में गिरावट भी उतनी ही तेजी से हो रही हैं महिलाओं के प्रति पुरूषों के द्वारा किए जाने वाले अपराधों में लगातार वृद्धि हो रही हैं यहाँ तक की आज देश में छोटी–छोटी बच्चियाँ भी सुरक्षित नहीं हैं।

अतः महिला सशक्तिकरण के लिए सबसे जरूरी हैं कि महिलाओं को शिक्षित किया जाना चहिए शिक्षा से जागरूकता उत्पन्न होगी तभी वे भेद भाव के नीति से ऊपर उठ पायेगी तथा अपना अधिकार, अपना सम्मान प्राप्त कर पायेगी। ''शिक्षा अंधकार से प्रकाश की ओर मानव की अनन्त यात्रा हैं। शिक्षा के अभाव के कारण मनुष्य में, पशु में भेदभाव करना कठिन है। शिक्षा वह आधार हैं जो व्यक्ति का सर्वागीण विकास करता हैं। जब व्यक्ति शिक्षित हो जाएगा तो वह दूसरी दूनिया के सम्पर्क में आएगा। इस प्रकार वह अपनी विकास की मंजिल खुद ही तय करेगा। भारत में महिलाओ की शिक्षा का स्तर कम हैं। लड़के और लड़कियों को शिक्षित करने में भेदभाव किया जाता हैं।''[13] जिसे ऐन्युअल स्टेटस ऑफ एजुकेशन

रिर्पोट 2019 और भी स्पश्ट कर देता हैं जिसमे प्री–स्कूल और स्कूल में नामांकन से ज्ञात होता हैं जिसमें लड़के निजी और लड़कियाँ सरकारी संस्थानों में ज्यादा नामांकित हैं। चार और पाँच वर्श के बच्चों में से 56.8% लड़कियाँ सरकारी स्कूल में और 50.4% लड़के सरकारी स्कूल में नामांकित हैं। वही 43.2% लड़कियाँ और 49.6% लड़के निजी स्कूलों में नामांकित हैं तथा 6 से 8 वर्श के आंकड़े 61. 1% लड़कियाँ और 52.1% लड़के सरकारी स्कूल में हैं। इस प्रकार वर्त्तमान मे भी लड़कियाँ शिक्षा के क्षेत्र में लड़को से पिछड़ी हुई हैं ऐसे में भला महिला सशक्तिकरण किस प्रकार से हो सकती हैं। बच्चों के विकास में उनके प्रारंभ के वर्श बहुत ही महत्वपूर्ण होते हैं यह वह समय होता हैं जिसमें बच्चों को भविश्य की चुनौतियों के लिए तैयार किया जाता हैं इसलिए शुरू से ही अपनी बच्चियों को अच्छी शिक्षा देनी चाहिए जिससे आगे चलकर वही बच्चियाँ एक सशक्त नारी बनेगी तथा एक सशक्त समाज का निर्माण करेगी।

उच्च शिक्षा पर आखिल भारतीय सर्वेक्षण रिपोर्ट : 2019–20 यह बताता हैं कि वर्श 2015–16 से 2019–20 तक पिछले वर्शो की अवधि में छात्र नामांकन में 11.4 प्रतिशत की वृद्धि हुई हैं।

वर्श 2019–20 के दौरान उच्च शिक्षा में कुल नामांकन 3. 85 करोड़ रहा जबकि वर्ष 2018–19 में यह 3.74 करोड़ था जिसमें 11.36 लाख की वृद्धि दर्ज की गई हैं। भारत में सबसे अधिक नामांकन उत्तर प्रदेश में हुए इसमें 49.1% छात्र और 50.9% छात्राएँ हैं, इसके बाद तमिलनाडु और महाराष्ट्र का स्थान आता हैं। वर्श 2015–16 से वर्श 2019–20 तक उच्च शिक्षा में महिला नामांकन में कुल मिलाकर 18% से अधिक की वृद्धि हुई है। शैक्षिणिक पाठ्यक्रमों की अपेक्षा व्यावसायिक पाठ्क्रमों में महिलाओं की भागीदारी कम होने के साथ–साथ राष्ट्रीय महत्व के संस्थानों में छात्राओं की हिस्सेदारी सबसे कम हैं। ''उच्च शिक्षा में यह कमी पूर्णतथा स्पष्ट है। वर्त्तमान में यू० जी० सी० द्वारा विभिन्न विश्वविद्यालयों को मदद हेतु निजी क्षेत्र की और देखना पड़ रहा हैं। फीस में वृद्धि और प्रति व्यक्ति फीस लेने की प्रवृत्ति महिलाओं की शिक्षा को विशेषकर प्रभावित करता हैं। ''14 यूनेस्को ने टाटा इंस्टीटयूट ऑफ सोशल साइंसेज के साथ मिलकर एक रिपोर्ट तैयार की हैं जिसमें दिव्यांग बच्चो की शिक्षा की वर्तमान स्थिति के बारे में जानकारी प्रदान करता है। यह रिपोर्ट वर्ष 2017 और 2018 के बीच की है। जिसमें यह बताया गया। हैं 5 वर्ष के दिव्यांग बच्चों में से तीन–चौथाई किसी भी शैक्षणिक संस्थाना में नही जाते है। न ही 19 वर्श की आयु के दिव्यांग बच्चों का एक–चौथाई भाग स्कूल जाता है। स्कूल जाने वाले ऐसे बच्चों की उम्र जैसे–जैसे बढ़ती हैं वैसे–वैसे उनके स्कूल छूटते चले जाते हैं। आश्चर्यचकित करते वाली बात यह है कि लडकों की तुलना में स्कूल में दिव्यांग लडकियों की संख्या कम है। मानसिक रूप से अक्षम दिव्यांग महिलाएँ विशेशकर ग्रामीण क्षेत्र में रहने वाली दिव्यांग महिलाएँ सबसे अधिक उपेक्षित हैं। ऐसे में हमें महिला सशक्ति करण का दाबा बेइमानी लगती हैं अतः सही मायने में महिलाएँ तब सशक्त होगी जबशत प्रतिशत महिलाओं के जीवन शिक्षा की रोशनी से जगमगाने लगेगी।

मानव संसाधन विकास पर स्थायी समिति ने 2020 में महिलाओं की सुरक्षा से संबंधित मुद्दो पर अपनी रिपोर्ट के अनुसार समिति ने सिफारिश की कि पाठ्यक्रमों पुस्तकों और स्कूल पाठ्यक्रमों में महिलाओं के प्रति सम्मान का भाव होना चाहिए। इसके अलावा विश्वविद्यालय को महिला अध्ययन विभाग का गठन करना चाहिए जो संकट ग्रस्त महिलाओं को (काउंसलिंग) परामर्श दे सके। ट्रांस्फॉर्मिग अवर वलर्डः द 2030 ऐजेंडा फॉर सस्टेनेबल डिवलपमेंट का लक्ष्य समाज में लैंगिक समानता स्थापित करना तथा बालिकाओं और महिलाओं को सशक्त करना भी हैं।

किसी भी देश की प्रगति में वहाँ कीा महिलाओं की महत्वपूर्ण योगदान होता हैं। महिलाओं के शिक्षा स्तर में वृद्धि होने से शिशु मृत्यु दर में कमी आती हैं और पारिवारिक स्वास्थ्य में सुधार होता हैं।

महिलाओं के शिक्षित होने से जनसंख्या वृद्धि दर में कमी आती हैं। शिक्षा की वजह से महिलाओं की भागीदारी श्रमबल में बढ़ती हैं। शिक्षित और सशक्त नारी का पारिवारिक और राश्ट्रीय आय के बढ़ोत्तरी में भी महत्वपूर्ण योगदान होता हैं। महिलाओं की आय में वृद्धि से बच्चों के पोषण, स्वास्थ्य और शैक्षिक संभावनाओं पर सकारात्मक प्रभावा पड़ता हैं शिक्षा के द्वारा ही महिलाओं को सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, वैधानिक आदि सभी क्षेत्रो में जागरूक करना संभव है तथा शिक्षा के द्वारा ही महिलाओं का चहुँमुखी विकास संभव है। अतः महिला शिक्षा और सशक्तिकरण एक दूसरे के पूरक हैं क्योकि शिक्षा के साथ ही सशक्तिकरण जुड़ा हुआ हैं जब महिलाएँ शिक्षित होगी तब ही सशक्तिकरण सही मायने में होगी।

निष्कर्ष :

महिलाओं के सशक्तिकरण की दिशा में राष्ट्रीय और अंतराष्ट्रीय स्तर पर कई कार्य किए गए है। और शिक्षा के द्वारा सशक्तिकरण की प्रक्रिया पर बल दिया जाता हैं। यह महिलाओं को बुनियादी मानवधिकारों को प्राप्त करने में उनकी मदद करती है, लेकिन व्यक्तिगत अधिकारो की प्राप्ति से परे हैं महिलाओं की शिक्षा सामाजिक विकास और आर्थिक विकास के लिए उल्लेखनीय रूप से प्रभावी उत्प्रेरक होती हैं। स्वतंत्र भारत में महिलाओं की स्थिति को परिवार्तित करने में शिक्षा का महत्वपूर्ण भूमिका रहा हैं।

अतः शिक्षा महिलाओं को न केवल व्यक्तिगत तौर पर सशक्त बनाती है अपितु पूरे समाज एवं राष्ट्र को सशक्त बनाती हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. योगेन्द्र शर्मा, महिला सशक्तीकरण दशा और दिशा, पृ० 126
2. वहीं पृ० 127
3. प्रो० राम गोपाल गुप्त, मनुस्मृति और आधुनिक समाज, पृ० 71
4. वहीं, पृ० 80
5. डॉ० भारती आर्य, विश्वभारती अनुसन्धान परिशद्, ज्ञानपुर (भदोही) पृ० 61
6. वहीं, पृ० 61
7. डॉ० ओजस्विनी जौहरी, महिला सशक्तिकरण पृ० 69
8. वहीं, पृ० 69
9. वहीं, पृ० 71
10. डॉ० एस० एल० वरे; भारतीय इतिहास में नारी; पृ० 165
11. वहीं, पृ० 169
12. योगेन्द्र शर्मा, महिला सशक्तीकरण दशा ओर दिशा पृ० 134
13. डॉ० ओजस्विनी जौहरी, महिला सशक्तिकरण पृ० 13
14. नारी देसाई ऊशा ठक्कर, भारतीय समाज में महिलाएँ, पृ० 57

रश्मि सिंह
घर संख्या–39
रैन बसेरा कॉलोनी
मांझी टोला, आदित्यपुर
जमशेदपुर–831013 (झारखंड)
मो०–8434600606
ई मेल–rashmianku1986@gmail.com

शोध निर्देशिका
डॉ0 ललिता कुमारी
एसोसिएट प्रोफेसर हिन्दी विभाग
आर0 के0 डी0 एफ0 विश्विद्यालय,
रांची (झारखण्ड)
मौ0 8969330114

17

आदिवासी विस्थापन की समस्या

ललिता बाई

सारांश –

विस्थापन से अभिप्रायः है किसी का अपने मूल स्थान से पीछे हटना और किसी अन्य स्थान पर जाकर बसना। विस्थापन किसी भी व्यक्ति व समूहों के लिए अत्यन्त पीड़ादायी व कष्टकारी होता है। कोई भी व्यक्ति व मानव समूह कभी भी स्वतः अपनी इच्छा से अपने मूल स्थान का त्याग नहीं करता है। जब भी कोई अपने स्थान से विस्थापित होता है उसके पीछे अवश्य ही कुछ प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष कारण विद्यमान होते है जो किसी को भी नये स्थान की और विस्थापित होने को विवश करते है। अब इन कारणों में कुछ प्राकृतिक भी हो सकते है और मानव जनित भी। मानव वर्तमान में जो विस्थापन के दंश व उससे जनित पीड़ा को भोग रहा है वह पीड़ा मानव जनित कारणों के आधार पर अधिक टिकी है बजाए कि प्राकृतिक कारकों पर मानव आज अपने प्रथम आवास से अपने स्वप्न, बढ़ती अंकाक्षाओं व विकास की सीढ़ी चढ़ने की असीमित इच्छाओं के कारण अपने स्थान से दूर होने को अधिक विवश है। कभी बाढ़ व सूखा जैसी कुछ प्राकृतिक आपदाएं अवश्य किसी पूरे के पूरे समूह के विस्थापन की वजह बनती है वरन् तो रोजगार, रोजी रोटी व विकास की प्रक्रिया ही इसकी मुख्य वजह होती है।

आदिवासी समाज के संदर्भ में बात की जाए तो आज के समय में यही एक ऐसा समुदाय है जो विस्थापन व उससे उत्पन्न दर्द का सर्वाधिक सामना कर रहा है और यह प्रक्रम उसी समय शुरू हो गया था जब आर्य भारत आए। इसी पर दृष्टिपात करते हुए रमणिका गुप्ता कहती है कि "थैबर दर्रे से जब आर्य भारत आए तो वे अपने साथ रथ, बर्छी, कुल्हाड़ी और ढ़रों की फौज लेकर आए और उन्होंने अपना पहला हमला आदिवासियों पर किया।"[1] इस प्रकार से उन पर हमले के द्वारा अपनी ही भूमि से निष्कासित किया जा रहा था इस पर वे आगे कहती है– "आदिवासियों के जंगल व जमीन पर वे अतिक्रमण करने लगे तथा उन्हीं के जंगलों व जमीन से उन्हें बाहर निकालने लगे। आर्य लोग यज्ञ करते थे और यह हिस्सा हमारा हुआ ऐसी घोषणा करते थे।"[2] परन्तु बाद में इन सभी तथ्यों को नकारने की चेष्टा की गई और आर्यों को इस राष्ट्र के मूल निवासी बताकर आदिवासियों के विस्थापन को झूठलाया गया परन्तु कुछ विद्वान सत्य के पक्ष में आये और अपने विचारों को प्रमाणों के द्वारा प्रस्तुत करते हुए कहते हैं– "भारत के आदिवासियों के पूर्वज आर्यों के आगमन से पूर्व से यहां रह रहे थे।"[3]

एक अन्य विद्वान भी इसी मत को और अधिक पुष्ट करते हुए कहते है कि "आदिवासी भारतवर्ष के वास्तविक स्वदेशी उपज है जिनकी उपस्थिति में प्रत्येक व्यक्ति विदेशी है।"[4] इतिहासकार रामशरण वर्मा की आर्यों के आगमन की विस्तृत जानकारी देते हुए कहते है कि "आर्य नस्ल के लोग मध्य एशिया से अफगानिस्तान, ब्लुचिस्तान होते हुए आए और उनसे पहले से भी लोग यहां रह रहे थे।

"इस बात के पुरतात्विक और भाषाई साक्ष्य है, जिनके आधार पर हम कह सकते है कि आर्य भाषा–भाषी मध्य एशिया से भारतवर्ष में आए।"[5] इस प्रकार स्पष्ट है कि आर्य विदेशी नस्ल के थे तथा इन्होंने अपने आपको इस भूमि पर स्थापित करने के लिए यहां के आदिवासियों को विस्थापित किया। विकास व प्रगति के नाम पर आज सबसे पहले इसी समुदाय को बेघर किया जा रहा है। गंगा सहाय मीणा इसी पर प्रकाश डालते हुए कहते है "आदिवासियों से उनकी जल, जंगल, जमीन को छीनकर कॉपर्रेट घरानों को कौड़ियों के दाम बेच देना है इसके लिए उन पर चौतरफा हमला बोला जा रहा है।"[6] जब ये समुदाय अपने निष्कासन का विरोध करता है तथा अपने आवास से दूर होने से इंकार करता है तब किसी प्रकार से इन्हें विकास विरोधी व राष्ट्र विरोधी बताया जाता है इस मत को तपन बोस कुछ इस प्रकार से व्यक्त करते है – "एक ओर उनसे यह उपेक्षा रखी जाती है कि वे आर्थिक और सामाजिक रूप से प्रबुद्ध समाज के साथ घुल–मिल जाने का स्वागत करे दूसरी ओर उनकी ऐसी दुर्गति बनी हुई है कि वे आर्थिक विकास और राष्ट्रीय सुरक्षा के रूप में अड़चन डालने वाले के रूप में देखे जाते है।"[7]

हिन्दी उपन्यासों में भी उनके इस विस्थापन को पर्याप्त स्थान मिला और उनके जीवन के इस पहलु को संवेदनात्मक ढंग से चित्रित किया गया। महुआ माजी उनको विस्थापित करने के लिए उनके घरों को तोड़े जाने को कुछ इस प्रकार प्रस्तुत करती है– "कंपनी के लोग कई पुलिसमियों के साथ खड़े होकर उसकी झोपड़ी को तुड़वा रहे है। कांडे के घर के लोग .... उनके पड़ोसी हाय–तौबा मचा रहे है।"[8] विकास के नाम पर की जा रही यह बेदखली का ये

लोग विरोध भी करते नजर आ रहे है इसी दृष्टिकोण को लेखन विरेन्द्र जैन अपने उपन्यास में कुछ इस प्रकार चित्रित करते है– "उस विकास से क्या फायदा, जो मनुष्य को उखाड़ दे, बेघर कर दे, उन्हें गलत जगह रोंप दे, उनकी सहज इच्छाओं को रौंद दे?"[9] इस प्रकार से बार–बार विस्थापन की प्रक्रिया पर प्रकाश डालते हुए उसका विरोध करते हुए रणेन्द्र अपने उपन्यास में कहलाते है– "यानि कि हजारों हजार से पीछे हटते इस पाट पर। धरती का आखिरी छोर। अब यहाँ से कहाँ? नष्ट करने की प्रक्रिया तो आज भी जारी है। जमीन और बेटियाँ चुप–चुप शान्त–शान्त किन्तु रोज छीनी जा रही है।"[10] इस समुदाय को बेदखल करने के लिए न सिर्फ जबरदस्ती का अपितु जो लोग जोर–जबरदस्ती से नहीं मानते उन्हें बहला–फुसलाकर पर भी अपने उद्देश्य की पूर्ति की जाती है लेखक कहते है– "अवध खनन के लिए पाँच–दस असुरों को रोज फुसलाया जाता है। हर उपाय से उनकी जमीन हथियाई जाती हैं।"[11] इस जनजाति के निष्कासन का जो दौर वैदिककाल में शुरू हुआ था वह दौर आज की जनप्रतिनिधि सरकारों में भी उसी जोर–शोर से जारी है इसी पर उपन्यास में कहा जाता है कि हम वैदिककाल में है कि इक्कीसवीं सदी में। वर्तमान अतीत में ढ़लता जा रहा है और अतीत की कत्ल–औ–गारत वर्तमान में नजरों के सामने नाच रही थी।"[12]

निष्कर्ष

इस प्रकार से इस जाति के सदियों से दबे दर्द को वर्तमान में उपन्यासों के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है। असभ्य और पिछड़ी हुई कहकर हमेशा इस जाति को उसके समस्त अधिकारों से वंचित करके अपने ही राष्ट्र में बार–बार विस्थापितों का जीवन जीने के लिए विवश किया गया। वर्तमान में आवश्यकता इस बात की हम इनके प्रति अधिक संवेदनशील दृष्टिकोण अपनाये तथा बेवजह होते इनके विस्थापनों को रोककर इनके पुर्नस्थापना की भी समुचित व्यवस्था करे।

सन्दर्भ सूची

1. आदिवासी कौन– रमणिका गुप्ता सम्पादक, पृ0 15
2. वही, पृ0 15
3. द अबार्जिनिज– एस. एलविन, पृ0 43
4. भारतीय जनजातियां : संरचना और विकास, हरिश्चन्द्र उत्प्रेती, पृ0 2
5. मध्य एशिया और समस्या, बुधन, पृ0 50
6. आदिवासी और हिन्दी उपन्यास : अस्मिता और अस्तित्व का संघर्ष, गंगा सहाय मीणा, पृ0 64
7. आदिवासी कौन, देशज कौन–तपन बोस, पृ0 1
8. मरंग गोड़ा नीलकंठ हुआ – महुआ माजी, पृ0 89
9. डूब, वीरेन्द्र सिंह जैन, पृ0 13
10. ग्लोबल गाँव के देवता, रणेन्द्र, पृ0 34
11. वही, पृ0 28
12. वही, पृ0 33

ललिता बाई
शोध छात्रा (हिन्दी विभाग)
बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय,
रोहतक, हरियाणा

व्यासशिक्षाया रचनाविधा

डॉ0 दानपति तिवारी

सारांश –

सम्यग्रूपेण व्यासशिक्षायानुशीलेन ज्ञायते यद् ग्रन्थकारेण कृष्णयजुर्वेदस्य संहितानां वैशिश्टचं प्रतिपादपितुं गभीरं चिन्तनं परिश्रम कृतम्। संहितानां प्रत्येक स्थलेशूपलब्धवर्णस्य, पदस्य, सन्धेः, स्वरस्य च सूक्ष्मदृश्टया निरीक्षणं कृतम्। द्विधा सूत्रमत्र विहितम्–सामान्यं सूत्रमपवादसूत्रञ्च। विस्तृतक्षेत्रस्य विधानानि तु सामान्यसूत्रेशूपनिबद्धानि अल्पक्षेत्रस्य च विधानानि त्वपवादसूत्रेशु। संहितानां सर्वाणि स्थलान्येतेशां सूत्राणामन्तर्गतमागतानि सन्ति। ग्रन्थस्यास्य रचनाविधा एताद्दशी विद्यते–

(क) पारिभाषिकसंज्ञानां प्रयोगः– कस्मिच्दिपि शास्त्रे प्रवेशार्थ तत्र प्रयुक्तानां पारिभाशिकशब्दानां ज्ञानमत्यावश्यकम्। परिभाशिकशब्दानां प्रयोगेण शास्त्रे लाघ्वत्वं जायते। लघुता शास्त्रग्रन्थानां महद्वैशिश्टयम्। ग्रन्थस्य लाघवार्थ ग्रन्थे परिभाशिकशब्दानां प्रयोगः तेशां विधानं चोपलभ्यते। शास्त्रे एकन्मित्रेव स्थले विस्तृतार्थप्रकटयितुं पारिभाशिकशब्दस्य विधानं कृत्वा अन्यत्र तदर्थबोधनाय तस्य पारिभाशिकशब्दस्य प्रयोगो भवति येन तद्विपुलार्थविधानं कृत्वा अन्यत्र तदर्थबोधनाय तस्य पारिभाशिकशब्दस्य प्रयोगो भवति येन तद्विपुलार्थविशेशः प्रकटीभवति। व्यासशिक्षायामप्येताद्दशानां पारिभाशिकशब्दानां विधानं प्रथमे प्रकरणे विहितम्। तदन्यत्र तेशा प्रयोगेण तदर्थविशेशोज्ञापितः। तद्यथा– ''कादिमान्तास्स्मृतास्पर्शाः'' (15) । ''अन्तःस्था यादिवोत्राः'' (1) जिह्ममूल्यादिहान्ताग्र शडूश्माण उदीरिता'' (1 7) इत्यादयः

ख परिभाशासूत्राणि– शासतस्यास्य सम्यगवबोधनाय शास्तकारेण तृतीयप्रकरणे सर्वाणि परिभाशासूत्राणि विहितानि यैः ग्रन्थेउस्मिन् निरुपिता विशयाः सारल्येन बोधगम्याः भवन्ति। तााानि सूत्राण्येवमेव–

1 यत्कार्यभाग्पदं निमितेन सहितं विद्यते तत्र विहितं कार्य संहितायां भवति। यथा– ''हकारो प्रथमादूर्ध्वः तत्सस्थानच्तुर्थकम्'' 76 इत्यनेन प्रथमादूर्ध्व' इति सनिमित्किः कार्यभाग् हकार तत्सस्थानं चतुर्थकं भवतीति कार्य विहितम्। तत्कार्य संहितायामेव भवित। निदर्शनम्– ''तद्विरण्यम्'' (स0 616) ''अर्वाग्घ्येनम्'' (स0 6 3 3) पदे तु न भवति क्रमपाठे जटापाठे चापि भवति, त संहितारुपाविद्यमानत्वात्।

2 ग्रन्थस्य सूत्रेशु पदग्रहणस्थले पदमेव बोधव्यम्। परच्च तस्य विकृतरुपमपि जानीयात् यथा– ''स्य उच्चोउथैश चेद्वलि'' (6 1) इत्यत्र विसर्जनीयस्य लोपप्रसेगडे 'स्याः' इत्येतस्यापि पदस्य लोपः विहितः। तल्लोपो भवति। निदर्शनम्– ''स्य वाजी'' (स0 1 7 8) अनया परिभाशया स्यः इत्यस्य विकृतस्य रुपस्यापि विसर्जनीयो लुप्यते। यथा– ''अयमुश्य प्रदेवयुः'' (स0 3 5 11) तथा च ''यानं हवेन वाहनः'' (1 6) इत्यत्र प्रपूर्वः यस्य ताद्शस्य वाहनः इत्यस्य नकारस्य गत्वं विहितम् तत्राप्यनया परिभाशया ''प्रवाहणोउपि बहि'' (स. 1 3 3) इत्यत्र विसर्जनीयस्य ओत्वे विकारे सत्यपि नकारास्य णकारं भवत्येव।

3 पदग्रहणे अकारो आदौ यस्य तादृशमपि पदं ज्ञातव्यम्। यथा– ''विद्वांस्तांस्त्रीतृनून'' (8 16) इत्यत्र नित्ये सकारे परे विद्वानित्यस्मात्परः सकारागमस्य विधानं वर्तते। निदर्शनम् '' विद्वान्स्रै– धातवीयेन'' (स0 2 4 11) परिभाशयानया''तामविद्वान'' (स0 7 1 7) इत्यस्य जटायां 'तामविद्वानविद्वान्स्तां तामविद्वान्'' इत्यत्रापि सकारागमो भवति। तथा च ''धामननूपसर्गाश्र'' (20 2) इत्यत्र धाम, अननूपसर्गादिभ्यः छखि भुज इत्येतेशु परेशु पूर्वस्यागमो विहितः। निदर्शनम्– 'विच्छन्दा' (स0 4 3 11)। परिभाशयाउनया ''अविच्छेदायेन्द्राः'' इत्यत्राप्यागमो भवति।

4 विधानेशु पदग्रहणे अन्कार आदौ यस्य तादृशमपि पदं जानीयात्। यथा– ''धामाननूपसर्गाच्श्र' (20 20)इत्यत्र अननूसर्गाभिः छखि, भुज इत्येतुशु परेशु पूर्वागमो विहितः निदर्शनम्– ''अवच्छिद्यते' (स0 3 2 1)। परिभाशयाउनया ''अनवच्छित्यै'' (स0 6 2 1) इत्यत्रापि पूर्वामो भवति।

5 पदग्रहणेउनुस्वारयुक्तमापि पदं ज्ञातव्यम्। यथा– धामाननूपसर्गाच्श्र (20 2) इत्यत्र विहितो पूर्वस्यागोडनुस्वारयुक्ते पदेउपि भवति। यथा– ''छन्दास्युप'' (स0 4 3 8) इत्यस्य जटायां '' छन्दाउस्युपोच्छन्दाशस छन्दास्युपः'' इत्यत्रापि भवति।

6 सूत्रेशु गृहीतमनित्यदीर्घपदं स्वस्य नित्यह्रस्वस्याप्पुलक्षणं भवति। एवमेव ह्रस्वस्वरयुक्तं पदं स्वस्यानित्यदीर्घस्वरमुलक्ष्याति। यथा– '' अत्र पदच्चेदुदथा परः'' (1 2 6) इत्यत्र उत् अथा इत्येतयोंः परयोः पूर्वस्य नकारास्य यत्वं रेफत्वं च न भवतीति विहितम्। निदर्शनम्– ''विद्वानथा भव''(स0 3 2 11) । परिभाशयाउनयात्र गृहीतमनित्यदीर्घपदं स्वस्य नित्यह्रस्वस्वरर्स्याप्युपलक्षणं भवति। यथा क्रमपाठे 'विद्रानथ। अथवा भव''। एवमेव ''अस्थूरि शु ग्रामो रु'' (1 2) इत्यत्र शु इति ह्रस्वपदं गृहीतम्। तस्मात्परो नकारो णत्वमाप्नोति। निदर्शनम्– ''उ शु णः''। अनया परिभाशया शु इत्यस्य नित्यह्रस्वस्वरे स्वस्यानित्यदीर्घमप्युलक्ष्यति येन दीर्घात् शू इत्यस्मात्परोउपि नकारो णकारं भजते यथा – '' मो शू णः'' (स0 1 8 2)।

7 संहिताविधाने पूर्व पूर्व पदं सूत्रच्च प्रथमं कर्तव्यम्। पूर्व पूर्व पदं यथा– ''भक्ष। एति आ इति। हि प0 पा0 भक्षेहि'' (स0 3 2 5) इत्यत्र

'' आद्यश्टसु सवर्णोर्ध्वः'' (13 1) इत्यनेन दीर्घे कृते 'भक्षेहि' इत्यभीश्टरुप8 प्राप्यते। अन्यथा प्रथमं 'आ इहि' इत्यनयोरेकारे कृते ' भक्ष एहि' इति स्थिते ''ऐत्वमेदैत्परे'' (13 6) इत्यनेन सन्धीयमाने 'भक्षैहि' इत्यनिश्टरुपस्य प्राप्तिः भवति। पूर्व पूर्व सूत्रं यथा– शट्। नवत्यै प0 पा0 शण्णवत्यै'' (स0 7 2 1 5) इत्यत्र '' धिसुवस्शिटपूर्वो निश्पूर्वः'' (1 2) इत्यनेन नकारस्य णत्वे कृते (88) उत्तम प्रथमोउन्त्योर्ध्वः'' (911) इत्यनेन टकारस्य णत्वे कृते 'शण्णवत्यै' इत्यभीश्टरुप प्राप्यते। तच्चनिश्टम्। एवमेव ''इमं विश्यामि'' स0 (1 1 10) इत्यत्र 'परि वि प्रति' (8 4) इत्यनेन सकारस्य शत्वं भवति एवं 'विश्स्यामि' रुपं प्राप्यते। तच्चानिश्टम्। अत एवं पूर्व सूत्रं प्रथमतया प्रयोगेण 'विश्यामि' इत्यभीश्टरुपस्य प्राप्तिः। एतादृशान्यनिश्टरुपाणि न भवन्तु अत एवं पूर्व पूर्व पदं सूत्रज्ञ प्रथमं प्रयोक्तव्यम्।

8 सामान्यविधानं संहितायामपवाद त्यक्त्वा सर्वत्र भवति। यथा– 'आद्यश्टसु सवर्गोर्ध्वे दीर्घम्'' (13 2) एतत्सामान्यविधानं यत्संहितायां सर्वत्र प्राप्यते। यथा–'गृहणीश्व। अन्तरितमित्यन्तः– इतम् प0 पा0 गृहणीश्वान्तरितम्'' (स0 1 1 8)। रास्ना। असि प0 पा0 रास्नाउसीन्द्राण्यै'' (स0 1 1 2) इत्यादि। विधानमिदम् ''न स्वधा मा प्रपास्यूर्ध्वः'' (13 10) इत्यत्र न भवति 'प्रमेति प्र –मा। असि प0 पा0 प्रमा असि' (स0 4411) । 'स्वधा। असि प0 पा0 स्वधा असि' (स0 1 1 9) इत्यादौ न।

9 यद्रिशिश्टं विधानं तत्संहितायां सर्वत्र न प्राप्यते। ततु स्वस्थलविशेश एवं भवति। यथा– ''उख्येयुर्याज्या द्रापे हिरण्यवे'' (14 3) इत्यत्रोख्यादिश्वनुवाकेशु एकारादोकादादकारस्य प्रकृतिभावः प्रोक्तः। विशिश्टं विधानमेतत् यत्स्वविविशेशेउनुवाक एवं भवति, सर्वत्र संहितायां न। यथा उख्ये– ' श्रृण्वन्ति विश्वे अमृतस्य'' (स0 4 1 1)। निर्दिश्टादन्यत्र न भवति। यथा– ''पाप्मनोडहसः'' (स0 2 2 6)।

10 संहितायां चेदेकस्मित्रेव स्थले सामान्यविधिः विशेशविधिच्श्र सहैव प्राप्यते तत्र विशेशविूरिव प्रयोक्तव्यः, यतो हि विशेशविधिरेव बलवान्भ्वति। यथा– ''अग्निस्ते अस्मत्'' (सं. 4 6 2) इत्यत्र ''एदोत्पूर्वेउकारोर्ध्व एकं पूर्वसमन्वितम्'' (14 1) इति सामान्यः तथा च उख्येर्ययुर्याज्या' (14 2) इति विशेशो विधिः सहैव प्राप्यते विकर्शे विद्यमानत्वात्। अत्र पूर्वेण विधिना कार्य भवतु परेण वा। एतत्रिराकरणमनया परिभाशया भवति। अत एवं परेण विशेशविधिनाउकारस्य प्रकृतिभावों एव विशेश– विधानात्।

11 पच्जपदं वाक्यं यत्कार्यभाक् पूर्वस्मिन्स्थले प्राप्यते, तत्स्मादुत्तरं चेत्त् पुनरुक्त भवति ततत्रापि पूर्ववदेव कार्यभाग् भवति। तात्पर्यमिदं यत् पच्जपदं संहितायां पुनरुक्त चेतत् प्रथमे स्थले शास्त्रस्यास्य विधानेन सिद्रो यः पाठः, स एवं पाठः पुनरुक्तेउपि भवति। अन्येन विधानेनायं परिवर्तितो न भवति। पच्यपदस्य समुदाये कार्यभाक् पच्जमो भवति। अस्य पदस्य पूर्व चतुश्पदमवश्यमेव भवितव्यम्। यथा– 'देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेउश्रिनोर्बाहुभ्याम्'' (स0 1 3 1) इत्यत्र अश्विनोः इत्यस्याकारः ''एदात्पूर्वेउकारोर्ध्व एकं पूवसमन्वितम्'' (14 1) इति सामान्यविधानेन पूर्वकारेण सह पूर्वरुपमेकादेशं भजते। तत्पच्चपदसमुदायस्य पुनरुक्तिः वाजपेयानुवाके (स0 1 7 1 0)इत्यत्र भवति, तत्र ''उख्येयुर्याज्या'' (14 3) इत्यनेन वाजयेयानुवाके एकारादोकाराच्च अकारो प्रकृत्या भवति। परच्चानया परिभाशया वाजपेयानुवाकेउपि पाठोउयं पूर्ववद् पूर्वरुपत्वेनैव भवति। पुनरुच्चारणे तस्य पाठः ''उख्येयुर्याज्या'' (14 3) इत्यनेन परिवर्तितो न भवति । एवमेव ''स जातो गर्भो असि देवत्यो'' इतीदं पच्चपदं ''सं वायुः'' (4 1 4) इत्यस्मित्रनुवाके विद्यते। तत्र ''उख्येयुर्याज्या' (14 3) इत्यनेन ओकारादाकारस्य प्रकृतिभाव उख्ये विद्यमानत्वात। एतत्पच्चपदसमूहस्य पुनरुक्तिः '' क्रूरमिवं (स0 5 1 5) इत्यत्रापि भवति। तत्र ''एदोत्पूर्वउकारोर्ध्व एकं पूर्वसमन्वितम्'' (14 1) इत्यनेन ओकारादकारस्य पूर्वरुपं प्राप्यते उख्यादिश्वविद्यमानत्वात्। परच्च तत्राप्यनया परिभाशया पूर्ववत्प्रकृतिभावो एवं । तत्र 'एदोत्पूर्वेउकारोर्ध्व'' (14 1) इत्यनेन परविर्तनं न।

12 वर्णशब्दे परे स्वरोउनेकस्य ह्रस्वदीर्घप्लुतरुपस्य स्वररस्याख्या भवति। यथा– ''अथावर्णापूर्वे''' (13 2) इत्यदौ अवर्णोउकारस्याकारस्य आ3कारस्य निर्देशकः। एवमेव '' तावेत्वज्ञेवां उत्तरे'' (3 4) इत्यत्र इवर्ण इकारस्य ईकारस्य ई3कारस्य च निर्देशकः।

13 कारशब्दो उत्तरे यस्य तादृशः स्वरः स्वस्यैव स्वरस्य निर्देशको भवति। यथा– ''बर्हुस्वरस्य ते थे आकारैकारपूर्वकः'' (2 26)इत्यत्र आकारो आ इत्यस्य, ऐकारच्श्र ऐ इत्यस्य निर्देशकः।

14 कारशब्दो परः यस्य तादृश अ इत्ययं व्यच्यनस्य निर्देशको भवति। यथा– ''स्पर्शपूर्वश्शकारश्छम्'' (7 7) इत्यत्र शकारः श् इत्यस्य निर्देशकः।

15 अ इत्ययमन्ते यस्य तद्व्यच्यनमपि स्वस्य निर्देशको भवति। यथा– गजडाद्या दबाद्याच्श्र घोशवन्तः परे हल'' (1 14) इत्यत्राकारोन्तो उजडदब क्रमेण गकारस्य, जकारस्य, दकारस्य बकारस्य च निर्देशकः।

16 निमितरुपेण निमित्तन्रुपेण च गृहीतं वैदिकपदस्यैकदेशं प्रातिपादकं अकारन्तेन निर्दिश्टं भवति तत्सर्वेशां रुपाणमनेकं निर्दिशति। लक्ष्यं निमित्चय ग्रहणमित्यभिधीयते। निमित्तिनः यथा– ''साहस्रसारथि'' 8 11 इत्यत्र आकारान्तं साहस्रग्रहणं निमित्तिनः निदर्शनम्। अत्र साहस्र इत्यकारान्तस्य ग्रहणस्य सर्वावस्थस्याकारो निर्देशको भवति। यथा– ''द्विसाहस्रं चिन्वीत'' (स0 4 6 8) ''त्रि साहस्रो वै'' (सं0 5 6 8)। निमित्तस्य यथा– '' ओश्टेतनेव '' (13 13) इत्यत्राकारन्तमोश्ठप्रातिपदिकं सर्वावस्थ। निर्दिशति। यथा– '' अधरेणोश्ठेन'' (सं0 7 5 12) । ''स्वाहोश्ठाभ्याम्'' (सं0 6 3 16)।

17 यदा सूत्रे निर्दिश्टस्य वैदिकपदस्य विशये सन्देहो जायते यत्पदमिदं वर्णो वा संहितायाः कस्मात्स्थलाद् गृहीतः तत्र समीस्थं पदं

वर्ण वा बोधव्यम्। एतत्सन्देहः तदा भवति यदा पदमिदं वर्णो वा संहितायामनेकेशु स्थलेशु प्रयुक्तो भवति। यथा सूत्रकारेण प्रग्रहसंज्ञाविशये कार्य भाक्तया ''आपृशती आहुती'' (2 8) इत्यत्र पृशती पदस्यान्तेकारस्यापि प्रग्रहत्वं विहितम्। परच्य सर्वत्र पृशती पदं प्रग्रहो न विद्यते। कृत्र पदमिदं प्रग्रहः कुत्र नास्तीति। सन्देहो भवति। अतः सन्देहस्यास्य निवृत्यर्थ सूत्रे पृशती पदस्य पूर्वम आ इतीदमपि गृहीतम्। एवमेव '' चोत्तमे'' (2 16) इत्यस्मिन्सूत्रे उत्तमे पदस्यैकारस्य प्रग्रहत्वमुक्तम्। तत्रापि 'उत्तमे' पदस्य पूर्व 'च' इतयेतदपि गृहीतम्। निमित्स्य यथा– ''रशः पूर्वो हवन्हे'' (1 1 2) इत्यत्र रेफः शकारच्श्र पूर्व यस्य तस्य 'हवनी' इत्यादिपदस्य नकारस्य णत्वं विहितम्। अत्र समीपस्थ रेफः शकारो गृहीतव्यो भवति।

18 अपि च इत्येतौ पूर्वसूत्रात् परिस्मन् सूत्रेउन्वादेशकौ भवत। यथा– '' सुपूर्वश्शोउपि चन्दोर्ध्वः'' (6 2) इत्यत्रापिशब्दः पूर्वस्माद् आगमः'' (5 1) इत्यन्वदिशति। ''समपूर्वच्श्र कुर्वोर्ध्वः'' (5 4) इत्यत्र चशब्दः लोपः (6 1)इत्यन्श्रवदिशति।

19 तु अथ एव इत्येते शब्दाः कमेण पूर्वविधानस्य निवारकः, अधिकारकोउवधारकच्श्र सन्ति। यथा– ''हलां तु र एफगः'' (1 23) इत्यत्र तुशब्दः व्यज्नानामकारेण निर्देशस्य निवारकः। ''अथ प्रग्रहः'' (3 1) इत्यत्राथशब्दः प्रग्रहमधिकरोति। ''विलोमेउप्येव तौ ज्ञेयो'' इत्यत्र एवशब्दः ''उक्तौ विधिनिशेधो'' इत्यस्यावधारकः।

20 अन् अ , मा, न इत्येते शब्दाः निशेधे प्रयुक्ता भवति। यथा – अन्– '' त्वे इत्यनिगडयम्''। '' लोपस्यादप्रदर्शनम्'' (1 17)। न – ''नोपसर्गोउवसानस्थ'' (2 41) इत्यत्र कमेण अन्, अ, न इत्येते निशेधार्थे प्रयुक्ताः सन्ति।

21 वा इत्ययं शब्दः विकल्पार्थे प्रयुक्तो भवति। यथा– '' क्षैप्रे च वा द्ढ'' (17 25) इत्यत्र वा विकल्पार्थे प्रयुक्तः।

उपयुर्क्त विवेचनेन ज्ञायते यत्परिभाशासूत्रैः शास्तेउस्मिन् विहिता विशयाः सम्यग्रूपेण ज्ञातव्या भवति। परिभाशाज्ञानं बिना विधानानां यथार्थभावं ज्ञातुं न शक्यते। अत एवं शास्तस्यास्यावबोधनाय परिभाशासूत्राणां ज्ञानमत्वावश्यकम्।

सन्दर्भ

१. यत्कार्य सनिमित्कम् (3,2)
२. विकृत्व्य पदे (3,3)
३. अदादौ(3,4)
४. अनादि(3,4)
५. अनुस्वारयुक्तपदम्(3,6)
६. ह्रस्वस्यानित्यदीर्घ स्यात्द्वारस्यादुपलक्षणम्(3,7)
७. पूर्व पूर्वन्तु तत्रैव कर्तव्यं प्रथमं यथा(3,8)
८. सामान्योक्तस्तु सर्वत्र(3,1)
९. विशेशो नैव दृश्यते(3,10)
१०. तयोरेकत्र चाल्पस्थो विशोशो बलवान् स्मृतः(3,11)
११. पुनरुक्त यतः पच्यपदमित्युतरच्श्र वा ।(3,12)
पूर्ववद् भवति ज्ञेयं सर्वत्रापि विचक्षणैः।।
१२. आख्यानेकस्य वर्णोर्ध्वः(1,20)
१३. स्वरस्य कारोत्तरः(1,21)
१४. भवेदकारकारोर्ध्वः(1,22)
१५. अदन्तम्(1,24)
१६. ग्रहणं वा स्यात्(1,25)
१७. सन्देहे सनिधिं त्वपि(1,26)
१८. अन्वादेशावपि चेत्यधः(1,28)
१९. त्वथैवेति निवृत्तस्थो ह्याधिकारोउवधारकः(1,29)
२०. अनमाना निशेधे स्युः(1,30)
२१. वेति वैभाशिको भवेत्(1,31)

डॉ0 दानपति तिवारी
एसो0 प्रोफेसर एवं अध्यक्ष
साकेत पी0 जी0 कालेज, अयोध्या
(उत्तर प्रदेश)

19

मालती जोशी के कथा साहित्य में नारी संवेदना

सविता

सारांश –

संवेदना व्यक्ति के मन में किसी कष्ट या पीड़ा को देखकर हृदय में उपजे दुख, करुणा, शोक अथवा सहानुभूति होती है जो प्रत्येक व्यक्ति में विद्यमान होती है। हालांकि इसकी विद्यमानता में भिन्नता होती है जो पुरुष व स्त्री में दिखाईदेती है। पुरुष की अपेक्षा स्त्री की संवेदना अधिक झलकती है, क्योंकि वह अपनी जिम्मेदारी प्रत्येक क्षेत्र में बखूबी निभाने का प्रयास करती है। इसी स्त्री संवेदना से प्रभावित होकर एक लेखक अपनी रचनाओं में उसे स्थान देता है जो मालती जोशी के द्वारा भी इनकी कहानी संग्रहों में झलकती है। मालती जोशी ने अपने साहित्य में नारी को केन्द्र में रखा है। भारतीय नारी की विविध समस्याओं को अपने साहित्य का विषय बनाया है जो इस शोध–पत्र में वर्णित किया गया है।

प्रस्तावना

संवेदना का अर्थ व्यापक स्तर पर अनुभव करना, प्रकट करना अथवा जताना भी होता है जो व्यक्ति के हृदय में अनेकरूपों में उपजते हैं। प्रा. एन. बही केसरकर के अनुसार, 'संवेदना' शब्द संस्कृत की 'विद्' धातु से है जिसका अर्थ है जानना, महसूस करना आदि। 'विद' धातु से 'मन' उपसर्ग और 'आना' परसर्ग जुड़ने से संवेदना शब्द बनता है, जिसका अर्थ ज्ञात, बोध, अनुभूति, प्रतिती, सहानुभूति आदि।[1] मनोविज्ञान में संवेदना अर्थ 'Sensation' है। संवेदना मन में निहित करूणा, दया, सहानुभूति आदि उदात गुणों का सूचक है। अपने व्यापक अर्थ में संवेदना अनुभूति का भी व्यंजक रहा है।

नारी संवेदना से अभिप्राय उसके मन में उपजी अनेक समस्याओं, दुखों, कष्टों और आशाओं से है। नव परिवेश के साथ उभरते नारी जीवन की कुरुपताओं व जटिलताओं ने संवेदना के विकास में नयी दिशा दी है। इससे नारी के नए उभरते स्वरूप, वर्जनाओं से मुक्त एवं संकट से घिरी नारी जीवन का यथार्थ उभर कर आता है। स्त्री संवेदना में उसके जीवन की पीड़ाओं का मार्मिक रूप उभरता है। इस विषय में डॉ. भूमिका पटेल भी अपने विचार व्यक्त करते हैं – ''मानव हृदय के भीतर बसी हर्ष, शोक, प्रेम, वात्सल्य की अनुभूति ही संवेदना है। इन कोमल अनुभूतियों का सीधा सम्बन्ध मानव के मन से है।[2] अतः संवेदना मानव हृदयानुभूति को दर्शाता है, जिसमें नारी की भी विशेष भूमिका होती है। वह परिवार में अनेक रूपों को निभाती है। वह माँ, संरक्षिका, पोषिका, पत्नी, सहचरी, बहन और कामिनी का दायित्व निभाती है। करूणा की मूर्ति नारी इन सम्बन्धों का निर्वाह अपना ध्येय मानती है। इस स्त्री ध्येय व संवेदना को साहित्यकार देखता है, अनुभव करता है और अपनी अभिव्यक्ति का आधार बनाता है। इसी प्रकार स्त्री संवेदना की अनुभूति करने वाली मालती जोशी भी है जिन्होंने अपने उपन्यासों में मानव–मन के सूक्ष्म रूप को लबालब किया है। उनके उपन्यासों में शालीनता, सांस्कृतिक अभिरूचि एवं व्यवहारगत सौम्यता विद्यमान है। जोशी के उपन्यासों में व्याप्त मानवीय कुरूपता, अनमैलापन, मध्यवर्गीय जीवन की तृष्णा, पति–पत्नी के दाम्पत्य जीवन की राग–विराग, विरोध–अविरोध, प्रेम–द्वेष एवं लगाव–अलगाव से संपृक्त हैं। इनके उपन्यासों में रूढ़िवादि, जड़ मान्यताएं, पुरुष के अहम्, उपेक्षा, अर्थाभाव से परेशान नारी के टूटते स्वप्नों से तड़पती संवेदना को दिखाया है। इसके साथ ही प्रेम की कोमल संवेदना और जीवन के कटु यथार्थ से उत्पन्न घुटन, तनाव, टूटन को शब्दबद्ध किया है। जोशी ने कहानी संग्रहों में दाम्पत्य जीवन की कड़वाहट और हताशा एवं निराशा, नारी की बदलती चेतना, बदलती मानसिकता तथा स्वतंत्र अस्तित्व का यथातथ्य आंकलन किया है।

मालती जोशी के उपन्यास प्रेम की कोमल भावना से टूटती–बिखरती नारी जीवन से ओत–प्रोत है। उनकी कहानी 'सहचारिणी' में सुशिक्षित नीलम टूटते प्रेम का शिकार है। उसके प्रेमी योगेश से अन्तर्जातीय विवाह होता है और वह अपने पति को ऊँचे ओहदे पर पहुँचाने की भरसक कोशिश करती है। नीलम योगेश के साथ अपने आप को निढ़ाल पाती है। इसी दौरान नीलम को योगश की पूर्व पत्नी गीता एवं उसकी अवैध संतान रेणु के विषय में पता चलता है। इस दौरान पति की उपेक्षा से वह पूर्णतः बिखर जाती है। पति के सीमा के साथ अवैध सम्बन्ध नीलम सह नहीं पाती और वह योगेश से सम्बन्ध विच्छेद का कटु निर्णय लेने को बेबस हो जाती है। इससे उसकी संवेदना को बहुत ठेस पहुँचती है। इसी तरह 'राग–विराग' कहानी में कल्याणी भी प्रेम से वंचित स्त्री है। कहानी में पंडितजी से संगीत के अभ्यास के दौरान कल्याणी गुरुपत्नी के भान्जे के प्रेम में बँध जाती है। परिवार विरोध के बावजूद भी वह उसके विवाह का निर्णय ले लेती है, लेकिन विवाह उपरान्त उसे अनेक

समस्याओं का सामना करना पड़ता है। यहाँ तक कि वह एक ऐसे व्यक्ति के पीछे छिपे अनेक रूपों के विषय में सोचती है – ''मैं करूणा से आप्लावित होकर उनकी गाथा सुन रही थी। कभी सोचा भी न था कि हँसमुख व्यक्ति अपने भीतर इतने तूफान समेटे होगा।''[3]इस तरह वह अपनी संवेदना को व्यक्त करती है। ससुराल में कल्याणी को उसका अकेलापन उसे घेर लेता है और उसका सम्बन्ध संगीत से भी छूट जाता है। अंत में कल्याणी को पागल बनाकर मनोज एवं सास उसे मायके भेज देते हैं और मनोज अर्चना से मेल बढ़ा लेता है। इस तरह कल्याणी को अपने प्रेम के सम्मुख हार माननी पड़ती है। 'राग–विराग' कहानी की तरह 'मन ना भये दस बीस' में भी ऐसा ही रूप दिखाया है जिसमें रेखा को असफल प्रेम का दस्तावेज है। माँ के विरोध करने पर भी वह पदमनाथ से विवाह कर लेती है, लेकिन रेखा बाद में पछताती है और अपनी माँ के कथनों को याद करती है और कहती है, ''यही तो, माँ के लिए कभी कुछ सोचने की जरूरत ही नहीं समझी हम लोगों ने। सदा उन्हें कटघरे में खड़ा करके ही देखा है, परन्तु हमारा भविष्य सुधारने के लिए उन्होंने कितनी तपस्या की है, इसकी ओर कभी हमारा ध्यान ही नहीं जाता।''[4] इस तरह टूटते–बिखरते प्रेम से आहत नारी की मनोव्यथा को यहाँ स्पष्ट किया है।

मालती जोशी ने असफल दाम्पत्य सम्बन्ध को दर्शाकर उनकी संवेदना को दिखाया है। उनके नारी पात्र का पति द्वारा तिरस्कार और स्त्री–पुरुष के परस्पर अहम् के तहत दाम्पत्य जीवन के तनाव झेलने को विवश है। कहानी 'सहचारिणी' में पति–पत्नी के बीच तीसरे व्यक्ति के बीच हस्तक्षेप से उत्पन्न द्वन्द्वको व्यक्त किया है। सुशिक्षित नीलम को जब योगेश के अवैध सम्बन्ध का बोध होता है तो उसके सतीत्व के बावजूद भी उसका अहम् आहत होता है। उसे अपने एकनिष्ट प्रेम के बदले में तनावग्रस्त जीवन बिताना पड़ता है, जो 'राग–विराग' कहानी में भी कल्याणी की भावनाओं को भी दर्शाता है। एक नारी अपना सम्पूर्ण जीवन अपने परिवार के लिए बिता देती है। वह अपने परिवार के विरुद्ध कोई भी काम नहीं करती। पति की इच्छा ही उसकी इच्छा होती है। इससे उसके सतीत्व का बोध होता है जो मालती जोशी की कहानियों में यथार्थ रूप से मिलता है। कहानी 'समर्पण का सुख' में गीता के सतीत्व को दर्शाया है कि दब्बू प्रकृति वाले पति राजू के लिए वह क्या–क्या करती है, यह उसकी दीदी के मत से दृष्टव्य है – ''वह भी जैसे उसका हर हुक्म झेलने के लिए एक पाँव पर खड़ी रहती। साफ जाहिर था कि किसी के इशारों पर यों चौबीस घंटे नाचना उसे अच्छा लगता था। यह सब देख–सुनकर बड़ा अच्छा लगता था मुझे। कहाँ तो डर रही थी कि यह पढ़ी–लिखी लड़की इसे और भी दब्बू बनाकर रख देगी लेकिन उसने तो जैसे जादू की छड़ी फेर दी थी।''[5] इस तरह से पति के प्रति सतीत्व निभाने वाली महिलाओं की संवेदना जोशी जी ने व्यक्त की है। कहानी 'टूटने से जुड़ने तक' में भी नारी का सतीत्व रूप दिखाया है। पति के जिद्दी स्वभाव के बावजूद भी नायिका पति का साथ देती है। पति जब उसे जाने की अनुमति देता है तब उनका कथन समीचीन है कि ''चली कैसे जाती। तुम जो यहाँ बैठे रहे। सारी दुनिया से कटकर, बच्चों से तिरस्कृत होकर, नौकरों की अवज्ञा और रिश्तेदारों के उपहास के पात्र बनकर। तुम्हें इस तरह छोड़कर चली जाऊँ, ऐसी पाषाण–हृदय तो मैं नहीं हूँ।''[6] यह नारी का सतीत्व रूप होता है।

नारी ना केवल घर में ही अपनी जिम्मेदारी को निभाती है बल्कि घर से बाहर निकलकर भी अपनी जिम्मेदारी से पीछे नहीं हटती। आज महिलाएँ कामकाजी हो गई हैं। वे घर के काम के साथ–साथ अन्य काम भी करती हैं। कहानी 'मन ना भये दस बीस' की माँ नौकरी पेशा नारी की व्यथा का मूर्त रूप है। अकर्मण्य पति के नाते माँ को नौकरी सम्भालनी पड़ती है। इस बीच संतान का लगाव उनके प्रति कम हो जाता है। यही इसमें दिखाया है। जब रेखा बिना माँ की अनुमति नृत्य के प्रशिक्षण के लिए निकलती है तब माँ की व्यग्रता इस प्रकार हाती है – ''ठीक है न, पैसे कमाने की मशीन तो हूँ मैं, मुझसे और कोई रिश्ता थोड़े ही है तुम लोगों का..... अैर ये सज्जन! घर में बैठे–बैठे इतना भी नहीं देख सकते, लड़की कहाँ जा रही है?क्यों जा रही है?भरतनाट्यम् सीखेगी....।''[7] इस तरह नारी घर और बाहर दोहरी दायित्व से उद्विग्न स्वरूप है।

मालती जोशी ने अपनी कहानियों में पति के द्वारा त्यागी गई स्त्रियों का मार्मिक रूप दर्शाया है। कहानी 'ऊब' में पति के द्वारा त्यागी गई नारी की मनोव्यथा साफ जाहिर होती है। नौकरी के मार्फत पति–पत्नी लंबे अरसे तक विलग रहते हैं। यहाँ सुमन की व्यथा पर प्रकाश डालते हुए रमा कहती है–''पत्र हाथ में लेकर बड़ी देर तक सुन्न होकर बैठी रही। कैसी होती जा रही है वह, दिन–भर उसे चिट्ठी पढ़ने की याद ही न आई। पहले क्या वह क्षण भर नहीं रुक पाती थी। पत्र हाथ में आते ही कमरे में भाग आती थी वह, रसोई में होती तो आटा सने हाथों से ही खोल लेती तब कोई न कोई दया करके उसे उतनी देर की छुट्टी दे ही देता।''[8] अतः परित्यक्ता नारी की व्यग्रता यहाँ साफ जाहिर होती है। इस कहानी के साथ–साथ अनेक कहानियों में इस रूप को दिखाया है। नारी को परिवार, समाज में अनेक मान–मर्यादा को देखना, सोचना–समझना पड़ता है। उसके न चाहते हुए भी कई बार अपनी इच्छा के विरुद्ध कार्य करना पड़ता है। नारी मातृत्व की मूर्त होती है। मातृत्व नारी का पवित्र अधिकार तथा ईश्वर प्रदत्त दायित्व भी है। मातृत्व खो देने से

उपजती नारी मन की पीड़ा को दिखाया है। कहानी 'पिया पीर न जानी' में रमा की इस पीड़ा को स्पष्ट किया है। रमा की दो बेटियाँ रसिका और लतिका है, लेकिन उसके पति बेटे की इच्छा रखते हैं और रमा को इसके लिए कहते हैं तब रमा भी दो एबार्सन कराने से दुखी हो कर सोचती है – ''इस पत्थर दिल इंसान के लिए मैंने रसिका के बाद वाली दोनों कन्याओं का गर्भ में ही गला घोंट दिया था।''[9] इस तरह रमा को अपनी सास की भी बातें सुननी पड़ती – ''बेटे की इस अकर्मण्यता के लिए अम्मा जी मुझे ही कोसती कहती एक लक्ष्मी घर में आती है तो घर भर देती है। एक ये आती है कि पुरखों की जायदाद भी बिकवा दी।'' अतः रमा के समान नारी के ममत्व रूप को अनेक कहानियों में देख सकते हैं। कहानी 'पिता' में सुम्मि और निम्मि की माँ बेटा न होने पर अनेक कष्ट झेलती है – ''दूसरी बेटी पैदा करने के अपराध में उन्होंने मम्मी को जो अमानुषिक यातनाएँ दी हैं मुझे सिर्फ वही याद हैं।''[10] इस तरह जब बेटी को बेटा हो जाता है तो माँ बहुत खुशी होती है और सोचती है – ''कम से कम बेटी जानने का दोष तो तुझ पर नहीं लगेगा और मैं भी एक तरह से बरी हो गई, नहीं तो कहने को हो जाता है, माँ की कोख में भी बेटियाँ ही थी। बेटी भी इतिहास दोहरा रही हैं।''[11] इस तरह 'मोहभंग' कहानी में भी गिरीश की दो पुत्रियाँ होने पर उसकी बहन भाभी को एक बार फिर गर्भ धारण करने को कहती है। अतः नारी की विवशता के माध्यम से कहानियों में उनकी संवेदना को दर्शाया है।

आधुनिक नारी सदा अपना स्वत्व बनाये रखने के प्रयास में लगी रहती है, किन्तु नारी की इस प्रबल कामना की उपेक्षा वैवाहिक जीवन में दरार पैदा करती है। मालती जी के 'सहचारिणी' और 'राग–विराग' में नारी अस्मिता का सम्यक परिपाक हुआ है। कहानी 'पिया पीर न जानी' में भी इसी रूप को दिखाया है कि स्त्री भी आगे बढ़ना चाहती है। वह भी कुछ करना चाहती है। यह गुड़िया के रूप में दृष्टव्य है, – ''गुड़िया तेरे चाचा तुझे डॉक्टर बनाना चाहते थे, पर मैं क्या बनना चाहती थी यह मुझसे कभी नहीं पूछा गया।''[12] इस कहानी के साथ–साथ नारी अस्मिता को दिखाया है। मालती जी ने नारी के संवेदनात्मक रूप का कोई भी पक्ष छोड़ा नहीं है। इन्होंने नारी की हीन भावना को भी कहानियों में दर्शाया है। कहानी 'पटाक्षेप' में कुरूप पद्मा अपनी देवरानी छवि के सम्मुख हीनता महसूस करती है। छवि का सलोना तेवर उसे सदा सालती रहती है। इस संदर्भ में पद्मा का कथन दृष्टव्य है – ''अपने को संवारने की कोशिश में देर तक शीशे के सामने बैठी रही और वह कम्बख्त चीख–चीखकर कहता रहा, छवि बहुत सुन्दर है, तुमसे दस गुना, हजार गुना सुंदर है।''[13] छवि के रूप–लावण्य पर रिश्तेदार एवं पड़ोसवाले के व्यंग्यबाण पद्मा में ईर्ष्या जताती है और पद्मा कुरूपता के मार्फत अपने को तनावग्रस्त स्थिति में पाती है।

मालती जोशी ने नारी के संवेदनात्मक रूप में उसकी रूढ़िवादि परम्परा को भी दर्शाया है कि किस तरह नारी को रूढ़िवादिता को अपनाना पड़ता है। ना चाहते हुए भी उसे परिवार के अनुसार चलना पड़ता है। उसकी इच्छा का कोई भाव नहीं होता। कहानी 'पिया पीर न जानी' में रमा रूप में इस संवेदना को दर्शाया गया है। जब उसका रिश्ता तय किया जाता है तो उससे पूछा भी नहीं जाता। माँ बुआ से कहती है – ''तुम तो बाप पक्की कर दो। रमा से तो पूछ लो, अरे! उससे क्या पूछना।''[14] अतः रमा के समान अनेक नारी रूप को यह सब सहन करना पड़ता है। कहानी 'पटापेक्ष' में भी यह रूप देख सकते हैं। 'परम्परा' कहानी में परम्परागत चिंतन व्यवहार से उभरते तनाव को दर्शाया गया है। कहानी की अम्मा मृत पति की इच्छा का पालन करते हुए परम्परा निसृत जीवन बिताती है, परन्तु रिश्तेदार एवं बेटे के विरोध के सम्मुख उसे सिर झुकाना पड़ता है। यहाँ अम्मा की मजबूरी पर बेटी का मत सार्थक है – ''उसका कोई स्वतन्त्र अस्तित्व ही नहीं है, वह हमेशा से पुरुष के अधीन रही है, चाहे वह पिता हो या पति हो या बेटा। यही उसकी नियति है, यही त्रासदी है और यही परम्परा है।''[15] यहाँ रूढ़िवादी परम्परा में रहने को लाचार नारी मन का द्वन्द्व साफ दिखाई देता है। जब बेटी माँ के स्वालंबन की बात करती है कि अपनी मनमर्जी क्या होती है यह तो बेटी हमने जाना नहीं। बचपन में अपने बाबूजी की कमान में रहे। उनकी हर बात सर्वोत्तम होती उसके बाद पति की आज्ञानुसार चल रहे हैं। अतः परम्परा निसृत समाज में रूढ़िवादी व्यवस्था की शिकार नारी मन का अन्तर्द्वन्द्व माँ में हुआ है। 'अनिकेत' कहानी में स्त्री द्वारा भारतीय संस्कृति और परम्पराओं को हेय दृष्टि से देखती है। मालती जी का संवेदना क्षेत्र व्यापक रहा है। उनका टूटते प्रेम से आहत नारी की मानसिकता 'सहचारिणी' की 'नीलम', 'राग–विराग' की कल्याणी, 'मन ना भये दस–बीस की रेखा' 'समर्पण का सुख' की गीता, 'बहुरि अकेलि की' अंजू में दिखाया है। अधिकांश महिला की अनाम पीड़ा, उसके जीवन की सुरक्षा और उसके मर्म की पड़ताल करने से ये अत्यंत विचारोतेजक और आंतरिक करूणा से भर गई हैं। हमेशा से ही स्त्रियों का यह स्वभाव रहा है कि वह हर अनुचित बात को भी चुपचाप सह जाती हैं, पर यह भी सच है कि समय के साथ–साथ उनकी मानसिकता भी बदली है। कहानी 'विषपायी' 'बहुत दूरियाँ हैं मेरे आस–पास' में बीणा विभिन्न रुकावटों के बाद भी अपनी पढ़ाई करती है। साथ ही वह अपनी जिम्मेदारियाँ निभाती हैं जो आमतौर पर एक पुत्र ही निभाता है।

मालती जोशी की लेखन शैली आम बोलचाल सी लगती है। कहानियों का विषय और कही गयी बातें बेहद गम्भीर हैं।

कहानियों में स्त्री के जीवन और उनके मनोभावों को इतनी अच्छी तरह वर्णित किया है। जो लोग कहते हैं कि स्त्रियों के मन को समझना मुश्किल है, उन्हें मालती जी की कहानियाँ पढ़नी चाहिए। ये स्त्री के पक्ष या उनके गुणों तक ही सीमित नहीं रहती बल्कि स्त्रियों के स्वभाव में आने वाले पक्षपात और गलतफहमियों को भी बखूबी सामने लाती हैं। इस तरह जोशी जी नारी की पक्षधर लेखिका रही हैं। नारी के अंतरंग की उन्हें गहन पहचान है। नारी के अन्तर्द्वन्द्व, तनाव, घुटन तथा मूक पीड़ा को व्यंजित करते हुए अधिकांश कहानियों में संवेदना को वर्णित किया है। विशेष रूप से विधवा (सती), बांझ (ममता तू न गई मोरे मन तै), कलंकिता (कलंक), परित्यक्ता (यथार्थ के आगे), अनब्याही (यातनाचक्र), कमाऊ स्त्री (बोल री कठपुतली), दहेज पीड़िता (छोटी बेटी का भाग्य) आदि नारी की घनीभूत पीड़ा को उद्‌भासित करते हुए इन कथानकों में संवेदनात्मक पुट उतर आया है, जो नारी के प्रत्येक संवेदनात्मक रूप को दर्शाता है।

संदर्भ सूची

1. डॉ. एन.जी. दोडगौडर, डॉ. डि.बी. पांडे, हिन्दी साहित्य में नारी संवेदना, पृ. 20
2. डॉ. भूमिका पटेल, मन्नु भंडारी का कथा साहित्य : संवेदना और शिल्प, पृ. 25
3. मालती जोशी, विश्वासगाथा, पृ. 68
4. वही, पृ. 27
5. मालती जोशी, समर्पण का सुख, पृ. 103
6. मालती जोशी, मध्यान्तर, पृ. 19
7. मालती जोशी, मन ना भये दस–बीस, पृ. 11
8. मालती जोशी, एक सार्थक दिन, पृ. 91
9. मालती जोशी की सर्वश्रेष्ठ कहानियाँ, पृ. 44
10. वही, पृ. 52
11. वही, पृ. 53
12. वही, पृ. 59
13. मालती जोशी, पटाक्षेप, पृ. 11
14. मालती जोशी की सर्वश्रेष्ठ कहानियाँ, पृ. 50
15. मालती जोशी, बाबुल का घर, पृ. 111

सविता

शोधार्थी

बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय

अस्थल बोहर, रोहतक।

20

प्राकृतिक आपदाएं : कितनी प्राकृतिक, कितनी मानवीय

डॉ0 निभारानी

सारांश

सभी आपदा मनुष्य के द्वारा उत्पन्न माने जा सकते हैं। क्योंकि कोई भी खतरा विनाश में परिवर्तित हो, उससे पहले मनुष्य उसे रोक सकता है।सभी आपदाएं मानवीय असफलता का परिणाम है।मानवीय कार्य से निर्मित आपदा, लापरवाही, भूलया व्यवस्था की असफलता मानव – निर्मित आपदा कही जाती है।एक प्राकृतिक आपदा जैसे ज्वालामुखी विस्फोट या भूकंप भी मनुष्य के सहभाभिता के बिना भयानक रूप नहीं धारण करते हैं यही कारण है कि निर्जन छेत्रों में प्रबल भूकंप नहीं आता है।

आपदा प्राकृतिक व मानव निर्मित जोखिम का मिलाजुला प्रभावहै।आपदा शब्द ज्योतिष विज्ञान से आया है, इसका अर्थ यह है कि जब तारे बुरी स्थति में होते हैं तब बुरी घटनाएं घटती हैं।भारत जैसे विकासशील देश आपदा प्रबंधन की आधारभूत संरचना विकसित न होने का भारी मूल्य चुकाते हैं। जब जो खिम और दुर्बलता दोनों का मिलन होता है, तब दुर्घटनाएं घटती हैं।जिन इलाकों में दुर्बलताएं निहितना हों वहां पर प्राकृतिक जोखिम कभी भी आपदा में तब्दील नहीं हो सकता है। जैसे ज्वालामुखी, भूकंप या भूस्खलन जो कि मानव गतिविधियों को प्रभावित करता है।मानव की भागीदारी के बिना घटनाएं अपने – आप जो खिमया आपदा नहीं बनती हैं।प्राकृतिक जोखिम किसी ऐसी घटना के घटने की संभावना को कहते हैं जिससे मनुष्यों अथवा पर्यावरण पर नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है।कई प्राकृतिक खतरे आपस में संबंधित हैं जैसे भूकंप सुनामी ला सकते हैं, सूखा सीधे तौर पर अकाल और बीमारियां पैदा करता है।खतरे और आपदा के बीच का विभाजन का एक ठोस उदहारण यह है कि १९०६ में संत फ्रांसिस्को में आए भूकंप एक आपदा थी, जबकि कोई भी भूकंप एक तरह का खतरा है।परन्तु भविष्य में घट सकने वाली घटना को खतरा कहते हैं और घट चुकीया घट रही घटना को आपदा।

उत्तरा खंड में घटी आपदा दैवीय, प्राकृतिक आपदा ना होकर मानव – निर्मित हैं। मानव ने अपने विकास के लिए एवं भौतिक जरूरतों को पूरा करने के लिए पृथ्वी पर कई तरह के कार्य किए हैं।जैसे विकास परियोजनाओं से बड़े बांधों आदि से सीधा संबंध है।हिमालय जो कि जल का स्त्रोत एवं भंडार है। चार करोड़ वर्ष पहले का ये पहाड़ कभी इतने गुस्से में था?

क्या हजार वर्ष से पहले का केदारनाथ धाम आज की स्थति में कभी रहा? क्या इससे पहले भी नदियां, कभी इतनी आक्रोशित हुई थीं? विकास के लिए पहाड़ों की छाती पर चौड़ी सड़कें बनाना उचित था? पहाड़ों के पेट में बारूद भरकर उसे तोड़ते समय लोगों ने ये जानने की कोशिश की, कि पहाड़ों में प्राकृतिक आपदाओं कोरोकने की क्षमता है? नदियों का स्वाभाविक मार्ग बदलने सेनदियां खामोश रहेंगी? जिस हिमालय को ऐशिया कावॉटर टावर कहा जाता है, वहांकी नदियां क्या लोभियों, धन पशुओं की कुत्सित, लीला को चुपचा पदे खती रहती?

उत्तराखंड में भीषण तबाही का मुख्य कारण है कि उत्ताखण्ड ठेकेदारों, माफिया, कॉर्पोरेतारों, नौकरशाहों और बिल्डरों के हवाले है, जिन्होंने ने मिल जुलकर पहाड़ों को नंगा किया, उनकी भौगोलिक संरचना से खिलवाड़ किया, वनों की निर्ममता पूर्व क कटाई की, नदियों को बांधा, बड़ी बड़ी जल परियोज नएं लागू कीं।

उत्तराण्ड आपदाओं को इस अर्थ में तो सही प्राकृतिक कहा जा सकता है कि विज्ञान अब तक हमें इनसे निपटने में समर्थ नहीं बना पाया है, फिर भी इस तरह की आपदाओं में योग देने वाले अनेक कारक मानव निर्मित होते हैं।प्राकृतिक आपदाएं, मनुष्य के नियंत्रण के बाहर अवश्य हैं लेकिन आपदाएं मानव निर्मित गतिविधियों का ही परिणाम होती है, लेकिन बहुत सी प्राकृतिक आपदाएं प्रकृति के सामान्य हिस्सा होती हैं।

मिसाल के तौर पर बादल फटने की नौबत तब आती है, जब गरम तथा नम हवा पहाड़ों में ऊपर उठती है और गरजनमय बादलों की रचना करती है। पर्यावरण में आ रही विकृति के चलते ऊपर बहने वाली हवाएं बहुत कम हो गईं हैं, वरना ये हवाएं इन गरजते बादलों को बिखेरने का काम कर सकती थी। परिणाम स्वरूप बादल फटने की घटनाएं बढ़ रही है। वनों के विकास के जगह विनाश, अवैज्ञानिक तरीके से नदियों पर बांध बनाए जाने एवं पत्थर व रेती के अंधाधुन खनन ने उत्तराखंड में एक घातक मिश्रण तैयार कर दिया है, जो ऐसी आपदाओं के लिए जिम्मेदार है।प्रकृति से खिलवाड़ का नतीजा है कि आज पूरी जीव सृष्टि को प्राकृतिक आपदाओं का सामना करना पड़ रहा है। भूकंप, बाढ़, जवालामुखी का फटना, सुनामी, बदल फटना, चक्रवात, तूफान, आदि ऐसी प्राकृतिक आपदाएं हैं जिनसे धरती की जीव सृष्टि त्रस्त है। मानव

एवं प्राकृतिक कारणों से होने वाले दुष्प्रभाव यदि चरम सीमा पर पहुंच जाती है तथा यह दुष्प्रभाव मानव एवं प्रकृति के लिए असहनीय हो जाए और उन्हें नष्ट करने लगे तो वह प्रकोप में बदलने लगती है।प्राकृतिक आपदाओं के कारण कुछ तो मानव सरजित हैं और कुछ प्रकृति के नियमों के अनुसार है। जिन्हें रोका नहीं जा सकता, क्योंकि प्रकृति सृजन भी करती है और विनाश भी। प्रकृति से खिलवाड़ का यह नतीजा है के आज धरती पर पूरी जीव सृष्टि को प्राकृतिक आपदाओं का सामना करना पड़ रहा है। प्राकृतिक आपदाओं से मानव जीवन तो प्रभावित होता है साथ ही अन्य जीवन सृष्टि को भी उसके गंभीर परिणाम भुगतने पड़ते हैं।

कुछ दशकों में प्राकृतिक आपदाएं काफी बढ़ी हैं जिसका मुख्य कारण मानव का प्रकृति के साथ खिलवाड़ है। हमने जंगलों का विनाश किया है, पहाड़ों को नष्ट किया है, खनन कर धरती को खोखला कर दिया है, प्रदूषण फैलाकर जमीन, जल और हवा को दूषित कर दिया है। इन सभी कारणों कि वजह से प्रकृति का संतुलन बिगड़ा है जिसका परिणाम प्राकृतिक आपदाओं के रूप में हमें भुगतना पड़ रहा है।हम इंसानों की वजह से ही फैलने वाली प्राकृतिक आपदाएं ज़्यादातर आती हैं। क्योंकि इसी प्रदूषण की वजह से हमलोगों को हानि पहुंच रही है जो आगे चलकर एक भयानक रूप ले सकती है। हम लोगों ने अगर वक़्त रहते प्रदूषण को नहीं रोका तो आगे चलकर इस प्रदूषण की वजह से बढ़ने वाली प्राकृतिक आपदाएं और ज़्यादा बढ़ सकती है।

प्रकृतिकी अवहेलना जबजबहोगी, तब तब मैं विकराल रूप धारण करूंगी।

ना संभल पाओगे तुम मेरे बिन, सांस हूं मैं तुम्हारी।

रक्षा करो अपनी सांसों की,

यही है प्रकृति तुम्हारी जीवन दायिनी मां।

प्राकृतिक आपदा मानव जाती के द्वारा प्रकृति के विरूद्ध किए गए कार्य हैं। जब जब प्रकृति त्रस्त होती है तब तब वह अपना विकराल रुप धार करती है।

मानव अपने भौतिक सुखों की आसक्ति में प्रकृति का तिरस्कार करने लगा था, कि प्रकृति को अपनी व्यवस्था खुद करनी पड़ी।प्रकृति हमें छोटे– छोटे रूपों में समझाती रहती है। लेकिन हम सचेत नहीं होते और किसी ना किसी रूप में प्रकृति को नुक़सान पहुंचाने में पीछे नहीं रहते हैं। प्रकृति जीवनदायिनी है और जब जीवनदायिनी को कष्टों से गुजरना पड़े, तब वो विकराल रूप धारण करती है। मानव के अतिरिक्त कोई भी जीव प्रकृति को उतना क्षति नहीं पहुंचता है जितना कि मानव को आवश्यकता है। ईश्वर ने मानव को को एक ऐसी अधबुध शक्ति दी है जिसे हम बुद्धि कहते हैं लेकिन उसका सदुपयोग हम कम करते हैं और दुरुपयोग अधिक।प्राकृतिक आपदाएं होते तो प्रकृति के द्वारा हैं और कहीं ना कहीं इंसान भी उन प्राकृतिक आपदाएं के कारण बन रहे है –

प्रकृति की रचना में अजीब है इंसान को प्रकृति मूलस्वरूप प्राकृतिक आपदा आती है।प्रकृति हमें छोटे– छोटे रूपों में समझाती रहती है। लेकिन हम सचेत नहीं होते और किसी ना किसी रूप में प्रकृति को नुक़सान पहुंचाने में पीछे नहीं रहते हैं। प्रकृति जीवनदायिनी है और जब जीवनदायिनी को कष्टों से गुजरना पड़े, तब वो विकराल रूप धारण करती है। मानव के अतिरिक्त कोई भी जीव प्रकृति को उतना क्षति नहीं पहुंचता है जितना कि मानव । ईश्वर ने मानव को एक ऐसी अद्भुद शक्ति दी है जिसे हम बुद्धि कहते हैं लेकिन उसका सदुपयोग हम कम करते हैं और दुरुपयोग अधिक।प्राकृतिक आपदाएं होते तो प्रकृति के द्वारा हैं और कहीं ना कहीं इंसान भी उन प्राकृतिक आपदाओं के कारण बन रहे है –

प्रकृति की रचना में अजीब है इंसान ,

जो प्रकृति मूलस्वरूप को बदलता है,

नदियों को प्रदूषित करता रहता है

जिसके फलस्वरूप प्राकृतिक आपदा आती है।

पर्यावरणविद् का मानना है हमने अपनी अंधाधुन प्रगति की चाह में जिस प्रकार पहाड़ों को काटा है उनपर चलने के लिए सड़कें बनाईं है उससे पहाड़ों पर खलबली मच गई है । पहाड़ों पर सदियों से जमे हुए पत्थर, पेड़ और मिट्टी अपनी जड़ों से उखड़ गई है। यही कारण है कि कोई भी प्राकृतिक तूफान आता है तो भयंकर विनाश छाजाता है। ये सब मानव की करतूत है। हम प्रकृति को छेड़ेंगे तो प्रकृति अपने हिसाब से हमेंछोड़ेगी नहीं।

वृक्ष प्रकृति का है श्रृंगार,

उनको क्यों काट रहा है इंसान, नष्ट इसे करके अपने ही पांव पर,

कुल्हाड़ी क्यों मार रहा है इंसान।

आपदा के समय हमें गांधी जी के शब्दों का स्मरण करना होगा कि पृथ्वी के पास प्रत्येक व्यक्ति की जरूरतों को पूरा करने के लिए सभी कुछ है मगर ये किसी का लालच पूरा नहीं कर सकती है। विलासितापूर्ण जीवन से बचाव के साथ साथ हमें प्रकृति का संरक्षण करते हुए उससे अपना दोस्ताना रिश्ता भी कायम करना होगा।

निष्कर्ष:–

आज इंसानों ने काफी प्रगति करली है।अपने घरों को बनाने के लिए जमीन को खोद खोदकर खोखला कर रहें हैं।अपनी सुविधा के लिए नदियों से बालूनि काल के रहे हैं जिस सेन दियां सुख रहीं हैं।सुख सुविधाओं के तमाम साधन हमने बना लिए हैं लेकिन किस कीमत पर? शायद प्रकृति के कीमत पर , क्योंकि हमने बीते १३० सालों में

जितना प्रकृतिका दोहन किया है उतना कभी नहीं किया।

प्रकृति के दिल दहलाने वाली लीलाओं और उसके रौद्र रूप से लड़ना आसान नहीं होता, लेकिन ये अपने पापों का फल मानने के बजाए अपने रोज के जीवन में प्रकृति से छेड़छाड़ कर रहे हैं।आपदाओं के लिए सिर्फ प्रकृति को जिम्मेदार ठहराने के बाजाए अपनी जिम्मेदारी समझनी चाहिए।इनसे होने वाले नुकसान को कैसे कम किया जाए, इसके लिए राजनेताओं पर दबाव बनाना चाहिए औद्योगिकरण के नाम पर पर्यायवरण को नुक्सान पहुंचाना बंद करना चाहिए।इनसे संबंधित नियमों का कड़ाई से अनुपालन करना चाहिए।हम चाहें तो आने वाले खतरों सेखुद को बचा सकतेहैं और अगर ना चाहें तो बड़े खतरों को आमंत्रित कर सकते हैं, तबाही या निर्माण, फैसला हमें खुद करना है।

डॉ. निभा रानी
सहायक प्रोफेसर
आर.के.डी.एफ यूनिवर्सिटीज,
रांची (झारखण्ड)
पता – ५०४ ।, विमल शयाम विहार,
अपोजिट इस.बी. आई बैंक,
पुंदाग, रांची – ८३४००४

21

वैदिक भाषा मे अभिनिधान

डॉ0 दिनेश मणि त्रिपाठी

सारांश

स्वर के व्यवधान से रहित व्यञ्जन संयोग कहलाता हैं। संयुक्त व्यञ्जनों का उच्चारण करना कठिन होता हैं। उच्चारण की इस कठिनाई को ध्यान में रखते हुए प्राचीन ऋशियों ने संयुक्त व्यञ्जनों के उच्चारण के लिए कतपय विशिश्ट विधान किये हैं। ये उच्चारण–वैशिश्टय प्राचीन ऋशियों के ध्वनिविज्ञान–विशयक सूक्ष्म चिन्तन को घोतित करते हैं। इन उच्चारण–वैशिश्टयों को यहॉ प्रस्तुत किया जा रहा है।–

अभिनिधान शब्द 'अभि' तथा ' नि' उपसर्ग–पूर्वक 'धा' धातु से निश्पन्न हुआ हैं। इसका अर्थ है– समीप में रखना। अभिनिधान संयुक्त वर्णो का उच्चारण–वैशिश्टय है। सभी प्रतिशाख्यों तथा शिक्षा– ग्रन्थों में इसका प्रतिपादन किया गया है। चतुरध्यापिका में अभिनिधान का लक्षण तथा उसके स्थलों का निर्देश किया गया है। इसमें उसके लिए 'आस्थापित' संज्ञा का प्रयोग किया गया है।

चतुरध्यायिका के अनुसार व्यञ्जन का विधारण पृथक्करण अभिनिधान है और अभिनिधान ध्वनि दबी हुई, दुर्बलतर तथा श्रास–नाद से हीन होती है। तात्पर्य यह है कि दो समीपवर्ती संयुक्त व्यञ्जनों में प्रथम व्यञ्जन का द्वितीय व्यञ्जन व्यञ्जन से कुछ पृथक् करके तब उस प्रथम व्यञ्जन की ध्वनि को कुद दबाकर उसका अस्पश्ट उच्चारण करना अभिनिधान कहलाता है।

अभिनिधान के उच्चारण वैशिश्टय को अच्छी प्रकार समझने के लिए संयुक्त व्यञ्जनों के स्वरुप का ज्ञान अत्यावश्यक है। इसके बिना अभिनिधान को नही समझा जा सकता । अतः संयोग का लक्षण यहॉ प्रस्तुत है।

चतुरध्यायिका कें अनुसार स्वरों से अव्यवहित व्यञ्जन संयोग कहलाता है। तात्पर्य यह है कि दो या अधिक ऐसे व्यञ्जन संयोग कहलाते हैं जब उनके बीच में कोई स्वर न हो।

अभिनिधान मुख्यतः स्पर्श–वर्णो से सम्बन्धित है, अतः प्रसगवशात् स्पर्श–वर्णो के उच्चरण को समझ लेना चाहिए। स्पर्श–वर्णो के उच्चारण मे मुख के अन्दर तीन क्रियाएँ होती हैं–(1) प्रतमतः बाह्य प्रयत्न द्वारा विकृत वायु का मुख में आना (2) पुनः स्थान पर करण के द्वारा स्पर्श होने के कारण मुख में वायु का रुकना तथा (3) स्थान और करण का अलगाव होने पर वायु का बाहर निकल जाना । स्पर्श–क्रिया के बाद स्थान तथा करण के अलग होने पर वायु के बाहर निकल जाने की प्रक्रिया को 'स्फोटन' या 'उन्मोचन' कहा जाता है। स्फोटन होने के लिए स्पर्श होने के बाद स्थान तथा करण का अलगाव होन आवश्यक है, जिससे वायु स्फुटित होकर बाहर निकल सके। स्थान और करण का स्पर्श होने के कारण जब तक वायु मुख में रुकी रहती है तब तक ध्वनि सुनाई नहीं पड़ती । ज्योंहि स्पर्श–क्रिया के समाप्त होने पर स्थान और करण का अलगाव होता हैं त्यों ही ध्वनि सुनाई पड़ जाती है। जिसे स्पर्श वर्ण के उच्चारण में उपयुक्त तीनों प्रक्रियायें होती हैं, उसका उच्चारण पूर्णरुपेण होता है तथा जिस स्पर्श के उच्चारण में अन्तिम प्रक्रिया नहीं होती, उसका उच्चारण अपूर्ण होता है।

स्पर्श–वर्णो का पूर्ण उच्चारण इन तीन स्थितियों में होता हैं–

1 जब स्पर्श–वर्ण का अकेले उच्चारण होता है। जैसे– क, ख, इत्यादि।

2 जब स्पर्श–वर्ण के बाद में अन्तःस्थ या उश्म–वर्ण आते हों । जैसे–क्य्, क्श् इत्यादि।

3 जब स्पर्श–वर्ण के बाद में स्वरवर्ण आता हो। जैसे–राम, भवन इत्यादि।

प्रथम दो स्थितियों में स्पर्श–वर्णो का अस्पश्ट तथा तीसरी स्थिति में स्पश्ट उच्चारण होता है। इसके विपरीत स्पर्श–वर्णो के अपूर्ण उच्चारण की दो स्थितियॉ है–(1) स्पर्श–वर्ण बाद में आने पर प्रथम स्पर्श का अपूर्ण उच्चारण होता है, क्योकि प्रथम स्पर्श के उच्चारण में उच्चारणावयव स्पर्श को प्राप्त करते हैं तथा उसके तुरन्त बाद दूसरे स्पर्श–वर्ण के उच्चारण के लिए तैयार हो जाते हैं, जिससे दोनों स्पर्श–वर्णो के बीच में स्फोटन नहीं होता। परिणास्वरुप पूर्ववर्ती स्पर्श–वर्ण का उच्चारण नहीं होता। (2)पदान्तीय स्पर्श–वर्णो का उच्चारण अपूर्ण होता है। इन दोनों परिस्थितियों में स्पर्श–वर्ण का उच्चारण अस्पश्ट होता है।

अभिनिधान के उच्चारण में दो स्थितियॉ होती हैं–(1) प्रथम स्पर्श को द्वितीय स्पर्श से पृथक् करना तथा (2) उस प्रथम स्पर्श को दबाकर उसका अस्पश्ट उच्चारण करना। अभिनिधान संयुक्त व्यञ्जनों के नियम के विपरीत हैं। संयुक्त व्यञ्जनों के उच्चारण में एक व्यञ्जन का उच्चारण का उच्चारण करने के तुरन्त बाद दूसरे व्यञ्जन का उच्चारण होता हैं, किन्तु अभिनिधान में एक व्यञ्जन के उच्चारण के बाद थोडस रुकका दूसरें व्यञ्जन का उच्चारण होता हैं। इस प्रकार अभिनिधान वाला व्यञ्जन संयोग असंयुक्तवत् उच्चारित होता है।

इस प्रकार यह स्पर्श होता है कि अभिनिधान में संयुक्त–व्यञ्जनों के सामान्य स्वरुप से उनका असंयुक्त उच्चारण किया जाता है। इसमें प्रथम संयुक्त व्यञ्जन असंयुक्त हो जाता है और वह अपूर्ण व्यञ्जन के समान उच्चारित होता है। अभिनिधान के द्वारा संयुक्त–स्पर्श वर्णो के स्वाभाविक अपूर्ण उच्चारण को पूर्ण करने का प्रयत्न किया जाता हैं अभिनिधान में प्रथम स्पर्श का उच्चारण करने के बाद थोडा रुककर पुनः उस स्पर्श वर्ण को दबाकर उसका अस्पश्ट उच्चारण किया जाता है, ऐसा होना स्वाभाविक ही है, क्योंकि अकेले स्पर्श–वर्ण के उच्चारण में कम समय लगता है। इस प्रकार अभिनिधान वह व्यवधान है जिसके द्वारा दो संयुक्त स्पर्शो में से परवर्ती स्पर्श से पूर्ववर्ती स्पर्श को पृथक् करते हुए उसके अपूर्ण तथा अस्पश्ट उच्चारण को पूर्ण तथा स्पष्ट बनाने का प्रयत्न किया जाता है।

चतुरध्यायिका के अनुसार निम्न स्थलों पर अभिनिधान होता है–

(१) स्पर्श–वर्ण से बाद मे स्पर्श वर्ण होने पर अभिनिधान होता है। तात्पर्य यह है कि यदि स्पर्श से बाद में स्पर्श हो तो पूर्ववर्ती स्पर्शवर्ण को परवर्ती स्पर्शवर्ण से अलग करके तथा थोड़ा दबाकर उच्चारित किया जाता हैं। जैसे–'मरुद्भिः' अ0सं0 २२६.४यहॉ दकार और भकार इन दो स्पर्श–वर्णो का संयोग है। अतः पूर्ववर्ती स्पर्श दकार को भकार से अलग करके तथा थोड़ा दबाकर उच्चारित किया जाता है। भाश्यकार डॉ. पाठक के अनुसार वर्गानुक्रम से स्पर्श वर्णो के संयोग के स्थल पर ही अभिनिधान होता है। वर्ग विपर्यय वाले स्पर्शो के संयोग के स्थल पर ता स्फोटन करना चाहिए।

(२) पद के अन्त में विद्यमान अथवा सावग्रह–पद के पूर्वपद के अन्त में विद्यमान स्पर्श का अभिनिधान होता है। तात्पर्य यह है कि जब कोई स्पर्श–वर्ण पद के अन्त में आये अथवा अवग्रह युक्त पद के पूर्वपद के अन्त में आये तो उसका उच्चारण अभिनिधानपूर्वक होता है। जैसे–(१) 'तान् ओ यो देवानाम्' अ0स0 ११.१.४। (2) ' अप्सु' अ0स0 १.६.२द्ध । यहॉ प्रथम उदाहरण में तान् का नकार पदान्तीय है तथा द्वितीय उदाहरण में पकार सावग्रह पद 'अपस्सु' के पूर्वपद 'अप्' के अन्त में विद्यमान है। अतः प्रथम उदाहरण में नकार तथा द्वितीय उदाहरण में पकार का अभिनिधान होता है।

(३)जब लकार के बाद में उश्म–वर्ण आता है तो लकार का अभिनिधान होता है। जैसे–(११)'शतवल्शा' अ0स0 ६.३0.2 । (२) 'बल्हिकान्' अ.स. ५.२२.१इन उदाहरणों में ल् के बाद क्रमशः श् तथा ह् है। अतः पूर्ववर्ती लकार का अभिनिधान होता है।

(४) यदि डकार, शकार अथवा नकार के बाद में हकार हो तो पूर्ववर्ती डकार, णकार तथा नकार का अभिनिधान होता है। जैसे –(१)'प्रत्यड़ हि' अ0स0 ४.१६.७(२) 'किमीन् हन्तु' अ0स0 २.३२.१प्रथम उदाहरण में डकार के बाद तथा द्वितीय उदाहरण में नकार के बाद हकार है। अतः प्रस्तुत विधान के अनुसार क्रमशः पूर्ववर्ती डकार तथ नकार का अभिनिधान होता है।।

सन्दर्भ–ग्रन्थ

१ आस्थापितं च। –(अ0च0 १.२७)

२ व्यञ्जनविधारणमभिनिधानः पीडितः सत्रतरो हनीश्रासनादः। –(अ0च0 १.२.२.)

३ व्यञ्जनान्सव्यवेतानि स्वरैः संयोगः। –(अ0च0 १.२.३.)

४ स्पर्शस्य स्पर्शगभिनिधानः। –(अ0च0१.२.३.)

५ द्रश्टव्य–(च0अ0 १.२.३. तथा ३.१.३८)

६ पदान्तावग्रहयोक्ष। –(अ0च0 १.२.४)

७ लकारस्योश्मसु। –(अ0च0१.२.४)

८ डणनानां लकारेः। (अ0.च0 १.२.४)

डॉ0 दिनेश मणि त्रिपाठी
(प्रधानाचार्य)
एल0 पी0 के0 इण्टर कॉलेज
सरदार नगर, बसडिला
(गोरखपुर) उ0 प्र0

22

झारखंड में लुप्त होती जा रही भाषिक संस्कृति को संजोने में वंदना टेटे का योगदान

जया जेसवाल

सारांश

भारत विविधता वाला देश है जहां भारत देश में सभी एक साथ रहते हैं। वह किसी भी धर्म जाति या संप्रदाय के हो। उसी प्रकार झारखंड क्षेत्र भी अनेक भाषिक, संस्कृति एवं धार्मिक समूह की एकजुटता से ही पहचाना जाता है। साथ ही साथ जहां वंचित वर्ग दलित समुदाय और उपेक्षित अस्मिताओं की भरमार । जिस पर अनेक ही साहित्यकारों ने अपना योगदान दिया है पिछले दो दशक में हिंदी साहित्य में नई प्रवृतियां दिखाई दे रही है जिसे हम अस्मितावादी साहित्य कहते हैं। जिसमें स्त्री विमर्श, दलित साहित्य और पिछड़े डेढ़ दशकों से आदिवासी साहित्य भी चर्चा का विषय रहा है ।जिसमें आदिवासी अपनी अस्मिता के लिए साहित्य की रचना कर रहे हैं। क्योंकि आदिवासी साहित्य कितना पुराना है यह नहीं कहा जा सकता यदि हम उसके इतिहास की बात करें तो इसे तीन रूपों में देख सकते हैं–

- मौखिक साहित्य
- आदिवासी भाषाओं के साहित्य लेखन
- समकालीन हिंदी भाषा में लेखन.

जैसा कि हम जानते हैं पहले लोग पढ़े–लिखे नहीं होते । जिसके कारण वह अपनी कहानियों या अपनी भावनाओं को लिख नहीं सकते थे । अतः वे अपनी आने वाली पीढ़ियों को सुनाते थे, जिसे आने वाली पीढ़ियों ने संजोने का काम किया ।उसे अपनी भाषाओं में संजोया आज समाज में हो रहे विकास के साथ इनकी लेखन परंपरा में भी बदलाव आया और यह हिंदी के लेखन का कार्य करने । जिसके द्वारा आज आदिवासी समाज अपनी अस्मिता की खोज व उसके अस्तित्व के लिए संघर्षरत है। जिसमें झारखंड की महिलाओं का मुख्य योगदान है ,जो उन्हें खोजने व संचित करने का कार्य कर रही है, जिसमें रोज केरकेट्टा और वंदना टेटे का प्रमुख योगदान है। आज समाज में लुप्त होती जा रही झारखंड की सभ्यता ,संस्कृति एवं भाषा जिसे संजोने का कार्य इन्होंने किया और उसकी धरोहर की रक्षा करने में इनका अमूल्य योगदान है।

वंदना टेटे का जीवन परिचय (१३ सितंबर१९६९)–

यह एक भारतीय आदिवासी लेखिका ,कवि, प्रकाशन, एक्टिविस्ट और आदिवासी दर्शन "आदिवासियत "की प्रबल पैरोकार है ।आदिवासियत की वैचारिकी और सौंदर्यबोध को कलाभिव्यक्ति का मूल तत्व मानते हुए उन्होंने आदिवासी साहित्य को प्रतिरोध का साहित्य की बजाय "रचाव और बचाव "का साहित्य कहा है ।वह आदिवासी साहित्य का लोक और शिष्ट साहित्य के रूप में विभाजन को भी नकारती है और कहती है कि आदिवासी समाज में समानता सर्वोपरि है इसलिए उनका साहित्य भी विभाजित नहीं है। वे अपने साहित्य को औरेचर कहती है ।औरेचर अर्थात ओरल लिटरेचर। इनकी स्थापना है कि उनके आज का लिखित साहित्य भी उनकी वाचिक यानी पुरखा लोक साहित्य की परंपरा का ही साहित्य है। यह उनकी भी धारणा है कि गैर आदिवासियत को नहीं समझने वाले हिंदी– अंग्रेजी के लेखक आदिवासी साहित्य लिख भी नहीं सकते।

वंदना टेटे का जन्म झारखंड के सिमडेगा के सामटोली में हुआ था ।इनकी मां रोज केरकेट्टा ,जो स्वयं एक झारखंड आंदोलनकारी एवं लेखिका भी है। इनके जीवन साथी अश्विनी कुमार पंकज एवं दो संतान आयुध पंकज और अटूट संतोष है । वंदना टेटे के नाना प्यारा केरकेट्टा खड़िया आदिवासी समुदाय के पहले बौद्धिक और सांस्कृतिक अगुआ थे ।वंदना टेटे ने अपने नाना और मां से मिली संघर्ष चेतना और सांस्कृतिक विरासत को राजनीति रूप से और सुसंगठित करते हुए आदिवासी भाषा ,साहित्य, संस्कृति और पहचान के सवालों को मूल रूप से सबके समक्ष लाया है।

आरंभिक शिक्षा

इनकी आरंभिक शिक्षा सिमडेगा में हुई एवं मैट्रिक की पढ़ाई गुमला के लाइन कान्वेंट गर्ल्स हाई स्कूल में हुई। रांची विश्वविद्यालय से कला संकाय से स्नातक की उपाधि ली एवं मनोविज्ञान विषय में स्नातकोत्तर की उपाधि के लिए दाखिला कराया परंतु उसे बीच में ही छोड़कर समाज कार्य महिला बाल विकास में स्नातकोत्तर की उपाधि राजस्थान विद्यापीठ से की।

सांस्कृतिक कार्यों में सहभागिता

विद्यार्थी जीवन में ही इन्होंने लेखन कार्य आरंभ कर दिया था जैसा कि हम जानते हैं आदिवासी जीवन शैली का मुख्य हिस्सा व गीत लिखना , गाना और नृत्य, संगीत ,कला आदि होते हैं ,जो इन में प्राकृतिक रूप से समाहित था इन्होंने अभिनय को भी अपनाया अपने खड़ीया समुदाय के वरिष्ठ और युवा संगीतकारों ,नर्तको और गायकों को लेकर एक खड़िया संगीत दल बनाया। यह खड़िया संगीत दल विभिन्न समुदायिक सांस्कृतिक अवसरों पर परफॉर्मेंस करने के साथ–साथ नियमित रूप से आकाशवाणी रांची से आपकी अगुवाई में पारंपरिक पुरखा खड़िया गीत संगीत के कार्यक्रम प्रस्तुत किया करता था।

सामाजिक कार्यों में भागीदारी

यह समाज के शोषित एवं वंचित समुदाय विशेषकर आदिवासी महिला ,शिक्षा ,साक्षरता, स्वास्थ्य और बच्चों पर दो दशक से लगातार सक्रिय है ।२००३ में आदिवासी व देशज लेखकों ,भाषाविद संस्कृतिकर्मी साहित्यकार और बुद्धिजीवियों के संगठन झारखंडी भाषा साहित्य संस्कृति अखड़ा की स्थापना की ।यह झारखंडी भाषा साहित्य संस्कृति अखड़ा की महासचिव भी है।

पत्र पत्रिकाएं

१० वर्षों के उपरांत जब वह झारखंड आयी तो उन्होंने देखा कि भारत के मुख्य धारा की पत्र–पत्रिकाओं में आदिवासी रचनाओं के लिए कोई जगह नहीं थी । बिहार सहित देश की हिंदी व अन्य सभी प्रादेशिक भाषाओं में आदिवासी साहित्यकार उपेक्षित थे ।झारखंड आंदोलन को अभिव्यक्ति और प्रसार देने के लिए अनेक पत्र–पत्रिकाओं की शुरुआत व्यक्तिगत और सामुदायिक रूप से होती रही। इसी परंपरा को बढ़ाते हुए वंदना जी ने जुलाई २००२ में स्थापित ट्रस्ट 'प्यारा केरकेट्टा 'जो इनके नाना के नाम पर था, से पुस्तकों का प्रकाशन आरंभ किया ।

सामाजिक विमर्श की पत्रिका' समकालीन ताना–बाना 'और पत्रिका 'पतंग 'का प्रकाशन संपादन किया। जून २००४ से झारखंड की पहली बहुभाषायी त्रैमासिक पत्रिका 'झारखंडी भाषा साहित्य संस्कृति अखड़ा ',२००५ से अपनी आदिवासी मातृभाषा खड़िया में मासिक पत्रिका' सोरिनानिड' का संपादन प्रकाशन आरंभ किया।' झारखंडी भाषा साहित्य संस्कृति अखड़ा' भारत की एकमात्र सामुदायिक पत्रिका है जो बिना किसी देशी–विदेशी ,सरकारी व गैर सरकारी वित्तीय अनुदान के निरंतर छप रही है। बहुभाषिक पत्रिका में मुंडारी, संथाली, हो ,खड़िया, कुडुख ,मालतो , असुरी,वीरहोडी आदिवासी और नागपुरी, खोरठा, पंचपरगनिया व कुड़मालि क्षेत्रीय भाषाओं सहित हिंदी में देशज आदिवासी साहित्यकारों की साहित्यिक और वैचारिक रचनाएं प्रकाशित होती है । सितंबर २००६ में आपने एक रंगीन नागपुरी मासिक ' जोहार सहिया ' का प्रकाशन शुरू किया ,जो अपने प्रकाशन के तीसरे महीने ही रांची झारखंड से लेकर अंडमान तक फैले हुए झारखंडी देशज व आदिवासी समुदायों की सबसे लोकप्रिय और १२००० प्रतियों के साथ सर्वाधिक प्रसार वाली पत्रिका बन गई।

रचनाएं

वंदना टेटे जी के अनुसार गैर आदिवासियों द्वारा किया गया शोध जो वे आदिवासियों को पढ़कर करते हैं वह शोध रचनाएं हैं आदिवासी साहित्य नहीं। इसके बारे में बताते हुए उन्होंने कहा है कि वह एक अलग सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से आते है। वह अपने दृष्टिकोण से देखते हैं हमारे अपने नजरिए से नहीं लिखते इसी आधार पर वह कहती है कि इस दृष्टिकोण को कैसे कम किया जाए इसके लिए उन्होंने कहा यदि आदिवासी जीवन के दर्शन मूल यदि उनके साहित्य में है तो वह कोई भी लिखें आदिवासी या गैर आदिवासी ।लेकिन इसे आदिवासी समाज तय करेगा कि वह सही है या नहीं।

इनके द्वारा प्रकाशित पुस्तकें

- पुरखा लड़ाके (आदिवासी इतिहासध्संपादित) २००५
- किसका राज है'(आदिवासी महिला मुद्दों पर वैचारिक लेखों का संग्रह)२००६
- झारखंड एक अंतहीन समरगाथा(आदिवासी इतिहास ध्सहलेखन)२०१०
- असुर सिरिंग (असुर गीतध् सुषमा असुर के साथ) २०१०
- पुरखा झारखंडी साहित्यकार और नए साक्षात्कार (देशज आदिवासी साहित्यकारों का परिचय संपादित)२०१२
- आदिमराग २०१३
- आदिवासी साहित्य : परंपरा और प्रयोजन (आदिवासी दर्शन और साहित्य)२०१३
- आदिवासी दर्शन कथाएं (सहलेखन)२०१४
- कोनजोगा (हिन्दी कविता संग्रह)२०१५
- लिस एक्का की कहानियां (संग्रह)२०१५
- आदिवासी दर्शन और साहित्य (संग्रह)२०१५
- वाचिकताः आदिवासी साहित्य एवं सौंदर्यबोध २०१६
- लोकप्रिय आदिवासी कविताएं (संग्रह)२०१६
- लोकप्रिय आदिवासी कहानियां (संग्रह)२०१६
- Ç लाप (१६३५ में प्रकाशित भारत की पहली हिंदी आदिवासी कवयित्री सुशीला सामत का प्रथम काव्य संकलन (संग्रह) २०१७

सम्मान

वंदना टेटे जी को आदिवासी पत्रकारिता के लिए झारखंड सरकार का राज्य सम्मान २०१२ एवं संस्कृति मंत्रालय भारत सरकार द्वारा २०१३ में सीनियर फैलोशिप प्राप्त हुआ।

वंदना टेटे आदिवासी समुदाय की वह धरोहर है जिसने आदिवासी समुदाय की संस्कृति को अपने मेहनत से व पूरी निष्ठा से संजोने, संरक्षित एवं हस्तांतरित करने की पूरी कोशिश की है । वंदना टेटे ने आदिवासी जीवन दर्शन को बताते हुए कहा कि आदिवासी समाज में कोई छोटा बड़ा नहीं होता सभी समान होते हैं । यदि आदिवासी शिकार करने जाते हैं तो वे साथ में गए कुत्ते का भी हिस्सा रखते है। उनके अनुसार रास्ता वही दिखा सकता है जिसका जीवन दर्शन सही है ।हमारा आदिवासी समाज ही इस दुनिया को सही रास्ता दिखा सकता है । लोग मान रहे हैं पर खुले तौर पर नहीं क्योंकि उनका अहम आड़े आता है। यही कारण है जो वर्चुअल प्रोग्राम पोएट्री एंड पेंट नाइट में आमंत्रित झारखंड की आदिवासी कवयित्री वंदना टेटे ने अमेरिका के हार्वर्ड विश्वविद्यालय में काव्य पाठ किया। यह पहला मौका था जब हार्वर्ड जैसे अंतरराष्ट्रीय मंच पर आदिवासी कविता का पाठ किया गया ।जहां उन्होंने कहा कि आदिवासियों की कविताएं रचाव और बचाव के लिए

है। आदिवासी दर्शन सौंदर्यशास्त्र और आलोचनात्मक साहित्य पर उनकी कई किताबें प्रकाशित है। उनकी सबसे नई किताब ऑरेचर की पत्थलगड़ी और आदिवासियत अंतरराष्ट्रीय प्रकाशन संस्थान नोशन प्रेस से छपी हैं। असुरी भाषा के बचाव के लिए अनेक प्रचार प्रसार के कार्य किए वह आज भी प्रयासरत है। भाषाविदों के अनुसार असुरी भाषा खतरे में है, ५० सालों के भीतर वह समाप्त हो जाएगी जिसके बचाव में जोभीपाठ में असुर भाषा में पहला कैलेंडर छपा। इसी प्रकार वंदना टेटे ने अपना पूरा जीवन केवल झारखंड की सभ्यता संस्कृति भाषा को संरक्षित करने के प्रति समर्पित कर दिया है और वह इसके लिए निरंतर प्रयासरत है यही कारण है जो आज वह सफलता को प्राप्त करने में सक्षम है।

संदर्भ ग्रंथ

- अपनी कहानी अपनी जुबानी –अनुपमा संवाददाता
- महिलाओं के अधिकारों की रक्षा जरूरी –वंदना टेटे प्रभात
- आदिवासी साहित्य को अपने मानको से न परखे
- आदिवासी साहित्य स्वरूप व संभावनाएं
- वंदना टेटे को झारखंड सरकार देगी पत्रकारिता सम्मान
- वंदना टेटे फेसबुक
- युट्यूब वीडियोस

जया जेसवाल

आर0 के0 डी0 एफ0 विश्वविद्यालय

पता– ललित नारायण मिश्रा कालोनी,

इतकी रोड़

रांची

(झारखण्ड)

23

मालती जोशी की कहानियों में बाल मनोविज्ञान

सविता

सारांश

साहित्य समाज का मुख्य आधार व दर्पण होता है, क्योंकि उसी से हमें उस युग के परिवेश का बोध हो पाता है। यदि साहित्य नहीं होता तो हम सामाजिक परिवेश से अछूते व अनभिज्ञ ही रह जाते। साहित्य किसी एक विषय या विधा में सीमित नहीं होता। इसमें यथार्थ कल्पना व आदर्शवाद का समावेश होता है, जिससे पद्य व गद्य विधाओं का निर्माण होता है। गद्य विधा लोक सापेक्ष व रूचिकर होते हैं। उसमें सरल व सहज भाषानुसार कथा को समावेशित किया जाता है जिससे समाज के नर–नारी, वृद्ध के साथ–साथ बाल रूप भी होता है। जब बच्चों को आधार मानकर साहित्य लिखा जाता है तो वह उनकी मनोवैज्ञानिकता के आधार पर ही होता है, जिसे बाल मनोवैज्ञानिक साहित्य कहा जाता है। कहानी व उपन्यास के अनेक पात्रों से मन की अवस्था को व्यक्त किया जाता है। उस मन का अध्ययन ही मनोविज्ञान कहलाता है। यह मनोविज्ञान बालक की भावनाओं का भी अध्ययन करवाता है। वर्तमान समाज की विसंगतियों को दृष्टि में रखकर बच्चों की कहानियों को लिखा गया है। बच्चों की मनस्थिति को सबसे अच्छी तरह माँ ही समझ सकती है। अतःएव महिला लेखिकाएँ ही बाल मनोविज्ञान साहित्य उचित लिख सकती हैं जो महान लेखिका मालती जोशी के साहित्य में यथार्थ रूप से दिखाई देता है। इन्होंने कहानियों में अभियक्ति बाल मनोविज्ञान से बालकों की चेष्टाओं के अनुसार दर्शाने का प्रयास किया है। बच्चों में ईर्ष्या, झगड़ालु, जिद्दी, खेलकूद के प्रति आसक्ति, झूठ बोलना, बड़ों का अनुकरण करना, चोरी करना आदि अनेक चेष्टाओं को बाल मनोविज्ञान से दर्शाया गया है जो इस शोध–कार्य से प्रस्तुत किया जा रहा है।

प्रस्तावना बाल साहित्य वह है जो बालकों या बच्चों के लिए लिखा जाता है और इसका आधार बाल मनोविज्ञान होता है। बालक के विकास में बाल साहित्य की भूमिका महत्त्वपूर्ण होती है। बाल साहित्य का अध्ययन करना, बाल मनोविज्ञान की जानकारी के बिना असम्भव होता है। यह सब बच्चों की रूचि एवं मनोवृत्ति का सम्यक ज्ञान बाल मनोविज्ञान के द्वारा प्राप्त होता है। बच्चों में कहानियों, गीतों एवं पुस्तकों के प्रति एक स्वाभाविक अभिरूचि होती है, जैसे–परी की कहानियों, राजा–रानी की कहानी, अनेक जानवरों की कहानियाँ सुनना। बच्चों के मानसिक विकास एवं उनकी प्रगति हेतु बाल मनोविज्ञान को समझना वर्तमान समय की आवश्यकता है। यदि बाल मनोविज्ञान न होता तो बाल साहित्य का जन्म ही न हुआ होता। बच्चों के पढ़ने एवं ज्ञानार्जन करने की प्रवृत्ति ने एक अलग साहित्य विधा को जन्म दिया है जिसको आज बाल साहित्य कहा जाता है, अनादि काल से कथा कहानियों एवं लोरियों में बच्चों की विशेष रूचि रही है।

बाल साहित्य और मनोविज्ञान

बालक के मनोविज्ञान को समझने के लिए उसकी भी अलग–अलग अवस्थाएँ की जाती हैं, जिसमें शैशवावस्था, बाल्यावस्था व किशोरावस्था। इन्हीं अवस्थाओं के आधार पर साहित्य लिखा जाता है, डॉ. श्री प्रसाद जी का भी यह मानना है – ''शिशु अवस्था के लिए शिशु साहित्य, बाल्यावस्था के लिए बाल साहित्य और किशोरावस्था के लिए किशोर साहित्य। मनोविज्ञान दृष्टि से विकास के साथ–साथ बाल साहित्यकार से भी यह अपेक्षा की गई है कि इन्हीं तीनों वयवर्गों को दृष्टि में रखकर बाल साहित्य की रचना करें।''[1]

प्रारम्भिक समय में मनोविज्ञान वयवर्ग की साहित्यकों की यथावश्यक जानकारी उपलब्ध नहीं थी इसलिए साहित्यकार पूर्ण बाल जीवन को दृष्टि में रखकर साहित्य सर्जन करते हैं। बाल साहित्य की सीमा अत्यन्त विस्तृत है। डॉ. श्री प्रसाद का भी यही मानना है कि काव्य, कहानी, उपन्यास, नाटक, निबंध, यात्रावत, स्थान परिचय और रिपोर्ताज सभी कुछ बाल साहित्य की रचना होनी चाहिए। बाल साहित्य के अनेक उद्देश्य हैं। इसमें एक तरह से बाल जीवन का मनोरंजन अध्ययन होता है। बाल साहित्य का अध्ययन शिक्षाविदों के साथ–साथ बाल साहित्यकारों, बाल कल्याणकर्ताओं व अभिभावकों के लिए भी महत्त्वपूर्ण रहा है। एक बालमनोविज्ञान के अनुसार, ''बालकों के सभी कार्य करने की प्रवृत्तियाँ तो होती हैं किन्तु उसका स्फुरण स्वाभाविक रूप से नहीं बल्कि दूसरों से सीखने पर होता है।''[2]

बचपन में जो प्रवृत्तियाँ बच्चों में होती हैं, उनके प्रति सजग या सचेत होना बालक के विकास के लिए आवश्यक है। बालक में उत्सुकता, रचनात्मक प्रवृत्ति, विनय की प्रवृत्ति, स्पर्धा सहानुभूति आदि प्रवृत्तियाँ होती हैं। हिन्दी साहित्य में बच्चों के लिए प्रारम्भ में पंचतन्त्र, कथा सरित सागर, सिंहासन बत्तीसी, बैताल पच्चीसी,

अलिफ लैला, मोगली आदि कहानियाँ मौजूद थी। अनेक कहानीकाकरों ने बच्चों के लिए अनेक कहानियाँ लिखीं। इन कथाओं से बच्चों का बहुविध मनोरंजन होता था। जिन लोककथाओं, पार कथाओं, पौराणिक कथाओं को आज प्रमुखतः बच्चों का साहित्य माना जाता है। वह साहित्य उस पौराणिक जीवन को चित्त को दर्शाता है, जो आज के युग के लिए बच्चों को अंतर्मन रूप से तैयार कर सकेंगे।

डॉ. नगेन्द्र का कथन, ''हमें मनोविज्ञान व व्यवहारिक पृष्ठभूमि पर ऐसी कथाएं चाहिएं जो आज के धरातल पर, आज के बालकों को लेकर उनके स्वस्थ व सुखी जीवन के निर्माण के लिए रची गई हों साथ ही वे इतनी सरल हो कि बच्चों के लिए सुगमता से ग्राह्य हो, इतनी मनोरंजक हों कि वे राक्षसों और जादूगरों की कहानियाँ भूल जाएं और वे दैनिक जीवन से सामंजस्य भी स्थापित करती हों।''[3] ऐसी विचारधारा का अनेकानेक कथाकारों ने साथ दिया एवं बच्चों के लिए भावबोध में विष्णु प्रभाकर, हरिकृष्ण तैलंक, देवेश ठाकुर, विष्णु प्रभाकर, जैनेन्द्र, मनोजर वर्मा, वीर कुमार अधीर, हसनजमाल घीपा, मालती जोशी आदि। इन्होंने बच्चों के मनोविज्ञान को समझकर अपनी रचनाओं में उनकी समस्त कलाओं को दर्शाया है। बाल साहित्य का मनोवैज्ञानिक रूप जितना एक लेखिका के द्वारा व्यक्त किया जा सकता है उतना एक लेखक के द्वारा सम्भव नहीं हो पाता क्योंकि माँ ही बच्चे से अधिक लगाव रखती है। यह उसकी प्रत्येक भावना को समझ पाती है जो मालती जोशी के द्वारा व्यक्त किया गया है। बाल रूप के प्रत्येक पक्ष को उन्होंने प्रत्यक्ष देखकर अनुभव कर अभिव्यक्ति का रूप दिया है।

मालती जोशी द्वारा लिखित अनेकानेक कहानियाँ हैं जिसमें बाल रूप को दर्शाया है। इन्होंने बच्चों की समस्याओं के साथ–साथ उनका समाधान भी करने का प्रयास किया है। उनके द्वारा लिखित 'दादी की घड़ी' में बच्चों की समस्याओं एवं उनके बाल मनोविज्ञान के आधार पर लिखा है। उनका मानना है कि जिज्ञासा इतनी प्रखर और कल्पना इतनी ऊँची होती है कि वे निरन्तर कुछ न कुछ जानना ही चाहते हैं। वे स्वभाव से संवेदनशील होते हैं फिर भी वे भावात्मक रूप से उचित संरक्षण के आकांक्षी होते हैं। उनमें क्रियाशीलता का बाहुल्य होता है और साहसिक कार्यों तथा खेलकूद में उन्हें बहुत आनन्द आता है। गीतों में संगीतात्मकता होने के कारण बच्चे उन्हें जल्दी याद कर लेते हैं। यह गीत, खेल–कूद में भी हो सकता है, अभिनय में भी और कथा में भी। इस तरह बालकों में जिज्ञासा एवं कल्पना इतनी बलवती और विस्तृत होती है कि उनकी भावना विश्व के मानव जीवन के हर पहलू को छूती है। बच्चों में हमेशा नया जानने की उत्सुकता बनी रहती है। इस तरह बच्चों की रूचियाँ भी उनकी जिज्ञासा की तरह विस्तृत होती है। अतः बच्चे स्वभाव से समझदार एवं संवेदनशील भी होते हैं, फिर भी उनके लिए भावनात्मक रूप से संरक्षण की विशेष आवश्यकता है। वे नजदीक के परिवेश से अधिक आकर्षित होते हैं। इसलिए कुछ संकेतों के आधार पर कहानी के पात्रों के साथ तादात्म्य प्रस्थापित कर लेते हैं। इसलिए बालकों के मानसिक विकास के लिए बाल साहित्य उपयोगी होता है। इससे बच्चों की मनोवैज्ञानिक आधारभूमि को केंद्र में रखकर किया गया लेखन कार्य व साहित्य की दृष्टि से अधिक प्रभावकारी सिद्ध होता है।

मालती जोशी ने अपने साहित्य से दर्शाया है कि उनकी कहानियाँ मन को छूने वाली होती हैं। अपनी कहानियों के विषय में वे कहती हैं – ''जीवन की छोटी–छोटी अनुभूतियों को, स्मरणीय क्षणों को मैं अपनी कहानियों में पिरोती रही हूँ। ये अनुभूतियाँ कभी मेरी अपनी होती हैं कभी मेरे अपनों की और इन मेरे अपनों की संख्या और परिधि बहुत विस्तृत है। वैसे भी लेखक के लिए आप पर भाव तो रहता ही नहीं है। अपने आस–पास बिखरे जगत का सुख–दुःख उसी का सुख–दुःख हो जाता है और शायद इसलिए मेरी अधिकांश कहानियाँ 'मैं' के साथ शुरू होती हैं। इसी 'मैं' में बालरूप भी समाहित होता है।''[4] मालती जोशी की कहानी 'दादी की घड़ी' में दीपू के माध्यम से बालक के जिद्दी रूप को दर्शाया है कि बच्चे किस तरह से छोटी–छोटी वस्तुओं के लिए जिद्द कर बैठते हैं। कहानी में दीपू अलारम के लिए जिद करता है। अपने दीदी या भैया के सिरहाने रखे अलारम को लेना चाहते हैं वे अलारम को अपने सिरहाने रखते और उससे जल्दी उठ जाते लेकिन दीपू तो अपने पापा की डांट से ही उठता था। उसे ताज्जुब होता कि इन लोगों की परिक्षाएँ क्या रोज चलती ही रहती हैं?जब देखो तभी चार बजे से उठकर पढ़ने बैठ जाएंगे। एक दिन तो जिद पर अड़ गया। जब उसके स्कूल में दूसरे दिन इंस्पेक्टर आने वाले थे। उसने आते ही जोरदार शब्दों में ऐलान कर दिया – ''आज घड़ी मैं लेकर सोऊँगा। क्या हमें पढ़ाई नहीं करनी होती? जब देखो तब इन्हीं की शान चलती है।''[5] इस प्रकार की जिद को बच्चों में अक्सर देखा जाता है। जो छोटी–मोटी वस्तु के लिए या खेल–कूद के लिए या खाने–पीने के विषय में होती है उसे ही बाल मनोविज्ञान का स्वभाव कह सकते हैं।

बाल चेष्टाओं के विविध रूप होते हैं जिसमें बालक के लालची स्वभाव को भी देखा जाता है जो प्रत्येक बच्चे में सहजता से पा सकते हैं पर कुछ खास बच्चों में कुछ विशेष चीजों के लिए लालच देख सकते हैं। बच्चे जो भी वस्तु देखते हैं उसे लेने का लालच उनमें होताहै। यह लालच उनकी परिस्थिति या

परिवेशानुसार कम व ज्यादा होता है। अक्सर खाद्य वस्तु, खिलौने व अन्य रूचिकर वस्तुओं के प्रति उनकी लालसा अधिक होती है। बच्चों की बाल–चेष्टाओं पर लेखिका जी ने भर प्रकाश डाला है। कभी खाने–पीने की वस्तु पर लालच दिखाया है तो कभी पहनने–ओढ़ने में दिखाया है। कहानी संग्रह 'वो तेरा घर ये मेरा घर', 'सन्नाटा और स्नेहबंध' की अनेक कहानियों में बाल रूप के विविध रूप दिखाए हैं। इसके साथ ही बच्चों में स्वाभाविक गुण भय भी होता है जो सामान्य रूप से बच्चों में देखा जाता है। अबोध बालक के मन में भय छोटी–छोटी बातों में पाया जाता है क्योंकि उनकी क्षमता इतनी सक्षम नहीं होती कि वे प्रत्येक स्थिति को सम्भाल सके। इसका यथार्थ निरूपण मालती जी ने 'रिश्वत एक प्यारी सी' कहानी में वर्णन किया है। कहानी में रेणु के माता–पिता एक दुर्घटना में घायल हुए हैं। घरवालों को परेशानी है कि वे जीवित भी थे या नहीं, पर रेणु को दादी की बात आश्चर्य में डाल देती है कि उसकी ''दादी सुबह शाम तुलसी पूजा करती है, भगवान की पूजा करती है और अब पापा–मम्मी की स्थिति के लिए अपने कौन–से पापों का फल भगवान ने उसे दिया इस बात को सुनकर वह अपनी गलतियों को याद करके डर रही है कि भगवान उसे क्या सजा देगा? यह कहकर मन ही मन डरने लगती है। डरती है कि मेरे गलत कामों से गुस्सा होकर भगवान ने उनके पापा–मम्मी को संकट में डाल दिया।''[6]

इस तरह से रेणु का भय कहानी में दर्शाया है जो उसके बालमनोविज्ञान को दर्शाता है।

मालती जोशी जी की 'दादी की घड़ी' कहानी में दीपू के भी उस भयाकुल बालक के रूप में दिखाया है जो बच्चों में अक्सर देखा जाता है। कहानी में दीपे को भय है... कि कल उसे पिकनिक पर जाना है। कहीं वह सुबह देरी से उठा तो उसकी टीचर उसको वहीं न छोड़ जाएं। इसलिए वह पिकनिक जाने की तैयार रात को ही अलाम रखने से आरम्भ कर देता है। अक्सर देखा जाता है कि बच्चे अगर कहीं जा रहे होते हैं तो वे रात को सोते ही नहीं क्योंकि उनके मन में यही भय बना रहता है कि कहीं वे जाने से रह न जाएं। इस डर से वह सुबह जल्दी उठ जाते हैं जो दीपे के माध्यम से मालती जी ने बाल मनोविज्ञान के भय रूप को दर्शाया है।

बालक के अनुकरण का गुण प्राकृतिक होता है। वह प्रत्येक काम का अनुकरण करता है और उसी से उसके सिखाने की प्रवृत्ति का विकास होता है। बच्चे अनुकरण से ही आगे बढ़ते हैं घर में बड़ों का, स्कूल में टीचर व मित्रों का व अन्य प्रत्यक्ष जीव का अनुकरण करते हैं। इसकी झलक मालती जी ने अपने साहित्य में चित्रित की है। कहानी 'दादी की घड़ी' कहानी में दीपू अपने भाई–बहन का अनुकरण करता है। वह भी अपने पास अलारम रखना चाहता है और एक दिन जिद्द करके अपने सिरहाने अलारम रख ही लेता है क्योंकि उसे भी भाई–बहन का अनुकरण करना था। इस तरह बच्चे बड़ों के व्यवहार से प्रभवित होते हैं और उनका अनुकरण करने लगते हैं। अनुकरण के साथ ही मालती जी ने बालकों की जिज्ञासा प्रवृत्ति को भी दर्शाया है। बच्चों के मन में नए विषय को जानने की जिज्ञासा रहती है। अपनी जिज्ञासा प्रवत्ति के कारण वे नाना प्रकार के प्रश्न करते रहते हैं। जब उन्हें पूरा विश्वास नहीं हो जाता तब तक वे शांत नहीं होते जैसे दीपू अपनी दादी के सिरहाने रखी घड़ी का कारण जानना चाहता है कि वह सुबह चार बजे कैसे उठ जाती हैं तब दादी कहती हैं, ''मैं तो अलारम कभी नहीं रखती रोज चार बजे उठ जाती हूँ। मेरा तो तकिया ही अलारम है। सोते समय उसे बताती हूँ कि मुझे इस समय जगा दो तो मुझे जगा देता है।''[7] दीपू की तरह 'रिश्वत' कहानी में भी रेणु की जिज्ञासा को दिखाया है। जब वह उसकी दादी को सुबह प्रार्थना करते सुनती है – ''तुलसी महारानी! बुढ़ापे में किस अपराध की सजा मुझे दे रही है, भैया।'' रेणु सोचती है कि दादी सुबह सवेरे उठकर नहाती है और दो–दो घंटे पूजा करती हैं। रेाज पाँच देवताओं के दर्शन करती है। शाम को तुलसी पर दीया जलाती है, भला वह कोई अपराध कैसे कर सकती है फिर भगवान उन्हें ऐसी सजा क्यों दे रहे हैं?''[8] यह अपनी दादी को जानने की इच्छा उसकी जिज्ञासा को दिखाती है।

मालती जोशी के साहित्य में बाल मनोविज्ञान समस्त कहानियों में दिखाई देता है। उनकी कहानियों में बालक की प्रत्येक मनोवृत्ति दिखाई है। बालक को जिज्ञासु, ईर्ष्यालु, अनुकरण झगड़ालू व अन्य रूपों में हम देखते हैं। यदि घर में दो भाई–बहन हमउम्र के होते हैं तो तो उनके बीच किसी न किसी मतभेद होकर झगड़ना बच्चों का स्वाभाविक गुण होता है। वे किसी भी समय, टी.वी. देखते समय, कपड़े–लत्ते पहनते समय या अन्य क्रियाएँ करते हुए देखा जा सकता है। यह बालकों की बाल चेष्टा ही होती है। मालती जोशी ने 'रंग बदलते खरबूजे' कहानी में दो भाइयों के झगड़ालू स्वभाव का चित्रण किया है। कहानी में अतुल और असीम का रंग–रूप मिलता–जुलता था और उनकी शिक्षा व बुद्धि में भी अन्तर नहीं था। दोनों की जोड़ी बिल्कुल राम–लक्ष्मण की तरह ही थी, परन्तु वह राम–लक्ष्मण घर में प्रवेश करते ही राम–रावण बन जाते। कब किस बात को लेकर झगड़ पड़ेंगे, इसका कुछ बोध नहीं था। बचपन में जब ये झगड़ते तो मम्मी कभी पुचकारकर, कभी डांटकर और कभी–कभी एकाध चपत लगाकर इनको समझा लेती थी। तब माँ सोचती कि अभी तो ये बच्चे हैं जब बड़े हो जाएंगे तो अपने आप समझ जाएंगे लेकिन थोड़े बड़े होने पर भी कोई सुधार नहीं हुआ। अब मम्मी का भी बचाव करने का भी होंसला नहीं रहा था। जब इन

लोगों में जंग छिड़ जाती तो वह चुपचाप एक कोने में बैठकर कानों में हाथ रखकर बस सुनती रहती। अतुल और असीम के झगड़ने के कारण बिल्कुल कुछ न रहता वे सुबह ही झगड़ना शुरू कर देते –

''बाथरूम में पहले मैं जाऊँगा।''

''तूने मेरे तौलिये से हाथ क्यों पौंछे?''

''ये तेल की शीशी तुमने खुली छोड़ी''

''मेरा ब्रश तुमने जान–बूझकर नीचे गिराया है''

''मेरी मेज पर तुम्हारी कॉपी क्यों आयी है?''

''तुमने मेरी कविता की कॉपी क्यों खोली?''[9]

इस तरह से दोनों में झगड़ा होता रहता। इस झगड़े के माध्यम से समस्त बालरूप के झगड़े की प्रवृत्ति को मालती जी ने अपने साहित्य में दिखाया है। मालती जी कहानी 'कर्ज अदायगी' में भी बाल चेष्टा का रूप चोरी को भी देखा जा सकता है। छत्रसाल में रहने वाले लड़कों ने अपने सह छात्र 'रामकुंवर' के पैसे निकाल लिये थे जो परीक्षा की फीस भरने के लिए अपने भाई से मंगवाई थी। सुबह मनीऑर्डर लेकर उसने जल्दी से डेस्क ही में रख दिया था। उन पैसों को किसी लड़के ने चुरा लिया था जिससे बच्चों की चोरी करने की चेष्टा को दिखाता है। बच्चे अबोध होते हैं। जो वस्तु उन्हें अच्छी लगती हैं वह उसे प्राप्त करना चाहते हैं चाहे उसके लिए उन्हें चोरी ही क्यों न करनी पड़े, क्योंकि उन्हें चोरी जैसे अपराध का बोध ही नहीं होता। इसी प्रकार कहानी 'रिश्वत एक प्यारी सी' में रेणु के माध्यम से इस चेष्टा को दर्शाया है। कहानी में रेणु ने अपने स्कूल में बैंच पर रखे इगली को चुराया था और एक सहेली की कॉपी से गणित के सवाल के टिप भी चुराये थे। इस तरह से बालमनोविज्ञान का प्रत्यक्ष रूप जोशी जी ने सहृदयता से वर्णित किए हैं। मालती जी ने बाल मनोविज्ञान से बालकों की झूठ बोलने की प्रवृत्ति को भी अपने साहित्य में दिखाई है। कहानी 'रिश्वत एक प्यारी सी' में 'रेणु' एक बार पेन में स्याही भरने के चक्कर में ढेर की ढेर स्याही पापा की मेज पर गिरा देती है। पापा घंटों चीखते रहे, पर डर के मारे नाथु का नाम कर दिया। बेचारे नाथु पर बेकार डांट पड़ी।''[10]

निष्कर्ष

इस तरह से मालती जोशी की अनेक कहानियों में बालमनोविज्ञान का वर्णन किया गया है। कहानी 'ममता तू न गई मोरे मन तै', 'खेल–खेल में', 'संदर्भहीन', बहुरि अकेला व अन्य नाना कहानियाँ बाल मनोविज्ञान के रूप में अभिव्यक्त हुई है। बाल मनोविज्ञान की कोई भी प्रवृत्ति या चेष्टा जोशी जी से अछूती नहीं रही है। उनके शैशवावस्था से किशोरावस्था तक बाल मनोविज्ञान को दर्शाया है।

संदर्भ सूची

1. डॉ. श्रीप्रसाद, हिन्दी बाल साहित्य की रूपरेखा, पृ. 3
2. डॉ. हरिकृष्ण देवसरे, बाल साहित्य : एक अध्ययन, पृ. 41
3. सं. हरिकृष्ण देवसरे, रचना और समीक्षा, पृ. 73
4. मीडिया इंटरनेट
5. मालती जोशी, दादी की घड़ी
6. मालती जोशी, रिश्वत एक प्यारी सी, पृ. 7
7. मालती जोशी, दादी की घड़ी
8. मालती जोशी, रिश्वत एक प्यारी सी, पृ. 10
9. मालती जोशी, रंग बदलते खरबूजे, पृ. 15
10. मालती जोशी, रिश्वत एक प्यारी सी, पृ. 7

सविता
शोधार्थी
बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय
अस्थल बोहर,
रोहतक

24

राजनीति के गलियारों में महिलाओं के बदले कदम का एक मूलयांकन

डॉ0 नीरज कुमार

सारांश

ऐसा कहना तो गलत होगा कि स्वतंत्रता के पूर्व महिलाओं ने देश की राजनीति में भाग नहीं लिया ब्रिटिश साम्राज्य के विरुद्ध अनगिनत जनजातीय महिलाओं में पुरुषों के समय सामन्ती जमीदारों और शासकों के विरुद्ध डटकर मोर्चा लिया था लेकिन इतिहास के पन्नो में इनका नाम दर्ज नहीं है। देश की राजनीति का इतिहास इस हष्ट दर्ज करते आए हैं, जो उच्चवर्ग की थी। अंग्रेजी भाषा में दीक्षित, विदेशों में पढ़ी लिखी थी। वे स्त्रियाँ भी राजनीति में आई, जिनग स्वदेश की भावना थी। देश की स्वतंत्र कराने की ललक थी। इस की संघर्ष शील महिलाएं देश की स्वतंत्रता के आंदोलन का न बेहिचक भाग लिया था। अंग्रेजों के उड़े खाए थे, जेल भी गई थी. और भूमिगत होकर स्वतंत्रता संग्राम की मिशाल को धाम हुए थी। इनमें भारत रत्न अरुणा आसफ अली, सरोजनी नायडु सुभद्दा कुमारी चौहान, सुबा मेहता. निर्मला देशपांडे, बेगम हजरत महल, रानी लक्ष्मीबाई रामगढ़ की रानी और रानी टेस बाई, आबदी बानो बेगम (विजय लक्ष्मी पंडित, सुचेता कृपलानी आदि का नाम गिनाया जा भारत में महिलाओं की स्थिति समय–समय पर परिवर्तित होती रही है। प्राचीन काल में नारियों को समाज में उच्च स्तर प्राप्त था। उन्हें सु समृद्धी, शान्ति, वैभव और ज्ञान का प्रतीक माना जाता था। इसीलिए दुर्गा, लक्ष्मी सरस्वती के रूप में उनकी पूजा करने का विधान रहा – मनोस्मृति के अनुसार ष्धर नार्यस्तु पूजयन्ती रमन्ते तय देवता । तास्तु न पूजयन्ते सर्वोस्तवापलाः क्रिया !ष् अर्थात जहाँ नारियों की जा होती है, वहाँ देवता निवास करते हैं, और जहाँ इनकी पूजा ती है, वहाँ देवता निवास करते हैं, और जहाँ इनकी पूजा नही होती सभी कार्य निष्फल होते हैं।

समाज में महिलाओं की परतंत्र एवं हीन दशा के प्रति भी डॉ. बेडकर विशेष रूप से स्थिति चितित थे, तथा चाहते थे कि उन्हें प्रता इस दशा से वैधानिक रूप से स्वतंत्र किया जाए, ताकि वे पुरुष समान आत्मनिर्भर जीवन जीने की स्थिति और अधिकार प्राप्त कर । महिलाओं की इस हीनदशा के लिए वे हिन्दू धर्म ग्रंथों और व्य रूप से मनुस्मृति को उत्तरदायी मानते थे, जिसमें यह प्रतिपादित या गया था कि वे बाल्यकाल में पिता के संरक्षण में युवाकाल मे संरक्षण में तथा वृद्धावस्था में पुत्र के संरक्षण में रहें, अर्थात अपने जीवन के किसी भी काल में स्वतंत्रता पूर्वक जीने का कार न हो तथा हर काल में किसी न किसी रूप में उनके पुरुष का संरक्षण आवश्यक है। डॉ० अम्बेडकर जी चाहते थे। कि महिलाओं की इस हीनदशा से मुक्ति के लिये उन्हें पुरुषों के समान ही शिक्षा प्राप्त करने तथा अपनी योग्यता अनुसार स्वतंत्र रूप से व्यवसाय करने का अधिकार प्राप्त हो । नारीवादी लेखक राज्य तथा इसकी संख्याओं को पुरुष प्रधान मानते है जिसे सब पर परपरागत चिन्तक जैन्डर के दृष्टिकोण में तरखा मानते हैं। बिना लागून ने इस लैंगिक राजा के संबक तत्य तथा विशिष्टताओं की खोज तथा पुरुष र स्त्री पर इसके प्रभाव की जांच करने का प्रयास किया है। नाहीवादी लूकोने नीति से सम्बन्धित नेता अधिकतर पुरुष ही होते हैं तथा विदेश अथवा सैनिक नाम से की विदेश नीति परम्परागत ४० कोण से पुरुष भाधिपता के अन्तर्गत रही है, और सम्बन्ध में कभी नही गुण वास्तव में प्रत्यक्षवादी सिद्धांत पर आधारित अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में ऐसे प्रश्न शत ही नहीं जा सकते थे। नारीवादी चूक की प्रकप प्रधान समान कार चुनी ही देता है, और यह सिद्ध करने का प्रयास करते सिद्धान्त दोनों लैंगिक (पुरुष प्रधान) है। समकालीन नशिवाडीको ने इस लैंगिकता को सिद्ध करने तथा नारी समूह की समस्याओं को उभारत के लिए करे सर्वेक्षण तथा ब्यूवहारिक शोध अध्ययन किये है। परम्परागत पुरन्तर विडीय सिद्धान्तकारों के विपरित नारीवादी सिद्धान्तकार इतिहासिक तथा समाजशास्त्रीय विश्लेषण को वरीयता देते हैं, जो उन व्यक्तियों तथा श्रेणी सामाजिक सम्बन्ध से आरम्भ होता है। जिनमें आम जनता जी रही होती है।

केन्द्र सरकार द्वारा संसद तथा विद्या भण्डला में महिलाओं के लिए एक तिहाई सीडो पर आरक्षण प्रदान करने हेतु वर्ष 1998 में प्रस्तावित इस विधेयक को पास करने हेतु सभी राजनीतिक पार्टियों में आम राय की कोशिक की गई तथा पास कराने का भरसक प्रयास किया गया मद्यपि यह विधेयक कुछ राजनीतिक पार्टियों के द्वारा विभिन्न वर्गों और जातियों का महिलाओं के लिये अलग–अलग की व्यवस्था करने के लिए विरोध प्रदर्शन के कारण पारित नहीं हो सका है। उल्लेखनीय है कि इससे पूर्व अप्रैल 1993 में त्रिस्तरीय पंचायतीराज संस्थाओं में प्रत्येक स्तर पर सदस्यों और अध्यक्षों के लिए एक तिहाई आरक्षण प्रदान करने हेतु 73 वॉ और 74 वॉ संविधान संशोधन किया गया है। इस व्यवस्था के क्रियान्कौन से देश के सभी प्रान्तों में वीण और शहरी पंचायतों के सभी रो पर महिला

जन प्रतिनिधियों के रूप में लगभग कई लाख महिलांगे अपनी अहम भूमिका का निर्वहन कर रही है। इसी प्रकार की व्यवस्था महिला आरक्षण विधेयक के अध्ययन से संसद और राज्य विधानमण्डलों में प्रस्तावित की गई

राष्ट्रीय आन्दोलन वह उर्वर भूमि थी, जिसमें वैचारिक और क्रियाला रूप से महिला भान्दोलनका विकसित हुआ। क्योंकि उस समय देश के सामने सबसे बड़ी चुनौती स्वतंत्रता प्राप्त करना था। इसलिये महिला आन्दोलन श्री राष्ट्रीय हितो को साथ लेकर चल रहा था। इस प्रकार के सहवती आन्दोलनो की सबसे प्रमुख झोली विशेषता यह थी कि इसमें समाज के उच्च वर्गों को लेकर निम्न वर्गोतक की महिलाये सम्मिलित थी। परिणाम स्वरूप स्वतंत्रता प्राप्त करने के साथ ही ने सुविधाये भारतीय महिलाओं को स्वतः मिल गयी जिनके लिये पाश्चात्य देशों की महिलाओं को उपक से संघर्ष करना पड़ा । इसका दूसरा परिणाम यह हुआ कि भारतीय महिला आन्दोन सामाजिक लक्ष्यों को सामने रखकर संगठित होने लगा । इस दृष्टि से स्वतंत्रता आन्दोलन के अन्तर्गत महिलाओं की भूमिका पर एक दृष्टि डालना उचित ही होगा। राष्ट्रीय आन्दोलन में महिलाओं की भूमिका और सक्रियता के और तौर पर दो स्वरूप देखने को मिलते हैं? 1. प्रपंग वे महिलाये जो राजनीति में कचि श्री रखती थी और सक्रिय भी थी। 2. द्वितीय व महिलाये जो अपने लेखन द्वारा राष्ट्रीय स्वतंत्रता आन्दोलन में सक्रिय रही है। ये दोनो ही वर्ग की महिलाये प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से महिलाओ को जहाँ राष्ट्रीय आन्दोलन से जुड़ने की प्रेरणा नहीं की वही लेखिकाय अपनी लेखनी से नारी चेतना को प्रज्जवलित करने का कार्य कर रही थी।

प्रमुख राजनीतिक दल कोटे के अंदर कोटे को अस्पष्ट कयू से देख रहे हैं, क्योंकि वे केवल चुनावी फायदे पर ही केन्द्रित रहते हैं। वे इस बात में कम से कम रुचि रखते हैं कि राजनीतिक प्रतियोगिताओं के जातीय करण का संस्थात्मकीकरण हो जाये। वे तो केवल अपनी पुत्रियो, पत्नियो, और बहनों को संसद में पहुंचाने का अवसर चाहते है। वर्तमान और अतीत के अनुभवो को भूलाया नहीं जा सकता है। दो राज्यों के दो पूर्व मुख्य मंत्रीयो ने अपनी पलियों को चुनाव लड़ने के लिए नामांकित करा दिया और उग से एक अपने पति के स्थान पर मुख्यथाळी 7 27 गई और अकटूबर 2000) मे 205 राज्य में एक कांग्रेसी सांसद को अपनी लोकसभा सीट छोड़नी पड़ी और अपनी पत्नि को उस चुनाव क्षेत्र से चुनाव लड़ने के लिए नामांकित करनी पड़ी।

ग्वालियर के एक प्रसिद्ध परिवार में एक समय माँ बेरा और बेटी कई वर्षों से लोक सभा सीटरी पर काबिजू थे। नवम्बर 1999 में तीन राज्य विधानसभा चुनावों में अनेक सांसदों ने अपनी पत्नियों और अन्य परिवारजनो को चुनाव लड़ान के लिए नामांकित कराने के लिए बहुत जोड़–तोड़ किए। तथाकथित बेशगत राजनीति की अवधारणा के विरोधी स्वयं परिवार प्रवन्धित राजनीति चला रहे हैं। फरवरी 2000 में भारत में चुनाव आयोग ने यह सुझाव दिया था कि प्रत्येक राजनीतिक दल महिलाओं को चुनावों में एक निश्चित प्रतिशत में खड़ी करे द्य पर आयोग ने अप्रैल 2000 में विभिन्न श्लो की एक बैठक भी बुलायी थी, परन्तु इस बैठक में एक सभी दलों ने इस प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया । यह शायद इस कारण था कि उन्हें इस बात का विश्वास नहीं था, कि अकी अधिसंख्य महिला उम्मीदवार पुरुष प्रत्याशियों के सामने स चुनाव जीत जायेंगे द्य अतरू वे अधिक महिलाओं को खड़ा करके खतरा मोल नहीं लेना चाहते लोक सभा चुनाव के लिए महिला क उम्मीदवारों की कुल संख्या पुरुषों की तुलना में बहुत कम की रही है। 1980 से पहले लोक सभा चुनावों में सारे देश में 100 महिलाएँ भी उम्मीद कर नहीं थी। 1980 में 142 149470 पुरुषों की तुलना में) और 1996 में 599 213,353 पुरुषों की तुलना में) महिलाएं उम्मीदवार थी । लोक सभा के पिछले 13–14 चुनावों से पता चलता है। कि 5 43 सदस्यों के सदन में ज्यादा से ज्यादा (49) महिलाएँ 1999 में जीत कर आयी थी। वैसे विजयी महिलाओं की कुल औसत संख्या मात्र 33 रही है, जो सदन की कुल संख्या की केवल 6ः ही है। यह संख्या 1952 में 2201991 में 227 1997 में 19, 1980 में 26 2 1984 में 443 1989 में 27, 9 1999 में पहुंची क्या इस संख्या को बढ़ाने का तरीका आरक्षण ही हो ?यदि हाँ तो जरूरी है कि आरक्षण विधेयक में कुछ परिवर्तन करके उसे पास कर दिया जाये ।

स्त्रियों की विभिन्न क्षेत्रों में बदली हुई स्थिति को देखकर कुछ व्यक्ति अब्ध हुए हैं, तो कुछ ने प्रसन्नता प्रकट की है। इस संदर्भ में यह प्रश्न उठता है कि क्या नारी को लोक जीवन, सार्वजनिक जीवन, और राजनीतिक गतिविधियों में भाग लेना चाहिए, अथवा नाही ?

अन्य शब्दों में लोक जीवन में उनका प्रवेश बांछनीय है या नहीं ?इस बारे में दो मत पाए जाते है, पहला मत, उनके लोक जीवन में विपक्ष से है, और दूसराभत पक्ष में । जो लोग विपक्ष में है उनका कहना है कि – 1. स्त्रियों का कार्यक्षेत्र घर है, उन्हें पति शेवा तथा बच्चों के लालन पालन, आदि का कार्य कर उन्हें परिवार के निर्माण योगदान देना चाहिए, क्योंकि सुखी परिवार ही समाज का आधार घ सार्वजनिक कार्य करने पर घर की उपेक्षा होगाय बच्चो का समुचित स पालन पोषण नही होना, वे अनियन्त्रित एवं आवारा हो जायेंगे और परिवार विधारित होगा. २. राजनीति और लोक जीवन में भाग .लेने पर स्त्रियो यौन स्वच्छता एवं अनैतिकता के लेगी. 3. परिवार की

धार्मिक क्रियाओं का सम्पादन सुचारू रूप से नही हो सकेगा । कुछ व्यक्ति स्त्रियों की शारीरिक र मानसिक क्षमता को पुरुषों से निम्न मानते हैं, अतरू वें उचित निर्वाण निर्णय लेने मे असमर्थ होती है, इन सभी दलीलो के आधार पर कुछ व्यक्ति स्त्रियों के लोक जीवन में प्रवेश की अवांछनीय मानते हैं। सरोजनी नायडू का विचार था कि महिलायें सामाजिक कामो और राजनीति के द्वारा समाज में एक अहंम भूमिका अदा कर सकती है। नायडू ने सम्पूर्ण भारत की महिलाओ के अर्थ उत्पा और कल्याण के लिए कार्य किया है। वे सामाजिक एवं राजनी दोनो प्रकार के संघी से समान रूप से जुड़ी थी । उनका मत थ कि महिलाएँ श्महिला स्थिति के साथ कन्धे से कन्धा मिला कार्य करे। घर से बाहर निकलकर सामाजिक क्षेत्रों में कार्यक नायडू ने सम्पूर्ण बंगाल की महिलाओं को आन्दोलून करने की प्रेरणा दी ! सरोजनी नायडू भारत के विभिन्न नगरी में समाज सुधार समितियों में भाषण देती, उन्हें प्रेरित करती कि है राष्ट्र के लिए कार्य करे । सरोजनी नायडू का यही योगदान यह भी है कि उन्होंने महिलाओं को राष्ट्रीय आन्दोलन से भी जोड़ा। बिटिश शासन जेनारी चेतना को जागृत क निश्चय ही अपने में एक महत्वपूर्ण है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूचि

1. वी. एन. सिंह व जनमेजय सिंह, नारीवाद, (2018), शवत पावनकेशन जगपुर– 302004 (भारत) पृष्ठ स 400
2 डॉ. एस. सी. सिंहल, भारतीय शासन एवं राजनीति, (२०१३), लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा, पृष्ठ संख्या 419.
3. अभय प्रसाद सिंह, भारत में राष्ट्रवाद, (2019), ओरियंट लेक स्वयु हैदराबाद 1500029 तिलंगाला) भारत, पृष्ठ संख्या 139.
4. विजय कुमार वर्मा, व अग्थिलेश पाल, आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिन्तन (2019), ओरियेट ब्लैकस्वान, हैदराबाद, तेलंगाना भारत पृष्ठ से 1रू39.
5. आर. सी. वरमानी, संगकालीन अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध, (2007 –8), गीतांजली, पावलशिंग हाउस, नई दिल्ली – 110049, पृष्ठ सेरच्या 288, 29,
6 जी. एल. शर्मा, सामाजिक मुदरे, (2015), रावत पावलकेशन्स, जयपुर 302004 (भारत), पृष्ठ संख्या 424,425,
7 वी. एन. सिंह व जनमेजय सिंह, भारत में सामाजिक आन्दोलन, (2018), रावत पालिकेशन्स, जयपुर– 302रू009 (भारत) पृष्ठ से. 233.
8 राम आहुजा, भारतीय समाज (२००१), शवत पालिकेशन्स जयपुर 302004 (भारत) पृष्ठ से. 142.
9 डॉ. अमिता सिंह, लिंग एवं समाज, (प्रथम संस्करण 2015) विवके प्रकाशन, दिल्ली – 7, पृष्ठ से 185,186,
10 वी. एन. सिंह, व जनमे जयसिंह, भारत में सामाजिक आन्दोलन, (2018) शवत पावलकेशन्स, जयपुर पृष्ठ संख्या 228

डॉ0 नीरज कुमार
पता–ग्राम पोस्ट– परतापुर
जिला– बु:शहर (उ0प्र0), 203411
मो0– 9761824286
ईमेल–neerak.kumar4286@gmail.com

प्रो0 गोतम वीर
प्राचार्य
बी0एस0एल0 पी0जी0 कॉलिज,
रूडकी, हरिद्वार

25

Canterbury Tales – A MIRROR WORK OF FOURTEENTH CENTURY BY GEOFFREY CHAUCER

Dr Jayshree Hazarika, Harshit Kumar Arya

Abstract

This research paper discusses how a poem by Geoffrey Chaucer portrays a full picture of English culture in the 14th century. There are characters from all groups of contemporary society in this poem which describes the pattern of habits and works that had been changed but occupation and class remained the same. The poem was composed between 1387 to 1400 which age is known as the literary stage of Geoffrey Chaucer's life. Geoffrey Chaucer gave a whole new level of criteria to understand that time through "Canterbury Tales". He depicted how a sudden change occurred in the society and people initiated to engrave their occupation according to their own desires. After the complete analysis of the poem, there will be no doubt to call Geoffrey Chaucer as a painter without brush as he has picturize deach character with a neat description. He was one of the brilliant and talented artists of that time."The Canterbury Tales" is revered as one of the most important and famous works of English literature which was written in middle English and that opens to wide range of interpretations. This research paper also shows how the church was responsible for such a significant change in culture, and how corruption influenced the upper-class people.

Introduction

Geoffrey Chaucer was an English poet and an author. He was born in 1340's.

He was considered as one of the greatest poets of middle age. He is best known for his greatest work "The Canterbury Tales". He was also known as the father of English Poetry. Generally, Chaucer was greatly influenced by Giovanni Boccaccio who was an Italian writer, poet, correspondent of Petrarch and an important renaissance humanist. When Chaucer became controller of customs and justice of peace during these years, he began working on his greatest text "The Canterbury Tales". The tales were presented as part of storytelling contest by a group of pilgrims as they travelled together to Canterbury in London to visit the shrine of Saint Thomas Backet. All the character descriptions in the Canterbury Tales are not only portraits of their outward appearance, but also of their inner selves, i.e., a corrupted individuality. The most corrupted characters in the Canterbury Tales are church characters such as The Friar, The Nun (prioress), and The Monk. During the medieval period, when Europe was dealing with the consequences of bubonic plague (the great black death), the church built costly shrines. These newly built shrines symbolized the church's wealth and supremacy over the land. The Chaucerian period was a time of transformation and change. The country was undergoing social, religious, political, and literary transformations. Medievalism was fading out, and modernism was creeping in. Because of the church's brutality against the people, there were peasant upheavals in British society.

Fourteenth Century Church

Church played a very important role in the lives of people living in fourteenth century as everything was related to the religious and moral livings which were entirely controlled by church at that time. The church tried hard to bind everyone to its system of 'a single moral community'. Thus, every routine was controlled by religious elements and prescriptions. Church had a dominant role over community and society. No one was above Church. It will not be surprising to say that church played a very important role in Chaucer's "The Canterbury Tales" in which the six members of church show the omnipresence power of church. During medieval period, church was getting more and more powerful. Church was extremely wealthy and predominant organization which indulged in politics when Chaucer wrote" The Canterbury Tales".Geoffrey Chaucer's Canterbury Tales is a spoof or a parody on the Catholic Church. In this poem, Chaucer expresses his disappointment with the Catholic Church. During the Middle Age, the church had complete influence over entire England. Few characters enlisted, provide a comprehensive understanding of the church's dominant conduct of that times.

Monk

By this name everyone will understand and get an image of a holy person in one's mind. He is considered the one who prays and performs manual labour. He was one of the thirty pilgrims, but he was nothing like a monk. He was only in

disguise of a monk. He used to hunt hares and ride horse instead of studying, praying and performing a manual labour. He did not follow the rules of monastery.

The Wife of Bath

She could be seen as a professional wife who had already married five times and had many other affairs in her life. She was represented by Chaucer as someone who loved marriage and sex, but she also took pleasure in rich attire.

The Friar

Friar was the greatest character who was always ready to befriend young women or rich men. He was one of the most corrupt characters of The Canterbury Tales.

Since change was not limited to church personalities, ordinary citizens were also adjusting to global change following the long-running war between France and England, which forced the English people to embrace change as the only constant in the world. Though it isnecessary to change oneself, only negativity was becoming entrenched with all its might. Church was notable because it was connected to English people's religious values, and it is likely that the church acted as a role model for the change in culture. Ordinary people began to imitate items that were at a higher level (actions of Church Personalities) among them. When children see their elders performing an action, they attempt to mimic it. Similarly, this is what we saw in the world that was entirely dominated by the church.

Conclusion

When reading Geoffrey Chaucer's Canterbury Tales, one might claim that the whole text is an ironyas all kinds of people from the highest to the lowest strata of society, who travel to a pilgrimage that is said to be one of the holy places for Christian Religious society.Though those people were corrupted by their character as well as by their profession.

Geoffrey Chaucer, in my opinion, wanted to make people aware of how their environment and their actions which led to corruption and, finally,through this text (the canterbury tales), he wanted to show how the downfall of their lives happened. He picturized how the church, which is considered to be a holy place, became corrupted and started controlling the whole country like a ruling party or a cruel king, instead of spreading love and harmony among people.

Each and every character is exactly described as the picture of changing fourteenth century English society, and we can conclude through the text that Chaucer gave a great piece of art and Literary work that left no doubt about understanding 14th century society.

References

- Turner Marion, Professor Oxford university, Biography of Geoffrey Chaucer;
- Chaucer Geoffrey, The Prologue To Canterbury Tales, Published 1392;
- J. Long William, English literature its history and its significance, Indian Edit published 2013;
- The complete works of Geoffrey Chaucer, By Geoffrey Chaucer, originally published 1912;
- Chaucer's Canterbury Tales" as a Picture of Contemporary Society (purwarno-sastra-uisu.blogspot.com)
- Church Corruption In Chaucer's The Canterbury Tales | ipl.org
- Fourteenth Century Society in Geoffrey Chaucer's The...Bartleby
- Geoffrey Chaucer as a Realist - Literary English
- Geoffrey Chaucer Biography (cliffsnotes.com)

Harshit Kumar Arya
Student, Department of English
FMeH, MRIIRS
Under the Supervision of
Dr. Jayshree Hazarika
Assistant Professor,
Department of English
FMeH, MRIIRS

26

ERP Implementation In Textile Industries

Dr. Santosh Kumar Sharma

Abstract

The textile industries have changed tremendously in the last few years. To sustain competitive advantage, companies must re-examine and fine-tune their business processes to deliver high quality goods at very low costs. Most companies have now outsourced manufacturing to low labour. Globalization has led to increase in competition and quality awareness and therefore it has become very important for the textile industry to integrate itself with information technology to survive. ERP is an integrated system that allows information to enter at a single point in process & updates a single shared database for all functions that directly or indirectly depend on this information.

Introduction:

In every sector of our textile business, the market is forcing companies to stay competitive by taking proactive steps to improve operations. In the pursuit of profitable growth in a global marketplace, mills are looking for new strategies to improve the quality, cut costs, respond swiftly to changes in customer demands and vagaries in raw material supply position, expand globally, develop new distribution channels and forge new value-added relationships with suppliers and customers With the increase in competition and quality awareness within and outside India, no developing and progressive industry would be able to survive for long without application of Enterprise resource planning (ERP).It plans and controls various operations right from the purchase up to selling of the product. This paper mainly elaborates the concept of ERP, its development, implementation with its success and failure factors. There are many slacks in use of manpower, energy, fuel, textile material, and other processing materials in textile industry. Management of the manufacturing resources plays a vital role in any textile industry. It helps in the optimal uses of manufacturing resources. It reduces the wastage of the raw materials. Higher quality of product is obtained by using it.

Erp Implemention:

ERP implementation is the customization and introduction of an ERP system in textiles.ERP software was designed with the concept of the benefit of seamless integration to streamline transaction-processing tasks across an enterprise.

1. Resistance to change
2. top management support
3. User training & education

• Some of the other issues that were mentioned included cost, having the right project team, lack of a clear view of the function of ERP, and that textiles does not follow and ERP business flow. describe 10 categories of ERP implementation failures which area as follows:

- leadership from top management
- Automating existing redundant or non-value-added processes
- Unrealistic expectations,
- project management
- In adequate education and training
- Trying to maintain the status quo
- Mismatch between the system capabilities and the organizations processes and procedures
- Inaccurate data
- Implementation viewed as an IT project
- S ignificant technical difficulties.

What Is ERP?

An Enterprise Resource Planning (ERP) system is a package of corporate wide software application that drives manufacturing, planning, costing, finance, marketing, human resources and other business functions in real time. Most textile companies today have separate application software to carry out each activity. The significant advantage of an ERP system is that it integrates all the functions to create a single unified system rather than a group of independent application, thus creating a synergy between the vital resources of an organization namely men, material, money and machine.

Definition:-

ERP is defined as an integrated, multidimensional system for all functions based on a business model for planning, control & global optimization of entire supply chain by using IT technology.

ERP is an integrated system that allows information to enter

at a single point in process & updates a single shared database for all functions that directly or indirectly depend on this information. ERP is basically a software suit that integrates the whole enterprise, covering the entire internal supply chain from vendors & suppliers to customers.

Need Of Erp In Industry:

ERP covers the techniques and concepts employed for the integrated management of business as a whole with objectives of effective use of management resources to improve the efficiency of the organization. This system designed to model and automatic many of the basic process of the company from the finance to the shop floor with a goal of integrating information across the company and eliminating complex expensive links between computer systems. It produces the dramatic improvements when used to connect parts of an organization and integrate its various processes. Thus, it gives a better products and better services at affordable prices.

Benefits of ERP:-

- Greater and effective control on accounts payable through better invoicing and payment processing
- Reduction in paperwork because of online formats forentering and receiving information
- Improved cost control
- Quicker response and follow up with customers
- Availability of timely accurate information with detailed content and better presentation
- Better monitoring and quicker resolution of queries from within and outside.
- Quick response to change in business operations and market consumption.
- Improved business processes providing a competitive advantage.
- Improved supply demand linkage with remote locations and branches in other countries.
- Unified customer database usable by all applications
- Single write, multi read data.
- Improved customer service and satisfaction
- Increased flexibility in operations
- Improved resource utility, reduced quality cost and information accuracy.
- Improved decision making processes due to availability of online information.

ERP In Textiles:

Textile manufacturing revolves around three entities customers, banks and suppliers. A customer gives a sales order to the company and this forms the basis for production planning. Raw material is purchased and dispatched to the mills. Receipts and payments are made through banks. Before the ERP deployment, most of the work was done manually resulting in inaccuracies both incorrect and missing entries.

With the new system, the group wanted to maintain its procedures. ERP has enabled accountability, accuracy, and transparency without breaking the existing workflow.

Development Of Erp Package For Textiles:

ERP facilitates a companywide integrated information systems covering all functional areas such as manufacturing,sales and distribution ,accounts, payables,receivables,inventory ,human resources,etc. ERP integrates and automates most business processes and shares information enterprise wide in real time thus improving customer service and corporate integration. ERP solution includes manufacturing marketing as well as finance sectors. The main steps in development of such a software package are:

- Defining the problem
- Designing the program
- Debugging
- Testing
- Documentation
- Maintenance
- Redesign

Defining the problem:-

It includes feeding of data (i.e. specifications of input and output processing requirements).Thus to design such a system one requires to know various parameters of textile Fibre module: - It consists of market price of fibres as well as technical specifications like grade, fineness, strength, moisture regain, etc should be included.

Yarn module: - It includes various technical, process as well as commercial details.

i. Technical parameters like yarn count, strength, weight, CV%, twist, quality ratio, breaking strength and irregularity.
ii. Production details like lot number, shift production, efficiency and wastage
iii. Process parameters like carding, drawing, spinning.
iv. Commercial details like end use, market price, etc.

Fabric module:- It also includes

i. Technical specifications like yarn count for warp and weft, reed count, ends and picks per inch, process specification at winding.
ii. Process details like weight and fabric width, no. of knots, sizing paste, size take up, ends and picks fabric faults. Marketing module:-This deal with store section and various parameters like stock,

MRP.Finance module:- It deals with HR cell and includes various parameters like database on HR, performance rating,HR allocation and selection and recruitment.

Designing the Programme:-

The first step is to input incoming orders, check the feasibility of requested dates for delivery, suggest possible delivery, manage the entire order cycle from acceptance and entry to packing list, shipping and invoicing, manage the price list, allow orders to be accepted via internet, order taking, booking of stocks.

Second step is article coding (giving codes to different end products).The code structure of each article type may be named and defined as per software developer or user and parameters required.

Planning is next step. It means working from given budget and production plan and calculating material and capacity requirements, laundering production orders and identifying divergence of orders being processed from planned production schedules.

Next step is checking of product manufacturing. It allow planning, laundering and tracking of production activities across whole cycle and to handle fault reporting and mapping, optimizing cutting of pieces at each inspection cycle.

Inventory and purchasing should be taken care of defining purchasing and stock policies by specifying minimum inventory levels, recorder quantities and replenishment times.

Debugging:- It is the procedure of correcting the errors.

Testing:- Checking of correction of individual programme as well as complete system.

Documentation :- It gives full description of package and details for executing the system.

Maintenance :- It is the preservation of complete package.

Following Integrated Functional Modules:

a) Sales: for order acceptance, shipping, and invoicing,
b) Planning: for optimizing and scheduling of production orders
c) Manufacturing: for the management of the production cycle, including dye-house management, and quality Control.
d) Inventory & Purchasing: for the optimization of reordering, stock control, and valuation policies
e) Costing: for the monitoring and control of standard and actual costs.

Sales:-

Satisfying customers is becoming an ever increasing challenge. The ability to smoothly and efficiently enter, track, allocate, ship and invoice a sales order is essential to anyone operating in the textile and apparel business. With the ever increasing pressure brought on by domestic and global competition, and the stress resulting from severely shortened product life cycles, the task of Customer Service gets more and more challenging. VIP: (for order-driven manufacturing) processes incoming orders, checking the feasibility of requested delivery dates or suggesting the earliest possible delivery.

COPS: manages the entire order cycle from acceptance and entry to picking list, packing list, shipping and invoicing.TPM: (for third-party manufacturers) manages price lists and invoicing directly from job lots. ECHO: the e-business module which allows orders to be accepted via the Internet, online order tracking, booking of stock availability and on-line catalogue publishing.

Planning:-

Planning has become the most critical success factor in the textile and apparel business. Quicker delivery times, on-time delivery, smaller lot sizes and online order acceptance, are only some of today market expectations. In order to satisfy both your customers needs and those of your company, datatex enables TIM to guarantee order acceptance based on finite production capacity, available stock, work-in-progress and forecasts.

VIP: checks stock availability and manufacturing capacity allocating and scheduling resources to the critical production steps.

DISPO: launches production orders and identifies divergence of orders being processed from planned production schedules

Textile Manufacturing:-

The textile industry is totally different from all other types of manufacturing, but the area where the difference is most relevant is production.

Correct and thorough control of each production process to

maximize volume and profits for each individual department, and of the entire company

Be able to track production to find and prevent defective lots or defects in production.

Reduce production lead-times

Improve quality by better managing both material usage and process parameter settings

Reduce waste by properly defining the production standards and monitoring production processes

Maintain close management of external operations involving shipping of items to be processed to the converter, delivery dates, and processing price

Perfect communication between sales and production so that delays and problems can be identified before they affect customer service

DISPO: allows planning, launching and tracking of production activities across the whole textile production cycle.

Inventory And Purchasing:-

In an industry where lots, bales, pieces, rolls, raw materials, finished products, colors, sizes etc. are everyday elements, keeping a warehouse under control, both financially and logistically, is just as important as it is difficult. TIM is totally adapted to specific textile work areas, and helps buyers and inventory managers to fulfill warehouse objectives such as

- Reduction of unsold and obsolete stocks and supplies through careful controls that minimize carrying costs
- Optimization of physical warehouse and location selection
- Improvement of customer service in terms of quality and response-time, thanks to better warehouse organization
- Management of any kind of warehouse whether internal or external; by quantity, batch, piece, lot, container, or size
- Reduction of buying expenses thanks to better organization of purchase requisitions and their order status
- Capability of issuing any kind of transaction order, whether for production materials, consumption materials, or miscellaneous goods
- Choice of the best supplier with respect to prices, quality, and delivery times manages and evaluates raw materials and finished products in terms of inventory levels, requisitions and allocations

Conclusion:

The textile industry in our country is one of the few industries in the country, which has the potential to emerge as a true global player. Recognizing the fact that industry needs concerted strategy and time-bound action plan to convert its core competence in availability of all major raw materials, skilled manpower, managerial competence and entrepreneurial skill to a competitive strength as a producer and supplier of top quality textiles at competitive prices .It is the comprehensive enterprise resource planning (ERP) system with solution from SAP, TIM etc. It has been designed to meet today's changing demands in corporate world. This system allows companies to regain active control of their whole administration and operations environment to increase efficiency and profitability. System enables new levels of business process and technology integration while laying the foundation for incremental evolution of the solution. The ERP is needed to heighten quality, to make profit and to survive in the global market because this allows to think on the results and to make the beneficial correction. To run in competition the ERP is fundamental aspects in consideration with other aspects.

Dr. Santosh Kumar Sharma
M. COM, MBA, LLB, LLM With PhD.
H.No. 5113, Sector-3
Faridabad.
PIN CODE 121004
Mo.-9899882948
santosh.sharma2013@gmail.com

27

Marketing Communication Tool Selection On Basis Of Family Life Cycle Stages In Indian Context

Sakshi Sharma

Abstract

Marketing communication is a tool through which buyer and seller interacts. It is a process of presenting and persuading the prospects to buy the product. Marketing communication tool is decided keeping in mind various factors which include the target audience, type of product, etc. We have taken into consideration four type of promotion tool (i.e. marketing communication tool) namely, Advertising, Sales promotion, Personal selling and Public relation. There are various ways to divide population into segments and then selecting target audience. One such basis is Family life cycle (FLC) which is traditionally classified into 5 stages namely, Bachelorhood, Honeymooners, Parenthood, Post-parenthood and Dissolution. The consumption pattern and resources availability is studied on basis on FLC stages. Then few products are listed from each FLC stage. These products are then classified as different type of products on basis of their characteristics. A product type can be Convenience product, Shopping product, Speciality product or Unsought product. In later section of this paper a relationship between promotion tool and FLC stages has been established using the product type and resources available as the basis. The main purpose of this research paper is to draw general conclusion by suggesting the most suitable marketing communication tool for each family life cycle stage for specific products.

Keywords: Consumer behavior, Marketing communication, Promotional tools, Family life cycle stages, India

Introduction: Consumer behavior is influenced by various environmental factors. One of the most vital factors is Family. Family is the first and fundamental environment to which a child is exposed. Ones values, beliefs, attitude, personality, lifestyles, customs and preferences are greatly influenced by family in which he/she has been brought up. Therefore it becomes important for marketers to study family life cycle stages i.e. phases through which an individual passes during his/her lifetime. This will help in better formulating a marketing communication strategy. Family life cycle stages will be taken as a basis for market segmentation to analyze buying/consumption pattern. It helps us to identify suitable promotional tool for each family life cycle stages. For the research paper we are using traditional family life cycle stages. Family life cycle is divided into five stages. Refer table 1.1 for better understanding of five stages.

TABLE 1.1

STAGES	CHARACTERISTICS
Bachelorhood	Young single adult living away from parents
Honeymooners	young married couple
Parenthood	Married couple with at least one child living at home
Post-parenthood	An older married couple with no children living at home
Dissolution	One surviving spouse

Family life cycle helps to identify consumption pattern by establishing relationship between consumption expenditure and family life cycle stages for specific products. The consumption pattern provides the basis for type of products being used. All this information will help the marketer to better promote the product by using the most suitable promotion tool. For the convenience of the study, we are taking into consideration four marketing communication tool- (A) Personal selling (B) Sales promotion (C) Advertising (D) Public Relations

Objectives:

1. To analyze buying/consumption pattern of consumers in different family life cycle stages.
2. To relate type of products used in each life cycle stage with promotion tools.
3. To establish a relationship between the FLC stages and promotion tool.
4. Find out most suitable marketing communication tool for each family life cycle stage for specific products.

Research Methodology: Secondary data collection method is used, due to shortage of time. Related research papers, articles, e-journals and other online information related to

topic are used for this paper. The main focus of this research paper is to relate family life cycle stages with promotional tools.

- **Family Life Cycle Stages and consumption pattern:**

Family can be defined as two or more people living together, who are related by blood, marriage or adoption. Family is the fundamental membership group and greatly influences the consumption behavior of its members. Classification of families on the basis of family life cycle (FLC) stages is considered as a good criterion to study consumption related behavior. The following discussion examines traditional family life cycle stages and consumption pattern.

- **Stage I Bachelorhood:** The first FLC stage consist of young single men and women, living away from homes. Usually consist of fully employed individuals or college students.

  Expenditures- Rent, travel, basic furniture, basic kitchen appliances, clothing, entertainment and automobiles.

  Resources Available- Mostly people belonging to this stage have plenty of time and energy resource. Income is good enough compared to responsibilities.

- **Stage II Honeymooners:** Marriage is a major turning point in one's life. This stage includes newly married couple until the arrival of first child.

  Expenditures- High end furniture, from major to minor all kind of kitchen appliances, travel, automobiles, electronic appliances and financial instruments.

  Resources Available- Since these days both the partners are working, so the combined income permits to enjoy pleasure-seeking lifestyles. Expenditures and responsibilities are less while the income is doubled. So they are financially strong with less responsibilities being compared to other family life cycles.

- **Stage III Parenthood:** With the arrival of first child a person passes the honeymooner stage to parenthood stage. This stage is also referred as Full nest stage. This stage lasts very long approximately 20-25 years.

  Expenditures- Groceries, diapers, children's clothing, home related items, high-end furniture items, investment, savings instruments and vacation packages.

- **Resources Available-** Young parents suddenly have scarce time resource and money expenditure also increases. Taking care of children is also physically quite exhausting. This stage is financially challenging.

- **Stage IV Post-parenthood:** In this stage we find children have left home. They are settling down in their career, getting married and starting their own housing unit. This stage is also called Empty nest stage. It's more like a rebirth. Mother and father get more time for themselves. Later in this stage the bread earning member got retired.

  Expenditures- Hobbies, travel, luxury goods, life insurance, medical care and medicines.

  Resource Available- In the initial phase of this stage time, money and energy resources are considerably good enough as the couple is done with all the responsibilities related to children. But as the stage comes to end all resources start depleting and when the earning member got retired, there is sufficient time but scarcity of money and energy resources.

- **Stage V Dissolution:** Dissolution begins with death of one spouse. The surviving spouse leads a more economical lifestyle. If the surviving spouse is working or has sufficient funds then adjustment is easier.

  Expenditures- Medical care, health insurance, frozen food, pre planned funeral services

- **Resources Available-** Since the surviving spouse is retired and there is no income source so he/she is using the accumulated savings. Savings **st**arts depleting; there are limited money and energy resources. While enough time resource.

- **Types of products:**

  Marketers usually classify consumer products in the following categories:-

- **Convenience products-** Convenience products are a consumer product or service that customer normally buy frequently, immediately and without great comparison or buying effort. They are usually low-priced and supplied in many locations to make product readily available when consumers need or want them.

- **Shopping products-** Shopping products are a consumer product that the customer usually compares on attributes such as quality, price and style in the process of selecting and purchasing. They are usually less frequently

purchased and more carefully compared. Therefore, consumers invest much more time and effort in gathering information and comparing alternatives.

- **Speciality products-** Speciality products are consumer products and services with unique characteristics or brand identification for which a significant group of consumers is willing to make a special purchase effort. This type of consumer products involves different levels of effort in the purchasing process, but applies only to certain consumers.
- **Unsought products-** Unsought products are those consumer products that a consumer either is not aware about or knows about but does not consider buying under normal conditions. Consumers do not think about these products normally, at least not until they need them. Most new innovations are unsought until consumers become aware of them.
- 3 Products from each life cycle stages and classified on basis of type of products:

STAGE	PRODUCT/SERVICE	TYPE OF PRODUCT
BACHELORHOOD	Basic kitchen appliances	Convenience product
	Branded Clothes	Speciality product
	Basic furniture	Convenience product
HONEYMOONERS	High end furniture	Shopping product
	Automobile	Shopping product
	Travel	Shopping product
PARENTHOOD	Groceries	Convenience product
	Investment Options	Shopping product
	_ - _	Shopping products
POST PARENTHOOD	Specific Car	Speciality product
	Life Insurance	Unsought product
	Travel	Shopping product
DISSOLUTION	Frozen Food	Convenience product
	Health Insurance	Unsought product
	Pre Planned Funeral Services	Unsought product

Ø Promotional tools:

Promotion is a process through which the marketer communicates with the prospective buyer about the product/service, and persuades them to make urchases. Promotion is done keeping in mind few objectives, which can be as follows:-

- To gain attention of prospective buyer.
- To be understood by receiver.
- To develop receivers' interest in the product/services.
- To stimulate need of buyer and then directing him the way to fulfill that need.
- To motivate the buyer to make purchases.

• Various ways have been devised to fulfill the objectives of promotion. For the purpose of this paper we will be considering the four discussed below:-

- **Advertising-** American Marketing Association has defined advertising as "any paid form of non-personal presentation and promotion of ideas, goods and services by an identified sponsor." It involves radio, magazines, newspaper, T.V., etc. There is no face to face interaction. It communicates a common message to large number of people at one time. It focuses on increasing product image, increasing sales volume and to fight competition. It intends to target youth, women and children. There is delayed feedback.
- **Sales Promotion-** According to American Marketing Association, "Sales Promotion includes those marketing activities other than personal selling, advertising and publicity, that stimulate consumer purchasing and dealer effectiveness, such as displays, shows and expositions, demonstrations, and various non-recurrent selling efforts not in the ordinary routine." It includes free samples, rebate, partial refund of price, discount coupons, contests, free gift, exchange offer, etc. The main aim of marketer is to encourage on the spot buying through short term incentives. Short term incentives attract the customers to try the product and create goodwill among the prospective buyers. Sales Promotion bridges the gap between advertising and personal selling.
- **Personal selling-** Personal selling is a process of presenting and persuading the prospective buyer to buy a product through face to face interaction. The person who performs this job is called salesman. In this process firstly the salesman stimulates the need for the product and later encourages the prospect to fulfill the need by buying the product. It is pervasive in nature. It provides personalized attention to an individual or a small group of people. It is flexible as the technique of presentation can be changed on the spot. Immediate feedback is obtained.
- **Public Relations-** In layman language it is the relationship of an organization with the public. The main aim is to build goodwill (intangible asset). The British Institute Of Public Relations has defined public relations as "the deliberate, planned and sustained effort to establish and maintain mutual understanding between an organization and its public." This promotion tool is used to overcome people's prejudices, doubts and dislikes

- about the organization. It targets general public by making them aware of the policies and programs undertaken by organization.
- Marketing communication tool suitable for different types of products:

PROMOTION TOOL ⟹ / PRODUCT ⇩	Advertising	Sales Promotion	Personal Selling	Public Relations
• Convenience products	☆	☆		
• Shopping products		☆	☆	
• Speciality products			☆	☆
Unsought products	☆		☆	

Marketing communication tool suitable in different family life cycle stages:

STAGE	PRODUCT	RESOURCES AVAILABLE	TYPE OF PRODUCT	PROMOTION TOOL
Bachelorhood	Kitchen appliances	Sufficient time and energy resource but limited financial resource	Convenience	**Sales promotion**
	Branded Clothes		Speciality	**Public relations**
	Basic furniture		Convenience	**Sales promotion**
Honeymooners	High end furniture	Strong financial resources with reasonable time and energy resources.	Shopping	**Personal selling**
	Automobile		Shopping	**Personal selling**
	Travel		Shopping	**Personal selling**
Parenthood	Groceries	Scarcity of time, financial and energy resources.	Convenience	**Sales promotion**
	Investment Options		Shopping	**Personal selling**
	Children's Clothing		Shopping	**Advertising**
Post-Parenthood	Specific Car	Initially all resources are considerable, but later on all resources starts depleted.	Speciality	**Public relations**
	Life Insurance		Unsought	**Advertising**
	Travel		Shopping	**Personal selling**
Dissolution	Frozen Food	Limited money and energy resources, While enough time resource	Convenience	**Advertising**
	Health Insurance		Unsought	**Personal selling**
	Pre Planned Funeral Services		Unsought	**Advertising**

Conclusion:

- Different communication tools can be used on the same product type depending upon the FLC stages and availability of resources.
- Convenience products should be communicated using sales promotion technique in bachelorhood stage as the person is not financially too strong, so incentives provided in sales promotion technique will encourage buying.
- Convenience products in parenthood stage can also be s promoted using sales promotion technique as financial resources are in shortage due to more responsibilities, so products to which some value is attached in form of gifts, discounts, cashbacks, etc. tend to be more appealing.
- In dissolution stage, convenience products can be best promoted through advertising as creating awareness plays a major role in that stage.
- Shopping products are heavily purchased by honeymooners as they are the most financially sound people, having dual income sources. Since time and energy resources are moderate so best way to deal with them is to provide personalized attention, which can be one using personal selling technique.
- Also in parenthood and post parenthood stages the personal selling technique is used for shopping goods as shopping goods are believed to be significant and thus choices are made after expert advice.
- Speciality goods are usually bought by people belonging to post parenthood stage as they are done with all their duties towards their children and are initially left with good accumulated savings which they want to spend on luxury goods or in bachelorhood stage as fewer responsibilities and more attracted to branded products. So to persuade them public relation technique fits well as luxury goods are usually bought keeping in mind the goodwill and status attached to brand name.
- We found that unsought goods need is felt mostly in post-parenthood and dissolution stage, when an individual have enough time resource. Advertising techniques works well in creating awareness at large level irrespective of geographical boundaries.

Bibliography:

- Consumer Behavior, 5th Ed. By Leon G Schiffman and Leslies Lazar Kanuk
- Chhabra T.N., Principles Of Marketing, 2017
- https://marketing-insider.eu/4-types-of-consumer-products/

Sakshi Sharma
Pursuing M.COM,
University of Delhi
Sakshi.sharma28@yahoo.com

28

Clinical Profile of Children with Intellectual disability

Jai Prakash, Sonalika Suman

Abstract

Intellectual disability (ID) has an overall prevalence of 1-3% in the global scenario. It is found in all societies and creates psychological, social, and financial distress to family and society.This retrospective study aimed to evaluate the socio-economic variables,associated condition,family, and school history of Intellectual disability below the age of 18 years. The diagnosis of Intellectual disability was based on DSM-V diagnostic criteria for mental retardation (Intellectual disability). There were 22 boys and 13 girls. The finding of the present study revealed that 66% of children with intellectual attended schooling, which is very important for their development and living as independently.The children with intellectual disability had significantly more family history of intellectual disability and consanguinity. The majority of children had associated with behavior problems and epilepsy. The behavior problem was found significant in association with the level of intellectual disability, which reveals that the problem behavior varies in level of intellectual disability.The study of the clinical profile of children with ID can be used in early identification, intervention, management, and prevention of the same.

Keywords: Children with intellectual disability, Clinical Profile, Associated Condition,family History.

Introduction:

Intellectual disability is the most common developmental disability in many countries around the world and isfound in all the societies of the world. The term intellectual disability was commonly used for children with poor intelligence; The term has been recently introduced keeping in the view dignity of the children with mental retardation. Since the term mental retardation is associated with a negative connotation and doesn't representability of the child, so it has been replaced with the term Intellectual disability referring to the particular area of disability.

The American Association of Intellectual and Developmental Disability (AAIDD), United States of America, defined "Intellectual disability is a disability characterized by significant limitations both in intellectual functioning and in adaptive behavior as expressed in conceptual, social, and practical adaptive skills. This disability originates before the age of 18". The term Intellectual Disability (ID) is relatively new which is included in the Right of Persons with Disabilities Act, 2016 (RPWD Act, 2016), it was previously known as Mental Retardation in Person with Disability Act,1995. RPWD Act, 2016 defines Intellectual disability, a condition characterized by significant limitation both in intellectual functioning (reasoning, learning, problem-solving) and in adaptive behavior which covers a range of everyday, social and practical skills.

The Diagnostic and Statistical Manual of Mental Disorders-Fifth Edition (DSM-5). The intellectual Disability diagnosis criteria include deficits in intellectual functions such as reasoning, problem-solving, planning, abstract thinking, judgment, academic learning, and learning from experience. Also, deficits in adaptive function affect communication, social participation, and independent living activities. As per DSM –V, there are four types of Intellectual Disability: Mild intellectual disability IQ 50 to 70, Moderate intellectual disability IQ 35 to 49, Severe intellectual disability IQ 20 to 34, and Profound intellectual disability IQ less than 20. Severe and profound levels of ID may need help with activities in daily living. children with intellectual disability experience difficulties with day-to-day activities to an extent that reflects both the severity of their cognitive deficits and the type and amount of assistance they receive (Barlow & Durand, 2009).

Children with intellectual disabilities are usually at a higher risk of living with complex health conditions such as epilepsy, neurological disorders, behavioral, speech, and locomotor problems compared to people without disabilities. Adults also have a higher prevalence of poor social skills, behavioral risk factors, depression, and poor or fair health status than adults without intellectual disability. As per census 2011 (2016 updated), 2.68 Cr persons are disabled which is 2.21% of the total population. Among this 56% (1.5 Cr) are males and 44% (1.18 Cr) are females. In the total disabled population, 69% are from rural areas while the remaining 31% resided in urban areas. Out of the 2.68, Cr persons are disabled, 20% of the disabled persons are having

a disability in movement, 19% are with disability in seeing, and another 19 % are with disability in hearing. 8% has multiple disabilities,6% has mental retardation (Intellectual Disability).

The current study is undertaken to find the association between socio-demographicvariables and clinical profiles of children with Intellectual disability with different levels of intellectual disability. This will help us in planning the training program for parents in handling their child in day-to-day activities and to prevent developmental Disabilities.

Aim of the study

To find out socio-demographic details and the clinical profiles of children with Intellectual disability and their relation with different levels of intellectual disability.

The objective of the Study

(1) To examine the socio-economic characteristics of the children with ID having different levels of intellectual disability.
(2) To identify the family and school history of the children with intellectual disability.
(3) To identify the associated condition of children with intellectual disability.
(4) To find out the association between socio-demographic variables and associated conditions witha level ofintellectual disability.

Hypothesis:

To examine its aims and objectives, the following hypothesis was formulated:

1) There is no significant relationship between socio-demographic variables and children with different levels of intellectual disability (ID).
2) There is no significant relation between associated conditions and children with different levels of intellectual disability (ID).

Research Methodology:

Research design: This is a retrospective study where the clinical profile of children with intellectual disability was examined in respect of socio-demographic details, associated condition, family, and school history.

Sample size:

The sample consists of 35 parents (either father or mother) who have children with mild, moderate. the severe and profound level of intellectual disability.

The procedure of Data Collection:

The Parents of diagnosed children with intellectual disability were interview for detailed history collection, the Socio-demographic details, associated condition, family, and school history were assessed by the researcher.

Statistical analysis:

The data was examined using the Statistical Package for Social Sciences (SPSS). Descriptive statistics were used for preliminary analysis. A Chi-square test was applied to detect the significant association between variables. A P-value less than 0.05 was considered statistically significant.

Results:

Table – 1

Description of the sample on socio-demographic variable

Socio-Demographic Variables		Level of Intellectual Disability					Chi-Square
		Mild N (%)	Moderate N (%)	Severe N (%)	Profound N (%)	Total N (%)	
Gender	Male	6(27.3)	9(40.9)	3(13.6)	4(18.2)	22(62)	3.006#
	Female	6(46.2)	2(15.4)	3(23.1)	2(15.4)	13(38)	
Age	Below 6Years	2(50)	0(0)	1(25)	1(25)	4(12)	2.070#
	Above 6 Year	10(32.3)	11(35.5)	5(16.1)	5(16.1)	31(88)	
	Professional	2(66.7)	1(33.3)	0(0)	0(0)	3(8)	
	Graduation	4(50)	1(12.5)	0(0)	3(37.5)	8(23)	
	Inter10+2	4(44.4)	3(33.3)	1(11.1)	1(11.1)	9(25)	15.523#
	10th	1(11.1)	3(33.3)	4(44.4)	1(11.1)	9(25)	
	Illiterate	1(20)	3(60)	1(20)	1(20)	6(18)	
Mother's Education	Professional	2(66.7)	1(33.3)	0(0)	0(0)	3(8)	
	Graduate	2(40)	1(20)	0(0)	2(40)	5(14)	10.272#
	Inter10+2	0(0)	1(20)	0(0)	0(0)	0(0)	
	10th	6(40)	3(20)	3(20)	3(20)	15(43)	
	Illiterate	2(18.2)	5(45.5)	3(27.3)	1(9.1)	11(31)	
Father's Occupation	Professional	4(33.3)	3(25)	1(8.3)	4(33.3)	12(34)	
	Business/Farmer	4(66.7)	1(16.7)	1(16.7)	0(0)	6(17)	
	Skilled worker	3(0)	4(100)	3(0)	1(0)	11(31)	10.285#
	Un skilled worker	1(0)	1(100)	0(0)	0(0)	2(6)	
	Unemployed	0(0)	2(26.9)	1(23.1)	1(19.2)	4(11)	
Mother's Occupation	Professional	4(57.1)	2(2.2)	0(0)	1(14.3)	7(20)	
	Business/Farmer	0(0)	0(0)	0(0)	0(0)	0(0)	7.544#
	Skilled worker	0(0)	1(100)	0(0)	0(0)	1(3)	
	Un skilled worker	0(0)	1(100)	0(0)	0(0)	1(3)	
	Unemployed	8(30.8)	7(26.9)	6(23.1)	5(19.2)	26(74)	
Income	Below 6500	2(11.8)	5(29.4)	8(47.1)	2(11.8)	17(48)	
	Rs 6501 to Rs. 10000	3(33.3)	3(33.3)	2(22.2)	1(11.1)	9(26)	6.202#
	Above 10000	4(44.4)	2(22.2)	1(11.1)	2(22.2)	9(26)	

Note: Fingers in parentheses indicate percentage. *Significant at 0.05 level,# Not found significant.

The description of the sample on different socio-economic variables has been presented in table -1 there were 35 children with intellectual disability, who fulfilled the inclusion criteria, during the study period. There were 62% (22) male and 38% (13) female. Most of the children with ID were belong in the age range of 6-18 years 12% (4) below 6 years and 88% (31) were 6-18 years. In this study, most of the fathers of children with ID were educated either 25% (9) intermediate (10+2) or 25% (9)10^{th}/matriculation.Only 23% (8) fathers were educated up to graduation. Those who were educated up to post-graduation level or illiterate were relatively low in number 8% (3) and 18% (6) respectively. The mother of intellectual disability was more educated up to 10^{th}43% (15) followed by educated up to graduation 14%(5), a relatively high number of mothers of children with ID was illiterate. As regards parent's occupation, most of the fathers were either Professional 34% (12) or skilled workers 31% (11). The majority of the mother either unemployed 74% (26) or professional 20% (7). The unemployment of mothers is high due to some mothers leave the job for proper caring of

the child. A child of parents in the lowest occupational groups is around eight percentage points more likely to have behavioral problems than one with parents in the highest social class (Bardley&Corwyn, 2002).

Most of the informant families belong to low socio-economic status 48% (17) followed by middle and high socioeconomic status 26% (9). The criteria used to distribute the sample into three categories (high, middle, and low socioeconomic status) is based on their per month income. Those who were earning less than Rs. 6500.00 per month from all sources were kept under low socioeconomic status. Those who are earning per month Rs.6501 to 10,000.00 from all sources were kept under middle socio-economic status. That monthly income is Rs,10,001 or above were kept under the category of high socioeconomic status.The calculated chi-square value is less thanthe tabulated (critical) value in each domain of the socio-demographic variables (table-1).Hence,Null hypothesis-1 is accepted, that tells us there is no significant difference in socio-demographic variables with different level of Intellectual disability.

Table-2 Distribution of type of schooling

Types of Schooling	N(Frequency)	Percentage (%)
Normal /regular school	08	23%
Integrated school	01	03%
Special school	14	40%
No schooling	12	34%

Out of 35 children, the majority of 66% (23) children with Intellectual disability attended school either normal schooling, Integrated, or special schooling. 40% (12) children with intellectual disability taken education from a special school, 23% (8) attended normal/regular school, and 3 % (1) children with ID attended an integrated school. 34% (12) children with Intellectual disabilities not attended school.

Table-3 Distribution of family history

Family History	N(Frequency)	Percentage (%)
Consanguinity	07	20%
Intellectual disability	13	37%
Hearing impairment	08	23%
Visual impairment	06	17%
Locomotor Disabilities	01	03%
Mental illness	01	03%
Epilepsy	07	20%

The family history of children with ID reveals that Children with intellectual disability have significantly more than 37% (13) family history of intellectual disabilityfollowed by 20%(7) close relative marriage (Consanguinity). Parent or sibling hada history of epilepsy in 20% (7) children, 17% (6) had a history of visual impairment and 3% (1) children had a history of locomotor disabilities and mental illness.

Table-4 Description of associated conditions of children with Intellectual disability.

ssociated ondition	Level of Intellectual Disability										Chi-square
	Mikl		Moderate		Severe		Profound		Total		
	Yes	No	Yes	No	Yes	No	Yes	No	Yes	No	
ehavior roblem	25.9% (7)	62.5% (5)	40.7% (11)	0% (0)	11.1% (3)	37.5% (3)	22.2% (6)	0% (0)	77% (27)	22% (8)	9.952*
pilepsy	50.0% (4)	29.6% (8)	37.5% (3)	29.6% (8)	.0% (0)	22.2% (6)	12.5% (1)	18.5% (5)	20% (7)	77% (27)	2.777#
eech and nguage roblem	46.7% (7)	25.0% (5)	6.7% (1)	50.0% (10)	26.7% (4)	10.0% (2)	20.0% (3)	15.0% (3)	42% (15)	57% (20)	7.809#
comotor roblem	66.7% (4)	27.6% (8)	.0% (0)	37.9% (11)	16.7% (1)	17.2% (5)	16.7% (1)	17.2% (5)	17% (6)	82% (29)	4.492#
w vision & Blind	.0% (0)	35.3% (12)	.0% (0)	32.4% (11)	0% (0)	17.6% (6)	100% (1)	14.7% (5)	2% (1)	97% (34)	4.975#

*Significant at 0.05 level, # Not found significant.

As Shown in table-4 The most common associated condition was observed 77% (27) problem behavior,42% (15) speechand language problem, 20% (7)epilepsy,1ytuiurfryui9po0oiuyt7% (6)locomotor problem, and 2% (1) low vision or blind. The problem behavior was reported in 25.9% (7) in mild ID,40.7% (11) in moderate ID,22.2% (6) in profound, and 11.1% (3) in severe ID have a very low level of problem behavior than the other categories. The above analysis indicates that only problem behavior was significant at 0.05 level (Chi-Square= 9.952), which reveals that problem behavior varies as per the severity of the intellectual disability. Hence, null hypothesis -2 is rejected, which states there is a relationship between problem behavior and level of intellectual disability. The problem behavior was only associated condition were found significant withthe level of intellectual disability. No significant relation was observed with other associated conditionswiththe level of intellectual disability.

Discussion:

This study was attempted to know the socio-demographic details and clinical profile of children with intellectual disabilitywithin the age range of 0-18 years. The data wereanalyzed for the comprehensive study of the population, which was likely to represent the profile of children with intellectual disabilities in New Delhi. Our finding revealed a 2:1 ratio of male to female children with Intellectual disabilities. A similar study reported by Gupta and Prasad (2008) studied 30 special children, the majority were male. 13 (43%) was intellectual disability with cerebral palsy.

Analysis of the parent's education of children with intellectual disability reveals that the majority of the fathers were either intermediate or matriculation/secondary education. The finding of the education of parents is similar to the census of India statistics, 14.1% of Indian citizens attained matriculation/secondary education (Male 15.2% Female 12.5%) and 6.7% (Male 7.3% female 5.9)

Intermediate/Pre-University/ Senior Secondary.

The research study stressthat, 66% of children with intellectual disparities attended schooling in which 40% attended special schooling, which is similar to the census of disability in India 2011.

The education of persons with disabilities is extremely crucial for their development and living as independently as possible. It is also important to reducing poverty among persons with disabilities and their families mean providing quality inclusive education.

The more prominent family history was intellectual disability and consanguinity in finding. In a study by Amit Nagarkar et al., (2014),family history of MR was present evident in 3.3%. This result points to the importance of assessing the family history and genetic susceptibility in children with intellectual disability, they need genetic counselling, early identification, and prevention of neurodevel opmental disorders.

The problem behavior was only associated condition were found significant with the level of intellectual disability. No significant relation was observed with other associated conditions with the level of intellectual disability.

Hence, null hypothesis 2 is rejected that states there is no significant difference in associate conditions exhibited by children with different levels of intellectual disability. This reveals that the problem behaviors are a common associate condition in children with intellectual disabilities.

We concluded thatintelligence level play important role in developing problem behavior, therefore individual/children with intellectual disability show more problem behavior than those of normal individual. Rutter et al.,(1976)stated that behavioral disturbances are reported to be four to five times more in mentally retarded individuals (ID). Similarly, most of the studies showed a higher prevalence of behavioral disturbances among mentally retarded individuals than those of normal individuals (Benson and Ivinis, 1992; Berkson et al 1992, 2000; Bodfish et al 1995; Clarke and Marston 2000). AlthoughKoller et al., (1983) reported that hyperactivity was most frequent in children with lower IQ, antisocial behavior among children and young adult with higher IQs, aggressive conduct disorder was most frequent in children with IQs below 50;

Conclusion:

The above findings provide information about the descriptive socio-demographic data, school & family history, and the associated condition of children with intellectual disability, to promote and ensure early screening, identification, and treatment. It helps in creating awareness among parents and society, which facilitates early training and guidance to families about the condition of children with Intellectual disabilities. The study highlights the importance of eliciting family history and genetic vulnerability whereby we can improve detection and treatment. The presence of behavioral problems in children with intellectual disability, hence there is a need for multidisciplinary team assessment and intervention of children with intellectual disability.

Limitation:

The present study is having some limitations that one should take into account when interpreting the results. The sample size was small and taken little clinical information from only outpatient children with intellectual disability was included which limit the generalizability of our results.

References:

1. American Psychiatric Association. (1994). Diagnostic and statistical manual of mental disorders. (4th Ed.), Washington DC: American Psychiatric Association.
2. American Psychiatric Association. (2000). Diagnostic and statistical manual of mental disorders. (4th Ed.), Washington DC: American Psychiatric Association.
3. Amit Nagarkar, Jagdish Prashad Sharma, S. K. Tandon, and Pritesh Goutam (2014), The clinical profile of mentally retarded children in India and prevalence of depression in mothers of the mentally retarded, Indian Journal Psychiatry, Published by Wolters Kluwer - Year: 2014, Volume: 56.Issue: 2 Page: 165-170.
4. Benson, B. A., & Ivins, J. (1992). Anger, depression, and self-concept in adults with mental retardation. *Journal of Intellectual Disability Research, 36*(2), 169 175. https://doi.org/10.1111/j.1365-2788.1992.tb00492.x
5. Clarke, D. & Marston, G. (2000). Problem Behaviours Associated with 15q – Angelman Syndrome. American Journal of Mental Retardation, 105, 25-31.
6. Disabled Persons in India, A statistical profile 2016. http://mospi.nic.in/sites/default/files/publication_reports/Disabled_persons_in_India_2016.pdf
7. Educational Statistics at a Glance 2016, https://www.oecd.ilibrary.org/education/education-at-a-glance-2016_eag-2016-en
8. Gupta. R and P.L. Prasad (2008), Clinical Profile of Special Children, Med J Armed Forces India Apr,64(2):143-4
9. Koller, H., Richardson's., Katz,M. et al (1983) Behaviour disturbances since childhood among 5 years city. American Journal of Mental Deficiency,87(4), 386-395.
10. NIMH. (1999). The NIMH Socio-Economic Status Scale

for case history taking. Secunderabad: National Institute for the Mentally Handicapped.

11. Person with disabilities (Equal Opportunities, protection of Rights and Full Participation) ACT, (1995). Ministry of Social Justice and empowerment, Government of India
12. Rights of Persons with Disabilities (RPWD) Act (2016). Government of India. Ministry of social justice and empowerment, Department of Empowerment of Persons with Disabilities (Divyangjan) https://indiacode.nic.in/bitstream/123456789/2155/1/201649.pdf.
13. Rutter, M., Tizard, J., Yule, W., Graham, &Whitmore, K. (1976). Researchreport: Isle of Wight studies, 1964-1974.*Psychological Medicine,*6,313-332.

Authors

Jai Prakash
Assistant Professor, Department of Psychology,
A.N.S College, Nabinagar, Aurangabad, Bihar.
E-mail: jaianscollegenabinagar@gmail.com
And
Sonalika Suman
Psychologist.NCSC for DA
Bhubaneswar,Odisha
E-mail: sonalika.suman@gmail.com

Address:
Sonalika Suman
Psychologist
NCSC for DA
Opposite: Madhusudan Das Park
Pokhariput, Khandgiri
Bhubaneswar-751030,Odhisa
Contact No: 9555000604

29

Perceptions toward Online Learning during Covid -19 Pandemic

Dr Umender Malik

Abstract

Online learning has become the most popular policy adopted by many higher education institutions during the COVID-19 pandemic, including in India. Teachers are not the only ones who are forced to adapt because of physical distancing policies, but also the students. This study aims at exploring students' perceptions of the sudden implementation of online learning instructions in higher education institutions. The study specifically explores students' general impressions, instructors' pedagogical abilities, tendency to use digital learning tools, time management, and support from surrounding environment. The survey was conducted online involving 206 students at 10 universities in India. The data was analyzed descriptively and the findings showed student's discomfort and difficulties in applying online learning during the COVID-19 pandemic. Increasing digital pedagogical abilities of teachers and the support of the surrounding environment are the important elements that need to be given major attention. Both educational institutions and teachers can get enlightenment about aspects to improve the quality of learning while helping students to adapt to new patterns of distance learning that are conducted online.

Keywords: students, perceptions, pandemic

Introduction

The corona pandemic emergency status announced by WHO has had an impact on the world, including

India. In addition to having an impact on the community by implementing the WFH (Work from Home) policy, this virus also has an impact on the educational process, especially the implementation of education in schools and colleges (UNESCO, 2020). With the limitation of interaction between communities, distance learning is an option implemented by many universities during the COVID-19 pandemic, including in India. Teachers are not the only ones who are forced to adapt because of physical distancing policies, but also the students.

Traditional learning that is routinely done tends to emphasize on the interaction of teachers and students in activities in the classroom and outside the classroom. Policies during the pandemic make learning activities shift to distance learning and are not carried out face-to-face . Although this situation is in line with the vision and mission of learning in the era of the industrial revolution 4.0 and community 5.0 in the future, there are still advantages and disadvantages in practice. In terms of strength, of course, online learning should be more flexible because it is not limited by space and time. However, such flexibility certainly requires prerequisites for the availability of learning support facilities that change the meaning of access to education from access to educational institutions to access to learning activities .

The implementation of education during the pandemic era has been carried out by many studies in various countries. Based on data obtained from UNESCO, more than 160 countries have implemented national lockdown, affecting more than half the world's student population. The latest statistics from UNESCO mentioned that countries in Africa, Asia, Europe, the Middle East, North America, and South

America have announced or imposed restrictions on school and college learning. At the tertiary level, although each educational institution in each country has specific differences in educational policies, the efforts made are to continue to provide academic services by applying distance learning digitally without reducing the quality of curriculum and learning .

There are many obstacles encountered in applying online learning, especially during the COVID-19 pandemic. One of them is the difference in supporting facilities owned by each educational institution . Another obstacle that can arise and hinder the implementation of online learning during the COVID-19 pandemic is the lack of interest of students to actively participate in online learning activities. Online learning platforms that are used also provide challenges for students because some of them have limited access to the internet, while others may not have technical knowledge of the technological devices used to access learning . Nowadays, a digital campus is a goal to be achieved by many higher education institutions. In higher education institutions throughout the world, the drive for digitalization is very much influenced by government policies and the development strategies of each institution. Both play an important role in shaping the pattern of digitizing higher education . However, in the technical aspects of learning, lecturers and students are still the main components that determine the success of higher education institutions, especially in supporting the successful implementation of online learning in universities . Therefore, opinions from lecturers and students can be considered to provide input to the development of online learning in tertiary institutions .

Students' perceptions of online learning can affect the independence of internet management, which affects the readiness of students in facing online learning patterns, which in turn can affect their learning outcomes and satisfaction of these students in participating in learning activities . This fact can be interpreted that the performance

of students in implementing online learning can indirectly be influenced by their perception of online learning.

The study of students' perceptions is needed not only to hear what they feel but also to evaluate and reflect the learning performance of teachers , especially for the purpose of improving the assessment and analysis of teaching strategies or media used. Another benefit is students' perceptions can contribute to examining the successful application of pedagogical systems in the context of educational disciplines . Student satisfaction is important in assessing the success of distance learning because it is directly related to the quality of online learning and student achievement. Therefore, this research is intended not only to provide input on educational policies but also to contribute to the field of pedagogical sciences, especially in organizing learning in higher education institutions.

Methodology

This study aims at exploring students' perceptions of the implementation of lectures in higher education institutions which suddenly transform into online learning. The main focus in this research is emphasized on the general impression of students, students' perceptions of the tendency of using digital learning tools, the ability of lecturers to manage the learning process, the regulation of learning time applied, and the support of the environment around both human resources and other supporting facilities in implementing online learning.

The method used in this study was a descriptive survey method. Survey design is used to provide quantitative descriptions of trends, attitudes, and opinions of students as respondents (Creswell, 2014). The research instrument was a questionnaire that has a combination of closed-ended and open-ended questions. The questionnaire was presented online to undergraduate and diploma students. The close ended survey was used so that the data obtained can be quantified, and with the addition of open-ended questions, it is expected to be able to provide explanations that can clarify the findings obtained from the data processing. The addition of open-ended questions needs to be done because the response of close ended questions only gives a general description without explaining the description and reasons.

Survey research is used to answer descriptive research questions by collecting data to classify and find differences in variables inherent in research subjects . The data in this study aims at determining the extent to which various conditions can be obtained among these subjects. With instruments that are developed based on the lattice, which is compiled and developed based on the research design, to obtain data that is in accordance with the research and development needs of the findings obtained.

The survey was conducted for approximately 30 days between May and June 2020. Respondents who participated in this survey were 206 students from 12 Indian universities .

FINDING & DISCUSSION

The general description of the survey results is that students tend to have a negative impression of online learning during the COVID-19 pandemic. 85.93% of students considered online learning during the COVID-19 pandemic were worse than regular face –to –face learning .19.75% of other students considered that online learning during the COVID -19 pandemic did not have a significant difference from face-to face learning only 14.32% of students thought that online learning during the COVID-19 period was better than the regular face-to –face learning. The most significant reason why most students consider online learning during the COVID-19 pandemic is worse than regular face-to-face learning is a sudden change in learning patterns. The use of online learning in higher education institutions in India is still in the introduction stage and has not been massive.

The time component is one of the most significantly changed components. The regularity of study time is changed. Schedules and routines that have been carried out are no longer the same. In the delivery of learning, each lecturer has a different time duration , Some are increased while others are reduced. This change in time pattern caused students to have to re-arrange their routines every day so it takes time to adapt to the New Normal pattern .

On the other hand, the device facilities owned by students tend to vary. Some students have adequate devices in the form of computers, laptops, and smartphones. However, some students still have obstacles to access adequate devices and proper internet access. This obstacle becomes significant because the demands of digital learning require stable data signals so that learning material and learning activities can be conveyed properly .

Another thing that caused students' perceptions that online learning during the COVID-19 pandemic is worse is the process of lecturer in delivering learning materials that is still in the adaptation . This has implications for the use of methods that tend to be monotonous, although each lecturer used their own method which tends to differ from one another. Another impact of the adaptation process is that the lecturer becomes less interactive, although in daily learning activities conducted face-to-face, the lecturer tends to be quite interactive. Some of these phenomena are conveyed by students and are the reason why students' perceptions of online learning during the COVID-19 pandemic are considered worse than regular face-to-face learning that has been carried out previously .

While in the aspect of convenience, 61.60% of students considered that online learning during the COVID-19 pandemic was more difficult than the regular face-to-face learning period. 19.88% of students considered there is no significant difference between the implementation of online learning and regular face-to-face learning. 18.52% of students considered online learning patterns during the COVID19 pandemic easier.

Difficulties over the data plan are directly

proportional to one of the findings from the results of this survey. It was found that during the COVID-19 pandemic, student internet data consumption could be categorized high enough for their monthly average usage.

In the estimation of the average amount of mobile data usage each month, the results showed that 31.98% of students spend more than 20 GB of data each month .Another 40% consumed mobile data between 10 to 20 GB each month. Only 28.02% of students spend less than 10 GB in each month.

The high consumption of mobile data in students is directly related to the use of digital tools by lecturers to facilitate learning.

The use of LMS on each campus is one of the most popular tools . Some universities develop their own LMS to provide learning services for their students . Even so, the use of other independent LMS such as Google Classroom, and others is recognized by some students as being used in learning. Besides LMS, the use of video conferencing and messenger applications became the most popular use during the COVID-19 pandemic.

Some of the most popular video conferencing applications used are Zoom, Google Meet, and Webex Meeting. Meanwhile, the WhatsApp group was the messenger application most widely used to facilitate learning during the COVID-19 pandemic, although some use group facilities on LINE and Telegram applications to interact and do activities in the learning context. The massive use of video conferencing in online learning during the COVID-19 pandemic was one of the reasons for the high consumption of student mobile data. The use of video conferencing in online learning can provide synchronous learning activity experiences so that the nuances of face-to-face can still be maintained and can be used to provide transitions to changing learning patterns. Besides these three types of tools, the use of streaming media tools, both video and audio streaming is quite widely used.. Unfortunately, the use of engagement and interaction tools that have very good potential to facilitate variations in learning activities are not widely used by lecturers . In online learning during the COVID-19 pandemic, the use of applications ., or other similar applications is only recognized by a small number of students. Likewise, the use of social media that can reach most students has not been optimally utilized. Based on student recognition, there was only a small proportion of lecturers who use social media such as Instagram, Twitter, and Facebook. The pattern of use that has been carried out so far is only for communication and information dissemination facilities, not yet utilizing its optimal function in facilitating the interaction of learning activity.

Learning Time Management

Learning time management is the next aspect to be investigated by focusing on three aspects related to time, namely time consumption, learning schedule management, and flexibility of study time. From the aspect of time consumption, it was obtained that 37.65% of students considered that between online learning during the COVID-19 pandemic and regular face-to-face learning patterns, there was no significant difference. Whereas, 44.44% of students considered that time consumption during online learning was worse, and only 17.90% of students thought that time consumption during online learning was better.

The indications of this need can be seen in the aspect of setting the schedule that got an almost similar assessment, where 44.44% of respondents considered there was no difference between regular face-to-face learning with online learning during the COVID-19 pandemic. Even so, 46.3% of students considered it worse, and only 9.26% of students thought that scheduling during the COVID-19 pandemic learning period was better than the previous pattern.]

The data on the availability of mobile data is slightly different from the previous one. Most students felt that they did not have enough mobile data to facilitate online learning. 46.3% of students stated that the availability of their mobile data was not good, and 38.27% of students felt they had sufficient mobile data to access learning. Then, only 15.43% of students felt that they have a good availability of mobile data to access online learning.

Inadequate access is one of the problems of global education (OECD, 2020). .

In line with the availability of mobile data, the availability of internet signals became a problem that is expressed by students. There were only 14.20% of students who felt that there was no problem with internet signals in the area around their residence, and 42.59% of students who felt the internet signal in their area was good. While the rest, which is as many as 43.21% of students felt the availability of internet signals was still not ideal to facilitate learning during COVID-19.

Aspirations from students stated that most students wanted a subsidy for financing internet access (53.7%). Other students wanted institutions to improve the quality of lecturers in managing online learning (19.75%). There are also some students (11.73%) who wanted an increase in students' ability to carry out online learning. Meanwhile, some students (14.82%) expressed other aspirations such as improving the learning time arrangement, uniformity of the learning system at each lecturer, and returning learning patterns back to being face to face.

Conclusion

From this study, it can be concluded that in general the students have been unable to adapt to online learning patterns. The impression given by students that online learning tends to be more difficult and unpleasant should be a valuable input in the development of online learning in the future. Aspects such as the use of digital tools, pedagogical abilities of teachers, and learning time settings can be improved and refined to obtain an ideal implementation of online learning patterns. The support of family and people around the students and the availability of devices to access online learning that is already good can be a basic capital to

strengthen the support of the surrounding environment in helping to facilitate the online learning process.

References

- Alsadoon, H. (2017). Students' Perceptions of E-Assessment at Osmania University. Online Journal of Educational Technology-TOJET, 16(1), 147–153. Bailie, J. (2011). Effective online instructional competencies as perceived by online university faculty and students: A sequel study.
- Basilaia, G., & Kvavadze, D. (2020). Transition to online education in schools during a SARS-CoV-2 coronavirus (COVID-19) pandemic in Georgia. Pedagogical Research, 5(4), 1–9.
- Creswell, J. W. (2014). Research design: Qualitative, quantitative, and mixed methods approaches. 4th Edition. SAGE Publication. https://doi.org/10.1007/s13398-014-0173-7.2 Daniel, S. J. (2020). Education and the COVID-19 pandemic. Prospects, 1–6.
- Harsasi, M., & Sutawijaya, A. (2018). Determinants of Student Satisfaction in Online Tutorial: A Study of A Distance Education Institution. Turkish Online Journal of Distance Education, 19(1), 89–99.
- Ilgaz, H., & Adanır, G. A. (2020). Providing online exams for online learners: Does it really matter for them? Education and Information Technologies, 25(2), 1255–1269.
- Karima, S. A., Rachmajantib, S., Suryatic, N., & Praba, U. (n.d.). Uncovering Student Teachers' Perceptions Regarding the Characteristics of Effective EFL Teacher Educators.
- Kats, Y. (2010). Learning management system technologies and software solutions for online teaching: Tools and applications. Learning Management System Technologies and Software Solutions for Online Teaching: Tools and Applications. Hershey: Information Science Reference. https://doi.org/10.4018/978-1-61520-853-1
- Lalima, D., & Lata Dangwal, K. (2017). Blended Learning: An Innovative Approach. Universal Journal of Educational Research, 5(1), 129–136. https://doi.org/10.13189/ujer.2017.050116
- Mayer, R. E. (2004). Multimedia learning. Psychology of Learning and Motivation, 41, 85–139. https://doi.org/10.1207/s15326985ep4102_2
- McLeod, J., Fisher, J., & Hoover, G. (2003). The key elements of classroom management? Managing time and space, student behavior, and instructional strategies. The Key Elements of Classroom Management.
- Alexandria: Association for Supervision and Curriculum Development.
- Moore, M. G. (2013). Handbook of distance education. Routledge.
- Mulyanti, B., Purnama, W., & Pawinanto, R. E. (2020). Distance learning in vocational high schools during the covid-19 pandemic in West Java province, Indonesia. Indonesian Journal of Science and Technology, 5(2).
- Nishida, N., & Hanson, H. (2020). What Students Can Tell Us. The Learning Professional, 41(1), 24–27.
- OECD. (2020). Education Policy Outlook. OECD.
- Owusu-Fordjour, C., Koomson, C. K., & Hanson, D. (2020). The impact of Covid-19 on learning-the perspective of the Ghanaian student. European Journal of Education Studies.
- Riyana, C., Mulyadi, D., & Sutisna, M. R. (2018). Readiness of Distance Education Program Implementation at SMA and SMK in West Java. South East Asian Journal on Open and Distance Learning, 1(1). Retrieved from https://journal.seamolec.org/index.php/journal/article/view/1/1
- Rogers, P. L., Berg, G. A., Boettcher, J. V, Howard, C., Justice, L., & Schenk, K. D. (2009). Encyclopedia of distance learning. IGI Global.
- Smaldino, S. E., Lowther, D., & Russel, J. D. (2014). Instructional Technology and Media for Learning (9th ed.). New Jersey: Pearson Inc.
- Stivers, J. (2010). Project Based Learning: A Dynamic Approach to Teaching in which Students Explore Real-world Problems and Challenges, Simultaneously Developing 21st Century Skills while Working in Small Collaborative Groups. Educational Psychology.
- Susilana, R. (2019). Instructional Materials Development For Blended Learning Using Integrated Online Learning System (SPOT) Of Indonesia University Of Education. In International Conference on Educational Technology, 2019. Bandung: ICES.

Dr. Umender Malik
Assistant Professor,
Dept.of education,
M.D.U Rohtak,
India,+918683019963

30

Self-confidence, Educational Anxiety & Achievement Motivation of Government And Private Secondary School Students: A Comparitive Study

Pramila Malik, Mohini

Abstract

This study had undertaken to know self-confidence, educational anxiety & achievement motivation of government and private secondary school students as these psychological variable have affected the secondary school students ' performance and academic venture. Through description research method, the data is collected by random sampling technique and sample of 600 students studying in ten secondary school selected from Rohtak district block, of Haryana. This study was conducted through survey method and of self-confidence inventory Dr.(Miss) Rekha Gupta, educational anxiety scale developed by Dahiya and Dahiya and achievement motivation scale by Deo and Mohan. 't' test was applied to find out the significance of difference between means using SPSS-16.0. The results indicated that there was a significance difference educational anxiety, achievement motivation and self-confidence of secondary school students with respect to type of school. The result explored that private secondary school students have and high educational anxiety as compare to govt. School students while govt. School students have high self-confidence as compare to private secondary school students.but there is no significant difference between govt school students and private school students.

KEYWORDS - Self-Confidence, Educational Anxiety, Achievement Motivation and Type of School

Introduction

Self confidence is a mental and spiritual power. This gives freedom of Ideas, patience and successes are attained due to the belief in the work. This gets self –defense. There is no concern of any kind towards your future the man who sticks with the sprite of faith. second person is buried in the suppose and suspect. Self - confidence person remain free, self confidence is the inner spirit feeling of a creature. Without this person cannot succeed in life. Life's greatest secret is self belief. It means trusting your ability and power by recognizing your ability, you can achieve self confidence. Rope also appears as a snake and dog also appears wolf, if it does not trust itself. A confident person is optimistic and reaching his goal believes in his ability. The most important things to do in any work is to believe.

Those who have confidence in the code they come here in category third. Whatever work you start, no matter how much damage why do not you live in the middle. Such people face every difficulty in life without hesitation and paying. The people who have lost their faith are afraid of fame, and disappointment. Those people who have strong confidence in them, they never lose heart, and them with the excitement they gird themselves up. self confidence is not legacy it is learned. Just as breathing needs to live a life,, in the same way to succeed in life, self confidence.

Educational Anxiety-Anxiety is a general reaction of frustration. Increasing out of frustration anxiety serves as a driving force for adjustment. According to Freud anxiety reins own behavior by cause us to avoid frightening experiences in their environment. Anxiety is human process, images of collective insensible and illogical forces of his conscious mind to his invasion. (Jung 1920).Anxiety regarded as ego that is expression of threat from danger. Ego is the scent of anxiety. If ego is threaten by id, one develops neurotic anxiety, if by the super ego, one develop moral anxiety and if it is threaten by external world reality anxiety is the result(Freud, 1936).Anxiety is a state of tension arising from the experience of disapproval in interpersonal relations (Sullivan, 1953).

Achievement Motivation- The term motivation means anything that arouses any individual to perform activities towards a desired goal. It is a basic psychological process. It refers to the force within the person that affects direction, intensity and persistence of voluntary behavior. Luthans (1998) asserted that motivation is the process that arouses, energizes, directs and sustains behavior and performance. It is the process of stimulating the people to action and achieves a desired task. Oliver & Stoke (1999) stated motivation as a human psychological characteristic that contributes to a person's degree of commitment. Olajide (2000) reported motivation as “a goal-oriented task and therefore, cannot be outside the goals of any institution whether public/private or profit/non-profit". Linnenbrink & Pintrinch (2002) opined about motivation that it represents the forces acting or within a person that cause the person to behave in a goal-directed and specific behavior. Thus, motivation is the result of the interaction of the individual and the situation. In other words, it is a positive drive that

forces an individual to reach the goal.

Related Literature

After the various researches, it was found that Mahajan (2015), Banga et. al - no significant difference was found between academic anxiety of Government and Private secondary school teachers. Savita (2004) found a non significant difference in the mean achievement scores of girls of government and private schools.Karimi & Zohre, (2014) found the there is a significant relationship between self-confidence and achievement motivation. **Operational Definitions**

SELF-CONFIDENCE:-Self confidence is a mental and spiritual power. This gives freedom of Ideas, patience and successes are attained due to the belief in the work. This gets self –defense. There is no concern of any kind towards your future the man. Self - confidence person remain free, self confidence is the inner spirit feeling of a creature. Without this person cannot succeed in life.

Educational Anxiety:-Educational anxiety has been described as painful uneasiness of the mind regarding approaching or anticipated ill, it represent a danger or threat within the individual rather than exterior danger. Anxiety affects personality through its effect on behavior and tension about the co-scholastic and educational activities through a doubtful result in the life of student.

ACHIEVEMENT MOTIVATION:- achievement motivation typically refers to the level of ons's motivation to engage in achievement behaviors, based on the interaction of such parameters as need for achievement, expectancy of success, and the incentive value of success.

Types Of School:- Types of school defined as students of govt. school and students of private school.

Objectives

1. To study and compare Self-Confidence of Government and private secondary school students.
2. To study and compare Educational Anxiety of Government and private secondary school students.
3. To study and compare Achievement Motivation of Government and private secondary school students.

Hypotheses

1. There exist no significant differences between Self-Confidence of Government and Private secondary school students.
2. There exist no significant differences between Educational Anxiety of Government and Private secondary school students.
3. There exist no significant differences between Achievement-Motivation of Government and Private secondary school students.

Methodlogy Of The Study:-

The method used for the study was descriptive survey and type of sampling followed was random sampling technique.

Tools Used

- **Self-Confidence**: Self- Confidence Inventory (SCI - G)Test by Gupta (2011).
- **Educational Anxiety**: Educational Anxiety Scale by Dahiya and Dahiya (2018) will be used for data collection.
- **Achievement Motivation**: Achievement Motivation Scale by Deo and Mohan (2018)

Sample

A sample of the representative proportion of the entire population, The sample consisted of 600 secondary school students were taken on the basis of random sampling technique.

Table 1

Means , S.D and 't' ratio of Self- Confidence of govt. and private secondary school students

Group Statistics

	Type of School	N	Mean	Std. Deviation	t-value
Self-Confidence	Private	255	28.49	4.25	10.00*
	Govt.	345	33.68	7.41	

*significant at 0.01 level

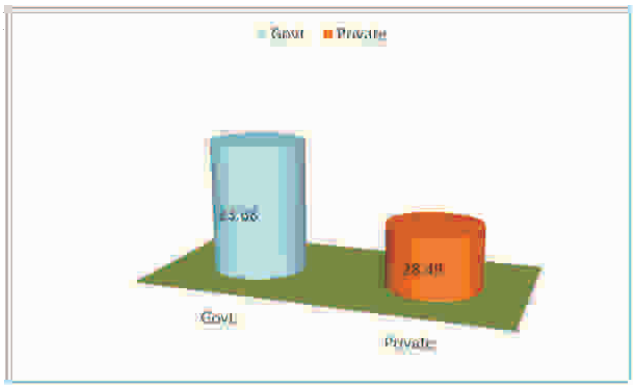

From table 1 points out that the mean scores of obtain on self-confidence of Government and private school students coming out to be 33.68 and 28.49 respectively. The't' value is found to be 10.00* is more than the tabulated value 1.96 at

0.05 and 2.58 at 0.01 level of significance. Therefore the null hypothesis "there exist no significant difference between Government and private secondary school students" is Rejected.

Table-2

Means , S.D and 't' ratio of educational anxiety of govt. and

Group Statistics

	Type of School	N	Mean	Std. Deviation	t-value
Educational-Anxiety	Private	255	1.073	22.32	1.95*
	Govt.	345	1.039	20.45	

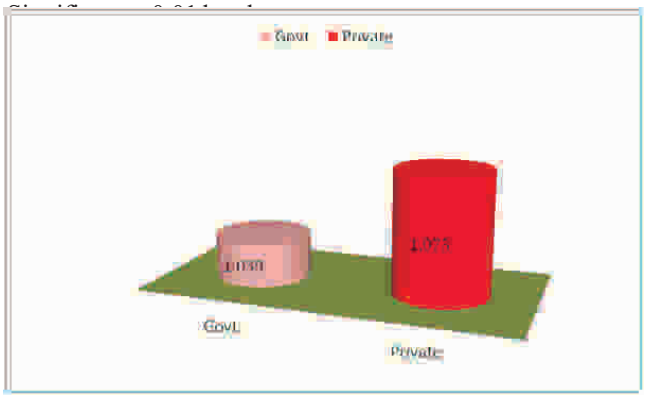

From table 2, points out that the mean scores of obtain on educational anxiety of Government and private school students coming out to be 1.039 and 1.073 respectively. The't' value is found to be 1.95* is more than the tabulated value 1.96 at 0.05 and 2.58 at 0.01 level of significance. Therefore the null hypothesis "there exist no significant difference between Government and private secondary school students" is Rejected.

Table 3

Means , S.D and 't' ratio of achievement motivation of govt.

Group Statistics

	Type of School	N	Mean	Std. Deviation	t-value
Achievement-Motivation	Private	255	1.28	20.02	0.929(NS)
	Govt.	345	1.26	19.16	

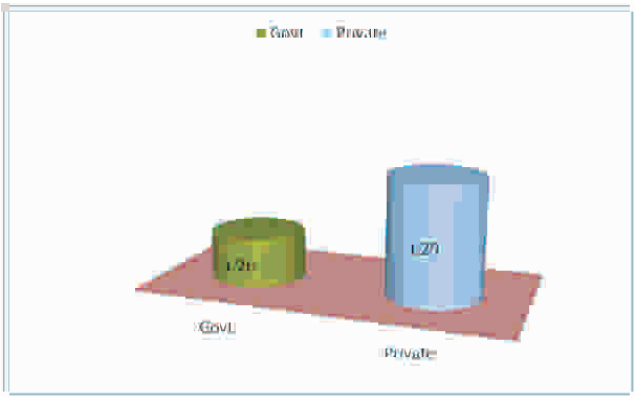

As depicted from table 3 the mean score of achievement motivation of government and private secondary school students are coming out to be 1.26 and 1.28 respectively. The 't' value is found to be 0.929 which is less than the tabulated value which is1.96 at 0.05, level of significance and 2.58 at 0.01 levels of significance. Therefore the null hypothesis "There exists no significant difference between achievement motivation of government and private secondary school students" is retained. Therefore we can say that there is significant mean difference between achievement motivation of government and private secondary school students

Conclusion

With regard to the previous research finding , minor difference were found in self-confidence, educational anxiety and achievement motivation of government and private secondary school students. But the present study show such a differences .Differences is found self-confidence and educational anxiety of govt. and private school students. because it is believed that private school provided better facilities to students in comparison to government schools.while we can also conclude that govt. school students show high self-confidence than their private school students counterparts.Hence students in these schools are self-confidently. Private school students possess higher educational anxiety as compare to govt. school students. But there is no significant difference is found in achievement motivation of govt. and private school students

Education implication

- As educational anxiety is directly related with the performance of students. Therefore it is duty of schools, teaching staff to monitor the educational anxiety level of the students and the students with higher educational anxiety should be given proper attention and care. So as to improve their educational performance.
- In today's competitive environment parents, schools, and

• society as a whole should realized that in any circumstance the self- confidence of students should not be adversely affected. Today student is forced by parents and schools to perform excellent in every field which sometimes may be stressful for the candidate. Therefore we are should give a chance to the student for chosen his / her area of interest and perform accordingly.

Government should also take initiative to provide counseling to the student with higher academic anxiety and low self- confidence. And therapy if required should be interviewing.

References

- Banga, C.L.(2016). Academic Anxiety of Adolescents Boys and Girls in Himachal Pradesh. The Online Journaln of New Horizon in Education,6(1),7-12.
- Dahiya ,Sarita (2018) Educational anxiety. Self-Efficasy &Emotional competence of male and female secondary school students : a comparative study. International Journal of Research in Engineering ,IT and Social Science ISSN 2250-0588, Impact factor : 6.452, Volume 08 Issue 7 july 2018
- Karimi A & Zohre S.(2014). The relationship between self- confidence achievement based on academic motivation" Kuwait Chapter of Abraham Journal of Business and Management Review Vol.4,No.1,210-215.
- Karimi A.,& Saadatmand Z.(2014) the relationship between self - confidence with achievement based on he academic motivation' Kuwait Chapter of Abraham Journal of Business and Management Review 33(2579),.1,210-215.
- Mahajan, G. (2015). Academic Anxiety of Secondary School Students in Relation to their Paternal Encouragement. International Journal of Research in Humanities and Social Science 3(4)23-29.
- Savita (2004) found a non significant difference in the mean achievement scores of girls of government and private schools

Pramila Malik
Associate Professor,
Dept.of Education,
B.M.U., Rohtak
Mohini
Scholar
Dept.of Education,
B.M.U.,Rohtak

31

Teachers in Nation Development

Aparna, Poonam Mor

Abstract

Our culture is approximately 5000 years old and extremely diverse; education, via the collection and dissemination of knowledge, has been the driving force behind this culture. It has enriched and contributed to the sciences, the arts, philosophy, religion, and sociopolitical thinking. Education plays the greatest part in a nation's development which means that teachers have the greatest role in defining a nation's growth and stature.

The teachers prepare and shape the minds of the youth so as to make them laudable citizens of a state. The education that a teacher provides to his or her students will have an impact on the country. That change must result in a nation that is improved and stronger. That means that a huge responsibility rests upon the shoulders of the teachers. Teachers are without doubt among the foremost contributors to education for a nation's healthy development. Along with the all important task of imparting education, a teacher also performs the very important duty of motivating students. He or she exerts an impact on the life and character of his or her students, and prepares them with thoughts and values which make them worthy participants of national life as commendable citizens. The students must be educated to become active contributors for development of an integrated nation out of our diversities.

A child is entrusted to the care of a teacher at a very tender age and remains under his/her guidance till the child becomes an adult. The citizens of a country are its building blocks and the strength of a building depends upon the strength of its building blocks. The strong points of today's children and youth decide how strong their nation is going to be. Thus, teachers through their knowledge are real builders of a nation. There are different stages of a student's life and at every stage the teacher guides and moulds the personality of a student.

A person remains in school for almost 15 to 16 years, starting from approximately an age of three till about 18 or 19 . This is often the age-group when character can be shaped and national character developed. An educator should be able to instill in his/her students, an elevated character, and a sense of social duty. It is here that a teacher's national obligation comes into play. The qualities for national development, viz. scientific temper and humanistic attitude, self-discipline, concern for other people, and an unyielding commitment for peaceful coexistence can be imparted only by well-meaning and positive teachers. India is the world's largest democracy and to further strengthen it, teachers must instill into their students our ancient cultural spirit of tolerance of different opinions and viewpoints, as also acquaint them with the present wisdom expressed in the aphorism of the famous French thinker, Voltaire: I do not accept what you say; but I will defend with my life your right to say so. The positive values bestowed by teachers really guarantee national advancement and ensure a society really affluent in information. While the importance of knowledge in a nation's progress cannot be overstated, it should be noted that knowledge cannot be acquired unless it is sought and absorbed with the assistance of a teacher.

Knowledge received without a teacher's guidance can be compared to a blind man walking without his stick. Because of this, teachers need to have a high level of commitment towards their duties and responsibilities which have been entrusted to them. Right from the beginning the teachers play a role in building of a nation. A teacher prepares the children for intellectual and social skills. He differentiates children on the basis of their intellectual and often social skills in preparation for the social and occupational roles which they eventually play. Education and learning, as well as strong morals, must be prioritised in a country's development, and no one is better prepared to assist in this process than the humble teacher. Both knowledge and morals would deteriorate if teachers were not present.

The responsibility of a teacher is a multi-faceted one comprising scholarly, educational and social parts. Scholarly role comprises educating, counseling and providing direction; whereas educational parts incorporate guidance, assessment and support. Social parts of the teacher incorporate preparing students to play a constructive role in the society.In ancient India, we accorded our teachers a high prestige, and we refer to them as gurus. That term has now been condensed to the narrow sphere of religious initiation. Actually, the term guru has a broad definition: someone who unlocks the world of knowledge and intellect for his/her students. The first guru of the child is the mother, the second

guru is the father, and the third guru is the teacher at school. Gurustotram's famous words, "Gurur Brahma, Gurur Visnu, Guru Devo Maheshwara," present a wonderful explanation of a guru's service and amply underline the significance of a teacher in one's life. Clearly, the national responsibility, the national role, of our teachers is of tremendous consequence to our country.

A person becomes a truly aware human being when his/her mind is receptive and opens to the great and vast world of knowledge. Who makes it happen—none other than the teacher, the guru. Clearly, therefore, the national responsibility, the national role, of our teachers is of tremendous consequence to not only our country and society, but to any country or society in the world. The teacher's love and affection, as well as his or her character, competence, and moral conviction, have a profound impact on students. An admired teacher serves as a role model for his or her students. He/she is their ideal and can lead them onto the right path. Students prefer to develop their life goals and future objectives in cooperation with their teachers during their early education years. As a result, a corrupt and decadent class of teachers can cause more harm to a nation than anybody else. A corrupt and inept teacher is a forerunner of a generation of corrupt and inept people.

Thus we see that teachers play a critical role in building up the character of the next generation. It is a reality that a civilization and development cannot emerge from a mere framework of abstract thoughts and ideas. Based on the principles and concepts propounded by the philosophers and thinkers, civilization takes shape in the practical behaviour of a nation. If the thoughts and ideas do not get translated in actions of the members of a society, the practical side of civilization fades away. This actually means that the society cannot lay any claim to culture and civilization, and the only way to study it is through the fragments preserved in museums and history books. This necessitates the creation of a vibrant learning environment in our educational institutions, where a teacher is instrumental in instilling confidence in our students and enabling them to be proud of their culture and civilization, and abide by societal conduct and morals. Only with the help of a teacher alive to his/her social responsibility can take a society forward as a cultured and civilized society.

A nation can grow and develop only if there is a constant quest for knowledge. Teachers must be constantly seeking knowledge, have good character, be highly motivated, and use creative, inventive, and successful teaching strategies. Teachers' constructive activities and will to share their knowledge creates well-informed individuals who will benefit both society and nation.Dr. A P J Abdul Kalam, former President of India very rightly opined that learning should bring out the spirit of creativity in the young mind because creativity gives knowledge and knowledge is indeed an asset for the nation. This spirit of creativity in young minds will be kindled only by the knowledgeable and effective teacher. What the teachers tell their students today will determine what India will be tomorrow.

Education also means personality development and spiritual growth. It also must be able to imbibe the spirit of service among the youth. Our country will grow and develop; poverty and illiteracy will be eradicated as more and more service-oriented people respond naturally and spontaneously to human problems. This is the first major advancement that must occur as a result of education. Since teachers are the instruments through whom education is imparted, it is their responsibility to create discerning and able citizens for a country.

References:

- http://birbhum.gov.in/ DPSC/reference/24.pdf
- https://www.slideshare.net/ Chidinma Mirian Jess Em/the-teacher-is-a-catalyst-for-nationaldevelopment
- http://schoolofeducators.com/.wpcontent/uploads/2012/05/ROLE.docx mahavir-eng-revised.docx
- https://www.studymode.com/ essays/Classroom Management-Communication-1854836.html
- https://www.theteachereducator.com/ 2020/01/teacher-as-change-agent-and-nation.html
- https://www.bhavans.info/ festival/teacher.asp
- Geary, Amanda. "Written Judgements in School: a personal perspective", Early Child Development and Care, 34:1, 241-265, DOI:10.1080/0300443880340118. 1988
- https://www.researchgate.net/. Saharan, Surender & Sethi, Priyanka. (2009). 'Vital Role for Teachers in Nation Building'.

Aparna, Poonam Mor
Department of Languages & Haryanvi Culture
College of Basic Sciences and Humanities,
CCS HAU, Hisar-125004, India
*aparna@hau.ac.in

32

Developmet In Banking Sector Through Fintech Startups In India

Dr. Sarika Choudhary,

Abstract

Indian financial sector is one of the diversified financial sectors of the world. It is now a fast growing and vibrant capital market. It comprises commercial banks, insurance companies, non-bank financial companies, co-operatives, pension funds, Mutual funds and other many financial entities. As India is moving towards digital penetration, in Indian financial sector, new term '**Fintech**' has entered which means new technology and innovation that competes with traditional methods in financial dealings. This is a fast emerging technology innovation which consist startups as well as financial institutions and companies that are trying to replace or enhance the traditional financial services. After the demonetization, cashless transactions are becoming popular among Indians. Start-up India concept of Government of India is a revolutionary step and currently there are more than 200 **Fintech** start-ups across the country which enable financial services cost effective and more efficient. **Fintech** is a combination of both IT and banking sector. In the light of government's increasing focus on start-up India campaign, various public and private banks have ready to provide funding to the start-up entrepreneurs. Reserve bank of India also started a helpline named '**FOREX**' to provide regulatory services for cross-border transactions. Other banks like **AXIS Bank, FEDERAL Bank, HDFC bank, ICICI Bank, KOTAK MAHINDRA Bank, RATNAKAR Bank, state Bank of India** etc. are also responding positively towards the movement of START-UPS. Keeping in view the above facts, the present paper tries to analyze the role of banking sector in the new era of financial service sector through the FINTECH startups in the Indian economy.

Keywords: FINTECH, START-UPS, Digitalization, Demonetization, information technology, financial market.

Start-Up India Programme:-

Start-up India campaign has been launched by Government of India in January, 2016. The main aim of the programme is to promote bank finance to start-up ventures so that entrepreneurship can be boosted and job creation process can be done faster. Start-up India initiative has given green signal to start many Start-ups in the every sector of the economy. In these days, start-ups are not just limited to a specific format rather they are testing various way-outs and trying to grow and want to become a profitable venture. As India has declared the decade of 2010 to 2020 as 'INNOVATION DECADE', therefore it stressed on science, technology and innovation simultaneously and established National Innovation Council. According to NASSCOM around 12,000 start-ups will come-up in India by 2020, creating 2.5 lakh jobs. After UK, US and Israel, India is the 4th largest ecosystem in the world for START-UPS. If comparison is made with its global counterparts in terms of the number of start-ups, India has its own billion dollar club of start ups. In its initiative, Government has launched SETU (Self Employment and Talent Utilization) scheme for implementing start-up progamme in the country. The start-ups like flipkart, Snapdeal,InMobi,Hike,Paytm, Zomato and Quicker etc. are doing very well business in India. Various private investors have funded start-ups in India. Due to risky nature and low success percentile of the start-ups, Indian banks adopted conservative outlook in invesing start-up enterprises. But initiative of government has boosted banks and banks realized the growing importance of Start-ups in India.

Development of FINTECH in India:

Fintech concept entered in India only a half decade ago. As demonetization leads the people towards cashless transactions, digital mode of payment paved the way for adapting new innovation in financial services i.e. FINTECH. Fintech provide easy and fast access of financial services through mobile apps. Transparency and convenient services is the basic feature of fintech. According to NASSCOM by 2020, there will be more than 500 Fintech Start-ups in India whose motto is to make India a cashless economy. Fintech venture value would be expected to reach at US $ 2.48 B by 2020.

FINTECH main motive is to digitalize all financial transactions so that transparency can be maintained and the cost of banking services should be reduced. Fintech redefines the whole framework of bank's lending activities as well as its investment strategies and payments. Various Fintech start-ups have been working in India like

PAYTM, MOBIKWIK, BANKBAZAR, CAPITAL FLOAT,

POLICY BAZAAR, LENDINGKART, INCRED, CCAVENUE, MSWIPE TECNOLOGIES, PHONEPE, QUICKWALLET, BANKBAZAAR, ZESTMONEY, CREDITSEWA etc.

All these start-ups are eager to reach India's mostly unbanked population. Fintech has a huge market potential. Government has set up UPI i.e Unified Payment Interface system which helps in instantly transferring the money between two bank accounts through mobile. It enables multiple bank accounts to get into a single mobile application. Due to increased access to the internet and social media, demonetization, tablets and computers, use of smart phones have helped usher in swift, automated and efficient financial services solutions. Government's enthusiastic steps to promote cashless technologies like Mobile driven Point of Sale (POS), digital wallets and launch of India stack including Aadhaar, E-KYC, and BHIM has broken monopoly of traditional institutions and managed to restructure the financial sector. AMAZON, GOOGLE, UBER etc has brought revolution in day to day transactions and making India a digital hub. The following Fin-tech startups have been launched in India during the period of last Five years:-

FairCent:-

Faircent launched in 2014 is a peer-to-peer lending start-up which connects lenders with borrowers. It offers various tools to match the requirements of borrowers with investment criteria of lenders. It automatically sends proposals to the borrower on behalf of lenders. Recently faircent introduced a semi-secure loan product to avail the easy loan to the students at reasonable interest rate. Faircent want to reach a larger group of people and businesses, therefore making online borrowing and lending more easier.

Simpl:-

As the name suggests, simpl is an online payment instrument that allows customers to make purchases online and settle the payments. This start-up provides faster and convenient mode of payment. In this one bill is made up for all the purchases. The spending limit of customers ranges between Rs. 750/- to Rs.5,000/-. Now company is doing partnership with many banks and Non-Bank Financial Companies. Simpl includes merchants like Bookmyshow, Freshmenu, Nykaa, Grofers,Dunzo etc.

FTCash:-

FTCash provides lot of solutions for micro-merchants to accept payments through multiple payments instruments like debit cards, credit cards and mobile wallets. It also provides short term loans to micro- merchants and small & Medium Enterprises. It is now participating in Mastercard StartPath programme which are aimed at supporting fintech companies with the aim of shaping the future of commerce.

Kissht:-

Launched in 2015, Kissht is a fintech startup that provides instant credit to consumers for making purchases at digital POS. Through its app, consumers can buy various items like laptop, Jewellery, mobiles and other electronics by opting for EMI without credit card. This fintech start-up provides short-term cash loans for consumer durables, education, house renovationetc.

Rubique:-

Rubique has been launched in 2014 as a bestdeal finance. It is an online marketplace for financial products and offers variety of loan products. This fintech start-up provides disbursement led model which aims to best deal in the quickest possible time at lower cost. To fulfill the gap between borrowers and lenders rubique has two verticles. It provides users well digitized collection of products and after comparing and selecting the required product the user can apply online immediately.

Innoviti, Moneytap and earlysalary are other important fintech which has brought so many options in banking sector.

Paytm

Paytm is one of the leading & most widely used fintech startup or company that started off as a prepaid mobile and DTH recharge platform, and later added data card, postpaid mobile and landline bill payments in 2013and**has gained much traction three months after the demonetization in 2016, which increased its user-base from 125 million to 185 million.Paytm, founded by Vijay Shekhar Sharma in 2010, is India's leading digital wallet company holding a substantial finance market in India. Paytm**, owned by One97 Communications, is a digital payments platform that allows you to transfer cash into the integrated wallet via online banking, debit cards, and credit cards, or even by depositing cash via select banks and partners.

Paytm is India's leading financial services company that offers full-stack payments & financial solutions to consumers, offline merchants and online platforms. The company is on a mission to bring half a billion Indians into the mainstream economy through payments, commerce, banking, investments, and financial services. **The fintech startup is looking to double its transaction volume to 12 billion by the end of FY'20.** Working on its mission to bring un-served & under-served Indians under the formal banking

system, it has made banking accessible & convenient to people across the country through innovative use of technology. It's wholly-owned subsidiary 'Paytm Money' has achieved the distinction of becoming India's biggest investment platform within its first year, and is now one of the largest contributors of new Systematic Investment Plans (SIPs) to the Mutual Funds industry; it has already received approvals to launch Stock Broking, Demat Services and National Pension System (NPS) services, and strives to continue to broaden the financial services and wealth management opportunities to the unbanked and underserved Indians.

Paytm Insurance is a wholly-owned subsidiary of One97 Communications Ltd (OCL) and has secured a brokerage license from IRDAI. It offers insurance products to millions of Indian consumers across four categories including two-wheeler, four-wheeler, health and life. The company aims to simplify insurance and create a seamless, easy to understand online journey for its customers.

PhonePe

PhonePe, based in Bangalore, is another one of India's leading fintech startups that has been able to soar heights despite the cut-throat competition in the niche. It is an ecommerce payment system & digital wallet company that was founded back in December 2015.The platform is available in over 11 Indian languages and can be used by individuals to transfer money, recharge, pay bills, shop online, and buy from local vendors.PhonePe has also partnered with RedBus Ola Goibibo ,FreshMenu companies.PhonePe is a digital wallet company owned by Flipkart, and one of the first payments app built on Unified Payments Interface (UPI). The PhonePe app is available in over 11 Indian languages. Using PhonePe, users can send and receive money, DTH, recharge mobile, data cards, make utility payments, buy gold and shop online and offline. In addition PhonePe also allows users to book Ola rides, pay for Redbus tickets, order food on Freshmenu, eat.fit and avail Goibibo Flight and Hotel services through microapps on its platform. In January 2020, PhonePe started allowing its customers to withdraw cash using the in-app UPI feature called PhonePe ATM. This involves transferring the intended amount to be withdrawn to a nearby PhonePe-enabledmerchant.

MobiKwik

MobiKwik wallet is an online prepaid account where a user can store money, to pay mobile recharge,DTH,electricity bill and pay on online shopping sites . The MobiKwik wallet has to be loaded with money once before it can be used across functions. MobiKwik provides users the option to add money using their debit or credit card, net banking, and 'cash pay', a doorstep cash collection service. MobiKwik wallet is a semi closed wallet authorized by Reserve Bank of India. MobiKwik received the coveted PrePaid Payment Instrument license from the Reserve Bank of India on 18th July 2013.

MobiKwik was founded by Bipin Preet Singh and Upasana Taku in 2009. The couple started MobiKwik to ease the payment problems faced by online users in India. Over the years, MobiKwik extended their service on mobile apps. They tied up with various online merchants such as eBay India, BookMyShow, Dominos India, ShopClues and Snapdeal to provide accessibility of their wallet as a payment option on e-commerce sites. Moreover Mobikwik also introduced the feature of sending and receiving money via MobiKwik mobile app recently. Mobikwik raised under $5 million in its Series A funding from an unnamed US-based VC firm in 2013 and is expected to get another $30 million in the coming years.One MobiKwik Systems Pvt Ltd ("MobiKwik") is India's leading Mobile Wallet company with over 15 Million users and 25,000 merchants (retailers). It's as simple to use as your physical wallet and enables users to transact on both online and offline platforms in a flash. Do recharges, bill payments, shopping and money transfer in the blink of an eye with your wallet. It's very safe to use as well - each and every penny stored in your wallet is well accounted for. You can avail MobiKwik Wallet services on our website as well as on Android, Windows and iOS Applications.

Café Coffee Day, Domino's Pizza, Pizza Hut, TastyKhana, JustEat, PVR, eBay, Jabong, Snapdeal, ShopClues, HomeShop18, Naaptol, Pepperfry, Fashionara, FashionAndYou, MakeMyTrip, BookMyShow, Ferns N Petals, etc. are only some names from the endless array of merchants MobiKwik Wallet is live on. MobiKwik is heading from Mobile Wallet to Payment Bank.

PolicyBazaar

PolicyBazaar is an insurance broker approved by IRDA of India and it was founded in June 2008. Till that time, the insurance industry of India still lacked transparency and policies were mostly sold through agents. Policybazaar changed that scenario by listing the details of multiple insurance policies for customers to choose. It offers an online platform for insurance buyers where they can easily compare different insurance policies such as car insurance, life insurance, two-wheeler insurance, term insurance,

retirement plans etc. This startup is headquartered in Gurugram(Haryana) and is the country's largest insurance aggregator. Policybazaar.com has so far raised US$366 million in 7 rounds of funding since its inception in 2008.

Conclusion:-

No doubt, digitalization has revolutionized the whole world and technology advancement has also brought upgradation in every sphere of life. Fintech startups have changed the whole scenario. Most of the financial payments have been easily done through the different apps and it really works. All banks are using these apps and have made all transactions convenient and accessible to everyone. Many startups are doing very well and hope this will create a new market segment for Indian economy.

References

1.http://www.anupartha.com/resources/insights/fintech-startups-changing-the-game-of-banking-and-finance-sector/

2. https://www.investindia.gov.in/sector/bfsi-fintech-financial-services

3. https://businessconnectindia.in/blogs/10-best-fintech-startups/

4. https://www.pwc.in/consulting/financial-services/fintech.html

5.https://en.wikipedia.org/wiki/Financial_technology_n_India https://www2.deloitte.com/in/en/pages/financial services/articles/fintech-india-ready-for-breakout.html

Dr. Sarika Choudhary
Head, Department of Economics
Dyal Singh College, Karnal
Email: drsarikachoudhary@outlook.com

33

Cyber Crimes Against Women in India

Pooja Sangwan

Abstract

Many of the conventional crimes are done with the involvement of cyber network like forgery, defamation, theft, fraud etc. Provisions of punishments are defined by the Indian Penal Code .despite it, with the emergence of advance technology there are lots of new crimes are introduced which were not acquainted by the statues. Now the punishable provisions are under The Information Technology act, 2000. Thus the cybercrimes are now punishable under IT ACT, 2000 as well as IPC.

Keywords: cyber crimes, information technology, stalking, computer system.

Introduction

Human brain the most beautiful gift by the nature by using the brainpower the men has satisfied it is all needs and desires by creating innovations and discoveries. The reasoning power and desirous nature of seeking new knowledge led to develop the modern science and technology.

Internet having unlimited boundaries and global touch that provides vast opportunities to transfer information and data to all over the world. ICT (information and communication technology) having the indispensible role to the modern world of technology. ICT can be seen like an umbrella which includes all types of communication devices and applications such as digital communication technologies and internet communication technologies and software etc.

Cyber Crime

With the advancement of telecommunication and internet also increases the crimes . In modern world information and communication technology is a boon as well as bane to the society. It is obvious that a technology may not always be used as positive growth of society. This advance technology is used as a weapon while doing any cybercrime. Cyber crime can be defined as any offence or wrongful act in which computer networks and telecommunication technologies are used as a medium or target or tool. Thus all those crimes in which involvement of cyber medium is used in any step of crime are cyber crimes. Due to the advancement of the technology the cybercrimes are increasing day by day. It is a emerging as a challenge not only in India but all over the world.

We can put cyber crime into these three forms of crimes:

1. Cyber crimes against Persons
2. Cyber crime against property
3. Cyber crimes against government

This article provides to protect privacy and safety related interest of women in cyber world. In most of the cyber crimes women are victims, they are easily targeted by the wrongdoers. Mostly male disseminate the indecent image of women by internet trolling through social media. Women are the soft target and can easily trap by the well known technology criminals. Present study highlights the increase rate of cyber crime against women led to insecurities, even in home.

Legislative History

Continue development in technology leads to computer crime enlargement. Before the technology revolution the crimes were traditionally committed against women like, rape, harassment, intimidation, as conventional form. Later it becomes committed with the help of technology as fast and frightening increase in cyber crimes against women due to the easily availability of internet to everyone.

Now in this cyber world, crimes are more contemporary. Rapid growth in crime comes in effect as the teenagers becomes well known of phones and technology. The trapping of women are very easily because of their not awareness of modern technicalities in cyber space .And the difficulty is to get out from this trap.

With a view to curb all these cyber crimes the Indian legislation enacted a statue, The Information Technology Act, 2000.Came into force on October 17, 2000. The act was not actually mentioned the newly emerging crimes. Thus the expert committee recommended the amendments in 2006 and meanwhile the Information technology (amendment) act, 2008 came into force on October 27, 2009.

Cyber Crime against Women

Indian constitution has guarantees right to equality as a fundamental right even though the woman is treated as second grade person because of the patriarchal society. In India the cyber crime against women is increases day by day. National Crime Records bureau has revealed the data for the first time in 2013 which shows the extended crimes against women reached high in level which involved dissemination

of indecent image of women on social media.

In cyber crimes against women reached at its peak level. That increases the insecurity, fear, anxiety, heart disease, hormonal imbalance among women results in electronic harassment.

Types of Cyber Crime against Women

1. **Cyber Stalking**

   It is defined as continuous act of trace the movement of any victim via emails, massaging, entering in chat-rooms and misuse the internet which in result threatens and harass to defame her prestige in society.

   In this form the accused firstly select the victim then harass and intimidate through the use of information and communication technology (ICT). According to the oxford dictionary it is termed as "pursuing stealthily". This is a criminal act and punishable under sec. 354(D) of Indian Penal code.

2. **Email Harassment**

   Indian constitution has granted right to privacy to all its citizens. But in today world internet is misusing its limits by interfering the invaluable right to privacy. It happens when the fake msg and emails sent by wrongdoers to commit frauds and illegal act and yes against the women to harass by blackmailing, threatening, bullying them. Ask to meet the illegal sexual demands.

3. **Cyber Pornography**

   Now a days it is a very serious crime expended all over the world. The internet has no limits so that it is very easy to distribute, sale, exhibition the obscene material through the internet. Child pornography is punishable under the POCSO ACT, 2012. Girl child are being used as a medium of sexual gratification and is an offence. When any material whether it is written or in picture forms made for the sexually excitement it is called pornography and when it is sale or distribute by internet mode it becomes cyber pornography.

4. **Cyber defamation**

   Defamation means to defame the image of any person in front of the well known persons or in society, when any person's reputation is lowered with intent to expose him hatred and to cause injury of reputation in the eyes of society. Cyber defamation is the same but with the involvement of computer or internet.

   In cyber defamation the defamatory statement regarding the specific person send on websites and mails through the internet medium. Women are facing this problem as fake profiles in their names and to sending obsence material over them.

5. **Morphing**

   When fake profiles are creating through the unauthorized users and downloads the pictures of girls then edits to make new pictures of obscene and nude by the use of internet software. The edited photos when uploaded on new sites or social media it creates morphing.

Traditional and contemporary female cyber laws in India

Indian Penal Code, 1860

1. Assault or criminal force to women with intent to outrage her modesty. Section 354.
2. 354-A, Sexual harassment and punishment for sexual harassment.
3. **354-B**, Assault or use of criminal force to women with intent to disrobe
4. **Section 354C- Vo**yeurism.
5. **Section 354D-** Stalking.
6. **Section 509-** word, gesture or act intended to insult the modesty of a women.
7. **Section 499-** Defamation.
8. **Section – (375-376A, AB, C, D, DA, DB, E)** Rape and gang rape.
9. **Section 498A- of cruelty by husband or relatives of husband.**

Protection of children against sexual offences act, 2013. Provides protection of children from the sexual offences.

Information Technology ACT, 2000 with amendment of 2008

1. **Section 67-** punishment for publishing or transmitting obscene material in electronic form.
2. **Section 67A-** Punishment for publishing or transmitting of material containing sexually explicit act, etc., in electronic form.
3. **Section 67B-** Punishment for publishing or transmitting of material depicting children in sexually explicit act, in electronic form.
4. **Section 67C-** Preservation and retention of information by intermediaries.

Constitutional Provisions

This Indian constitution not only provides the equal rights to women but also empowers the parliament to make laws in favor of women when feels the need to protect their rights.

The Indian Constitution guarantees the equal freedoms to men and women such as freedom of speech and expression, education, life, food etc. but these rights are not inherited in the statues made by the Indian legislatures. We are talking about the modesty of women that is not to be protected under Information and Technology Act, 2000. The constitution of India having the following provisions in protection of cybercrimes against women:

1. Article 19(a) provides to the all citizens of India right to freedom of speech and expression.

   This right to speech and expression is not unlimited but is subject to the restrictions under article 19(2) of constitution of India. The restrictions are time to time is explained by the Indian judiciary through the landmarks judgements.

   1. Security of the state
   2. Friendly relations with foreign states.
   3. Public order
   4. Decency and morality
   5. Defamation.
   6. Contempt of court.
   7. Incitement of and offence
   8. Sovereignty of India.

   Thus it is provided that the offensive speech and expression against women and girls on the internet sites are prohibited as well as penal provision under IT act and IPC.

   Article 21 of constitution provides right to life and right to life contains right to privacy also. This concept is much broader than it is traditionally interpreted. In modern era, the to privacy means to right against infringement of digital privacy. It is a trespass into the digital property and includes every types of unauthorized access of digital devices like phones, computer and all digital data, emails, intellectual property, social media accounts. Thus Indian constitution entitles everyone with the right to privacy as a fundamental right.

International conventions and treaties

Cyber crime against women is a growing problem in modern era. As per the United Nations report around 60 percent of women of whole world has been targeted as a cyber crime on social media. We would like to discuss in this article the important international conventions steps taken as to protecting the women and girl child from the illegal access of criminal minded people to misuse them on cyber platform.

1. United Nations Convention on the rights of the child New York, 1989

   Under this convention the total signatories were 140 and parties were 196. Article 34 of t this convention provides protection of the children from all types of sexual offences such as pornography and prostitution.
2. Optional Protocol to the convention on the Rights of the Child (2001).

   This protocol convention has identified the internet as a tool to spread out the obscene material through social sites. Child Pornography has been defined under the definition clause of protocol.
3. Convention on Cyber Crime (2001).

   This convention is also known as Budapest Convention. It came into force in 2004. It is the legally binding international treaty. This is the first international convention targeted to curb out all the types of cyber crimes and also to maintain harmony and peace during the investigation of crimes. It was also aimed to improve the techniques of investigation. Keeping into the mind the all earlier agreements and treaties to cooperate in the penal field, this convention is aimed to make the technology so advance to collect the all evidences and data in electronic form.
4. Additional Protocol to the Convention on Cybercrime Concerning the Criminalisation of Acts of a Racist or Xenophobic nature committed Through Computer Systems (2003).
5. Convention on the Protection of Children against Sexual Exploitation and Sexual Abuse (2007).

   This convention has strictly prohibited the access and distribution of child pornography on cyber world by the use of computer or any technical tool. After it Indian legislature has also enacted the POCSO ACT, 2013.
6. Russian-led Resolution (2020).

   Because of the national sovereignty matters, India has not participated as a member in Budapest Convention, yet has decided to take part in new Convention going to led by the Russian-led UN, a separate convention.

Judicial Perspective

Indian judiciary plays a crucial role to protecting the women from cyber crimes. Supreme Court and high court has given many landmark cases to curb these problems. Some of those cases are mentioned below:

1. In the Shreya Singhal v. Union of India 2015

The supreme court has directed to strike down the section 66A of the Information Technology Act, 2000. All this is about to the freedom of speech and expression that was protected by the supreme court in this case and stated that for the growth and development of the India the freedom of speech and expression should be free from unreasonable restrictions.

2. Justice K.S. Puttaswamy v. Union of India.

Supreme court has held that fundamental right to privacy is an integral part of the right to life and liberty under article 21 of Indian constitution.

3. Kamlesh Vaswani v. Union of India & Ors.

This case is also known as the pornography ban case, A PIL to requesting to ban all porn sites and block all porn content on the internet was entered in the court. The IT Act, 2000 section 79(b) and section 88, POCSO Act, 2012 section 13, 14, 15 were relevant laws. And meanwhile the S.C has directed to ban all child pornography and must be removed to all websites, but it is very difficult to filter out the narrow range of the content.

4. State of Tamil Nadu v. Suhas katti.

This was a first landmark case of IT Act 2000, section 67 along with Accused was charged of section 469 and 509 of IPC. He was found guilty of harassing and post obsence material through internet social media against his relative women.

Conclusion

It is to be concluded that the cyber crime is becoming heinous day by day and for the sake of prevent the criminals the government has set up a website as well as central and state level too. In which anyone can lodge their complaint online via The National Cyber Crime Reporting Portal (cybercrime.gov.in). The government has also launched a Helpline Number-155260 – 09:00 am to 06:00 pm. Besides it the complaint can also be reported to the National Commission of Women by their online website now.nic.in.

Now the judiciary is also playing an active role in improving the cyber laws against women by its latest judgements. Allahabad High Court recently in a decision stated that "technology is being misused to commit the offence, particularly against women." And in October the Delhi High Court has directed that all child porn contents on social media with all their measures to be banned and remove from online platforms**.**

References

1. www.livelaw.in/news-updates visited on 8 December 2020
2. Article-Cyber crime against women: what do the Indian laws say? www.probono-india.in/blog-detail.
3. www.legalserviceindia.com/legal article- Cyber crime In India: Are women A Soft Target by deepshikha Sharma, visited on 2 D december 2020.
4. Victimization of women beneath cyberspace in India upbringing by dr. Monika Jain , bharti law review,2017.
5. Women harassment in digital space in India by sweta sankhwar, international journal of pure and applied mathematics. visited on 7 December 2020
6. www.ndtv.com/india-news/ "significant" increase in cyber crime against women during lockdown: Experts NDTV

Books

1. Halder, Debarati & jaishankar, k. cyber crime against women in India Cyber Crime Against Women In India. SAGE publications India Pvt Ltd :new delhi: india
2. Indian Penal Code ,1860
3. Paranjape, Vishwanath. Cyber Crimes & Law, central law agency
4. Information and technology act, 2000.

Pooja Sangwan
D/o Krishan Chander
Address- House no. 190A,
Sector- 4, Rohtak, 124001
Phone no. - 9588769592